Sunita
Namboodiri

X - D.

Samskrit
Tarangini

ाकाधीन सुरक्षित हैं ।

९८३

SUMITA NAMBOODIRI
Xth - D.

भूमिका

प्रातर्भजामि मनसा वचसामगम्यम्, वाचो विभान्ति निखिला यदनुग्रहेण।
यन्नेति नेति वचनैर्निगमा अवोचन्, तं देवदेवमजमच्युतमाहुरग्र्यम् ॥

संस्कृत भाषा को देववाणी, देवगिरा अथवा देवताओं की भाषा कहा जाता है। यह भाषा दिव्य (अलौकिक) गुणों से विभूषित है। यह संसार की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है और भारत की अनेक आधुनिक भाषाओं की जननी है। इसका ललित साहित्य अत्यन्त समृद्ध है और अन्यान्य विषयों पर भी इसमें अनेकानेक ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं।

कोई भी भारतीय सुपठित नहीं कहा जा सकता, यदि उसने महर्षि वाल्मीकि, व्यास, महाकवि भास और कालिदास आदि की ललित मधुर देशकालातीत रचनाओं को नहीं पढ़ा।

जो व्यक्ति संस्कृत भाषा से अनभिज्ञ रह जाता है, उसे जीवन भर पश्चात्ताप रहता है कि वह प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं साहित्य में प्रवेश नहीं पा सका। अतीत के गौरवमय इतिहास एवं विपुल साहित्य-भण्डार में प्रवेश करने का संस्कृत-ज्ञान ही एकमात्र साधन है।

संस्कृत भाषा का आज के भारतीय के लिए अत्यन्त सामाजिक महत्त्व है, जिसे दृष्टि से ओझल नहीं किया जा सकता। वह यह कि आज हिन्दी, जो कि संस्कृत की पुत्री है, संस्कृत से ही सब प्रकार की पारिभाषिक शब्दावली ग्रहण कर रही है। संस्कृत जानने वाले के लिए उस शब्दावली को समझना कठिन नहीं और इस तरह उसकी स्थिति संस्कृत से अनभिज्ञ व्यक्तियों की अपेक्षा स्पष्टतः व्यावहारिक रूप में बढ़ जाती है। संस्कृत साहित्य इतना समृद्ध है कि संस्कृत भाषा के अध्ययन के लिए उसकी किसी एक ही पुस्तक की ओर संकेत कर देना पर्याप्त है, उदाहरणतः कालिदास का मेघदूत अथवा अभिज्ञानशाकुन्तल। अस्तु।

जनसाधारण एवं विद्यार्थी संस्कृत भाषा को, विशेषतः संस्कृत व्याकरण को कठिन समझते हैं। परन्तु हमारा निवेदन यह है कि यह बात दूर से ही दिखाई देती है। संस्कृत व्याकरण के मुनित्रय (सूत्रकार पाणिनि, वार्तिककार कात्यायन तथा महाभाष्यकार पतंजलि) ने इस भाषा के व्याकरण को ऐसा सुव्यवस्थित एवं नियमबद्ध कर दिया है कि व्याकरण का थोड़ा भी ज्ञान होने से संस्कृत भाषा सरल प्रतीत होने लगती है।

संस्कृत व्याकरण के ज्ञान के लिए प्राचीन काल से अब तक अनेक प्रयास हुए हैं और होते रहेंगे। उसी अर्चना में हमारा प्रस्तुत अर्घ्य भी है।

इस व्याकरण की रचना मनोवैज्ञानिक पद्धति पर इतनी सरलता से की गयी है जिससे विद्यार्थी अत्यन्त सुगमता से व्याकरण में प्रवेश पा सकेंगे।

अनुवाद का संस्कृत के पत्र में कितना महत्त्व है, यह किसी से छिपा नहीं। प्रस्तुत पुस्तक में आरम्भिक वाक्यों के अनुवाद से प्रारम्भ करके उत्तरोत्तर कठिन तथा संश्लिष्ट वाक्यों एवं स्थलों की अनुवाद-विधि प्रस्तुत की गई है जिसके ज्ञान से जहाँ एक ओर विद्यार्थिगण अधिक अंक पाने में सफल हो सकेंगे, वहाँ संस्कृत भाषा के अनुवाद में स्वतः प्रवृत्त हो सकेंगे।

कतिपय अन्य विशिष्टताएँ ये हैं—प्रस्तुत व्याकरण में सरलता का सर्वोपरि ध्यान रखा गया है। इसकी परिभाषाओं में जटिलता या उलझन नहीं। वाद की अपेक्षा प्रयोग पर बल दिया गया है। इस समस्त पुस्तक को दो खण्डों में विभक्त किया गया है। प्रथम खण्ड में वर्ण-विचार और शब्द-विचार के (धातु-प्रकरण के अतिरिक्त) सभी आवश्यक ज्ञातव्य विषयों का समावेश किया गया है और द्वितीय खण्ड में धातु-प्रकरण को विस्तार से दिया गया है। प्रायः प्रत्येक अध्याय के अन्त में तत्सम्बन्धी हिन्दी वाक्यों के सम्मुख उनका आदर्श संस्कृतानुवाद प्रस्तुत किया गया है जिससे अनुवाद करने में सुगमता रहे।

द्वितीय खण्ड के २२वें अध्याय में वाक्य-विचार तथा अनुवाद-विधि 'गागर में सागर' कही जा सकती है।

अन्तिम अध्यायों में निबन्ध-लेखन, पत्र-लेखन, लोकोक्तियाँ तथा वाग्धारायें, छन्द एवं अलंकार भी दिये गये हैं।

अध्यापक महानुभाव भी प्रस्तुत पुस्तक पर सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि डालकर इसे अपेक्षित ज्ञानवर्धक ही पायेंगे और विद्यार्थियों को इसके अध्ययन की ओर प्रेरित कर अनुगृहीत करेंगे। धन्यवाद।

वाल्मीकिः सनकः सनन्दनतनुर्व्यासो वशिष्ठो भृगुः,
जाबालिर्जमदग्निकच्छजनको गर्गोऽङ्गिरा गौतमः।
मान्धाता ऋतुपर्ण-वैन्य-सगरा धन्यो दिलीपो नलः
पुण्यो धर्मसुतो ययातिनहुषौ कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥

Syllabus in Sanskrit Clective Classes XI & XII

एक प्रश्न पत्र — १०० अंक

1. Sanskrit Grammar— २५ अंक

(i) Sanskrit alphabet, their pronunciation.
Points of articulation, manner of articulation.
सन्धि—यण्, दीर्घ, गुण, वृद्धि, अयादि, पूर्वरूप, श्चुत्व, णत्व, जश्त्व, चर्त्व, आगम, अनुस्वार, परसवर्ण और विसर्ग ।

(ii) Words Besides the words prescribed for clases IX & X, the following may also be studied in classes XI & XII.

(a) Words ending in Vowels—
सर्व, पूर्व, प्रथम, द्वितीय, सखि, पति, धातृ, नृ, गो, स्वसृ, अक्षि ।

(b) Words ending in Consonants—
युवन्, पथिन् महत्, तादृश्, पुंस्, अदस्, दिश्, वाच्, गिर्, विद्वस्, धनिन्, पयस्, पंचन्, षट्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन् ।

(iii) Roots, Bosides the roots prescribed for classes IX & X, the following roots may also be studied in classes XI & XII.

१. भ्वादि—अर्च्, क्षि, पा, श्रु, गम्, श्रि, भू, ह्वे, भज्, यज् ।
२. अदादि—हन्, पा, विद्, अस्, इण्, शी, इङ्, ब्रू ।
३. प्रकीर्ण—नृत्, जन्, मिल्, सिध्, विश्, प्रच्छ्, भुज्, कृ, पू, ग्रह्, चुर् ।
४. ण्यन्त—भू, रुध्, पठ्, गम्, कृ, क्री ।

(iv) Suffixes—

१. कृदन्त—ण्वुल्, तृच्, शतृ, शानच्, क्त, क्तवतु, तव्यत्, अनीयर्, यत्, ण्यत्, क्तिन्, ल्युट्, णिनि, अच्, क्त्वा, (ल्यप्), तुमुन्, णमुल् ।
२. तद्धित—इन्, ठन्, अण्, त्व, तल्, मयट्, इतच्, मतुप्, यत् ।
३. स्त्रीप्रत्यय—आ, ई ।

It is expected that the students would be able to use Kridant suffixes with the verbal roots prescribed for classes XI & XII only.

(v) Indeclinables—
पुनः, उच्चैः, नीचैः, शनैः, अधः, ऋते, युगपत्, श्वः, सायम्, चिरम्, ईषत्, तूष्णीम्, सहसा, मिथ्या, पुरा, प्रायः, मुहुः, नूनम्, भूयः, खलु, किल, अद्य ।

(vi) Cases—

Rules regarding the use of main Upapada Vibhaktis and Karaka Vibhaktis only.

(viii) Compounds—

1. Decompounding of smaller compounds (2) Making of compounds. (3) In both these situations, studants will be required to name the compound. The following compounds may be treated important for the class XI-XII.

एकशेष, अव्ययीभाव, बहुव्रीहि ।

2. Translation from English/Hindi language to Sanskrit 15 अंक

3. History of Sanskrit 20 अंक

(i) संस्कृतभाषा—(केवल परिचयात्मक ज्ञान) अध्याय-I

(ii) वैदिक साहित्य—(केवल परिचयात्मक ज्ञान) अध्याय-II

ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद, सामवेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद्, सूत्रसाहित्य ।

(iii) लौकिक-साहित्य अध्याय-III

(क) रामायण, महाभारत, पुराण (महाकाव्य एवं पुराण) III-I

(ख) पंचतंत्र, हितोपदेश, कथासरित्सागर, वेतालपंचविंशतिका, (नीतिकथासाहित्य) III-2

(ग) दशकुमारचरित, वासवदत्ता, हर्षचरित, कादम्बरी, चम्पू । २ गद्य आख्यान-III-3

(घ) सौन्दरनंद, ऋतुसंहार, कुमारसंभव, रघुवंश, मेघदूत, किरातार्जुनीय, नैषधचरित । अलंकृत काव्य-III-5

(ङ) श्रृंगार, वैराग्य एवं नीति शतक, जयदेव का गीतगोविन्द, (गीतिकाव्य-III-6

(च) भास नाटक, मृच्छकटिक, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञान-शाकुन्तल, वेणीसंहार । नाटक-III-7

मुद्राराक्षस, उत्तररामचरित, नागानन्द ।

विषय-सूची

प्रथम खण्ड

प्रथम अध्याय : संस्कृतभाषा

संस्कृत व्याकरण, भाषा, वर्ण-विचार, स्वर, व्यंजन, व्यंजनों का वर्गीकरण, वर्णों के उच्चारण-स्थान और प्रयत्न, उच्चारण-स्थान की तालिका, प्रयत्नों की तालिका — १-८

द्वितीय अध्याय : व्याकरण के पारिभाषिक शब्द (क) — ९-१३

तृतीय अध्याय : व्याकरण के पारिभाषिक शब्द (ख) — १४-१५

चतुर्थ अध्याय : संधि

संधि—स्वरसन्धि, स्वर-सन्धि के भेद, दीर्घसन्धि, गुण-सन्धि, वृद्धि-सन्धि, यण्-सन्धि, अयादि-सन्धि, पूर्वरूप-सन्धि, पररूप-सन्धि, प्रकृतिभाव-सन्धि — १६-२२

पंचम अध्याय : व्यंजन-सन्धि या हल्-सन्धि — २३-२७

षष्ठ अध्याय : विसर्ग-सन्धि — २८-३१

सप्तम अध्याय : णत्व और षत्व विधि — ३२

अष्टम अध्याय : शब्द विचार—लिंग, वचन, कारक, अकारान्त शब्द — ३३-४३

नवम अध्याय : इकारान्त पुँल्लिग शब्द — ४४-४६

दशम अध्याय : ई, उ, ऊ, ऋ तथा ओ अन्त वाले पुँल्लिग शब्द — ४७-५१

एकादश अध्याय : अजन्त स्त्रीलिंग शब्द — ५२-५८

द्वादश अध्याय : अजन्त नपुंसकलिंग शब्द — ५९-६३

त्रयोदश अध्याय : उपपद विभक्तियाँ — ६४-७०

चतुर्दश अध्याय : सर्वनाम शब्द — ७१-८०

पंचदश अध्याय : व्यंजनान्त (हलन्त) शब्द

हलन्त पुँल्लिग शब्दों की रूप-रचना, हलन्त स्त्रीलिंग शब्दों की रूप-रचना, हलन्त नपुंसकलिंग शब्दों की रूप-रचना — ८१-९७

षोडश अध्याय : संख्यावाचक शब्द — ९८-१०४

द्वितीय खण्ड

प्रथम अध्याय : क्रिया-प्रकरण (तिङन्त)

काल और प्रकार, पुरुष, वचन, भ्वादिगण की परस्मैपदी धातु — १०५-१२७

द्वितीय अध्याय : भ्वादिगण की आत्मनेपदी धातु, भ्वादिगण की उभयपदी धातु — १२८-१३८
तृतीय अध्याय : अदादिगण — १३९-१५७
परस्मैपदी धातु, अदादिगण की आत्मनेपदी धातु, अदादिगण की उभयपदी धातु, अदादिगण की कुछ आवश्यक परस्मैपदी धातु
चतुर्थ अध्याय : जुहोत्यादिगण — १५८-१६६
पचम अध्याय : दिवादिगण — १६७-१७४
षष्ठ अध्याय : स्वादिगण — १७५-१८०
सप्तम अध्याय : तुदादिगण — १८१-१८८
अष्टम अध्याय : रुधादिगण — १८९-१९५
नवम अध्याय : तनादिगण — १९६-२०१
दशम अध्याय : क्र्यादिगण — २०२-२०९
एकादश अध्याय : चुरादिगण — २१०-२१८
द्वादश अध्याय : आशीर्लिङ् और लुङ् लकार — २१९-२२२
त्रयोदश अध्याय : यगन्त प्रकरण (वाच्य) — २२३-२३०
वाच्य-परिवर्तन के नियम, द्विकर्मक क्रिया में कर्मवाच्य
चतुर्दश अध्याय : प्रत्ययान्त धातु — २३१-२४०
प्रेरणार्थक क्रिया, कुछ धातुओं के प्रेरणार्थक रूप, सन्नन्त, यङन्त, नामधातु
पंचदश अध्याय : कृदन्त प्रकरण (क भाग) — २४१-२५४
कृत्प्रत्यय, कृदन्त प्रत्ययों के रूप, कृदन्त प्रकरण (ख भाग)
षोडश अध्याय : समास — २५५-२६८
अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुव्रीहि, द्वन्द्व
सप्तदश अध्याय : तद्धित प्रत्यय — २६९-२७२
अष्टादश अध्याय : स्त्री-प्रत्यय — २७३-२७७
एकोनविंश अध्याय : विशेषण तथा तुलना — २७८-२८२
विंश अध्याय : उपसर्ग — २८३-२८५
एकविंश अध्याय : अव्यय शब्द — २८६-२८९
द्वाविंश अध्याय : वाक्य-विचार तथा अनुवादविधि — २९०-२९५
त्रयोविंश अध्याय : लघु निबन्धलेखन एवं पत्रलखन — २९६-३००
भारतवर्षम्, होलिकोत्सवः, संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्, मित्राय भ्रमण-विषयकं पत्रम्, प्रधानाचार्याय अवकाशपत्रम्।
चतुर्विंश अध्याय : लोकोक्तियाँ तथा वाग्धाराएँ (मुहावरे) — ३०१-३०५
पंचविंश अध्याय : छन्द-प्रकरण — ३०६-३११
षड्विंश अध्याय : अलंकार प्रकरण — ३१२-३१७

प्रथम खण्ड

प्रथम अध्याय

संस्कृत भाषा

'संस्कृत' शब्द का अर्थ है 'संस्कार की हुई' एवं 'परिमार्जित' अर्थात् शुद्ध।

भाषा—'भाष् व्यक्तायां वाचि' अर्थात् वाणी के स्पष्ट उच्चारण में 'भाष्' धातु से भाषा शब्द की रचना हुई है अतः जो स्पष्ट बोली जाये उसे 'भाषा' कहते हैं। 'संस्कृत भाषा' शब्द का अर्थ हुआ 'शुद्ध एवं परिमार्जित भाषा'।

संस्कृत भाषा संसार की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। यह भारत की अनेक आधुनिक भाषाओं की जननी है। अतीत के गौरवमय इतिहास एवं विशाल साहित्य-भण्डार में प्रवेश पाने के लिए संस्कृत भाषा का ज्ञान एक आवश्यक साधन है।

संस्कृत व्याकरण

व्याकरण—व्याकरण वह शास्त्र है जिससे किसी भी भाषा का शुद्ध बोलना और लिखना आता है। संस्कृत व्याकरण हमें संस्कृत भाषा के शुद्ध बोलने और लिखने का ज्ञान कराता है।

संस्कृत भाषा में व्याकरण शास्त्र का जितना विस्तृत और सूक्ष्म विवेचन हुआ है उतना संसार की किसी अन्य भाषा में नहीं हुआ। संस्कृत भाषा का सबसे प्रसिद्ध व्याकरण पाणिनि मुनि का 'अष्टाध्यायी' नामक ग्रन्थ है। इसमें संस्कृत शब्दों की रूप-रचना एवं धातुओं से क्रियारूपों को ऐसा नियमबद्ध किया है जो संभवतः अन्यत्र न मिले। प्रस्तुत पुस्तक में उन्हीं के सूत्रों के आधार पर सरल भाषा में संस्कृत का बोध कराने का प्रयास किया गया है।

वैसे तो जो मनुष्य जिस देश, प्रदेश अथवा जाति में पैदा होता है वह उस देश. प्रदेश अथवा जाति की बोली को मातृभाषा के रूप में सीख जाता है; किन्तु मनुष्य को, दूसरे देशों, प्रदेशों और जातियों की भाषाओं को समझने के लिए उसे उन-उन भाषाओं की शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है। जैसे अंग्रेजी, बँगला, पंजाबी, तमिल और तेलुगु आदि भाषाओं को सीखने के लिए उनकी शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है, उसी प्रकार संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी उसकी शिक्षा में निपुण होना आवश्यक है और वह निपुणता व्याकरण पर अवलम्बित है। अतः संस्कृत भाषा के व्याकरण का अध्ययन परम आवश्यक है।

जब हम भाषा बोलते हैं या लिखते हैं तो वाक्यों का प्रयोग करते हैं। वाक्य शब्दों से बने होते हैं और शब्द अक्षरों से। इस प्रकार भाषा की मूल इकाई 'अक्षर'

है। अक्षरों का सार्थक समूह 'शब्द' कहलाता है और शब्दों के सार्थक प्रयोग को 'वाक्य' कहते हैं। व्याकरण शास्त्र के अध्ययन से अक्षरों के शुद्ध स्वरूप, संयोग, संधि, उच्चारण-स्थान आदि का शुद्ध-शुद्ध ज्ञान प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त शब्दों एवं धातुओं के शुद्ध-रूपों और उनके परिवर्तनों का ज्ञान भी होता है। अव्ययों के अर्थ और उपसर्गों के प्रयोग से अर्थभेद का भी विशुद्ध बोध हो जाता है। वाक्यों की शुद्ध रचना का विस्तृत ज्ञान भी हम व्याकरण से ही उपलब्ध कर सकते हैं।

भाषा के मूलभूत अक्षर, शब्द और वाक्य ये ही क्रम हैं, अतः व्याकरण को तीन भागों में बाँटा जाता है—१. वर्ण-विचार, २. शब्द-विचार ३. वाक्य-विचार। इन्हीं का अब विस्तार से विश्लेषण आरम्भ किया जाता है।

वर्ण-विचार

वर्ण—भाषा की छोटी से छोटी ध्वनि को 'अक्षर' कहते हैं, जिसके और टुकड़े न हो सकें। अक्षर के ही लिखित रूप को 'वर्ण' कहते हैं। जैसे—अ, क्, प्, ह्, आदि।

'अक्षर' का शब्दार्थ है अविनाशी। नाद या ध्वनि का कभी नाश नहीं होता। अक्षर जब लिखा जाता है तब हम उसका आकार (वर्ण) देख सकते हैं; अतः अक्षरों के लिखित रूप को 'वर्ण' कहते हैं। किन्तु अब अक्षर और वर्ण समानार्थक माने जाते हैं।

वर्णमाला—किसी भाषा के सम्पूर्ण वर्णों के समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं।

लिपि—किसी वर्णमाला के लिखित रूप को 'लिपि' (Script) कहते हैं। हिन्दी या संस्कृत वर्णों की लिपि को 'देवनागरी' कहते हैं।

वर्णों के प्रकार—वर्ण दो प्रकार के हैं—

१. स्वर (Vowel)।

२. व्यंजन (Consonant)।

स्वर (Vowels)

स्वर—जिन वर्णों के उच्चारण के लिए किसी दूसरे वर्ण की सहायता की आवश्यकता न हो, उन्हें 'स्वर' कहते हैं। अर्थात् स्वर बिना किसी दूसरे वर्णों की सहायता के स्वतन्त्र रूप से बोले जाते हैं।

स्वर ये हैं—

अ, आ, इ, ई, उ ऊ, ऋ, ॠ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ।

स्वरों के तीन भेद हैं—

१. ह्रस्व, २. दीर्घ, ३. प्लुत।

१. ह्रस्व स्वर—स्वरों में से अ, इ, उ, ऋ तथा लृ, ये 'ह्रस्व' (Short Vowels) कहे जाते हैं। अर्थात् इन्हें उच्चारण करने में एक मात्राकाल[1] से अधिक

---

१. किसी ह्रस्व स्वर के उच्चारण में जो समय लगता है उसे मात्राकाल कहते हैं।

एकमात्रो भवेद् ह्रस्वो, द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।

त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो, व्यंजनं चार्धमात्रिकम्॥

समय नहीं लगता। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।

२. दीर्घ स्वर—आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ—ये दीर्घ स्वर (Long Vowels) कहलाते हैं। इनके उच्चारण में दो मात्राओं के उच्चारण का समय लगता है।

सन्धि स्वर या संयुक्त स्वर—अनेक विद्वान् ए ऐ, ओ औ को दीर्घ स्वर न मान कर इन्हें सन्धि-स्वर या संयुक्त स्वर मानते हैं; क्योंकि ये दो भिन्न स्वरों के संयोग से बने हैं। जैसे—अ, आ+इ, ई=ए। अ, आ+उ, ऊ=ओ। अ, आ+ए=ऐ। अ, आ+ओ=औ।

३. प्लुत—स्वरों में सामान्यतः दूर से उच्चारण करते समय जब ध्वनि देर तक बनी रहती है और समय भी तीन मात्राओं या उससे अधिक लगता है, तब वे 'प्लुत' स्वर (Protracted Vowels) कहे जाते हैं। प्लुत स्वर का प्रयोग प्रायः वैदिक भाषा में या सम्बोधन (पुकारने) में होता है। उदाहरण—यदि अशोक या अनिल को दूर से ही आवाज देकर बुलायें तो हम कहेंगे—अशोक ३, आगच्छ, अनिल आगच्छ ३, ओ३म्, यो३ऽस्मान् द्वेष्टि (वैदिक प्रयोग) इत्यादि (अशोक ३ आओ; अनिल आओ ३; जो हमसे द्वेष करता है)।

यह तीनों प्रकार का उच्चारण यदि विचारपूर्वक देखें तो मुर्गे की इस बोली में समझा जा सकता है—कु १ क्, डूं २, कूं ३।

व्यंजन वर्ण (Consonants)

व्यंजन—जिन वर्णों के उच्चारण में स्वरों की सहायता की आवश्यकता होती है, वे 'व्यंजन' कहलाते हैं। व्यंजनों के शुद्ध रूप दिखाने के लिए उनके नीचे हल (्) चिह्न लगा देते हैं।

व्यंजन ये हैं—

क् ख् ग् घ् ङ्	च् छ् ज् झ् ञ्
ट् ठ् ड् ढ् ण्	त् थ् द् ध् न्
प् फ् ब् भ् म्	य् र् ल् व्

श् ष् स् ह्

वक्तव्य—अभी ऊपर व्यंजन के लक्षण में कह आए हैं कि व्यंजनों के उच्चारण में स्वरों की सहायता की आवश्यकता होती है अतः ये व्यंजन 'अ' स्वर सहित क ख ग घ ङ, च छ इत्यादि ऐसे बोले जाते हैं। यदि इनमें स्वर न लगा हो तो पृथक् इनका उच्चारण ही न हो सके।

व्यंजनों का वर्गीकरण

वर्ग—क, च, ट, त, प के आगे 'वर्ग' शब्द जोड़ देने से वे अपने-अपने विभाग के पाँच-पाँच अक्षरों का ज्ञान कराते हैं। जैसे 'कवर्ग' कहने से 'क ख ग घ ङ' का बोध होता है। इसी प्रकार चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग से भी अपने अपने वर्ग के पाँच-पाँच वर्णों का बोध होता है।

Sunita

(क) स्पर्श (Mutes) क से म तक के वर्ण 'स्पर्श' व्यंजन कहे जाते हैं; क्योंकि इनके उच्चारण में जिह्वा मुख के किसी न किसी भाग को स्पर्श करती है।

स्पर्श—

कवर्ग—क ख ग घ ङ।
चवर्ग—च छ ज झ ञ।
टवर्ग—ट ठ ड ढ ण।
तवर्ग—त थ द ध न।
पवर्ग—प फ ब भ म।

(ख) अन्तःस्थ (Semi Vowels)—य र ल व। ये वर्ण स्वरों और व्यंजनों के बीच में स्थित हैं, अतः ये 'अन्तःस्थ' कहलाते हैं। उदाहरण—कभी इ य् में बदल जाता है। जैसे—यदि+अपि=यद्यपि। और कभी य् इ में बदल जाता है। जैसे—यज्+या=इज्या इत्यादि। इन्हें आप आगे सन्धि और संप्रसारण में पढ़ेंगे।

(ग) ऊष्म (Sibilants)—श ष स ह। इन वर्णों का उच्चारण करते समय मुख से एक प्रकार की गर्म वायु (ऊष्मा) सी निकलती है; अतः ये 'ऊष्म' कहलाते हैं।

अयोगवाह

स्वर तथा व्यंजन वर्णों के अतिरिक्त दो चिह्न और भी हैं उन्हें 'अयोगवाह' कहते हैं। अयोगवाह ये हैं—अनुस्वार (ं), विसर्ग (:)

अनुस्वार और विसर्ग का प्रयोग स्वरों के बाद होता है। जैसे—संवत्, अतः, दुःख, रामः।

अनुनासिक—यह अनुस्वार का कोमल रूप है। जहाँ म् को य् व् ल् परे होने पर परसवर्ण होता है, वहाँ म् के पूर्ववर्ती स्वर पर चन्द्रबिन्दु (ँ) लिखा जाता है। जैसे-संवत्सरः, सँव्वत्सरः। यं लोकम्, यँल्लोकम्।

वर्णों के उच्चारण-स्थान और प्रयत्न

हमारे मुख के भीतरी विभिन्न स्थानों के उपयोग से वर्णों का उच्चारण होता है, अतः वे वर्णों के उच्चारण-स्थान कहलाते हैं। इसके पाँच भाग हैं—

१. कण्ठ, २. तालु, ३. मूर्धा, ४. दन्त और ५. ओष्ठ।

इनके अतिरिक्त वर्णों के उच्चारण में 'नासिका' भी सहायक होती है।

किसी-किसी वर्ण के संयुक्त दो उच्चारण-स्थान भी हैं। इन्हें नीचे क्रम से देखिए :—

१. कण्ठ—अ आ, क ख ग घ ङ, :, ह—इनके उच्चारण-काल में जिह्वा गले (कण्ठ) की ओर विशेष रूप से जोर लेती है, अतः इनका कण्ठ स्थान है। कण्ठ से बोले जाने के कारण इन्हें कण्ठ्य वर्ण कहते हैं।

२. तालु—इ ई, च छ ज झ ञ, य, श—इनके उच्चारण में जिह्वा मुख के अन्दर ऊपरी भाग (चिकनी छत) को छूती है, अतः इनका तालु स्थान है। तालु से

बोले जाने के कारण इन वर्णों को तालव्य वर्ण कहते हैं।

३. मूर्धा—ऋ ॠ, ट ठ ड ढ ण, र, ष—इनके उच्चारण में जिह्वा दाँतों के साथ वाले मूर्धा (खुरदरे भाग) का स्पर्श करती है, अतः इनका मूर्धा स्थान है। मूर्धा से बोले जाने के कारण इन्हें मूर्धन्य वर्ण कहते हैं।

४. दन्त—ऌ, त थ द ध न, ल, स—इनके उच्चारण में जिह्वा दाँतों का स्पर्श करती है, अतः इनका दन्त स्थान है। दन्त से बोले जाने के कारण इन्हें दन्त्य वर्ण कहते हैं।

५. ओष्ठ—उ ऊ प फ ब भ म—इनके उच्चारण में ओष्ठ कुछ मुड़ से जाते हैं, अतः इनका ओष्ठ स्थान है। ओष्ठ से बोले जाने के कारण इन्हें ओष्ठ्य वर्ण कहते हैं।

६. नासिका—ङ ञ ण न म और अनुस्वार ं—इनका उच्चारण अपने-अपने उच्चारण स्थान के अतिरिक्त नासिका से भी होता है, अतः ये नासिक्य वर्ण भी कहलाते हैं।

७. कण्ठतालु—ए और ऐ क्रमशः अ+इ=ए और अ+ए=ऐ इन दो भिन्न स्वरों में सन्धि होने से बनते हैं (अ—कण्ठ और इ—तालु) अतः ए ऐ का कण्ठतालु स्थान है। इन्हें कण्ठ-तालव्य वर्ण कहेंगे।

८. कण्ठोष्ठ—ओ और औ ये भी क्रमशः अ+उ=ओ और अ+ओ=औ—इन दो भिन्न स्वरों में सन्धि होने से बनते हैं (अ—कण्ठ और उ—ओष्ठ) अतः ओ औ का कण्ठोष्ठ स्थान है। इन्हें कण्ठोष्ठ्य वर्ण कहेंगे।

९. दन्तोष्ठ—व एक ऐसा वर्ण है जिसे ऊपर के दाँत और नीचे के ओष्ठ से मिलाकर बोला जाता है। अतः व का दन्तोष्ठ स्थान है। इसे दन्तोष्ठ्य वर्ण कहेंगे।

प्रयत्न—वर्णों के उच्चारण के लिए किया गया यत्न ही 'प्रयत्न' कहलाता है। वह दो प्रकार का होता है—१. आभ्यन्तर और २. बाह्य।

१. आभ्यन्तर प्रयत्न—वागिन्द्रिय (जीभ) का वह प्रयत्न जो ध्वनि के स्पष्ट होने से पूर्व ही हो चुकता है 'आभ्यन्तर प्रयत्न' कहलाता है। यह चार प्रकार का होता है—स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषद्विवृत, विवृत।

(१) स्पृष्ट—जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर-यंत्र बन्द रहता है और जिह्वाग्र कहीं न कहीं मुख से स्पर्श करता है, वे स्पृष्ट वर्ण कहलाते हैं। जैसे—क से म तक।

(२) ईषत्स्पृष्ट—वे वर्ण हैं जिनके उच्चारण में स्वर-यन्त्र कुछ बन्द रहता

संस्कृत व्याकरण में उच्चारण-स्थानों को निम्नलिखित सूत्रों में बड़े सुन्दर ढंग से बाँधा है।

१. अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः।
२. इचुयशानां तालुः।
३. ऋटुरषाणां मूर्धा।
४. लृतुलसानां दन्ताः।
५. उपूपध्मानीयानां ओष्ठौ।
६. ञमङणनानां नासिका च।
७. एदैतोः कण्ठतालु।
८. ओदौतोः कण्ठोष्ठम्।
९. वकारस्य दन्तोष्ठम्।

वर्णों के उच्चारण-स्थान की तालिका

उच्चारण-स्थान	स्वर	स्पर्श (व्यंजन)	अन्तःस्थ	ऊष्म
कण्ठ	अ, आ	क ख ग घ ङ	—	ह, विसर्ग (:)
तालु	इ, ई	च छ ज झ ञ	य	श
मूर्धा	ऋ, ॠ	ट ठ ड ढ ण	र	ष
दन्त	लृ	त थ द ध न	ल	स
ओष्ठ	उ, ऊ	प फ ब भ म	—	—
कण्ठतालु	ए, ऐ	— —	—	—
कण्ठोष्ठ	ओ, औ	— —	—	—
दन्तोष्ठ	—	— —	व	—
नासिका	—	ङ ञ ण न म	—	—

है और कुछ-कुछ ही स्पर्श करता है। जैसे—य, र, ल, व।

(३) ईषद्विवृत—वे वर्ण हैं जिनके उच्चारण में स्वर-यन्त्र कुछ खुला रहता है। जैसे—ऊष्म वर्ण—श, ष, स, ह।

(४) विवृत—जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर-यंत्र खुला रहता है, वे विवृत वर्ण हैं। जैसे—अ आ इ ई इत्यादि सभी स्वर।

बाह्य प्रयत्न—किसी भी वर्ण के उच्चारण-काल में बाहर से होने वाले श्वास आदि के प्रयत्न को बाह्य प्रयत्न कहते हैं।

यों तो बाह्य प्रयत्न ग्यारह प्रकार का होता है; परन्तु सामान्य रूप से संस्कृत में केवल आठ प्रकार का ही उपयोगी है। जैसे—विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण। इस आठ प्रकार के बाह्य प्रयत्न को दो भागों में बाँटा जा सकता है।

१. (क) विवार, श्वास, अघोष (ख) संवार, नाद, घोष

२. (क) अल्पप्राण (ख) महाप्राण

(क) वर्गों के पहले-दूसरे (क ख, च छ, ट ठ, त थ, प फ) और श ष स—ये वर्ण विवार, श्वास और अघोष कहलाते हैं।

(ख) वर्गों के तीसरे, चौथे, पाँचवें (ग घ ङ आदि) वर्ण और य र ल व ह—ये वर्ण संवार, नाद और घोष कहलाते हैं।

अल्प-प्राण—जिन वर्णों के उच्चारण में अल्प (थोड़ी) प्राण (वायु) का व्यय हो, उन्हें अल्पप्राण कहते हैं। वर्गों के पहले, तीसरे और पाँचवें वर्ण अल्पप्राण कहलाते हैं। अल्पप्राण वर्ण ये हैं—

क, ग, ङ; च, ज, ञ; ट, ड, ण; त, द, न; प, ब, म और य, र, ल, व।

महाप्राण—जिन वर्णों के उच्चारण में महा (अधिक) प्राण (वायु) का व्यय हो उन्हें महाप्राण कहते हैं। वर्गों के दूसरे, चौथे वर्ण महाप्राण कहलाते हैं। महाप्राण वर्ण ये हैं—

ख, घ; छ, झ; ठ, ढ; थ, ध; फ, भ और श, ष, स, ह।

इस प्रकार प्रत्येक वर्ण के लिए बाह्य प्रयत्नों की निम्नलिखित दो श्रेणियाँ हो गई। ये वर्ण या तो—

विवार, श्वास, अघोष + अल्पप्राण या महाप्राण हैं। या फिर संवार, नाद, घोष + अल्पप्राण या महाप्राण हैं। ये सभी नीचे दी गई तालिकाओं में स्पष्ट किए गए हैं।

आभ्यन्तर प्रयत्न तालिका

स्पृष्ट					ईषत्स्पृष्ट	ईषद्-विवृत	विवृत		
क	ख	ग	घ	ङ	—	ह	अ	आ	ए, ऐ
च	छ	ज	झ		य	श	इ	ई	—
ट	ठ	ड	ढ	ण	र	ष	ऋ	ॠ	—
त	थ	द	ध	न	ल	स	ऌ	—	—
प	फ	ब	भ	म	व	(—)	उ	ऊ	ओ, औ

बाह्य प्रयत्न तालिका

विवार, श्वास अघोष	संवार, नाद, घोष	अल्पप्राण	महाप्राण
क, ख	ग, घ, ङ	क ग ङ अ, ए	ख, घ, श
च, छ, श	ज, झ, ञ, य	च ज ञ, य, इ, ऐ	छ, झ, ष
ट, ठ, ष	ड, ढ, ण, र	ट ड ण, र, ऋ ओ	ठ, ढ, स
त, थ, स	द, ध, न, ल	त द न, ल, लृ, औ	थ, द, ह
प, फ	ब, भ, म, व, ह	प ब म, व, उ	फ, भ

ज्ञातव्य—ऊपर दिए गए आभ्यन्तर प्रयत्न और बाह्य प्रयत्न के भेद अत्यन्त सूक्ष्म और आधुनिक युग में प्रयोग से बाहर हैं। इन्हें केवल ज्ञानवर्धन मात्र के लिए जान लेना पर्याप्त है।

अभ्यास

(१) वर्ण किसे कहते हैं ? वे कितने प्रकार के होते हैं ?

(२) स्वर और व्यंजन में प्रमुख क्या अन्तर है ? स्वर कितने प्रकार के हैं ? प्लुत स्वर का प्रयोग किस स्थान पर किया जाता है ?

(३) व्यंजन कितने प्रकार के होते हैं ? वे कौन-कौन से प्रकार हैं ? ऊष्म, अन्तःस्थ और स्पर्श व्यंजनों को पृथक्-पृथक् लिखिए।

(४) उच्चारण-स्थान कितने हैं ? दन्त्य, मूर्धन्य, तालव्य और ओष्ठ्य वर्ण बताइए।

(५) अयोगवाह का और अनुनासिक का परिचय दीजिए तथा अनुस्वार और अनुनासिक में अन्तर बताइए।

(६) निम्नलिखित वर्णों के उच्चारण-स्थान बताइए :—
इ, ऋ, ओ, क, ज, ण, द, प, र, व, ह, स।

(७) प्रयत्न किसे कहते हैं ? वह कितने प्रकार का है ? बाह्य प्रयत्न और आभ्यन्तर प्रयत्न में क्या अन्तर है ? आभ्यन्तर प्रयत्न के भेद बताइए।

(८) बाह्य प्रयत्न से आप क्या समझते हैं ? वह कितने प्रकार का होता है ? अल्पप्राण और महाप्राण से क्या तात्पर्य है ? कौन-कौन से व्यंजन महाप्राण हैं और कौन-कौन-से अल्पप्राण ?

द्वितीय अध्याय

व्याकरण के पारिभाषिक शब्द (क)

प्रत्येक विद्या अथवा प्रत्येक विषय के अपने कुछ सांकेतिक शब्द होते हैं, जिन्हें पारिभाषिक शब्द (Technical words) कहते हैं। वे शब्द सीमित रूप में किसी एक अर्थ को प्रकट करते हैं। व्याकरण में भी अपने कुछ पारिभाषिक शब्द हैं। उनका ज्ञान विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है।

'परिभाषा' को संस्कृत व्याकरण में 'संज्ञा' भी कहा जाता है और लक्षण को भी 'परिभाषा' कहते हैं।

वर्णमाला—किसी भाषा के सभी अक्षरों के समूह को उसकी 'वर्णमाला' कहा जाता है।

लिपि—यह शब्द लिप् (लीपना) धातु से बना है। पहले समय में वर्णों को लिखकर उन्हें रंगों से लीपा जाता था। संभवतः इसीलिए इन्हें 'लिपि' (Script) कहा जाने लगा।

अक्षरों के आविष्कार से पूर्व किसी दूर बैठे व्यक्ति को कोई संकेत देने के लिए पत्थर आदि के टुकड़े पर पशु-पक्षी आदि के चित्र बना दिये जाते थे जो संभव है मिट्टी, कोयले या गेरू आदि से लीप दिये जाते हों उसे ही 'लिपि' कहा जाता हो। बाद में अक्षरों को लिखने की विधि को भी 'लिपि' कहा जाने लगा।

मात्रा—स्वरों के चिह्न जब व्यंजनों में जुड़ते हैं, तो 'मात्रा' कहलाते हैं; जैसे—आ की मात्रा (चिह्न), 'कार्य' इस शब्द के 'का' में (ा) है।

संयोग—जहाँ दो या अधिक व्यंजन बीच में बिना किसी स्वर के व्यवधान में मिलते हैं उसे 'संयोग' कहते हैं। जैसे—कृष्ण के 'ष्ण' में ष् और ण का संयोग है। संयोग के बाद वर्ण को संयुक्त वर्ण कहा जाता है।

समास (Compound)—दो या दो से अधिक शब्दों का एक पद बनाना 'समास' कहलाता है। जैसे—रामः च लक्ष्मणः च—रामलक्ष्मणौ।

ह्रस्व—अ, इ, उ, ऋ, लृ ह्रस्व स्वर हैं, इनके उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है।

दीर्घ—आ, ई, ऊ, ॠ—ये दीर्घ स्वर हैं। इन वर्णों के उच्चारण में दो मात्रा का काल लगता है। अतः इनकी दीर्घसंज्ञा है। [अ+आ=आ, इ+इ=ई, उ+उ=ऊ, ऋ+ऋ=ॠ (दीर्घ 'लृ' नहीं होता)।]

गुण—ए, ओ, अर्—ये 'गुण' कहलाते हैं। ये क्रमशः अ+इ (ए), अ+उ (ओ), अ+ऋ (अर्) इस प्रकार बनते हैं। जैसे—देव+इन्द्रः=देवेन्द्रः।

तस्य + उपकार: = तस्योपकार: । सप्त + ऋषि: = सप्तर्षि: ।

वृद्धि—ऐ, औ और आर् को 'वृद्धि' कहते हैं। जैसे—तव + औषधि: = तवौषधि: । मम + औदार्यम् = ममौदार्यम् । हृ + य = ऋ को 'आर्' वृद्धि—हार्यम् ।

सवर्णसंज्ञा—जिन वर्णों का उच्चारण-स्थान तथा प्रयत्न समान हो, उन्हें सवर्ण कहते हैं । जैसे अ, आ सवर्ण हैं; इ, ई सवर्ण हैं, क, ख सवर्ण हैं ।

पद—सुबन्त और तिङन्त शब्द 'पद' कहलाते हैं। केवल पद कहने से दोनों में से किसीका भी बोध हो सकता है ।

पद दो प्रकार के हैं—

(१) सुबन्त—राम आदि शब्दों के साथ जब 'सु, औ, जस्' इत्यादि प्रत्यय लग जाने पर 'राम:, रामौ, रामा:' आदि जो शब्द बनते हैं उन्हें 'सुबन्त' कहते हैं ।

(२) तिङन्त—भू आदि धातुओं के साथ 'ति, त:, अन्ति' आदि प्रत्यय जुड़ने पर 'भवति, भवत:, भवन्ति' आदि जो रूप बनते हैं । वे 'तिङन्त' कहलाते हैं ।

पदान्त—पद के अन्तिम वर्ण को 'पदान्त' कहते हैं, जैसे राम में 'म' में 'अ' पदान्त है । गच्छति में 'ति' में 'इ' पदान्त है ।

संज्ञा (Noun)—किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव आदि के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं । जैसे—'राम:' यह किसी व्यक्ति का नाम है ।

सर्वनाम (Pronoun)—जो शब्द संज्ञा-शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, वे 'सर्वनाम' कहे जाते हैं । जैसे—स:, य:, क:, अयम्, एषा, अहम्, त्वम् इत्यादि ।

विशेषण (Adjective)—जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की विशेषता प्रकट करें, वे विशेषण कहलाते हैं। जैसे—'स्वस्थ: बाल:' इसमें 'स्वस्थ' शब्द 'बाल' की विशेषता वतलाता है, अत: यह विशेषण है ।

प्रातिपदिक—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और संख्यावाची—ये शब्द विभक्तियाँ (सु, औ, अस् आदि) लगने से पहले 'प्रातिपदिक' कहलाते हैं। जैसे—राम, पितृ, लता, ज्ञान, राजन्, युष्मद्, किम्, सुन्दर, एक, द्वि—इत्यादि ।

क्रिया (Verb)—जो पद किसी कार्य-व्यापार का होना प्रकट करे, उसे 'क्रिया' कहते हैं । जैसे—'बाल: गच्छति' इसमें 'गच्छति' पद से जाने की क्रिया प्रकट होती है ।

धातु (Root)—क्रिया के मूल रूप को 'धातु' कहते हैं । जैसे—'भवति' में मूल रूप 'भू' धातु है । करोति में 'कृ' धातु है ।

अव्यय (Indeclinable words) जो शब्द सदा ही एक रूप में रहें, जिनमें लिंग, विभक्ति, वचन आदि के कारण परिवर्तन न हो, उन्हें 'अव्यय' कहते हैं । जैसे—कुत्र, तत्र, विना इत्यादि ।

स्थान (The organ or place of utterance of a letter)—वर्णों के कण्ठ, तालु आदि उच्चारण-स्थान व्याकरण में 'स्थान' नाम से कहे जाते हैं ।

प्रयत्न (Effort in uttering of a letter)—वर्णों का उच्चारण करते समय

जिह्वा से जो व्यापार या यत्न होता है, उसे 'प्रयत्न' कहते हैं।

आगम—किसी वर्ण के साथ अन्य वर्ण का मित्रवत् आकर जुड़ना 'आगम' कहलाता है। जैसे—लक्ष्मी+छाया=लक्ष्मीच्छाया। यहाँ 'च्' का आगम हुआ है।

आदेश—किसी वर्ण को हटाकर उसके स्थान पर दूसरे वर्ण का शत्रुवत् आना 'आदेश' कहलाता है। जैसे—सुधी+उपास्य: में इ के स्थान पर य् आदेश होकर 'सुध्युपाय:' रूप बन गया।

पूर्वरूप—किसी वर्ण का अपने से पहले वर्ण में मिलना 'पूर्वरूप' कहा जाता है। जैसे—

'प्रभो+अत्र=प्रभोऽत्र' यहाँ अत्र का 'अ' ओ में मिलकर लुप्त हो गया (छिप गया)। इसका उच्चारण नहीं होगा। यहाँ 'अ' था, इसे प्रकट करने के लिए 'ऽ' चिह्न लगा दिया जाता है।

पररूप—जहाँ पूर्व पद का अन्तिम वर्ण अगले शब्द के आदि के वर्ण के समान होकर उसमें मिल जाये उसे 'पररूप' कहते हैं। जैसे—कण्ठोष्ठ में कण्ठ के ठ का अ ओष्ठ के ओ में मिलकर पररूप हो गया है।

सम्प्रसारण—जहाँ य् को इ, व् को उ, र् को ऋ का आदेश हो जाता है, उसे 'सम्प्रसारण' कहते हैं। जैसे—वच्+क्त=उक्त। यहाँ व् को उ संप्रसारण हुआ है।

उपधा—किसी शब्द के अन्तिम अक्षर से पूर्ववर्ण को उपधा कहते हैं। जैसे—'महत्' शब्द से त् से पूर्व ह का 'अ' राजन् में ज में 'अ' उपधा-संज्ञक हैं।

उपसर्ग—व्याकरण शास्त्र में कुछ ऐसे अव्यय (शब्दांश) हैं जो संज्ञादि शब्दों तथा क्रिया के पूर्व जुड़कर अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं उन्हें उपसर्ग कहते हैं। उपसर्ग ये हैं—प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आ (ङ्), नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप।

कारक—क्रिया को आधार बनाकर संज्ञादि शब्दों के प्रयोग को कारक कहते हैं। ये छ: हैं—कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण।

विभक्ति—संज्ञादि शब्दों के प्रयोगों को विभक्त करने वाली पद्धति को विभक्ति: कहते हैं। जैसे—प्रथमा, द्वितीया आदि सात।

उपपदविभक्ति—किसी अव्यय, संज्ञा अथवा धातु आदि के कारण लगने वाली विशेष विभक्ति को उपपद विभक्ति कहते हैं। जैसे—रामं विना सीता दु:खिताऽऽसीत्। इस वाक्य में विना के योग में रामम् में द्वितीया विभक्ति है।

संधि—व्याकरण शास्त्र में, वर्णों के मेल के नियमों के अनुसार होने वाले परिवर्तन (विकार—changes) को सन्धि कहते हैं। जैसे—विद्या+आलय:=विद्यालय: (दीर्घ सन्धि)।

संहिता—वर्णों की अत्यन्त समीपता से होने वाले मेल को 'संहिता' कहते हैं। जैसे—स्+ऊ+र्+य्+अ: (इन सबके मेल से—संहिता से) सूर्य: शब्द बना है।

अनेक विद्वान् 'संधि' को 'संहिता' भी कहते हैं।

'रामो गच्छति' इन दो पदों में रामः के विसर्ग को ग परे रहते उ (ओ) होकर 'रामो गच्छति' बना। यहाँ दो पदों में संधि करके जो संहिता (परस्पर वर्णों का मेल) हुई है वह वाक्य में वक्ता की इच्छा पर निर्भर करती है कि वह वहाँ सन्धि करे अथवा न करे। जैसे—'रामः गच्छति' भी कह सकता है किन्तु एक पद में, धातु और उपसर्ग के संयुक्त होने पर तथा समस्त पदों में वह संहिता (संधि द्वारा मेल) नित्य होती है। जैसे—राम+इन=रामेण (एकपद में), आ+इच्छत्=ऐच्छत् (उपसर्ग युक्त होने पर), युधिष्ठिरश्च अर्जुनश्च=युधिष्ठिरार्जुनौ (समास में)।

प्रकृति—किसी शब्द या धातु के मूल रूप को प्रकृति कहते हैं। इन्हीं के साथ प्रत्यय जुड़ने पर पद बन जाता है। जैसे—मोहनः गच्छति। यहाँ 'मोहन' शब्द प्रकृति है और गच्छति में 'गम्' धातु प्रकृति है।

प्रगृह्य संज्ञा—(क) द्विवचनान्त ईकारान्त, ऊकारान्त और एकारान्त शब्दों की प्रगृह्य संज्ञा होती है। जैसे—कवी, साधू, लते।

(ख) अदस् शब्द के बहुवचनान्त अमी, अमू आदि की भी प्रगृह्य संज्ञा होती है।

प्रकृतिभाव—ऊपर जिनकी प्रगृह्य संज्ञा बताई गई है उनमें सन्धि का न होना 'प्रकृतिभाव' कहलाता है। जैसे—कवी आगच्छतः, साधू उपविशतः, लते वर्धेते। अमी इच्छन्ति। अमू आश्रिताः महिलाः न सन्ति। इत्यादि।

प्रत्याहार—(सक्षिप्त कथन)—इनका आधार १४ सूत्र हैं।

अ इ उ ण्, ऋ लृ क्, ए ओ ङ्, ऐ औ च्, ह य व र ट्, ल ण्, ञ म ङ ण न म्, झ भ ञ्, घ ढ ध ष्, ज ब ग ड द श्, ख फ छ ठ थ च ट ल व्, क प य्, श ष स र्, हल्।

व्याकरण में जहां संक्षेप में अक्षरों का निर्देश करना होता है वहाँ सब अक्षरों को पृथक्-पृथक् न कहकर प्रत्याहार (संक्षेप) से कहा जाता है। जैसे यदि अण् कहा जाए तो 'अ इ उ' अक्षरों का ग्रहण होगा और 'अक्' कहें तो 'अ इ उ ऋ लृ' इनका ग्रहण होगा। प्रत्याहार में स्थित हलन्त वर्णों का ग्रहण नहीं होता। जैसे वर्णों में अण् के ण् को और अक् के क् को नहीं गिना जायेगा। इत्यादि।

अभ्यास

(१) नीचे लिखे में से किन्हीं चार की परिभाषाएँ बताइए—
सवर्ण, प्रकृतिभाव, अव्यय, कारक, समास।

(२) इन पारिभाषिक शब्दों को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए—
प्रकृतिभाव, धातु, विभक्ति, संयोग, अव्यय।

(३) नीचे लिखी परिभाषाओं को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए
संहिता, मात्रा, संयोग, समास।

(४) नीचे लिखे युगल शब्दों में परस्पर अन्तर स्पष्ट कीजिए ।
(क) संयोग और सन्धि। (ख) सन्धि और समास । (ग) सवर्ण और सवर्ग वर्ण । (घ) धातु और क्रिया ।

(५) पूर्वरूप और पररूप में क्या अन्तर है, उदाहरण देकर समझाइए ।

(६) उपपद विभक्ति और विभक्ति में क्या अन्तर है, दोनों के उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए ।

(७) प्रकृति एवं प्रकृतिभाव किसे कहते हैं ।

(८) किम्, भवत् और पञ्चन्—इन शब्दों में उपधा सञ्ज्ञा किन अक्षरों की है ?

(९) देवच्छाया और नार्यागच्छति इन शब्दों में किसमें क्या आदेश और आगम हुआ है ?

तृतीय अध्याय

व्याकरण के पारिभाषिक शब्द (ख)

गण (Groups)—अनेक धातुओं को अपनी-अपनी विशेषताओं के कारण भिन्न-भिन्न दस समूहों में बाँटा गया है। ये समूह 'गण' कहलाते हैं।

विकरण—प्रत्येक गण का अपना कोई न कोई चिह्न होता है जो धातु के साथ जुड़ता है, उसे 'विकरण' कहते हैं।

तिङ्-प्रत्यय—धातुओं से क्रियापद बनाने के लिए उनके साथ प्रयोग में आने वाले प्रत्ययों को 'तिङ् प्रत्यय' कहते हैं. ये भी एकवचन, द्विवचन और बहुवचन और प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष के रूप में विभक्त हैं। जैसे—

ति तः अन्ति, सि थः थ, मि वः मः।

पद—धातुओं के दो पद होते हैं—परस्मैपद, आत्मनेपद। इन दोनों पदों के प्रत्येक काल में भिन्न-भिन्न प्रत्यय होते हैं जो आगे यथास्थान बताये जायेंगे।

कुछ धातु 'परस्मैपदी' और कुछ धातु 'आत्मनेपदी' हैं। इनसे भिन्न कुछ ऐसी भी धातु हैं जिनके साथ परस्मैपदी अथवा आत्मनेपदी प्रत्ययों का इच्छानुसार प्रयोग किया जा सकता है। ये धातु 'उभयपदी' कहलाती हैं।

विकरण के आधार पर धातुओं को निम्नलिखित १० गणों (Groups) में बाँटा गया है।

गण	विकरण	परस्मैपद	आत्मनेपद
१. भ्वादिगण	(अ – विकरण)	भवति	सेवते
२. अदादिगण	(कोई विकरण नहीं)	अत्ति	अधीते
३. जुहोत्यादिगण	(धातु को द्वित्व)	जुहोति	दत्ते
४. दिवादिगण	(य—विकरण)	दीव्यति	जायते
५. स्वादिगण	(नु—विकरण)	सुनोति	वृणुते
६. तुदादिगण	(अ—विकरण)	तुदति	सिञ्चते
७. रुधादिगण	(न—विकरण)	रुणद्धि	भुङ्क्ते
८. तनादिगण	(उ—विकरण)	तनोति	कुरुते
९. क्र्यादिगण	(ना—विकरण)	क्रीणाति	जानीते
१०. चुरादिगण	(अय्—विकरण)	चोरयति	चोरयते

'भू' के समान जिन धातुओं में 'विकरण' लगता है, उनकी गणना भ्वादिगण में और 'चुर्' के समान जिनमें विकरण लगता है, उनकी गणना चुरादिगण में की गई है। इसी तरह प्रत्येक गण की पहली धातु के नाम पर उस गण का नाम रखा गया है।

क्रियाओं की रूप-रचना में काल और अवस्थाओं का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है।

इन्हें 'लकार' कहते हैं और ये दस होते हैं। जैसे—लट् लकार, लृट् लकार आदि। इनमें से ६ तो काल की दृष्टि से और ४ अवस्था की दृष्टि से भिन्न-भिन्न हैं। जैसे—

१.	लट्	वर्तमानकाल	(Present tense)
२.	लिट्	पूर्णभूत	(Past perfect)
३.	लुट्	अनद्यतन भविष्यत् (आज के अतिरिक्त)	(First future)
४.	लृट्	सामान्य भविष्यत्	(Second future)
५.	लेट्	यह वैदिक लकार है। इसका प्रयोग केवल वेद में ही होता है।	
६.	लोट्	आज्ञार्थक	(Imperative mood)
७.	लङ्	अपूर्ण भूत	(Past imperfect)
८.	लिङ्	(विधि, विधान में विधिलिङ् और आशीर्वाद कथन में आशीर्लिङ्)	(Potential and Benedictive mood)
९.	लुङ्	भूत	(Past Perfect)
१०.	लृङ्	हेतुहेतुमद्भूत	(Conditional past tense)

इन दस लकारों में ही धातुओं से रूप-रचना करके क्रियापद बनाये जाते हैं। इनमें से माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक श्रेणी तक के पाठ्यक्रम में प्रायः पाँच लकार ही नियत हैं—

लट्, लृट् लोट्, लङ् और विधिलिङ्। धातुओं की रूप-रचना से सम्बन्ध रखनेवाली कुछ आवश्यक बातें नीचे लिखी जाती हैं:—

१. पुरुष—पुरुषवाचक संज्ञा या सर्वनाम के अनुसार क्रियाएँ भी प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष, उत्तम पुरुष के भेद से तीन भागों में बँटी हैं। कर्त्ता के अनुरूप ही सदा क्रिया का प्रयोग होता है। क्रिया सदा कर्त्ता के आश्रित रहती है। (यदि कर्तृवाच्य हो।)

२. वचन—संस्कृत में तीन वचन हैं।

(१) एकवचन	(Singular Number)
(२) द्विवचन	(Dual Number)
(३) बहुवचन	(Plural Number)

अभ्यास

(१) धातु किसे कहते हैं? क्रियापद और धातु में क्या अन्तर है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(२) गण किसे कहते हैं? गण कितने हैं? उनके नाम लिखिए।

(३) भ्वादिगण, स्वादिगण और क्र्यादिगण में कौन-कौन से विकरण लगते हैं?

(४) लकार कितने हैं? उनमें से आपके पाठ्यक्रम में कितने तथा कौन-कौन से लकार नियत हैं? प्रत्येक के सामने उनका एक-एक उदाहरण लिखिए।

(५) क्रिया में पुरुष कितने हैं? और वे कौन-कौन से हैं? नाम दीजिए।

(६) क्रिया के कितने वचन हैं, उन्हें गिनाइए।

चतुर्थ अध्याय

सन्धि

सन्धि—दो वर्णों के मेल से होनेवाले परिवर्तन को 'सन्धि' कहते हैं। जैसे—गण+ईशः=गणेशः, विद्या+आलयः=विद्यालयः, सत्+जनः=सज्जनः। नरः+वदति=नरो वदति इत्यादि। सन्धि का अवसर दो प्रकार से आता है—शब्द-रचना में, वाक्य में।

(क) शब्द-रचना के समय

जब किसी शब्द की रूप-रचना की जाती है, चाहे सुबन्त हो या तिङन्त, उस समय कई बार सन्धि करने की आवश्यकता पड़ती है। जैसे—

(i) राम+इ=रामे।

(ii) भू+अ+ति=भव्+अ+ति=भवति।

(ख) वाक्य में

दो शब्द जब पास-पास आते हैं, तब पहले शब्द के अन्तिम वर्ण में तथा दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण में अथवा विसर्ग में व्याकरण-नियम से सन्धि हो जाती है। जैसे—नरः+वदति=नरो वदति।

ज्ञातव्य—सन्धि के विषय में निम्नलिखित नियम स्मरण रखें—

एक पद के भिन्न-भिन्न अवयवों में, उपसर्ग और धातु के बीच, और समास हो जाने पर समस्त पदों में सन्धि अवश्य होनी चाहिए। वाक्य के अलग-अलग शब्दों के बीच में सन्धि करना या न करना बोलनेवाले की इच्छा पर निर्भर है कि वह सन्धि करे या न करे।[1] उदाहरण—

एकपद—नै+अकः=नायकः (सन्धि अनिवार्य है)।

उपसर्ग और धातु—नि+अवसत्=न्यवसत् (सन्धि अनिवार्य है)।

समास—नदी+ईशः=नदीशः (सन्धि अनिवार्य है)।

वाक्य में वक्ता की इच्छा से=अशोकः गच्छति, अशोको गच्छति।

सन्धि के प्रकार

सन्धि के तीन मुख्य प्रकार हैं—

(१) स्वर-सन्धि, (२) व्यंजन-सन्धि, (३) विसर्ग-सन्धि।

---

१. संहितैकपदे नित्या, नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे, वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते॥

स्वर-सन्धि (अच्-सन्धि)

जहाँ स्वर के परे स्वर आने पर रूप बदले वहाँ 'स्वर-सन्धि' होती है। जैसे—तव+अपि=तवापि। इति+अपि=इत्यपि। तव+इदम्=तवेदम्। तव+एव=तवैव। दैत्य+अरिः=दैत्यारिः। इति+आदि=इत्यादि।

स्वर-सन्धि के भेद

स्वर-सन्धि के आठ भेद हैं—(१) दीर्घ सन्धि। (२) गुणसन्धि। (३) वृद्धि-सन्धि। (४) यण्सन्धि। (५) अयादिसन्धि। (६) पूर्वरूपसन्धि। (७) पररूप-सन्धि। (८) प्रकृतिभाव (प्रगृह्य संज्ञा)।

(१) दीर्घ सन्धि

[आ, ई, ऊ, ॠ]

अ इ उ ऋ से परे समान स्वर आने पर दोनों के स्थान पर एक दीर्घ स्वर हो जाता है, इसे दीर्घ सन्धि कहते हैं। उदाहरण—

(क) आ—अ+अ=आ। मम+अत्र=ममात्र।
तव+अधिकारः=तवाधिकारः। मृग+अङ्कः+मृगाङ्कः।
अ+आ=आ। देव+आलयः=देवालयः।
तव+आशा=तवाशा। तव+आज्ञया=तवाज्ञया।
तस्य+आज्ञा=तस्याज्ञा। तव+आकारः=तवाकारः।
आ+आ=आ। विद्या+आलयः=विद्यालयः। दया+आनन्दः=दयानन्दः
आ+अ=आ। रमा+अत्र=रमात्र।
सा+अपि=सापि। विद्या+अर्थी=विद्यार्थी।

(ख) ई—इ+इ=ई। मुनि+इन्द्रः=मुनीन्द्रः। रवि+इन्द्रः=रवीन्द्रः।
इ+ई=ई। मुनि+ईशः=मुनीशः। हरि+ईशः=हरीशः।
ई+इ=ई। मही+इन्द्रः=महीन्द्रः। लक्ष्मी+इव=लक्ष्मीव।
ई+ई=ई। लक्ष्मी+ईशः=लक्ष्मीशः। नदी+ईशः=नदीशः।

(ग) ऊ—उ+उ=ऊ। साधु+उक्तम्=साधूक्तम्।
भानु+उदयः=भानूदयः। सु+उक्तिः=सूक्तिः।
ऊ+उ=ऊ। वधू+उक्तिः=वधूक्तिः।
उ+ऊ=ऊ। सिन्धु+ऊर्मिः=सिन्धूर्मिः।

(घ) ॠ—ऋ+ऋ=ॠ। पितृ+ऋणम्=पितॄणम्।
मातृ+ऋणम्=मातॄणम्। होतृ+ऋद्धिः=होतॄद्धिः।

सन्धि के अपवाद

कहीं-कहीं दीर्घसन्धि प्राप्त होने पर भी नहीं होती। ऐसे रूप अपवाद (Exceptions) ही हैं। जैसे—

मार्त+अण्डः=मार्तण्डः। कुल+अटा=कुलटा। सीम+अन्तः=सीमन्तः।

शक+अन्धु:=शकन्धु: इत्यादि ।

यहाँ 'मार्ताण्ड:' आदि रूप नहीं हुए। अपितु अ का पररूप हो गया है।

[वार्तिक—शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम् ।]

[२] गुण सन्धि

[ए, ओ, अर्, अल्]

(क) अ या आ से आगे जब इ या ई आ जाय तो दोनों के स्थान पर एक 'ए' गुण हो जाता है। उदाहरण—

अ+इ=ए—गज+इन्द्र=गजेन्द्र:। उप+इन्द्र:=उपेन्द्र:।
अ+ई=ए—नर+ईश:=नरेश:। गण+ईश:=गणेश:।
आ+इ=ए—महा+इन्द्र:=महेन्द्र:। तथा+इति—तथेति।
आ+ई=ए—महा+ईश:=महेश:। रमा+ईश:=रमेश:।

(ख) अ या आ से आगे उ या ऊ के आ जाने पर उन दोनों के स्थान पर 'ओ' गुण हो जाता है। उदाहरण—

अ+उ=ओ—हित+उपदेश:=हितोपदेश:। पर+उपकार:=परोपकार:।
उप+उद्घात:=उपोद्घात:। मम+उपकार:=ममोपकार:।
आ+उ=ओ—गंगा+उदकम्=गंगोदकम्।
अ+ऊ=ओ—जल+ऊर्मि:=जलोर्मि:।
आ+ऊ=ओ—गंगा—ऊर्मि:=गंगोर्मि:।

(ग) अ या आ से परे जब कभी ऋ या लृ आते हैं तो उन दोनों के स्थान में क्रमश: अर् और अल् आदेश हो जाते हैं। लृ की सन्धि सामान्यत: प्रयोग में नहीं आती।

उदाहरण—

अ+ऋ=अर्—सप्त+ऋषि:=सप्तर्षि:। देव+ऋषि:=देवर्षि:।
आ+ऋ=अर्—महा+ऋषि:=महर्षि: आदि।
अ+लृ=अल्—तव+लृकार:=तवल्कार: आदि।

अन्य उदाहरण—

राम+इन=रामेण। यमुना+ई=यमुने।
देव+ईश:=देवेश:। कुमुद+ईश:=कुमुदेश:।
चन्द्र+उदय:=चन्द्रोदय:। सूर्य+उदय:=सूर्योदय:।
नील+उत्पलम्=नीलोत्पलम्। महा+उपदेशक:=महोपदेशक:।
नर+इन्द्र:=नरेन्द्र:। मनुज+इन्द्र:=मनुजेन्द्र:। राका+ईश:=राकेश:।
जन+ईश:=जनेश:। पन्नग+ईश:=पन्नगेश:।
उत्तम+उपदेश:=उत्तमोपदेश:। चञ्चल+इन्द्रिय:=चञ्चलेन्द्रिय: आदि।

[३] वृद्धि सन्धि

[ऐ, औ, आर्]

(क) अ या आ से आगे ए या ऐ आ जायें तो दोनों के स्थान में 'ऐ' वृद्धि हो जाती है। उदाहरण—

अ+ए=ऐ—एक+एकम्=एकैकम्।

आ+ए=ऐ—सदा+एव=सदैव। अधुना+एव=अधुनैव।

आ+ऐ=ऐ—सदा+ऐक्यम्=सदैक्यम्।

अ+ऐ=ऐ—तव+ऐक्यम्=तवैक्यम्। मत+ऐक्यम्=मतैक्यम्।

तव+ऐश्वर्यम्=तवैश्वर्यम्। आदि।

(ख) अ या आ से परे ओ या औ हो तो इन दोनों के स्थान पर 'औ' वृद्धि हो जाती है। उदाहरण—

अ+ओ=औ—जन+ओघः+जनौघः।

आ+ओ=औ—गङ्गा+ओघः=गङ्गौघः।

औ+ओ=औ—कृष्ण+औत्सुक्यम्=कृष्णौत्सुक्यम्।

तव+औत्सुक्यम्=तवौत्सुक्यम्।

आ+औ=औ—सदा+औदार्यम्=सदौदार्यम्।

महा+औषधम्=महौषधम् आदि।

अ+ऋ=आर्—प्र+ऋच्छति=प्राच्र्छति। (वास्तव में प्राच्र्छति गुण का अपवाद है)।

[४] यण सन्धि

[इ को य्, उ को व्, ऋ को र्, लृ को ल्]

(क) इ या ई से आगे असमान स्वर आ जाय तो इ के स्थान पर 'य्' यण् हो जाता है। उदाहरण—

प्रति+एकम् (इ+ए)=प्रत्येकम्। प्रति+अंगम् (इ+अ)=प्रत्यंगम्।

नदी+आगमः (ई+आ) नद्यागमः। यदि+अपि (इ+अ)=यद्यपि।

नदी+अम्बु (ई+अ) नद्यम्बु। नारी+आश्रमः=नार्याश्रमः आदि।

(ख) उ या ऊ से आगे कोई असमान स्वर आ जाय तो उ या ऊ के स्थान पर 'व्' यण् हो जाता है। उदाहरण—

सु+आगतम् (उ+आ) स्वागतम्। प्रभु+आज्ञा (उ+आ)=प्रभ्वाज्ञा।

मधु+अरिः (उ+अ)=मध्वरिः।

(ग) ऋ या लृ के आगे कोई असमान स्वर आ जाय तो ऋ के स्थान पर र् और लृ के स्थान पर ल् यण् हो जाता है। उदाहरण—

मातृ+अनुज्ञा (ऋ+अ)=मात्रनुज्ञा (माँ की अनुमति)। भ्रातृ+अंशः (ऋ+अ)=भ्रात्रंशः (भाई का हिस्सा)। पितृ+इच्छा (ऋ+इ)=

पित्रिच्छा (पिता की इच्छा)। लृ+आकृतिः (लृ+आ)=लाकृतिः (लृ का आकार) इत्यादि।

[५] अयादि सन्धि

[अय्, आय्, अव्, आव्]

(क) 'ए' से परे यदि कोई स्वर आ जाय तो ए के स्थान में 'अय्' हो जाता है। इसे अयादि सन्धि कहते हैं। उदाहरण—
ने+अनम् (ए+अ)=नयनम्। चे+अनम् (ए+अ) चयनम्।
जे+अति (ए+अ)=जयति। हरे+ए (ए+ए)=हरये।
ने+अति (ए+अ)=नयति, आदि।

(ख) 'ऐ' से परे कोई स्वर आ जाय तो ऐ के स्थान में 'आय्' आदेश हो जाता है। उदाहरण—
नै+अकः (ऐ+अ)=नायकः। गै+अकः (ऐ+अ)=गायकः।
रै+ए (ऐ+ए)—राये, इत्यादि।

(ग) 'ओ' से परे कोई स्वर आ जाय तो ओ के स्थान पर 'अव्' हो जाता है। उदाहरण—
भो+अति (ए+अ)=भवति। विष्णो+ए (ओ+ए)=विष्णवे।
साधो+ए (ओ+ए)=साधवे, इत्यादि।

(घ) 'औ' से परे कोई स्वर आ जाय तो इसके स्थान पर 'आव्' हो जाता है। उदाहरण—
पौ+अकः (औ+अ)=पावकः। लौ+अकः (औ+अ)—लावकः।
नौ+इकः (औ+इ)=नाविकः। नौ+ए (औ+ए)=नावे। गौ+औ (अ+औ)=गावौ, नावौ। तौ+ऊचतुः (औ+ऊ)=तावूचतुः, इत्यादि।

विशेष—पदान्त 'ए, ओ' के स्थान पर हुए अय्, अव् के य् और व् का विकल्प से लोप हो जाता है। जैसे—हरे+एहि=हरयेहि, हर एहि। विष्णो+आगच्छ=विष्णवागच्छ, विष्ण आगच्छ।

[६] पूर्वरूप सन्धि

[अपवाद]

(क) पदान्त 'ए' या 'ओ' से आगे यदि ह्रस्व 'अ' आ जाय तो अ पूर्वरूप हो जाता है। अर्थात् वह अ ए ओ में अपना रूप विलीन कर देता है। उदाहरण—
हरे+अत्र (ए+अ)=हरेऽत्र। लते+अत्र (ए+अ)=लतेऽत्र। विष्णो+अव (ओ+अ)=विष्णोऽव। प्रभो+अत्र (ओ+अ)=प्रभोऽत्र। स्थाने+अत्र (ए+अ)=स्थानेऽत्र।

ज्ञातव्य—अयादि सन्धि नियम से हरे+अत्र=हरयत्र आदि रूप नहीं बने। अपितु अपवाद स्वरूप इस पूर्वरूप सन्धि नियम से उक्त रूपों में अ पूर्वरूप हो गया है।

[७] पररूप सन्धि

(ख) यदि उपसर्ग के अ से परे तथा सूप, शुद्ध, दन्त, कण्ठ आदि शब्दों से परे ए अथवा ओ आ जाएँ तो उनका पररूप हो जाता है। उदाहरण—

प्र + एजते (अ + ए) = प्रेजते। उप + ओषति (अ + ओ) = उपोषति। सूप + ओदनम् (अ + ओ) = सूपोदनम्। शुद्ध + ओदनः—शुद्धोदनः। दन्त + ओष्ठम् = दन्तोष्ठम्। कण्ठ + ओष्ठम् = कण्ठोष्ठम्।

ज्ञातव्य—उक्त 'प्रेजते' आदि में वृद्धि न होकर अपवाद स्वरूप पररूप सन्धि हुई है।

[८] प्रकृतिभाव (प्रगृह्य संज्ञा)

प्रकृतिभाव या प्रगृह्य का अर्थ है सन्धि करने का निषेध करना। अर्थात् संधि-योग्य वर्णों में संधि न करके उनका प्रकृतिभाव (ज्यों का त्यों) बनाए रखना।

(क) द्विवचनान्त ईकारान्त, ऊकारान्त या एकारान्त शब्दों से आगे कोई स्वर आ जाय तो उनमें सन्धि नहीं होती। उदाहरण—

हरी + आगतौ (ई + आ) यहाँ ई को य् (यण्) होना चाहिए था; परन्तु द्विवचनान्त होने के कारण नहीं हुआ और हरी + आगतौ ऐसे का ऐसा ही रह गया। इसी प्रकार धेनू + आगच्छतः और लते + असिचन् इनमें भी क्रमशः यण् और अयादि संधि नहीं हुई।

(ख) अदस् (वह) शब्द सम्बन्धी ई या ऊ से आगे भी स्वर आने पर प्रकृतिभाव हो जाता है। उदाहरण—

अमी + अग्नयः (ई + अ) = अमी अग्नयः। अमी + अश्वाः (ई + अ) = अमी अश्वाः। अमू + आसाते (ऊ + आ) = अमू आसाते। अमू + अश्वौ = अमू अश्वौ।

(ग) ओकारान्त अव्यय से परे स्वर होने पर सन्धि नहीं होती। उदाहरण—

अहो + ईशाः = अहो ईशाः।

(घ) दूर से बुलाने पर भी स्वर प्लुत हो जाता है और प्लुत हो जाने से उसको प्रकृतिभाव हो जाता है अर्थात् सन्धि नहीं होती। उदाहरण—

देव + आगच्छ = देव३ आगच्छ। (दीर्घ सन्धि नहीं हुई)।

कृष्ण + आयाहि = कृष्ण३ आयाहि आदि। (यहाँ भी दीर्घ सन्धि नहीं हुई)।

अभ्यास

(१) सन्धि किसे कहते हैं?

(२) स्वर-सन्धि का क्या तात्पर्य है? यण्-सन्धि अथवा गुण-सन्धि के नियम लिखकर दो-दो उदाहरण समझाकर लिखिए।

(३) दीर्घ संधि के पाँच उदाहरण लिखिए।

(४) अयादि सन्धि के पाँच उदाहरण लिखिए।

(५) पूर्वरूप सन्धि कहाँ-कहाँ होती है? दो उदाहरण दीजिए।

(६) प्रकृतिभाव की परिभाषा लिखकर दो उदाहरण दीजिए।

(७) सन्धि कहाँ-कहाँ नित्य होती है ? वाक्य में सन्धि करना अनिवार्य है या नहीं ?

(८) निम्नलिखित में सन्धिविच्छेद करके सन्धि का नाम भी लिखिए—
नयनम्, भवनम्, प्रत्येकम्, नायकः, शयनम्, पवनः, स्वागतम्, प्रम्वाज्ञा, पावकः, परमौषधिः, इत्यादि, नाविकः, जयः, विष्णवे, भवति, लावकः, देवैश्वर्यम्, स्थलेऽत्र, कृष्णौत्कण्ठ्यम्, तवोपालम्भः, कवीन्द्रः, भुजगेशः, जलौघः, देवर्षयः, यद्यपि, रावणारिः, त्रिपुरारिः, महात्मा, पूर्णेन्दुः, राजाज्ञा, हितोपदेशः, हिमालयः, हरेऽव, विभोऽव, एकैकम् ।

(९) साधू आगतौ, अमी ईशाः, अमू आसाते—इनमें सन्धि न होने का कारण बताइए ।

(१०) निम्नलिखित पदों में सन्धि कीजिए—
प्रभो+अत्र, सूर्य+उदयः, देव+ऐश्वर्यम्, रमा+ईशः, रमा+आगच्छत्, गंगा+ओघः, विष्णो+ए, चे+अनम्, कपि+ईशः, लतायै+अयम्, मधु+अस्ति, नै+अकः, गुरौ+आगते, नील+उत्पलम्, महा+आशयः वधू+उद्यमः, तथा+एव, सदा+एव, यदि+अपि, मति+अनुसारम्, नदी+अम्बुः, मुनी+इमौ, अमी+उपायाः, देव+ऋषिः, महा+ऋषिः, इत्यादि ।

(११) निम्नलिखित पदों में सन्धिविच्छेद करिए, सन्धि का नाम भी बताइये—
केनापि । इत्युवाच । इत्यवुध्यत । आसाद्योचुः । श्रुत्वैतत् । किमप्यस्ति । राजाज्ञा । ममाग्रतः । अन्ततश्चोत्तरम् । प्रतन्वेव । नृपेणाकारितः । नोपायुज्यत । सैवापि । कुत्रैतत् । कुत्रापि । परेणोत्पादिते ।

स्वर-सन्धि के मुख्य सूत्र—
(१) अकः सवर्णे दीर्घः । (२) आद्गुणः । (३) वृद्धिरेचि । (४) इको यणचि । (५) एचोऽयवायावः । (६) एङः पदान्तादति । (७) एङि पररूपम् । (८) ईदूदेद्द्विवचनम् प्रगृह्यम् । (९) अदसो मात् ।

पंचम अध्याय

व्यंजन-सन्धि या हल्-सन्धि

सब व्यंजन 'हल्' कहलाते हैं। जब किसी व्यंजन (हल्) से परे कोई स्वर या व्यंजन आ जाता है और दोनों के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे 'व्यंजन-सन्धि' या 'हल्-सन्धि' कहते हैं। उदाहरण—

सत् + विचार: (त् को द्) = सद्विचार:। सत् + आचार: (त् को द्) = सदाचार:। अप् + जम् (प् को ब्) = अब्जम्। दूरात् + आगत: (त् को द्) दूरादागत: इत्यादि।

१. स् को श् और तवर्ग को चवर्ग—'स्' और तवर्ग को उसके पहले या पीछे 'श्' या चवर्ग होने पर क्रमशः 'स्' को 'श्' को और तवर्ग को चवर्ग हो जाता है।

उदाहरण—

रामस् + शेते = रामश्शेते।
बालस् + चिनोति = बालश्चिनोति।
सत् + चित् = सच्चित्।
सत् + चरित्रम् = सच्चरित्रम्।
तत् + छत्रम् = तच्छत्रम्।
बृहत् + झष: = बृहज्झष:।

मनस् + शकुन्तलाया: = मनश्शकुन्तलाया:।
एतत् + छत्रम् = एतच्छत्रम्।
तान् + जयति = ताञ्जयति।
यज् + न: = यज्ञ: (यहाँ न् को ञ् हुआ) है।
राज् + न: = राज्ञ:। („ „ „ „ „ „)।
सरित् + झंकार: = सरिज्झंकार:।

२. स् को ष् और तवर्ग को टवर्ग—यदि 'स्' और तवर्ग के आगे या पीछे 'ष्' या टवर्ग आ जाय तो क्रम से 'स्' को 'ष्' और तवर्ग को टवर्ग हो जाता है।

उदाहरण—

रामस् + षष्ठ: (स् + ष) = रामष्षष्ठ:। तैस् + षड्भि: (स् + ष्) = तैष्षड्भि:।
मनस् + टीकते (स् + ट) = मनष्टीकते। तस्यास् + टिप्पणी (स् + ट) = तस्याष्टिप्पणी।

धनुस् + टंकार: (स् + ट) = धनुष्टंकार:।
तत् + टीका (त् + ट) = तट्टीका। तत् + टिप्पणी = तट्टिप्पणी।
महद् + डिण्डिम: (द् + ड) = महड्डिण्डिम:।

इसी प्रकार यदि 'ष्' से आगे तवर्ग आ जाय तो भी टवर्ग हो जाता है।

उदाहरण--

इष् + त: (ष् + त) = इष्ट:।
आकृष् + त: (ष् + त) = आकृष्ट:।

सर्पिष् + तमम् (ष् + त) = सर्पिष्टमम्।
षष् + थ: (ष् + थ) = षष्ठ: इत्यादि।

३. वर्गों के पहले वर्ण को पाँचवाँ—वर्गों के प्रथम अक्षर—क् च् ट् त् प्—पदान्त में आ जायें और वर्गों का तीसरा, चौथा, अन्त:स्थ वर्ण या स्वर वर्ण आगे हों तो उसके स्थान में उसी वर्ग का तीसरा अक्षर हो जाता है। उदाहरण—

वाक्+ईशः (क्+ई)=वागीशः । वाक्+दानम् (क्+द)=वाग्दानम् ।
सम्राट्+गच्छति (ट्+ग)= सम्राड् गच्छति । परिव्राट्+अपश्यत् (ट्+अ)= परिव्राडपश्यत्
महत्+दुःखम् (त्+द)=महद्दुःखम् । अप्+जम् (प्+ज)=अब्जम्
अच्+आदेशः (च्+आ)=अजादेशः । चित्+रूपम् (त्+र)=चिद्रूपम् इत्यादि ।

४. वर्गों के पहले वर्ण को पाँचवाँ—क् ट् त् प् को ङ् ण् न् म् परे रहते विकल्प से ङ् ण् न् म् हो जाते हैं । उदाहरण—

(विकल्प पक्ष में नंबर तीन नियम से तृतीयाक्षर भी हो जाता है ।)

पृथक्+नास्ति=प्रथङ्नास्ति, पृथग्नास्ति ।

दिक्+नागः=दिङ्नागः, दिग्नागः ।

षट्+मुखः=षण्मुखः, षड् मुखः ।

जगत्+नाथः=जगन्नाथः, जगद्नाथः ।

अपवाद—'मय' और 'मात्र' प्रत्यय परे रहते क् ट् त् प् को ङ् ण् न् म् नित्य ही होगा । उदाहरण—

चित्+मयम्=चिन्मयम् । तत्+मात्रम्=तन्मात्रम् ।

तत्+मयम्=तन्मयम् । एतत्+मात्रम्=एतन्मात्रम् ।

वाक्+मात्रम्=वाङ्मात्रम् ।

५. वर्गों के चौथे वर्ण को तीसरा—वर्गों के प्रथम चार-चार अक्षरों से आगे यदि झ्, भ्, घ्, ढ् ध् (वर्गों के चतुर्थाक्षर) आ जाएँ तो उन्हें क्रमशः ज्, ब्, ग्, ड् द् (वर्गों के तृतीयाक्षर) हो जाते हैं । उदाहरण—

लभ्+धः (भ्+ध)=लब्धः । क्रुध्+धः (ध्+धः)=क्रुद्धः ।
सुध्+धयुपास्यः (ध्+ध) =सुद्ध्युपास्यः । मध्+ध्वरिः (ध्+ध्)=मद्ध्वरिः ।

६. वर्गों के तृतीय, चतुर्थ वर्णों का प्रथमाक्षर—यदि वर्गों के तृतीय, चतुर्थ अक्षर से आगे वर्गों के प्रथम, द्वितीय अक्षर या श् ष् स् आ जायें तो उन्हें वर्गों के प्रथमाक्षर क्, च्, ट्, त्, प् हो जाते हैं । उदाहरण—

जैसे—सुहृद्+सु=सुहृत्सु । सद्+त्वम्=सत्त्वम् ।

आपद्+सु=आपत्सु । क्षुद्+पिपासा=क्षुत्पिपासा ।

क्रोध्+स्यते=क्रोत्स्यते । योध्+स्यते=योत्स्यते ।

७ त् को ल्—तवर्ग से आगे जब कभी ल् आ जाता है तो वह त् परसवर्णी (अर्थात् ल्) हो जाता है । उदाहरण—

तत्+लयः (त्+ल)=तल्लयः । तत्+लीनः (त्+ल)=तल्लीनः ।

एतत्+लंघनम् (त्+ल)=एतल्लंघनम् । इत्यादि ।

न् को सानुनासिक लँ—यदि न् को ल् होगा तो वह अनुनासिक सहित होगा ।

भवान्+लिखति=भवाँल्लिखति।

८. **म् को अनुस्वार**—यदि किसी पद के अन्त में म् वर्ण हो और उससे आगे कोई हल् अक्षर आ जाय तो उस म् के स्थान में अनुस्वार हो जाता है। उदाहरण—हरिम्+वन्दे (म्+व)=हरिं वन्दे। शान्तम्+पापम् (म्+प)=शान्तं पापम्। ग्रामम्+गच्छति (म्+ग)=ग्रामं गच्छति इत्यादि।

न् और म् को अनुस्वार- न् और म् यदि पदान्त के न भी हों तो झल् (झ्, भ आदि) परे रहते उन्हें अनुस्वार हो जाता है। उदाहरण—

यशान्+सि (न्+स) यशांसि। मनान्+सि (न्+स)=मनांसि।

आक्रम्+स्यते (म्+स्)=आक्रंस्यते।

१०. **अनुस्वार को पंचम वर्ण**—अपदान्त अनुस्वार को परले वर्ण के वर्ग का पाँचवाँ अक्षर होता है। उदाहरण

अम्+कितः (म्+क) अङ्कितः। सम्+चितः (म्+च)=सञ्चितः।

कुम्+ठितः (म्+ठ)=कुण्ठितः। शाम्+तः (म्+त)=शान्तः।

गुम्+फितः (म्+फ)=गुम्फितः।

११. **अनुस्वार को विकल्प से पंचम वर्ण**—पद के अन्तिम म् को अनुस्वार तो होता ही है, उसे विकल्प से परसवर्ण भी हो जाता है अर्थात् परले वर्ण के वर्ग का पञ्चम अक्षर विकल्प से हो जाता है। उदाहरण—

त्वम्+करोषि=त्वं करोषि, त्वङ्करोषि।

पुष्पम्+चिनोति=पुष्पं चिनोति, पुष्पञ्चिनोति।

अपवाद—यदि म् से राज् शब्द आगे हो तो अनुस्वार नहीं होता, म् का म् ही रह जाता है। उदाहरण—

सम्+राट् (म्+र)+सम्राट्। सम्+राज्ञी=सम्राज्ञी आदि।

१२. **ह् को घ्**—वर्गों के पहले चारों अक्षरों से परे यदि ह् आ जाय तो उसे पूर्वसवर्ण हो जाता है अर्थात् पहले वर्ण के वर्ग का चौथा अक्षर विकल्प से हो जाता है। उदाहरण—

वाग्+हरिः (ग्+ह)=वाग्घरिः, पृथग्+हस्ते (ग्+ह्)=पृथग्घस्ते

पूर्वसवर्ण के अभाव में वाग्हरिः, पृथग्हस्ते—ऐसे रूप रहेंगे।

१३. **अनुनासिक वर्णों को द्वित्व**—ह्रस्व वर्ण से आगे ङ्, ण्, न् हों और उनके आगे स्वर आ जाय तो वहाँ क्रम से ङ्, ण्, न् का आगम होता है, अर्थात् वे वर्ण द्वित्व हो जाते हैं। उदाहरण—

प्रत्यङ्+आत्मा (ङ्+आ) प्रत्यङ्ङात्मा। सुगण्+ईशः (ण्+ई)=सुगण्णीशः।

सन्+अच्युतः (न्+अ)=सन्नच्युतः। एतस्मिन्+अन्तरे (न्+अ)=एतस्मिन्नन्तरे।

पिबन्+इव (न्+इ)=पिबन्निव इत्यादि।

१४. **त् को च् और श् को छ्**—यदि त् से परे श हो तो त् को च् होता है। और श को छ विकल्प से हो जाता है। उदाहरण—

एतत्+श्रुत्वा=एतच्छ्रुत्वा, एतच्श्रुत्वा।
तत्+शिवः=तच्छिवः, तच्शिवः।
एतत्+श्रूयते=एतच्छ्रूयते, एतच्श्रूयते।

१५. र् का लोप और दीर्घ—र् से परे र होने पर पहले र् का लोप हो जाता है और र् से पूर्व ह्रस्व स्वर हो तो उसे दीर्घ हो जाता है। उदाहरण—
निर्+रस=नीरसः। निर्+रोगः=नीरोगः। पुनर्+रमते=पुनारमते। अन्तर्+राष्ट्रियः=अन्ताराष्ट्रियः। विधुर्+राजते=विधू राजते।

१६. न् को श्, ष् स्—(क) पदान्त न् से परे च छ हों तो न् को श् होता है और पूर्व अक्षर पर अनुनासिक अथवा अनुस्वार हो जाता है। उदाहरण—
कस्मिन्+चित्=कस्मिंश्चित्, कस्मिँश्चित्।
तस्मिन्+चक्रे=तस्मिंश्चक्रे, तस्मिँश्चक्रे।

(ख) पदान्त न् से परे ट्, ठ् हों तो न को ष् हो जाता है और पूर्वाक्षर पर अनुस्वार या अनुनासिक हो जाता है। उदाहरण—
महान्+ठाकुरः, महांष्ठाकुरः, महाँष्ठाकुरः।

(ग) पदान्त म् अथवा न् से परे क अथवा त थ हों तो न् को स् और पूर्वाक्षर पर अनुस्वार या अनुनासिक होता है। उदाहरण—
पुम्+कोकिल=पुंस्कोकिलः, पुँस्कोकिलः।
भवान्+तरति=भवांस्तरति, भवाँस्तरति।
कान्+कान्=कांस्कान्, काँस्कान्।
तान्+तान्=तांस्तान्, ताँस्तान्।

१७, च् का आगम—ह्रस्व स्वर से परे यदि छ हो तो छ से पूर्व च् का आगम हो जाता है। उदाहरण—
शिव+छाया (अ+छ)=शिवच्छाया। वृक्ष+छाया=वृक्ष+च्छाया।

१८. च् का आगम (विकल्प से)—पदान्त दीर्घ स्वर से परे छ् के साथ च् का आगम विकल्प से होता है। उदाहरण—
नदी+छाया (ई+छ)=लताच्छाया, लताछाया।
लक्ष्मी+छाया (ई+छ)=लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया।

अभ्यास

(१) हल्सन्धि (व्यंजनसन्धि) की परिभाषा लिखकर उसके कोई चार उदाहरण दीजिए।
(२) क्या पदान्त म् को अनुस्वार हो सकता है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(३) निम्नलिखित में सन्धि-विच्छेद कीजिए—
रामश्चिनोति, सच्चिदानन्दः, उड्डीयते, चिद्रूपम्, दिग्गजः, मध्वेतत्, क्रुद्ध्यति, तच्छ्लोकेन, मातरं वन्दे, जगन्नाथः, प्रागेव, जगदीशः, यदेव, दिग्घस्ती, तज्जलम्, तल्लीनः, षण्णवतिः, नदीच्छाया, गुम्फितः, सन्नच्युतः तन्मात्रम्, पाठं पठति, विश्वं सृजति, पराङ्मुखः, अस्मिन्नन्तरे, स्मरन्नवदत्, तट्टीका।

(४) निम्नलिखित में सन्धि कीजिए—
वाक्+हरिः, भवत्+मतम्, रामः+सुन्दरः, एतत्+टीका, पितरम्+नमति, पितरम्+वन्दे, दिक्+गजः, अप्+जम्, सम्राट्+आयाति, तत्+लीनः, तत्+लाभः, महान्+लिखति। भवत्+ईशः, यशान्+सि, महत्+छत्रम्, जगत्+शत्रुः, आदि।

व्यंजन सन्धियों के ऊपर १८ नियम दिये हैं। उन नियमों के लिए पाणिनि के ये अठारह सूत्र नियामक हैं।

१. स्तोः श्चुना श्चुः।
२. ष्टुना ष्टुः।
३. झलां जशोऽन्ते।
४. यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा।
५. झलां जश् झशि।
६. खरि च।
७. तोर्लि।
८. मोनुस्वारः।
९. नश्चापदान्तस्य झलि।
१०. अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः।
११. वा पदान्तस्य।
१२. झयो होऽन्यतरस्याम्।
१३. ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्।
१४. शश्छोऽटि।
१५. रोरि।
१६. नश्छव्यप्रशान्।
१७. छे च।
१८. पदान्ताद्वा।

षष्ठ अध्याय

विसर्ग-सन्धि

विसर्ग के परे स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग के स्थान पर जो परिवर्तन होता है उसे विसर्ग-सन्धि कहते हैं। जैसे—केशवः + अगच्छत् = केशवोऽगच्छत्—यहाँ विसर्ग ओ में परिवर्तित हो गया है।

विसर्ग को संस्कृत में विसर्जनीय भी कहते हैं। विसर्ग का उच्चारण (स्वर-रहित) 'ह्' के समान होता है।

१. विसर्ग को श् ष् स्—विसर्ग से परे च् छ् हों तो विसर्ग को श्; ट् ठ् हों तो ष् और त् थ् हों तो विसर्ग को स् हो जाता है। उदाहरण—
हरिः + चञ्चलः = हरिश्चञ्चलः। श्वेतः + छागः = श्वेतश्छागः।
नीताः + टीकाः = नीताष्टीकाः, कृष्ण : + टीकते = कृष्णष्टीकते,
मातुः + ठकार = मातुष्ठकारः।
मानवः + तरति = मानवस्तरति। शिशोः + थकारः = शिशोस्थकारः आदि।

२. विसर्ग को विकल्प से श्, ष् स्—यदि विसर्ग के बाद श् ष् स् में से कोई वर्ण आये तो विसर्ग के स्थान में क्रम से श्, ष्, स् विकल्प से हो जाते हैं। उदाहरण—
रामः + शेते = रामश्शेते अथवा रामः शेते।
मुनिः + शेते = मुनिश्शेते अथवा मुनिः शेते।
अग्निः + षष्ठः = अग्निष्षष्ठः अथवा अग्निः षष्ठः।
मामकः + सारमेयः = मामकस्सारमेयः, मामकः सारमेयः।

अन्य उदाहरण—
वह्निः + शाम्यति = वह्निश्शाम्यति, वह्निः शाम्यति।
देवः + शेते = देवश्शेते, देवः शेते।
दिवसः + षष्ठः = दिवसष्षष्ठः, दिवसः षष्ठः।
अनित्यः + संसारः = अनित्यस्संसारः, अनित्यः संसारः।
प्रथमः + सर्गः = प्रथमस्सर्गः, प्रथमः सर्गः।

३. विसर्ग को ष्—यदि निः, दुः, बहिः, आविः, चतुः, धनुः, हविः, सर्पिः, आयुः आदि शब्दों से परे क ख अथवा प फ हों तो विसर्ग को ष् हो जाता है। उदाहरण—
निः + कारणम् = निष्कारणम्, निः + फलम् = निष्फलम्।
दुः + कृतम् = दुःष्कृतम्, दुः + फलम् = दुष्फलम्।
बहिः + कारः = बहिष्कारः, बहिष्कृतः।

आवि: + कार: = आविष्कार: ।
चतु: + कोण: = चतुष्कोण:, चतु: + पथम् = चतुष्पथम् ।
धनु: + कार्यम् = धनुष्कार्यम्, हवि: + पात्रम् = हविष्पात्रम् ।
सर्पि: + पात्रम् = सर्पिष्पात्रम् ।
आयु: + काम: = आयुष्काम: ।

४. विसर्ग को स्—यदि तिर:, पुर:, नम:, अय:, अप: के बाद क प वर्ण हों तो विसर्ग को स् हो जाता है। उदाहरण—
तिर: + कार: = तिरस्कार:, नम: + कार: = नमस्कार: ।
पुर: + कार: = पुरस्कार:, पुरस्करोति (इत्यादि) ।
अय: + कार: = अयस्कार, अप: + कुशा: = अपस्कुशा: ।
एवम्—अयस्कुम्भ:, अयस्काम:, अयस्कंस:, अयस्पात्रम् । इत्यादि ।

(क) विसर्ग को उ—यदि ह्रस्व अकार के बाद विसर्ग आये और विसर्ग के बाद भी ह्रस्व अ हो तो विसर्ग को 'र्' और र् को 'उ' हो जाता है, फिर गुण-सन्धि से 'उ' को 'ओ' हो जाता है। उदाहरण—देव: + अगच्छत् = देव + उ + अगच्छत् = देवो अगच्छत् (गुण), इसके पश्चात् स्वर सन्धि के अनुसार अ का पूर्वरूप हो जाता है, तब 'देवोऽगच्छत्'[1] रूप बन जाता है। इसी प्रकार—
मानव: + अयम् = मानवो अयम् = मानवोऽयम् ।
राम: + अवदत् = रामो अवदत् = रामोऽवदत् ।
अत: + अहम् = अतो अहम् = अतोऽहम् ।
शिव: + अहम् = शिवो अहम् = शिवोऽहम् ।

(ख) विसर्ग को 'उ'—यदि ह्रस्व अ से परे विसर्ग हो और उसके परे कोई हश् (ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द) वर्ण हो, तो विसर्ग के स्थान पर 'र्' और 'र्' के स्थान पर 'उ' हो जाता है। उस 'उ' को भी स्वर-सन्धि नियम (ख) के अनुसार ओ (गुण) हो जाता है। उदाहरण—
स्मराम: + वयम् = स्मरामो वयम् । मन: + रथ: = मनोरथ: । मन: + हरम् मनोहरम् । मन: + रमा = मनोरमा । पय: + द: = पयोद: । मन: + ज: = मनोज: । यश: + दा = यशोदा । मृग: + धावति = मृगो धावति । मेघ: + गर्जति = मेघो गर्जति । शिव: + वन्द्य: = शिवो वन्द्य: ।

(६) विसर्ग को 'र्'—अ के अतिरिक्त, अन्य स्वरों के बाद विसर्ग से परे कोई हश् वर्ण या स्वर हो तो विसर्ग को 'र्' हो जाता है। उदाहरण—
मुनि: + अवदत् = मुनिरवदत् । अग्नि: + अत्र + अग्निरत्र । गौ: + गच्छति = गौर्गच्छति । वह्नि: + ज्वलति = वह्निर्ज्वलति । मुनि: + अग्रे = मुनिरग्रे ।

---

१. पूर्वरूप होने के बाद ऽ का प्रतीक (चिह्न) लगाया जाता है; यह केवल इसलिए लगाया जाता है कि ज्ञात हो—पहले यहाँ अ विद्यमान था। इसका उच्चारण नहीं होता ।

अरिः+नयति=अरिर्नयति ।

(७) विसर्ग का लोप—(क) विसर्ग से पूर्व यदि आ हो और आगे कोई स्वर या हश् वर्ण आ जाय तो विसर्ग का लोप हो जाता है । उदाहरण—
जनाः+अवदन्=जना अवदन् । नराः+हसन्ति=नरा हसन्ति ।
ललनाः+लज्जन्ते=ललना लज्जन्ते । अश्वाः+धावन्ति=अश्वा धावन्ति ।
सज्जनाः+वदन्ति=सज्जना वदन्ति ।

(ख) विसर्ग का लोप—यदि विसर्ग से पूर्व ह्रस्व अ हो और आगे ह्रस्व अ को छोड़कर कोई भी स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है । उदाहरण—
देवः+आगच्छति=देव आगच्छति ।
ऋषयः+आनयन्ति=ऋषय आनयन्ति ।
कुतः+आगच्छसि=कुत आगच्छसि ?
चन्द्रः+उदेति=चन्द्र उदेति ।
बालः+इच्छति=बाल इच्छति ।

(ग) सः और एषः के विसर्ग का लोप—सः और एषः से परे 'अ' के अतिरिक्त कोई वर्ण हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है । उदाहरण—
सः+विष्णुः=स विष्णुः । सः+देवः=स देवः । सः+मुनिः=स मुनिः ।
एषः+विष्णुः=एष विष्णुः । एषः+शशकः=एष शशकः इत्यादि ।
परन्तु जहाँ विसर्ग से आगे अ होगा वहाँ चार(क)नियम के अनुसार उ(ओ) हो जायगा । जैसे—सः+अवदत्=सोऽवदत् । एषः+अगच्छत्=एषोऽगच्छत् ।

(घ) भोः, भगोः, अघोः के विसर्ग का लोप—भोः, भगोः, अघोः के विसर्ग का लोप हो जाता है यदि कोई स्वर अथवा हश् वर्ण परे हो । जैसे—भोः+देवाः=भो देवाः । भोः+मानवाः=भो मानवाः । भगोः+नमस्ते=भगो नमस्ते, अघोः+याहि=अघो याहि । भोः+ईश्वर=भो ईश्वर ।

अभ्यास

(१) विसर्ग-सन्धि की परिभाषा लिखकर विसर्ग-सन्धि और हल्-सन्धि में क्या अन्तर है ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए ।

(२) विसर्ग के स्थान र् और विसर्ग के स्थान में उ कब होता है ? क्या कभी विसर्ग का लोप भी हो जाता है ?

(३) निम्नलिखित पदों में सन्धि कीजिए—
तैः+तैः, तमः+हन्ति, चन्द्रः+तत्र, खगः+च, देवः+अत्र, सुरेशः+अवदत्, अजयकुमारः+अतिष्ठत्, हरिः+अचिन्तयत्, भोः+हरे, नृपः+विद्वान्, हयाः+धावन्ति, अश्वाः+चलन्ति, प्रातः+एव, रामः+आगच्छति, मनः+हरति, पयः+ददाति, मनसः+निग्रहः, प्रातः+आगच्छति । तारकाः+उदयन्ति । परमात्मनः+इच्छा । देवः+टीकते । बालः+तरति । हरिः+शेते ।

देवः+षष्ठः। मुरारेः+इदम्। भानुः+गच्छति, भानुः+याति। रामः+जयति। भोः+योद्धारः। तिरः+कारः। नमः+कारः। भगोः+देवाः। अघोः+याहि।

(५) सन्धिच्छेद करो—

परेशस्तस्मै, नरो याति। नमस्ते, ततस्ततः, इतस्ततः, यतोयतः, चौरा हरन्ति, निशायास्तमः, शुभास्ते, रामश्च, बालोयम्ः, देवो वन्द्यः, जनकोऽसौ, यशोधनः, यशोगाथा, पयोधरः, पयोदः, मनोवाञ्छा, मनोरथः, मनोरमा, सुतश्चलति, पुत्रष्षष्ठः, एष पतितः, सुतश्शकुन्तलायाः, स विशारदः, एष पुरुषोत्तमः, एष धनुष्पाणिः, स व्याघ्रः, भो बालकाः, विष्णुर्विचक्रमे, विप्रा यजन्ति, देवोऽत्रदत्, हरिर्गच्छति, अतीतो मासः, प्रभोरनुग्रहः, भ्रातुर्विवाहः, गंगोदकम्, उन्नतस्तरुः, घंटाष्षट्, स मृगः, विष्णुश्शेते, नृपश्शंकते, एकश्चन्द्रः, पूर्णश्चन्द्रः, विप्रा यच्छन्ति, लता वेपन्ते, देव उवाच, बालोऽपश्यत्, प्रातरुत्तिष्ठते, शिवो वन्द्यः, भो राजन्, सोऽहम्।

(६) इनमें अशुद्धियाँ दूर करके इनके शुद्ध रूप लिखिए—

सो वदति। एषो गच्छति। रविर्राजते। देवोवाच। पुनोऽपि। पण्डितस्त्रीकृते। वुधो नराः।

विसर्ग-सन्धि में मुख्य सूत्र—

१. विसर्जनीयस्य सः।
२. वा शरि।
३. इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य।
४. नमस्पुरसोर्गत्योः। निरसोऽन्यतरस्याम्। अतः कृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य।
५ अतो रोरप्लुतादप्लुते।
६. हशि च।
७. एततदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि।
८. भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि।

सप्तम अध्याय

णत्व और षत्व विधि

न् का ण् में परिवर्तन

१. यदि किसी पद में ऋ ॠ, र् या ष् से परे 'न' हो तो उसके स्थान पर 'ण' हो जाता है। जैसे—नॄ+नाम्=नॄणाम्, धातॄ+नाम्=धातॄणाम्, चतुर्+नाम्=चतुर्णाम्, सुष्+नाति=सुष्णाति।

२. यदि किसी एक ही पद में ऋ, ॠ, र् और ष् अक्षरों और न् के मध्य अट् (अ, इ, उ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, य्, व्, ह) कवर्ग, पवर्ग या अनुस्वार इनमें से किसी का भी व्यवधान हो तब भी 'न्' को 'ण्' हो जाता है। उदाहरण—गृहा+नाम्=गृहाणाम्। रामा+नाम्=रामाणाम्।

३. पदान्त न् को ण् नहीं होता। उदाहरण—रामा+न्=रामान्, देवान्, गुरून्, बालकान्, पितॄन्, हरीन्, अरक्षन्।

स् का ष् में परिवर्तन

यदि 'स्' किसी प्रत्यय का अवयव हो या किसी के स्थान में आदेश होकर आया हो तो उसे ष् हो जाता है। यहाँ स् से पूर्व अ आ को छोड़कर कोई स्वर, कवर्ग या र् हो तभी स् को ष् होता है। उदाहरण—

धातृ+सु=धातृषु, भानु+सु=भानुषु, नदी+सु=नदीषु, हरि+सु=हरिषु, बालके+सु=बालकेषु, करो+सि=करोषि, भवि+स्यति=भविष्यति, करि+स्यति=करिष्यति। वाक्+सु=वाक्षु। गिर्+सु=गीर्षु। चतुर्+सु=चतुर्षु। इत्यादि।

अभ्यास

(१) णत्व विधि से तुम क्या समझते हो?

(२) णत्व किसके स्थान पर होता है? नयन शब्द में णत्व क्यों नहीं हुआ?

(३) र् ष् और न के मध्य अट्, कवर्ग, पवर्ग के व्यवधान होने पर भी क्या णत्व हो सकता है? तीन उदाहरण दीजिए।

(४) निम्नलिखित शब्दों को णत्व विधि और षत्व विधि से शुद्ध लिखिए—
हरिसु, बालकेण, नृपेन, लतासु, साधुसु, रामेसु, गृहानाम्, देवाण्, चतुर्नाम्, प्रनाम, प्रमान, प्रान, प्रन, प्रांगन, लक्ष्मन, प्रनय, तृन, नदीसु, नाडीसु, वाक्सु।

(५) नीचे लिखे शब्दों में जहाँ न अशुद्ध हों वहाँ शुद्ध करके लिखिए और जहाँ पहले ही शुद्ध हों, उन्हें छोड़ दीजिए—
रामान्, लक्ष्मणेन, नृपेन, रावनन्, कर्मणा, भाग्येन, सुदर्शनम्।

---

१. अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि (णत्व)। २. आदेशप्रत्यययोः (षत्व)।

अष्टम अध्याय

शब्द-विचार

पहले अध्याय में बताया था कि व्याकरण को तीन भागों में बाँटा गया है—
१. वर्ण-विचार, २. शब्द-विचार, ३. वाक्य-विचार।

पिछले अध्यायों में वर्ण-सम्बन्धी सभी प्रकार का परिचय, उच्चारण-स्थान और सन्धि आदि दिया जा चुका है, अब इस अध्याय से शब्द-सम्बन्धी विस्तृत वर्णन आरम्भ किया जाता है।

शब्द—वर्णों के सार्थक संयोग को 'शब्द' कहते हैं। जैसे—क+म+ल= कमल (एक पुष्प विशेष के अर्थ को प्रकट करने वाला शब्द), गौ, नर आदि।

शब्दों के प्रकार

संस्कृत भाषा में शब्द तीन भागों में बँटे हुए हैं—

१. संज्ञा (या नाम) (Substantives)।

२. क्रिया (आख्यात) (Roots)

३. अव्यय (निपात) (Indeclinables)

१. संज्ञा—संज्ञा के अन्दर सर्वनाम और विशेषण भी ले लिये जाते हैं।

उदाहरण—

संज्ञा—रामः, कृष्णः, नरः, छात्रः।

सर्वनाम—सः, त्वम्, अहम्, कः, यः, एषः।

विशेषण—सुन्दरः, दुष्टः, सज्जनः।

ये सब संज्ञा-शब्द हैं।

२. क्रिया—जिससे किसी काम का होना या करना प्रतीत हो उसे 'क्रिया' कहते हैं।

उदाहरण—पठति, गच्छति, हसति आदि सभी क्रियाएँ हैं, ये धातुओं से बनती हैं। धातु ही क्रिया के मूल हैं।

३. अव्यय—वे शब्द, जिनमें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं होता, अव्यय कहलाते हैं। उपसर्ग भी अव्यय में ही गिने जाते हैं। उदाहरण—

अव्यय—अत्र (यहाँ), कुत्र (कहाँ), अद्य (आज), च (और), किन्तु इत्यादि। उपसर्ग—प्र, परा, अप, सम्, अनु इत्यादि।

संज्ञा के भेद

संज्ञा शब्द दो प्रकार के हैं—१. अजन्त, २. हलन्त।

१. अजन्त—जिन शब्दों का अन्तिम वर्ण स्वर हो वे 'अजन्त' शब्द हैं।

उदाहरण—राम, हरि, भानु—इन शब्दों का अन्तिम वर्ण अ, इ, उ है। अतः ये अजन्त शब्द हैं।

२. हलन्त—जिन शब्दों का अन्तिम वर्ण व्यंजन हो उन्हें 'हलन्त' कहते हैं।

उदाहरण—युष्मद्, अस्मद्, मरुत्, महत्, वाच् इत्यादि।

संज्ञा-शब्दों में परिवर्तन के तीन कारण हैं—१. लिंग, २. वचन, ३. कारक।

१ लिंग (Gender)

संस्कृत में तीन लिंग हैं—१. पुँल्लिग, २. स्त्रीलिंग, ३. नपुंसकलिंग। उदाहरण—'रामः' पुँल्लिग है। 'लता' शब्द स्त्रीलिंग है। 'फलम्' शब्द नपुंसकलिंग है।

प्रत्येक शब्द के विषय में यह जानना आवश्यक है कि वह शब्द पुँल्लिग है, स्त्रीलिंग है या नपुंसकलिंग है। जो शब्द न पुंल्लिग होते हैं और न स्त्रीलिंग, उन्हें नपुंसकलिंग समझना चाहिए।

पुरुष (नर) वाचक सभी शब्द पुँल्लिग और स्त्री (मादा) वाचक सभी शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे अनिल, अशोक, हरि, पितृ आदि पुँल्लिग हैं, तथा नारी, देवी, स्त्री, मातृ आदि शब्द स्त्रीलिंग हैं।

जिन वस्तुओं में पुरुष जाति या स्त्री जाति का अन्तर पता नहीं चलता, उनका क्या लिंग है, यह जानने में संशय होता है। ऐसी वस्तुओं के वाचक शब्द कई पुँल्लिग हैं, कई स्त्रीलिंग हैं और कई नपुंसकलिंग। उदाहरणतः—वृक्ष, सागर, पल्लव, पर्वत आदि पुँल्लिग हैं। लता, नदी, मति, सरित् आदि स्त्रीलिंग हैं तथा कमल, जल, सरस्, फल, रत्न आदि नपुंसकलिंग हैं।

शब्दों के लिंग का ज्ञान प्रयोग और अध्ययन पर निर्भर करता है।

(२) वचन (Number)

वचन शब्द का तात्पर्य है 'संख्या'। संस्कृत भाषा में तीन वचन हैं—१. एकवचन, २. द्विवचन, ३. बहुवचन। यदि एक व्यक्ति या वस्तु के सम्बन्ध में परिचय देना हो तो एकवचन, दो व्यक्तियों या वस्तुओं के सम्बन्ध में परिचय देने पर द्विवचन और दो से अधिक (चाहे जितनी भी हों) के सम्बन्ध में परिचय देने पर बहुवचन का प्रयोग होता है। इस प्रकार तीन वचन हुए। उदाहरण—

१. एकवचन—एक के लिए—देवः (एक देवता)

२. द्विवचन—दो के लिए—देवौ (दो देवता)

३. बहुवचन—दो से अधिक के लिए—देवाः (सब देवता)

(३) कारक (Case)

हिन्दी भाषा के समान ही संस्कृत में भी कारकों का व्यवहार होता है। अंतर इतना ही है कि हिन्दी में कारक-चिह्न (विभक्तियाँ) शब्दों से अलग लिखी जाती हैं, संस्कृत में वे जुड़ी हुई होती हैं।

कारकों का प्रयोग समझने से पूर्व कारक और विभक्ति का अन्तर समझ लेना चाहिए। कारक के द्वारा वाक्य में आये शब्दों का क्रिया से सम्बन्ध बताया जाता है ? और जिन चिह्नों या प्रत्ययों के द्वारा यह सम्बन्ध स्पष्ट होता है, वे कारकों की विभक्तियाँ कहलाते हैं। उदाहरण के लिए—बालक ने पाठ पढ़ा। इस वाक्य में 'बालक ने' कर्त्ता कारक है, परन्तु केवल 'ने' कर्त्ता कारक की विभक्ति है। संस्कृत में विभक्तियां शब्द से कभी अलग नहीं होतीं। 'बालकः पाठं पठति' वाक्य में बालकः—कर्त्ता कारक है, इसके साथ 'सु', जिसका केवल : (विसर्ग) शेष रह गया है, ही विभक्ति है।

विभक्तियाँ 'सुप्' और 'तिङ्' भेद से दो प्रकार की हैं। 'सुप्'-प्रत्ययों का प्रयोग संज्ञा-शब्दों के साथ और 'तिङ्', प्रत्ययों का प्रयोग धातुओं के साथ किया जाता है।

सात कारक—कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्वन्ध, अधिकरण।

सातों विभक्तियाँ—प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी एवं सप्तमी। जिस प्रकार हिन्दी में कारकों के चिह्न होते हैं, उसी प्रकार संस्कृत में विभक्तियों के चिह्न होते हैं। सातों कारकों में एकवचन, द्विवचन और बहुवचन की

कारक, विभक्ति-चिह्न और प्रत्यय

कारक	विभक्ति	विभक्ति का अर्थ	विभक्ति-चिह्न		
			एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्त्ता	प्रथमा	ने, ०	सु	औ	जस्
कर्म	द्वितीया	को, ०	अम्	औट्	शस्
करण	तृतीया	ने, से, के द्वारा, के साथ	टा	भ्याम्	भिस्
सम्प्रदान	चतुर्थी	के लिए, को	ङे	भ्याम्	भ्यस्
अपादान	पंचमी	से (अलग)	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
सम्बन्ध[1]	षष्ठी	का, के, की; रा, रे, री;	ङस्	ओस्	आम्
अधिकरण	सप्तमी	में, पर	ङि	ओस्	सुप्
सम्बोधन	सम्बोधन	(हे)	सु	औ	जस्

1. सम्बन्ध का सीधा सम्वन्ध क्रिया से नहीं होता अतः कई विद्वान् सम्बन्ध को कारक नहीं मानते।

तीन-तीन विभक्तियाँ मिलाकर २१ होती हैं। सम्बोधन प्रथमा विभक्ति का ही कुछ परिवर्तित रूप है।

ऊपर संस्कृत विभक्तियों के मूल रूप (प्रत्यय) दिये गये हैं। शब्दों के साथ उनका प्रयोग करते समय उनमें अनेक प्रकार के परिवर्तन हो जाते हैं।

निम्नलिखित विभक्तियाँ अथवा प्रत्यय अकारान्त पुंल्लिग शब्दों के साथ प्रयुक्त होकर उनके रूप बनाती हैं—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१. कर्त्ता (Nominative)	:	औ	अः
२. कर्म (Accusative)	अम्	"	आन्
३. करण (Instrumental)	इन	भ्याम्	ऐः
४. सम्प्रदान (Dative)	आय	भ्याम्	एभ्यः
५. अपादान (Ablative)	आत्	भ्याम्	एभ्यः
६. सम्बन्ध (Genative)	स्य	योः	नाम्
७. अधिकरण (Locative)	इ	योः	एषु
८. संबोधन (Vocative)	०	औ	अः

अकारान्त शब्दों के रूप

(अ-ending Masculine words)

बाल शब्द के सब कारकों में रूप

प्रथमा	एकवचन	बाल+स्=बालः (स् को विसर्ग)
	द्विवचन	बाल+औ=बालौ (वृद्धिसन्धि)
	बहुवचन	बाल+अस्=बालाः (दीर्घसन्धि और स् को विसर्ग)
द्वितीया	एकवचन	बाल+अम्=बालम् (पूर्वरूपसन्धि)
	द्विवचन	बाल+औ=बालौ (वृद्धिसन्धि)
	बहुवचन	बाल+अस् (स् को न्)=बालान् (दीर्घसन्धि)
तृतीया	एकवचन	बाल+टा (इन=)बालेन (गुणसन्धि)
	द्विवचन	बाल+भ्याम्=बालाभ्याम् (दीर्घ)
	बहुवचन	बाल+भिस् (ऐः)=बालैः (वृद्धिसन्धि)
चतुर्थी	एकवचन	बाल+ङे (अय)=बालाय (दीर्घसन्धि)
	द्विवचन	बाल+भ्याम्=बालाभ्याम् (दीर्घ)
	बहुवचन	बाल+भ्यस्=बालेभ्यः (एत्व)
पंचमी	एकवचन	बाल+अस् (आत्)=बालात् (दीर्घ)
	द्विवचन	बाल+भ्याम्=बालाभ्याम् (दीर्घ)
	बहुवचन	बाल+भ्यस्=बालेभ्यः (एत्व)
षष्ठी	एकवचन	बाल+अस् (स्य)=बालस्य (स्य आदेश,

	द्विवचन	बाल+ओस् (य)=बालयोः (य आगम)
	बहुवचन	बाल+आम् (न्)=बालानाम् (दीर्घ, नुट्)
सप्तमी	एकवचन	बाल+इ=बाले (गुण)
	द्विवचन	बाल+ओस् (य)=बालयोः (य आगम)
	बहुवचन	बाल+सु=बालेषु (एत्व, षत्व)
सम्बोधन	एकवचन	हे बाल+स्=हे बाल (स् का लोप)
	द्विवचन	हे बाल+औ=हे बालौ (वृद्धि सन्धि)
	बहुवचन	हे बाल+अस्=हे बालाः (दीर्घसन्धि, स् को विसर्ग)

सभी अकारान्त पुंल्लिंग शब्दों की रूप-रचना इसी तरह होगी।

देव=देवता

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	देवः (एक देवता)	देवौ (दो देवता)	देवाः (सब देवता)
द्वितीया	देवम् (एक देवता को)	देवौ (दो देवताओं को)	देवान् (सब देवताओं को)
तृतीया	देवेन (एक देवता से)	देवाभ्याम् (दो देवताओं से)	देवैः (सब देवताओं से)
चतुर्थी	देवाय (एक देवता के लिए)	देवाभ्याम् (दो देवताओं के लिए)	देवेभ्यः (सब देवताओं के लिए)
पंचमी	देवात् (एक देवता से)	देवाभ्याम् (दो देवताओं से)	देवेभ्यः (सब देवताओं से)
षष्ठी	देवस्य (एक देवता का)	देवयोः (दो देवताओं का)	देवानाम् (सब देवताओं का)
सप्तमी	देवे (एक देवना में)	देवयोः (दो देवताओं में)	देवेषु (सब देवताओं में)
सम्बोधन	हे देव ! (हे देवता !)	हे देवौ ! (हे दो देवताओ !)	हे देवाः ! (हे सब देवताओ !)

अकारान्त पुंल्लिंग शब्दावली

निम्नलिखित शब्दों की रूप-रचना 'देव' शब्द के समान होती है।

प्राणिवाचक

रामः=राम, बलराम, परशुराम।

सारमेयः, कुक्कुरः }=कुत्ता

पुत्रः, सुतः, तनुजः }=पुत्र

कुक्कुटः =मुर्गा

वायसः
काकः
} =कौवा

नागः
सर्पः
} =साँप

वानरः
मर्कटः
} =बन्दर

मनुष्यः
मानवः
मनुजः
नरः
जनः
} =मनुष्य

शुकः
हारीतः
} =तोता

मयूरः =मोर

पिकः =कोयल

बकः =बगला

गजः
द्विपः
} =हाथी

हयः
अश्वः
तुरगः
घोटकः
} =घोड़ा

मृगेन्द्रः
सिंहः
पञ्चास्यः
} =शेर

मृगः =हरिण या पशु

बालः, बालकः
जातकः
} =बालक

छात्रः
बटुकः
} =विद्यार्थी

धौरेयः
वृषः
वृषभः
} =बैल

दासः
भृत्यः
} =नौकर

स्तेनः
चोरः
तस्करः
} चोर

खगः
विहगः
} =पक्षी

सूदः
पाचकः
} =रसोइया

बुधः
प्राज्ञः
} =विद्वान्

अध्यापकः
आचार्यः
उपाध्यायः
} =अध्यापक

व्याघ्रः
मृगादनः
शार्दूलः
} =बाघ

वृकः =भेड़िया

नृपः
भूपः
महीपालः
} =राजा

चटकः
कलविंकः
} =चिड़ा

श्येनः =बाज़

चिल्लः =चीलः

कपोतः =कबूतर

महिषः =भैंसा

अजः =बकरा

उष्ट्रः
क्रमेलकः
} =ऊँट

मार्जारः
विडालः
} =बिलाव

शृगालः =गीदड़

भुजगः, भुजंगः
भुजंगमः
} =साँप

अप्राणिवाचक

आकाशः=आकाश
अनलः=आग
अनिलः=वायु
समुद्रः=समुद्र
केशः, कचः }=बाल
करः=हाथ, भागधेयः }=टैक्स
सूर्यः, दिनकरः, दिवाकरः }=सूर्य
वृक्षः, पादपः }=पेड़
पर्वतः, नगः }=पहाड़
प्रभूतः (विशेषण), प्रचुरः ,, }=बहुत
ग्रन्थः=पुस्तक

दण्डः=डंडा
खड्गः=तलवार
शब्दः, रवः, स्वरः }=आवाज
पक्षः=पंख
कोषः, आकरः }=खजाना
विश्वासः, प्रत्ययः }=यकीन
प्रसादः=महल
प्रासादः=प्रसन्नता, कृपा
मेघः, बलाहकः, जलदः }=बादल
चन्द्रः, निशाकरः, सुधाकरः }=चाँद

इसी प्रकार तादृश (वैसा), भवादृश (आप जैसा), मादृश (मेरे जैसा), त्वादृश (तेरे जैसा), एतादृश (ऐसा), यादृश (जैसा) आदि शब्दों के रूप पुंल्लिंग में देव या बाल की भाँति होंगे।

१. कर्त्ता (Nominative)

किसी कार्य को करने वाला 'कर्त्ता' कारक कहलाता है। कर्त्ता कारक में प्रथमा विभक्ति होती है। उदाहरण—

नीचे अधिक काले छपे शब्द कर्त्ता हैं—

१. **छात्रः** पठति।	छात्र पढ़ता है।
२. **अजयकुमारः** गच्छति।	अजयकुमार जाता है।
३. **अर्चना** क्रीडति।	अर्चना खेलती है।
४. **अरुणकुमारः** हसति।	अरुणकुमार हँसता है।
५. **अहं** चलामि।	मैं चलता हूँ।

२. कर्म (Accusative)

क्रिया के विषय को 'कर्म' कहते हैं। अर्थात् क्रिया का उद्देश्य क्या है—इस 'क्या' के उत्तर में कर्म आता है। उदाहरणार्थ—कर्त्ता पढ़ता है। वह क्या पढ़ता है? इसका उत्तर कर्म 'पुस्तक' आदि होगा। कर्त्ता खाता है—क्या खाता है? इसका उत्तर

कर्म 'भोजन' आदि होगा। कर्त्ता देता है—क्या देता है ? इसका उत्तर कर्म 'रुपया' 'वस्त्र' आदि होगा।

कर्म दूसरा कारक है। इसके लिए द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। इसके लिए हिन्दी में कई बार 'को' विभक्ति का प्रयोग है और कभी नहीं भी होता। उदाहरण—

नीचे अधिक काले छपे शब्द कर्म हैं—

१. छात्रः पाठं पठति।	छात्र पाठ पढ़ता है।
२. अजयकुमारः विद्यालयं गच्छति।	अजयकुमार विद्यालय जाता है
३. जनकः फलम् नयति।	पिता फल ले जाता है।
४. अध्यापकः पुस्तकं यच्छति।	अध्यापक पुस्तक देता है।
५. अश्वः घासं खादति।	घोड़ा घास खाता है।

३. करण (Instrumetal)

किसी काम को करने में जिससे सहायता प्राप्त हो उसे करण (साधन) कहते हैं।

करण कारक के लिए संस्कृत में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। हिन्दी भाषा में करण कारक के लिए 'ने', 'से', 'के साथ' या 'के द्वारा' शब्दों से विभक्ति प्रकट की जाती है, अतः ये चिह्न करण कारक को समझने के लिए स्मरण रखने चाहिएँ। उदाहरण—

१. छात्रः कलमेन लिखति।	छात्र कलम से लिखता है।
२. गोविन्दः नयनाभ्यां पश्यति।	गोविन्द आँखों से देखता है।
३. जनकः हस्तेन कार्यं करोति।	पिता हाथ से काम करता है।
४. नराः पादाभ्याम् चलन्ति।	मनुष्य पैरों से चलते हैं।
५. नराः मुखेन खादन्ति।	मनुष्य मुख से खाते हैं।
६. अश्वः पादैः चलति।	घोड़ा पैरों से चलता है।

४. सम्प्रदान (Dative)

जिसके लिए कार्य किया जाता है वह 'सम्प्रदान' कहलाता है। सम्प्रदान कारक में 'के लिए' अर्थ में चतुर्थी विभक्ति होती है। उदाहरण—

१. छात्रः पठनाय उपविशति।	छात्र पढ़ने के लिए बैठता है।
२. अश्वः धावनाय तत्परः अस्ति।	घोड़ा दौड़ने के लिए तैयार है।
३. जनकः पुत्राय फलं यच्छति।	पिता पुत्र को फल देता है।
४. गोविन्दः भोजनाय गृहं गच्छति।	गोविन्द खाने के लिए घर जाता है।
५. वारिदः लोकाय वर्षति।	बादल लोक के लिए बरसता है।
६. रामः मित्राय पत्रं लिखति।	राम मित्र के लिए पत्र लिखता है।

५. अपादान (Ablative)

जिससे कोई व्यक्ति या पदार्थ अलग हो उसे अपदान कहते हैं। अपादान में पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है। हिन्दी में इस विभक्ति का चिह्न 'से' है। उदाहरण—

१. वृक्षात् फलं पतति	पेड़ से फल गिरता है।
२. अश्वात् बालकः पतति।	घोड़े से बालक गिरता है।
३. मेघात् जलम् वर्षति।	बादल से पानी बरसता है।
४. देहात् स्वेदः निर्गच्छति।	शरीर से पसीना निकलता है।
५. गृहात् चौरः धावति।	घर से चोर भागता है।

३. सम्बन्ध (Genative)

इसे संस्कृत में कारक नहीं माना जाता, क्योंकि इसका क्रिया से कोई सम्बन्ध नहीं होता, फिर भी विभक्ति तो लगती ही है। हिन्दा में इसे प्रकट करने के लिए 'का' के, की' और कई सर्वनामों में 'रा, रे, री' चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। उदाहरण—

१. नगरस्य नराः चतुराः भवन्ति।	शहर के लोग चतुर होते हैं।
२. ग्रामस्य जनाः गच्छन्ति।	गाँव के लोग जाते हैं।
३. नृपस्य भृत्यः आगच्छति।	राजा का नौकर आता है।
४. विद्यालयस्य छात्राः क्रीडन्ति।	स्कूल के विद्यार्थी खेलते हैं।
५. देशस्य नराः स्वदेशं रक्षन्ति।	देश के लोग अपने देश की रक्षा करते हैं।
६. संसारस्य जनाः भारतम् आगच्छन्ति।	संसार के लोग भारत आते हैं।

७ अधिकरण (Locative)

आधार को अधिकरण कहते हैं। कर्त्ता जिन वस्तुओं पर निर्भर होकर कार्य करता है, वे वस्तुएँ आधार कहलाती हैं। इसके लिए हिन्दी में 'में' या 'पर' चिह्न काम आते हैं। अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। उदाहरण—

१. जले मीनाः तरन्ति।	पानी में मछलियाँ तैरती हैं।
२. बालः पात्रे दुग्धम् आनयति।	बालक बर्तन में दूध लाता है।
३. मंजूषायां वस्त्राणि सन्ति।	सन्दूक में कपड़े हैं।
४. गृहेषु जनाः वसन्ति।	लोग घरों में रहते हैं।
५. बालः वृक्षे आरोहति।	बालक पेड़ पर चढ़ता है।
६. पुस्तकेषु ज्ञानं भवति।	पुस्तकों में ज्ञान होता है।
७. खगाः वृक्षेषु वसन्ति।	पक्षी पेड़ों पर रहते हैं।

सम्बोधन भी हिन्दी में कारक माना जाता है परन्तु संस्कृत में सम्बोधन को प्रथमा (विभक्ति) का ही रूप मानते हैं। (संबोधन और संबंध को छोड़कर) कारक छः ही हैं। परन्तु विभक्तियाँ सात है।

८. सम्बोधन (Vocative)

इसे भी संस्कृत में कारक नहीं मानते, क्योंकि इसका भी क्रिया से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं होता, फिर भी इसमें प्रथमा विभक्ति तो लगती ही है। इसका चिह्न —हे, भो आदि हैं जो शब्द से पूर्व; वक्ता की इच्छा पर, लगाये जा सकते हैं। उदाहरण—

हे राम ! त्वमेव संसारं पालयति।	हे राम, तुम्हीं संसार का पालन करते हो।
भो बालाः ! अधुना यूयं कुत्र गच्छथ ?	हे बच्चो ! इस समय तुम कहाँ जा रहे हो ?
उमे ! शृणु, अत्र उपविश।	अरी उमा, सुनो, यहाँ बैठो।
हे मित्राणि ! यूयं स्वकर्त्तव्यं स्मरत।	हे मित्रो ! तुम अपना कर्त्तव्य याद करो।
हे नरौ ! युवां कथं व्यर्थं हसथ।	हे दो मनुष्यो ! तुम दोनों व्यर्थ क्यों हँस रहे हो ?
निषाद ! त्वं कथं जीवान् हंसि।	अरे शिकारी, तू प्राणियों को क्यों मारता है ?

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—
रसोइया खाना बनाता है (पच्)। तोते और मोर सुन्दर होते हैं (भू)। छात्र पुस्तक पढ़ते हैं (पठ्)। मनुष्य चित्र देखते हैं (दृश्—पश्य)। राम देवताओं के लिए फूल लाता है (आ+नी=आनय)। कोयलें और कौवे काले होते हैं। बैल गाड़ी को खींचता है (कृष्)। बादल आकाश में गरजता है (गर्ज्)। बाघ का स्वर भयानक होता है। चिड़ियाघर में (जन्त्वागारे) गीदड़, मृग, भेड़िया और शेर हैं (अस्)। शिक्षक का आदर छात्र के लिए लाभदायक होता है। बादल पानी बरसाते हैं (वर्ष्)।

(२) निम्नलिखित शब्दों के निर्दिष्ट विभक्तियों में रूप लिखिए—
नीलकण्ठ—षष्ठी, कोष—तृतीया, भूप—प्रथमा, मार्जार—पञ्चमी, आकर—चतुर्थी, विश्वास—द्वितीया, ग्रन्थ—तृतीया, शृगाल—प्रथमा, देव—चतुर्थी, अश्व—पंचमी, भ्रमर—तृतीया, सुत, पुत्र, आचार्य, छात्र—सप्तमी। गज—संबोधन।

(३) निम्नलिखित शब्दों में विभक्तियाँ अलग करके मूल शब्द बताइए और

विभक्ति का वचन भी बताइए—

क्रमेलकेषु, विश्वासाय, दण्डात्, पर्वतेभ्यः, प्रभूतान्, शब्दाः, कोषम्, आकरम् महिषम्, खर्गैः, निशाकरौ, बलाहकाभ्याम्, चन्द्रेण, द्विपयोः, महीपालानाम्, भ्रमरस्य, ग्रन्थान्, बालके, मानवौ, हारीतयोः, धौरेयस्य, स्तेनेन, तस्कराणाम्, वायसस्य, दासाभ्याम्, तुरगात्, तुरगेभ्यः, बुधैः, हे बालाः।

(४) **शुद्ध करके लिखिए—**

क्रमेलकेसु, कुन्डात्, देवाण्, कोशेभिः, पुष्पानाम्, रामेन, बालकेण, ग्रन्थाण्, गजओः, बलाहकाणाम्, रामानाम्, मृगानाम्, आचार्येन, द्विपेसु, मयूरेन, भृत्येण।

(५) **निम्नलिखित शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए:—**

नृपः, चन्द्रस्य, दासेन, मानवौ, मार्जाराणाम्, शुकाय, छात्रेभ्यः, सारमेयाभ्याम्, गजयोः, छात्राणाम्, पर्वते, वृक्षाः, बालकः, तुरगेभ्यः, सूदेभ्यः, वृकाणाम्, प्रासादात्, पादपैः, देवेभ्यः।

नवम अध्याय

इकारान्त पुँल्लिग शब्द

(इ-endins Masculine Words)

पीछे दिये गये 'सु औ जस्' आदि प्रत्यय कुछ परिवर्तन के साथ नीचे लिखे इकारान्त शब्दों में प्रयुक्त हुए हैं।

इकारान्त मुनि (sage)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	,,	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पंचमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	,,	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	,,	मुनिषु
सम्बोधन	हे मुने !	हे मुनी !	हे मुनयः !

निम्नलिखित शब्दों की रचना भी मुनि की भाँति होगी—

प्राणिवाचक—हरिः=विष्णु, सिंह, बन्दर। ऋषिः=मुनि। कविः=कवि। अलिः=भौंरा। कपिः=वानर। यतिः=संन्यासी। अतिथिः=मेहमान।

सारथिः=रथ हाँकने वाला। भूपतिः=राजा। सौमित्रिः=लक्ष्मण, शत्रुघ्न।

अप्राणिवाचक—अग्निः=आग। रविः=सूर्य। हिमाद्रिः=हिमालय। अद्रिः=पर्वत। असिः=तलवार। रश्मिः=किरण। विधिः=भाग्य। निधिः=खजाना। व्याधिः=बीमारी। ओषधिः=दवा। पाणिः=हाथ। गिरिः=पर्वत। राशिः=खजाना, ढेर, समूह। पयोनिधिः, जलधिः=समुद्र। उपाधिः=पदवी।

इकारान्त शब्दों में रूप-रचना की दृष्टि से सखि तथा पति शब्द अपवाद हैं। उनकी रूप-रचना देखिए—

इकारान्त सखि (A friend)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः

चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पंचमी	सख्युः	"	"
षष्ठी	"	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	"	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे !	हे सखायौ !	हे सखायः !

ऊपर काले टाईप में दिए गए रूप ही मुनि शब्द से भिन्न हैं, शेष मुनि के समान ही हैं।

ज्ञातव्य—'सखि' शब्द समस्त होकर किसी शब्द के अन्त में आता है तो वह अकारान्त हो जाता है और उसके रूप देव शब्द के समान होते हैं। जैसे 'राजसख' (राजा का मित्र)।

इकारान्त पति (Husband, master)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	"	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	"	पतिभ्यः
पंचमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	"	पतिषु
सम्बोधन	हे पते !	हे पती !	हे पतयः

ऊपर अधिक काले शब्द ही मुनि से भिन्न हैं, शेष मुनि के समान ही हैं।

ज्ञातव्य—यदि पति शब्द समस्त हो तो इसके रूप मुनि की भाँति ही चलते हैं। जैसे—

इकारान्त भूपति (A king)

प्रथमा	भूपतिः	भूपती	भूपतयः
द्वितीया	भूपतिम्	"	भूपतीन्
तृतीया	भूपतिना	भूपतिभ्याम्	भूपतिभिः
चतुर्थी	भूपतये	"	भूपतिभ्यः
पंचमी	भूपतेः	"	"
षष्ठी	"	भूपत्योः	भूपतीनाम्

ध्यान रहे—हिन्दी में व्याधि, ओषधि, ध्वनि, अग्नि आदि कई शब्द स्त्रीलिंग हैं, परन्तु संस्कृत में ये शब्द पुंल्लिग हैं।

सप्तमी	भूपतौ	भूपत्योः	भूपतिषु
सम्बोधन	हे भूपते	हे भूपती !	हे भूपतयः !

इसी प्रकार नृपति, नरपति, रमापति आदि शब्दों के रूप होंगे।

अभ्यास

(१) नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

१. मुनि वन में हवन करते हैं (यज्) २. मेरी बात को हरि ध्यान से सुनता है (श्रु—शृ)। ३. बन्दर (कपि) वन में खेलते-कूदते हैं (क्रीड्, कूर्द्)। ४. विधि (विधाता) ही सारे संसार को बनाता है (रच्)। ५. वैद्य ओषधि देता है (दा—यच्छ)। ६. सूर्य (रवि) की किरणें अन्धकार को हरण करती है (हृ-हर्)। ७. हिमाद्रि पर रमणीक स्थान हैं (अस्)। ८. सीता राम के साथ वन को जाती है (गम्—गच्छ)। ९. अतिथि का सत्कार करना चाहिए (कर्तव्यः)। १०. धनिकों के पास धनराशियाँ होती हैं।

(२) निम्नलिखित हिन्दी पदों के लिए संस्कृत शब्द लिखिए—

पर्वत में, हरियों का, व्याधियों से, शिव का, लक्ष्मण के लिए, भौंरे के साथ, भूपति का, पतञ्जलि को, दो ऋषियों में, हाथ से, तलवार का, जलधि में, बीमारियों का, सखा का, दो पतियों का, भूपति के लिए, भूपति में, भूपति का, धनपति के लिए, उमापति को।

(३) अन्तर बताइए—

उमापति व पति की रूप-रचना में। राजसख और सखि की रूप-रचना में।

(४) हिन्दी में अर्थ बताइए और विभक्ति तथा वचन भी बताइए—

पाणौ, सौमित्रिणा, सारथ्योः, यतीनाम्, मुनिषु, भूपतये, पत्यौ, भूपतौ, सखीनाम्, राजसखयोः, अरिषु, असिना, विधिना, अलिभ्याम्।

(५) शुद्ध कीजिए और अशुद्धि का कारण बताइए—

पत्याम्, भूपत्या, मुनिसु, अरिसु, पाणो, सौमित्रिना, पतेः, पतिसु, असिणा, धनपत्ये, राजसख्योः, अलौः, अलीः, गिर्योः, भूपतीभ्याम्।

(६) सखि, पति और हरि के रूपों में कहाँ-कहाँ अन्तर है ? लिखकर निर्देश कीजिए।

(७) 'निधि' के प्रथमा बहुवचन, 'हरि' के तृतीया एकवचन, 'पाणि' के सप्तमी एकवचन, 'अग्नि' के चतुर्थी बहुवचन और 'सारथि' के षष्ठी एकवचन में रूप लिखिए।

(८) मुनि शब्द के पूरे रूप कण्ठस्थ लिखिए।

दशम अध्याय

ई, उ, ऊ, ऋ तथा ओ अन्तवाले पुंल्लिग शब्द

ईकारान्त (ई-ending) पुंल्लिग शब्दों में प्रत्येक स्वरादि विभक्तियों में 'ई' के स्थान में 'इय्' हो जाता है।

ईकारान्त पुंल्लिग (ई-ending) सुधी (A wise man)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वितीया	सुधियम्	"	"
तृतीया	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
चतुर्थी	सुधिये	"	सुधीभ्यः
पंचमी	सुधियः	"	"
षष्ठी	"	सुधियोः	सुधियाम्
सप्तमी	सुधियि	"	सुधीषु
सम्बोधन	हे सुधीः !	हे सुधियौ !	हे सुधियः !

इसी प्रकार सुश्री, शुद्धधी, परमधी, शुभधी आदि शब्दों की रूप-रचना भी होती है।

उकारान्त (उ-ending)

प्रत्ययों की दृष्टि से इकारान्त तथा उकारान्त शब्दों में कोई भेद नहीं है। सन्धि-नियम के कारण निम्नलिखित भिन्नताएँ आ जाती हैं:—

(१) जहाँ इकारान्तों में इ या ई आती है वहाँ उकारान्तों में उ या ऊ का प्रयोग होता है।

(२) जहाँ-जहाँ इकारान्तों में य आता है, वहाँ-वहाँ उकारान्तों में व आता है।

(३) इकारान्त शब्दों में जहाँ ए होता है, उकारान्त शब्दों में वहाँ ओ हो जाता है।

2 ✓ उकारान्त पुंल्लिग (उ-ending) शिशु=बच्चा (Baly)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	शिशुः	शिशू	शिशवः
द्वितीया	शिशुम्	"	शिशून्
तृतीया	शिशुना	शिशुभ्याम्	शिशुभिः
चतुर्थी	शिशवे	शिशुभ्याम्	शिशुभ्यः

पंचमी	शिशोः	शिशुभ्याम्	शिशुभ्यः
षष्ठी	"	शिश्वोः	शिशूनाम्
सप्तमी	शिशौ	"	शिशुषु
सम्बोधन	हे शिशो !	हे शिशू	हे शिशवः !

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों की रूप-रचना भी होती है :—

प्राणिवाचक—गुरुः=अध्यापक । शम्भुः=महादेव । रिपुः=शत्रु । बन्धुः =भाई । विष्णुः=भगवान् । सूनुः=पुत्र । पशुः=जानवर । शत्रुः, रिपुः=दुश्मन । साधुः=सज्जन । गोमायुः=गीदड़ । तरुः=वृक्ष । आखुः=चूहा आदि ।

अप्राणिवाचक—भानुः=सूर्य । सुधांशुः=चन्द्र । इन्दुः=चन्द्र । बाहुः= भुजा । सिन्धुः=समुद्र । ऋतुः=मौसम । बिन्दुः=बूंद । इषुः=बाण । वायुः= हवा । परशुः=कुल्हाड़ा । मृदुः=कोमल (विशेषण पुं०) ।

ऊकारान्त (ऊ-ending) स्वयम्भू=ब्रह्मा (Creator)

ऊकारान्त (ऊ-enaing) पुंल्लिग शब्दों में भी प्रत्येक स्वरादि विभक्तियों में ऊ के स्थान पर 'उव्' हो जाता है।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्वयम्भूः	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः
द्वितीया	स्वयम्भुवम्	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः
तृतीया	स्वयम्भुवा	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभिः
चतुर्थी	स्वयम्भुवे	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभ्यः
पंचमी	स्वयम्भुवः	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभ्यः
षष्ठी	स्वयम्भुवः	स्वयम्भुवोः	स्वयम्भुवाम्
सप्ती	स्वयम्भुवि	स्वयम्भुवोः	स्वयम्भूषु
सम्बोधन	हे स्वयम्भूः !	हे स्वयम्भुवौ !	हे स्वयम्भुवः !

ऋकारान्त (ऋ-ending) पितृ=पिता (Father)

प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	"	पितृभ्यः
पंचमी	पितुः	"	"
षष्ठी	"	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	"	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः !	हे पितरौ !	हे पितरः !

भ्रातृ (भाई), जामातृ (जँवाई) और देवृ (देवर) इन शब्दों के रूप पितृ के समान होंगे । पितृ के समान नीचे नृ शब्द के रूप देखिए—

ऋकारान्त (ऋ-ending)

नृ=मनुष्य (man)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ना	नरौ	नरः
द्वितीया	नरम्	"	नॄन्
तृतीया	न्रा	नृभ्याम्	नृभिः
चतुर्थी	न्रे	"	नृभ्यः
पंचमी	नुः	"	"
षष्ठी	"	न्रोः	नृणाम्, नॄणाम्
सप्तमी	नरि	"	नृषु
संबोधन	हे नः !	हे नरौ !	हे नरः !

ऋकारान्त भर्तृ=स्वामी, पति (master, husban)

प्रथमा	भर्ता	भर्तारौ	भर्तारः
द्वितीया	भर्तारम्	भर्तारौ	भर्तॄन्
तृतीया	भर्त्रा	भर्तृभ्याम्	भर्तृभिः
चतुर्थी	भर्त्रे	"	भर्तृभ्यः
पंचमी	भर्तुः	"	"
षष्ठी	"	भर्त्रोः	भर्तॄणाम्
सप्तमी	भर्तरि	"	भर्तृषु
सम्बोधन	हे भर्तः !	हे भर्तारौ !	हे भर्तारः !

भर्तृ शब्द के कुछ रूप पितृ शब्द के रूपों से भिन्न हैं। भर्तृ शब्द में ४ विभक्तियों—'औ, अस्, अम्, औ'—में 'अर्' के स्थान पर 'आर्' होगा। 'नप्तृ' (नाती, पोता) शब्द के रूप भी भर्तृ के समान होंगे। जैसे—नप्ता नप्तारौ नप्तारः इत्यादि।

कर्तृ=करनेवाला (doer)

प्रथमा	कर्त्ता	कर्त्तारौ	कर्त्तारः
द्वितीया	कर्त्तारम्	कर्त्तारौ	कर्तॄन्
सम्बोधन	हे कर्तः !	हे कर्त्तारौ !	हे कर्त्तारः !

शेष रूप पितृ शब्द की भाँति होंगे।

भर्तृ या कर्तृ के समान रूप वाले कुछ अन्य शब्द—

धातृ=रचने वाला (ब्रह्मा), श्रोतृ=सुनने वाला। नेतृ=नेता। दातृ=दाता। गन्तृ=जाने वाला। शास्तृ=शासन करने वाला। वक्तृ=बोलने वाला। द्वेष्टृ=द्वेष करने वाला। द्रष्टृ=देखने वाला। अध्येतृ=पढ़ने वाला। स्रष्टृ=बनाने वाला। जेतृ=जीतने वाला। क्रेतृ=खरीदने वाला। श्रोतृ=सुनने वाला। विक्रेतृ=बेचने

वाला। सवितृ=सूर्य या जन्म देने वाला। होतृ=हवन करने वाला। रक्षितृ=रक्षा करने वाला। हन्तृ=मारने वाला।

ओकारान्त (ओ-ending) गो (A Bull or a Cow) शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	,,	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे	,,	गोभ्यः
पंचमी	गोः	,,	,,
षष्ठी	,,	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	,,	गोषु
सम्बोधन	हे गौः !	हे गावौ !	हे गावः !

अभ्यास

(क)

(१) नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

१. राम बाणों से (इषु) युद्ध करता है (युध्)।
२. माली (परशु) कुल्हाड़े से वृक्षों को काटता है (कृन्त्)।
३. हम बाँहों में (बाहु) बल प्राप्त करते हैं (विन्द्)।
४. मैं मृदु शिशु को नहीं पीटता (तड्—ताड्)।
५. पिता पुत्रों को रुपये (रूप्यकम्) देता है।
६. कान्ता पति के लिए भोजन पकाती है (पच्)।
७. कर्ता सारे जगत् को बनाता है (रच्)।

(ख)

(२) इन वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

सुधी लोग विचार कर पढ़ते हैं। विद्यालय में गुरु आते हैं (आ+गम्)। क्रीड़ा-क्षेत्र में शिशु खेलते हैं। ये वस्त्र बच्चों के (शिशु) हैं (अस्)। पशु जंगलों में चरते हैं (चर्)। पशुओं का समूह जंगलों में रहता है। सूर्य (भानु) का प्रकाश तेज होता है। चन्द्रमा (सुधांशु) की चाँदनी शीतल होती है। समुद्र (सिन्धु) में लहरें (तरंगाः) उठती हैं (उद्+गम्)। चूहा (आखुः) बिल में रहता है। गीदड़ (गोमायुः) का स्वभाव डरपोक (भीरुः) होता है। लक्ष्मी विष्णु के साथ क्षीरसागर में रहती है। बालक पिता के साथ पाठशाला जाता है। भर्ता की कृपा से सुख मिलता है (मिल्)। महाराजा दशरथ के चार पुत्र थे (आसन्)। शासक का काम राजा करता है (कृ)। दाता लोग निर्धन को खाना (भोजनम्) देते हैं।

(३) निम्नलिखित पदों के लिए संस्कृत का एक शब्द लिखिए—
दो बालकों (शिशु) में, अच्छी बुद्धि वालों के साथ (सुधी), साधुओं के लिए, दो बन्धुओं के साथ, बालकों की, चन्द्रमा (विधु) का, दो कुल्हाड़े, ऋतु में, दो बाहुओं में ।

(४) भानु, वायु रिपु, विधु शब्दों के क्रमशः चौथी, पाँचवीं, छठी व सातवीं विभक्तियों के सारे रूप लिखिए ।

(५) निम्नलिखित में विभक्ति तथा वचन बताइए—
भर्तृभ्यः, कर्तृषु, पितॄन्, धात्रा, कर्त्रोः, श्रोतुः, वक्तृभिः, पितरौ, वक्त्रे, पितः, पितरि, कर्तुः, श्रोतृभ्यः, शिशोः, भर्तारम्, पितरम्, दातारौ, मातरौ ।

(६) शुद्ध कीजिए—
साधौ ! पितरे, धात्राय, मातारौ, कर्तरौ, श्रोतरम्, शिशम्, पितौ, श्रोत्रौ, दृष्टारः, कर्त्रवे, गोम्, गोन् ।

(७) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर प्रथमा का पहला रूप लिखिए—
जामातृ, दुहितृ, ननान्दृ, श्रोतृ, सवितृ, धातृ, द्रष्टृ, होतृ ।

एकादश अध्याय

अजन्त स्त्रीलिंग शब्द

आकारान्त (आ-ending) लता शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पंचमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	हे लते !	हे लते !	हे लताः !

निम्नलिखित शब्दों के रूप भी लता के समान होते हैं :—

प्राणिवाचक—

रमा=लक्ष्मी। सुता, तनया, तनुजा=पुत्री। कन्या=अविवाहिता लड़की। रमा=लक्ष्मी। ललना=स्त्री। बालिका=लड़की। बाला=युवती। दुर्गा=देवी। सीता=श्रीराम की पत्नी। भार्या=पत्नी। सुशीला=अच्छे स्वभाव वाली। पंडिता=पढ़ी-लिखी, विदुषी स्त्री। प्रमदा=युवती। प्रजा=सन्तान या जन-सामान्य। राधा, सुमित्रा, तारा, कौशल्या, कला, कान्ता आदि के भी रूप लता की भाँति ही होंगे।

अप्राणिवाचक—

माला=माला। पाठशाला=स्कूल। कला=हुनर। सरिता=नदी। दिशा=दिशा। आशा=आशा। वसुधा=पृथ्वी। मर्यादा, सीमा=हद। प्रभा=प्रकाश। शोभा, आभा=सुन्दरता, चमक। तृष्णा=लोभवती आशा। व्यथा, पीड़ा=कष्ट। धरा, अचला=धरती। रसना=जीभ। शिला=पत्थर। तृषा=प्यास। पिपासा=प्यास। पादुका=खड़ाऊँ। परा=श्रेष्ठ। शर्करा=शक्कर। ग्रीवा=गर्दन। निशा=रात्रि। शिखा=चोटी। सरला=सीधी-सादी। होरा=घंटा। कला=मिनट। विकला=सैकेंड। लेखा, रेखा=पंक्ति। जटा=लम्बे बाल। विद्या=शिक्षा।

मातृवाचक 'अम्बा' शब्द के सम्बोधन एकवचन में 'हे लते' के समान 'हे अम्बे' न होकर हे अम्ब ! रूप होगा, शेष रूप लता के समान ही होते हैं।

आकारान्त (आ-ending) जरा=वृद्धावस्था (old age)

ज्ञातव्य—'जरा' शब्द को अजादि विभक्तियों में 'जरस्' आदेश विकल्प से

हो जाता है। अतः अजादि विभक्तियों में 'जरा' शब्द के दो-दो रूप बनेंगे। एक बार 'लता' शब्द के समान और एक बार 'सकारान्त' शब्द के समान रूप होंगे। नीचे 'जरा' शब्द के रूप दिये जाते हैं। जहाँ दो-दो रूप बनेंगे उन्हें ध्यान से देखिए और स्मरण कीजिए—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जरा	जरे, जरसौ	जराः, जरसः
द्वितीया	जराम्	जरे, जरसौ	जराः, जरसः
तृतीया	जरया, जरसा	जराभ्याम्	जराभिः
चतुर्थी	जरायै, जरसे	,,	जराभ्यः
पंचमी	जरायाः, जरसः	,,	,,
षष्ठी	,, ,,	जरयोः, जरसोः	जराणाम्, जरसाम्
सप्तमी	जरायाम्, जरसि	,, ,,	जरासु
सम्बोधन	हे जरे	हे जरे, हे जरसौ	हे जराः, हे जरसः

इकारान्त (इ-ending) मति=बुद्धि (wisdom)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	,,	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	,,	मतिभ्यः
पंचमी	मत्याः, मतेः	,,	,,
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	,,	मतिषु
सम्बोधन	हे मते !	हे मती !	हे मतयः !

ज्ञातव्य—ऊपर दिए गए मति शब्द के अधिक काले रूपों को छोड़कर शेष रूप मुनि के समान हैं।

मति के समान रूप वाले कुछ अन्य शब्द—

पंक्तिः=रेखा। शक्तिः=बल। प्रगतिः=उन्नति। गतिः=चाल। संगतिः=साथ। श्रुतिः=वेद, कान। कीर्तिः=यश। भक्तिः=श्रद्धायुक्त प्रेम। स्तुतिः=बड़ाई। वृत्तिः=जीविका। प्रीतिः=प्यार। कृतिः=काम, रचना। मुक्तिः=मोक्ष। कान्तिः=शोभा। सृष्टिः=संसार। उपकृतिः=उपकार। स्मृतिः=स्मरण शक्ति। वीचिः, ऊर्मिः=तरंग। सरणिः=मार्ग। रुचिः=मन की इच्छा। प्रवृत्तिः=लगाव। भित्तिः=दीवार। त्रिपणिः=दुकान, बाजार। कटिः=कमर। आकृतिः=आकार, शक्ल। कान्तिः=शोभा। भूतिः=ऐश्वर्य। स्थितिः=अवस्था। विरक्तिः=वैराग्य। धूलिः=धूल। बुद्धिः=अक्ल। शुद्धिः=सफाई। रीतिः=ढंग। जातिः=जात।

ईकारान्त (ई-ending) नदी (Riuer)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्य:
द्वितीया	नदीम्	,,	नदी:
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभि:
चतुर्थी	नद्यै	,,	नदीभ्य:
पंचमी	नद्या:	,,	,,
षष्ठी	,,	नद्यो:	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	,,	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि !	हे नद्यौ !	हे नद्य: !

निम्नलिखित ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी नदी शब्द की भाँति समझने चाहिएँ—

नारी=महिला। नटी=नट की स्त्री। कुमारी=अविवाहिता लड़की। दासी=सेविका। वाराणसी=बनारस। सहचरी=सहेली। पृथ्वी=धरती। धरणी=धरती। धरित्री=धरती। कौमुदी=चाँदनी। पत्नी=अपनी स्त्री। मृगी, हरिणी=हिरनी। ब्राह्मणी=ब्राह्मण की स्त्री। वल्लरी=बेल। मंजरी=फूलों का गुच्छा। गौरी, पार्वती=भवानी। भगिनी=बहन। मही=भूमि। जननी=माता। करिणी, हस्तिनी=हथनी। महिषी=पटरानी या भैंस। शूकरी=सूअरी। सखी=सहेली। पुरी, नगरी=शहर। अंगुली=उंगली। नप्त्री=पोती या धेवती। रजनी=रात। वंशी=बाँसुरी। पुत्री=लड़की। पौत्री=पोती। नाड़ी=नाड़ी। विदुषी=पण्डिता स्त्री। स्थाली=पतीली। अटवी=जंगल। राज्ञी=रानी। कदली=केले का पौधा। श्रेणी=कक्षा या वर्ग। मसी=स्याही।

ईकारान्त या ऊकारान्त शब्दों के सम्बोधन के एकवचन में दीर्घ ई और ऊ को प्राय: क्रमश: ह्रस्व इ और ह्रस्व उ हो जाता है।

नारी शब्द की रूप-रचना में जहाँ कहीं ई के स्थान पर 'य' होता है वहाँ स्त्री शब्द से अजादि विभक्ति परे रहते 'य' न होकर 'इय्' होता है।

(नीचे विकल्प वाले रूपों को ध्यान से देखिए।)

ईकारान्त स्त्री (Woman)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रिय:
द्वितीया	स्त्रियम्, स्त्रीम्	,,	स्त्रिय:, स्त्री:
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स[illegible]
चतुर्थी	स्त्रियै	,,	स्त्रीभ्य:
पंचमी	स्त्रिया:	,,	,,

षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	"	स्त्रीषु
सम्बोधन	हे स्त्रि !	हे स्त्रियौ !	हे स्त्रियः !

धी शब्द की रूप-रचना के समय ध्यान रखना चाहिए कि ई 'इय्' में परिवर्तित हो जाता है स्वरादि विभक्ति परे रहते। और प्रथमा के एकवचन में विसर्ग (:) होते हैं।

ईकारान्त (ई-ending) श्री (लक्ष्मी) (Goddess of wealth)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	"	"
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै, श्रिये	"	श्रीभ्यः
पंचमी	श्रियाः, श्रियः	"	"
षष्ठी	" "	श्रियोः	श्रीणाम्, श्रियाम्
सप्तमी	श्रियाम्, श्रियि	"	श्रीषु
सम्बोधन	हे श्रीः !	हे श्रियौ !	हे श्रियः !

धी (बुद्धि), भी (डर), और ह्री (लज्जा) आदि शब्दों के रूप श्री के समान होते हैं।

उकारान्त (उ-ending) धेनु (A cow)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	"	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पंचमी	धेन्वाः, धेनोः	"	"
षष्ठी	" "	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्, धेनौ	"	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो !	हे धेनू !	हे धेनवः !

तनु (शरीर), रेणु (धूलि), हनु (ठोड़ी), रज्जु (रस्सी) आदि उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी धेनु के समान होते हैं।

ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों की रूप-रचना भी नारी या नदी शब्द के समान ही होती है। अन्तर केवल यही है कि ईकारान्त शब्दों में ई के स्थान पर य् होता है; परन्तु ऊकारान्त शब्दों में 'ऊ' को व् हो जाता है। ऊकारान्त शब्दों के प्रथमा के एकवचन में विसर्ग भी होता है। जैसे—वधूः, चमूः आदि।

ऊकारान्त (ऊ-ending) वधू=बहू (Bride)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	,,	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	,,	वधूभ्यः
पंचमी	वध्वाः	,,	,,
षष्ठी	,,	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	,,	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु !	हे वध्वौ !	हे वध्वः !

जम्बू (जामुन), श्वश्रू (सास), चमू (सेना) आदि ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप वधू की भाँति ही होंगे।

'भू' और 'सुभ्रू' आदि शब्दों की अजादि विभक्तियों में ऊ को उव् हो जाता है।

ऊकारान्त (ऊ-ending) भू=पृथ्वी (The earth)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भूः	भुवौ	भुवः
द्वितीया	भुवम्	भुवौ	भुवः
तृतीया	भुवा	भूभ्याम्	भूभिः
चतुर्थी	भुवै, भुवे	भूभ्याम्	भूभ्यः
पंचमी	भुवाः, भुवः	भूभ्याम्	भूभ्यः
षष्ठी	भुवाः, भुवः	भुवोः	भुवाम्, भूनाम्
सप्तमी	भुवाम्, भुवि	भुवोः	भूषु
सम्बोधन	हे भूः !	हे भुवौ !	हे भुवः !

ऊकारान्त (ऊ-ending) सुभ्रू=सुन्दर भौंहों वाली स्त्री (a lady with beautiful eye-brows)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुभ्रूः	सुभ्रुवौ	सुभ्रुवः
द्वितीया	सुभ्रुवम्	सुभ्रुवौ	सुभ्रुवः
तृतीया	सुभ्रुवा	सुभ्रूभ्याम्	सुभ्रूभिः
चतुर्थी	सुभ्रुवे	सुभ्रूभ्याम्	सुभ्रूभ्यः
पंचमी	सुभ्रूवः	सुभ्रूभ्याम्	सुभ्रूभ्यः
षष्ठी	सुभ्रुवः	सुभ्रुवोः	सुभ्रुवाम्
सप्तमी	सुभ्रुवि	सुभ्रुवोः	सुभ्रूषु
सम्बोधन	हे सुभ्रु !	हे सुभ्रुवौ	हे सुभ्रुवः

स्त्रीलिंग ऋकारान्त शब्दों की रूप-रचना भी पुंल्लिग ऋकारान्त शब्दों के समान ही होती है। केवल द्वितीया विभक्ति के बहुवचन में 'न्' नहीं होता। वहाँ विसर्ग (:) हो जाते हैं।

ऋकारान्त (ऋ--ending) मातृ=माँ (mother)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातृः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पंचमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातृणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः!	हे मातरौ!	हे मातरः!

इसी प्रकार ननान्दृ (ननद), यातृ (देवरानी, जेठानी), दुहितृ (पुत्री) के रूप होंगे।

ऋकारान्त (ऋ-ending) स्वसृ=बहन (Sister)

प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसृः
तृतीया	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः
सम्बोधन	हे स्वसः!	हे स्वसारौ!	हे स्वसारः!

मातृ और स्वसृ शब्दों में प्रथमा, द्वितीया और सम्बोधन के कुछ रूपों में अन्तर है। शेष रूप तृतीया विभक्ति से सप्तमी तक तो समान ही हैं।

ओकारान्त गो (बैल) शब्द के रूप पुंल्लिग में दिये जा चुके हैं। वे ही रूप गो (गाय) अर्थ में स्त्रीलिंग में भी होंगे।

औकारान्त (औ-ending) नौ=नाव (A boat)

प्रथमा	नौः	नावौ	नावः
द्वितीया	नावम्	"	"
तृतीया	नावा	नौभ्याम्	नौभिः
चतुर्थी	नावे	"	नौभ्यः
पंचमी	नावः	"	"
षष्ठी	नावः	नावोः	नावाम्
सप्तमी	नावि	"	नौषु
सम्बोधन	हे नौः!	हे नावौ!	हे नावः!

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

१. बेल (लता) में फूल खिलते हैं (वि+कस्)।

२. तुम्हारी बेटियाँ (दुहितृ) तुम्हारी बात ध्यान से सुनती हैं।

३. हे कन्या ! तू कहाँ रहती है और क्या पढ़ती है ?

४. हे माली ! तू लताओं को क्यों काटता है ?

५. मेरी (पुत्री) अपनी सखी से बातें करती है (सम्+लप्)।

६. धरती पर चाँद की चाँदनी (कौमुदी) चमकती है (दिव्—दीव्य)।

७. शेरनी (सिंही) ने कहा—तू हाथी को नहीं मार सकता (हन्तुं शक्तः)

८. नटी में नाचने का उत्तम गुण है।

९. नदी के तट पर बहुत-से वृक्ष हैं।

१०. हिरनियों (मृगी) की कतारें (पंक्ति) कहाँ जा रही हैं ?

११. चन्द्र के उदय होने पर कुमुदिनी खिलती है।

(२) निम्नलिखित हिन्दी पदों के लिए संस्कृत का एक शब्द लिखिए—

दो बहनों का, नावों के, कन्याओं के लिए, नदियों से, नाड़ियों का, खेलों में, स्त्रियों के द्वारा, हे महिलाओ, हे माता !, गाय का, चोंच से, सहेलियों का, अनेक लड़कियों द्वारा, नाड़ियों में, रात्रि में।

(३) मूल शब्द, विभक्ति तथा वचन बताइए—

भगिन्यौ, नौषु, कन्यायाः, नदीभ्यः, नाड्यः, मातरि, धेन्वा, वल्लर्याम्, स्त्रियाम्, स्त्रीणाम्, कन्यानाम्, महिलासु, महिलाः, सहचरी, रात्रिभ्यः, नौभिः, नावा, मातुः, धेन्वोः।

(४) शुद्ध कीजिए—

धेनुना, कन्याय, नदीयै, नाडीन्, महिलायोः, चमुम्, मातृन्, मातोः, धेनुना, भगिनीयौ, जननीसु, रेखयाः।

(५) निम्नलिखित शब्दों की रूप-रचना लिखिए—

कन्या—प्रथमा व द्वितीया विभक्तियों में। सरिता—चतुर्थी तथा पंचमी विभक्तियों में। रेखा—षष्ठी व सप्तमी विभक्तियों में। नदी—द्वितीया व तृतीया विभक्तियों में। रजनी—षष्ठी व सप्तमी विभक्तियों में। अटवी—प्रथमा व पंचमी विभक्तियों में। धेनु—षष्ठी विभक्ति में। चमू—सभी विभक्तियों में।

(६) स्वसृ शब्द के रूप लिखिए।

द्वादश अध्याय

अजन्त नपुंसकलिंग शब्द

अकारान्त (अ-ending) फल (Fruit)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	"	फलेभ्यः
पंचमी	फलात्	"	"
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	"	फलेषु
सम्बोधन	हे फल !	हे फले !	हे फलानि !

नपुंसकलिंग में अकारान्त शब्दों के रूप प्रथमा, द्वितीया और संबोधन को छोड़कर शेष रूप 'बाल' या 'देव' के शब्द के समान होते हैं फिर भी एक बार पूरे रूप आवृत्ति की सरलता के लिए यहाँ दे दिये गये हैं।

फल के समान कुछ अन्य अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द—

जलम्=पानी। ज्ञानम्=ज्ञान। अनृतम्=झूठ। दुग्धम्=दूध। उदकम्, सलिलम्=पानी। तत्त्वम्=सार। तथ्यम्=सचाई। सत्यम्=सच। वस्त्रम्=कपड़ा। यानम्=गाड़ी। गृहम्=घर। सुवर्णम्=सोना। लौहम्=लोहा। ताम्रम्=ताँबा। रत्नम्=रत्न। चिबुकम्=ठोड़ी। कलुषम्=धब्बा, पाप। मित्रम्=मित्र। कलत्रम्=स्त्री। नयनम्, नेत्रम्, लोचनम्=आँख। हस्तम्=हाथ। पत्रम्=पत्ता या चिट्ठी। कार्यम्=काम। रजतम्=चाँदी। तैलम्=तेल। मूलम्=जड़। अपत्यम्=सन्तान। तृणम्=तिनका। पर्णम्=पत्ता। ध्यानम्=ध्यान। मांसम्=मांस। चक्रम्=पहिया। उदरम्=पेट। लक्षणम्, चिह्नम्=निशान। रूप्यकम्=रुपया। वातायनम्=झरोखा, रोशनदान। यूथम्=झुण्ड। आभरणम्, आभूषणम्=गहना। शयनम्=सोना या सेज। व्यजनम्=चटनी या स्वादु खाद्य पदार्थ। व्यंजनम्=पंखा। उद्यानम्=बाग। वित्तम्, धनम्=धन। अस्त्रम्=हाथ से फेंका जाने वाला हथियार। शस्त्रम्=हाथ से चलाये जाने वाला हथियार। नवनीतम्=मक्खन। पुस्तकम्=पुस्तक। कर्गलम्=कागज। भाषणम्=व्याख्यान। विवरम्, बिलम्=बिल। प्रमाणम्=प्रमाण, गवाही, भार का नाप। गगनम्=आकाश।

१. नपुंसकलिंग में इकारान्त, उकारान्त तथा ऋकारान्त शब्दों को स्वरादि विभक्ति आगे रहते न् हो जाता है। उदाहरणार्थ—वारि+आ=वारि+न्+आ=

वारिणा। मधु+ए=मधु+न्+ए=मधुने। इत्यादि।

इकारान्त (इ-ending) वारि=पानी (Water)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	,,	वारिभ्यः
पंचमी	वारिणः	,,	,,
षष्ठी	,,	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	,,	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि !, हे वारे !	हे वारिणी !	वारीणि

अस्थि, अक्षि, दधि शब्दों की रूप-रचना में कुछ विशेषता है। जैसे—

अस्थि, अक्षि और दधि शब्दों के साथ तृतीया विभक्ति से अजादि विभक्तियों के परे रहते अन्तिम इ का लोप हो जाता है। जैसे—अस्थि+न्+आ=अस्थ्ना।

इकारान्त (इ-ending) अस्थि=हड्डी (Bone)

प्रथमा	अस्थि	अस्थिनी	अस्थीनि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	अस्थ्ना	अस्थिभ्याम्	अस्थिभिः
चतुर्थी	अस्थ्ने	,,	अस्थिभ्यः
पंचमी	अस्थ्नः	,,	,,
षष्ठी	अस्थ्नः	अस्थ्नोः	अस्थ्नाम्
सप्तमी	अस्थ्नि, अस्थनि	अस्थ्नोः	अस्थिसु
सम्बोधन	हे अस्थे !, हे अस्थि !	अस्थिनी !	हे अस्थीनि !

इकारान्त (इ-ending) अक्षि=आँख (Eye)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	अक्ष्णा	अक्षिभ्याम्	अक्षिभिः
चतुर्थी	अक्ष्णे	,,	अक्षिभ्यः
पंचमी	अक्ष्णः	,,	,,
षष्ठी	,,	अक्ष्णोः	अक्ष्णाम्
सप्तमी	अक्ष्णि, अक्षणि	,,	अक्षिषु
सम्बोधन	हे अक्षि !, हे अक्षे !	हे अक्षिणी !	हे अक्षीणि !

इकारान्त (इ-ending) दधि=दही (Curd)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	दधि	दधिनी	दधीनि
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पंचमी	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
सप्तमी	दध्नि, दधनि	दध्नोः	दधिषु
सम्बोधन	हे दधि !, हे दधे !	हे दधिनी !	हे दधीनि

इसी प्रकार सक्थि (जंघा) आदि शब्दों की रूप-रचना भी होती है।

इकारान्त (इ-ending) शुचि=पवित्र (Pious) (विशेषण)

प्रथमा	शुचि	शुचिनी	शुचीनि
द्वितीया	शुचि	शुचिनी	शुचीनि
तृतीया	शुचिना	शुचिभ्याम्	शुचिभिः
चतुर्थी	शुचये, शुचिने	शुचिभ्याम्	शुचिभ्यः
पंचमी	शुचेः, शुचिनः	शुचिभ्याम्	शुचिभ्यः
षष्ठी	शुचेः, शुचिनः	शुच्योः, शुचिनोः	शुचीनाम्
सप्तमी	शुचौ, शुचिनि	शुच्योः, शुचिनोः	शुचिषु
सम्बोधन	हे शुचि !, हे शुचे !	हे शुचिनी !	हे शुचीनि !

उकारान्त (उ-edning) मधु=शहद (honey)

प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पंचमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधो !, हे मधु !	हे मधुनी !	हे मधूनि !

वस्तु (चीज), अश्रु (आँसू), जानु (घुटना), अम्बु (पानी), तथा लघु (छोटा) गुरु (भारी) विशेषण आदि शब्दों की रूप-रचना भी इसी प्रकार होती है।

गुरु आदि विशेषण शब्दों के चतुर्थी से सप्तमी तक के एकवचन में दो-दो रूप बनेंगे।

जैसे—(४) गुरवे, गुरुणे (५) गुरोः, गुरुणः (६) गुरोः, गुरुणः (७) गुरौ, गुरुणि।

संस्कृत में नपुंसकलिंग ऋकारान्त शब्द प्राय: नहीं हैं। वैसे तो ऋकारान्त विशेषण शब्द का आवश्यकता के अनुसार नपुंसकलिंग में भी प्रयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए पुंल्लिग में दिये कई शब्दों की विशेषण के रूप में नपुंसकलिंग में भी रचना होती है। जैसे—

ऋकारान्त (ऋ-ending) कर्तृ (A doer) शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तॄणि
द्वितीया	"	"	"
तृतीया	कर्त्रा, कर्तृणा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभि:
चतुर्थी	कर्त्रे, कर्तृणे	"	कर्तृभ्य:
पंचमी	कर्तु:, कर्तृण:	"	कर्तृभ्य:
षष्ठी	कर्तु:, कर्तृण:	कर्त्रो:, कर्तृणो:	कर्तॄणाम्
सप्तमी	कर्तरि, कर्तृणि	" "	कर्तृषु
सम्बोधन	हे कर्त: !, हे कर्तृ !	हे कर्तृणी !	हे कर्तॄणि

ज्ञातृ, धातृ और नेतृ आदि शब्दों के रूप भी नपुंसकलिंग में इसी प्रकार होते हैं।

अभ्यास

(१) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क)

१. मनुष्य ज्ञान से मुक्ति प्राप्त करता है।
२. सत्य से बढ़कर तपस्या नहीं है।
३. वस्त्रों से ही मनुष्य शोभा पाता है (शुभ्)।
४. न मैं चाँदी चाहता हूँ (इष्-इच्छा) न सोना।
५. काव्यों के तत्त्व को विरले (स्वल्पा:) ही जानते हैं (बुध्)।
६. कसेरा (भाण्डकार:) ताँबे से बर्तन बनाता है।
७. अनिल सब बालकों का मित्र है।
८. इस बर्तन में तेल नहीं है।
९. गुरु ज्ञान के सलिल से अज्ञान के मल को धोता है (प्र+क्षाल्)।

(ख)

१. नर्तकी नयन बन्द कर (निमील्य) सुन्दर नाचती है (नृत्)।
२. धर्म का मूल अहिंसा, पाप का मूल अभिमान है।
३. आकाश बादलों से ढक गया है (आवृतम्)।
४. इसका क्या प्रमाण है कि तुम जो कहते हो सत्य है?

५. सेना अस्त्रों और शस्त्रों को लेकर चलती है ।
६. जल के बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता (शक्तः) ।
७. हड्डियों के बीच में मज्जा होती है ।
८. उसकी हड्डियाँ बलशाली हैं ।
९. वह आँख से काणा (काणः) तथा पैर से लँगड़ा (खंजः) है ।

(२) **निम्नलिखित हिन्दी पदों के लिए संस्कृत का एक पद लिखिए—**
दो हड्डियों में, दही के लिए, दोनों आँखों का, पानी से (अपादान), करने वाले का (न० लि० में), तालु में, शहद का, पुस्तकों को, भूषणों से (करण), प्रमाणों के द्वारा, उद्यानों के लिए, आँख और पेट के लिए, पहियों को (चक्रम्) निशान (चिह्नम्) ।

(३) **इनके लिंग, विभक्ति और वचन बताइये—**
सक्थ्ना, मधुनः, दधनि, रत्नानि, सुवर्णम्, चक्रेषु, अस्थ्ना, अस्थ्नोः, तालुनि, वारिणे, पुस्तकानाम्, भूषणेभ्यः, कर्तॄणि, उद्यानानि, अक्षिभ्याम्, उदरम्, चक्रैः, लक्षणाभ्याम्, चिह्नेभ्यः ।

(४) **शुद्ध करके लिखिए—**
मधोः, दध्नो, रत्नान्, वारये, उदरान्, अक्षयः, उद्यानः, वारिणी, पुस्तकेभिः, भूषणान्, चिह्नाः ।

(५) **मधु और कर्तृ के द्वितीया, तृतीया और सप्तमी विभक्तियों में रूप लिखिए ।**

(६) **उदक शब्द के प्रथमा, चतुर्थी और षष्ठी में रूप बताइए ।**

(७) **अक्षि शब्द के सभी विभक्तियों में रूप लिखिए ।**

त्रयोदश अध्याय

उपपद विभक्तियां

जो विभक्ति किसी विशेष शब्द के कारण लगे उसे 'उपपद विभक्ति' कहते हैं। जैसे—धनं विना सुखं नास्ति (धन के बिना सुख नहीं है) इस वाक्य में 'विना' के योग में द्वितीया विभक्ति हुई है। 'धनस्य' ऐसी षष्ठी विभक्ति नहीं हुई।

नीचे उपपद विभक्तियों का विशेष वर्णन किया जाता है।

द्वितीया विभक्ति

१. 'अधि' उपसर्गपूर्वक 'स्था', 'आस्' और 'शी' धातुओं के योग में आधार में द्वितीया विभक्ति होती है। उदाहरण—

सज्जनः सन्मार्गम् अधितिष्ठति।
बालः पर्यङ्कम् अधिशेते।
जनकः खट्वाम् अध्यास्ते।

२. निम्नलिखित धातुओं के योग में कर्म (द्वितीया विभक्ति) होती है।

सेव्=सेवा करना—बालकः पितरं सेवते। शिष्याः आचार्यं सेवन्ते। जनता मातृभूमिं सेवते।

३. आ+रुह्=चढ़ना—पुष्पम् सतां शिरः आरोहति। मर्कटः वृक्षमारोहति। जनः यानमारोहति। अहं द्विचक्रिकाम् आरोहामि।

४. रक्ष्=रखना या रक्षा करना। पिता पुत्रं रक्षति। नृपः प्रजाः रक्षति। छात्रः पुस्तकानि रक्षति। अहं घटीयन्त्रं रक्षामि।

५. स्तु=बड़ाई करना—गुणों का वर्णन करना। स्तौति छात्रः स्वं गुरुम्। भटः भटस्य शौर्यं स्तौति। जनाः भगवन्तं स्तुवन्ति। प्राणिनः परमात्मानं स्तुवन्ति।

६. निन्द्=निन्दा करना अर्थात् गुणों में दोष या दोषों में दोष बताना। सज्जनाः सज्जान् न निन्दन्ति। सज्जनाः न निन्दन्ति दुर्जनान्। कुछात्राः छात्रान् निन्दन्ति। नात्मानं कदाचिन्निन्देत्।

७. तॄ=पार होना। तरन्ति हि उदधिं नावैव धीराः। उडुपेन सरितं तरन्ति जनाः।

८. अनु=पीछे। इस उपसर्ग के साथ धातु का प्रयोग हो तो उसके साथ वाले शब्द में कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति) का प्रयोग होता है।

अनु+सृ (सर्)=अनुकूल होना—अनुसरति भृत्यः स्वामिनम्।

अनु+गम्=पीछे-पीछे जाना—अनुगच्छति वत्सः गावम्। अनुगच्छति पुत्री मातरम्। अनुगच्छति रोगः कुपथ्यम्। सूर्यमनुगच्छति प्रकाशः।

अनु+भू=अनुभव करना—मोहनः सुखमनुभवति देवप्रसादात्। रामः आरोग्य-

अनुभवति भगवत्कृपया । अनुभवति दुःखं मम मनः ।

९. गम्=जाना—ग्राममगच्छम् अहं ह्यः ।

आ+गम्=आना—को न्वागच्छति स्वगृहम् ?

प्रति+आ+गम् (गच्छ)=लौटना—धेनुः सायं प्रत्यागच्छति स्वाश्रमम् ।

१०. प्रति, आ, अधि इन उपसर्गों के योग में वस् धातु के साथ द्वितीया विभक्ति ही आती है । छात्राः छात्रावासम् प्रतिवसन्ति, आवसन्ति वा (छात्र छात्रावास में रहते हैं) ।

११. अन्तरा (बिना)—शब्द के योग में द्वितीया होती है । दुःखमन्तरा न सुखं न विद्या वा । परिश्रमम् अन्तरा धनं न प्राप्यते । न हि धर्ममन्तरा शान्तिः ।

अन्तरेण (बिना)—नहि सन्तोषमन्तरेण सुखं प्राप्नोति मनुजः ।

१२. बिना शब्द के योग में द्वितीया विभक्ति हो जाती है । न विद्यामधिगच्छति गुरोः कृपां बिना छात्रः ।

१३. अभितः, परितः, समया, निकषा, हा, प्रति, उभयतः—इन शब्दों के योग में भी द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे—

अभितः (चारों ओर)—ग्राममभितः जलं प्रवहति ।

परितः (चारों ओर)—प्रासादं परितः उद्यानानि सन्ति ।

समया (निकट)—नगरं समया राजमार्गः निर्मीयते ।

निकषा (निकट)—विद्यालयं निकषा जम्बूवृक्षाः सन्ति ।

हा (हाय)—हा नृशंसं बालघातिनम् ।

प्रति (को)—न तं प्रति किमपि कथनीयमस्ति । मामिदं प्रतिभाति, यदियं संस्कृत-भाषा अवश्यं पुनः प्रचरिष्यति ।

उभयतः (दोनों ओर)—इन्द्रप्रस्थमुभयतः यमुना प्रवहति ।

अन्य अनेक उपसर्गों अथवा अव्ययों के योग में भी द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—

१४. अनु (पीछे) अनुगोपालमुत्तिष्ठति चन्द्रदत्तः । शशिकान्तोऽनु विमलेशकुमारं धावति ।

१५. उपर्युपरि (ऊपर-ऊपर)—उपर्युपर्याकाशं गच्छति वायुयानम् ।

१६. अध्यधि (नीचे-नीचे)—अध्यधिभूमि गच्छन्ति सरितः ।

१७. अधोऽधः (नीचे और नीचे)—अधोऽधः गच्छति गङ्गा लोकम् ।

कुछ ऐसी क्रियाएँ भी हैं जो द्विकर्मक हैं, उनमें एक कर्मप्रधान होता है और दूसरा अप्रधान (गौण) । प्रधान कर्म में तो द्वितीया विभक्ति होती ही है, अप्रधान कर्म में भी द्वितीया विभक्ति होती है । उदाहरण—

(१) विमलेशः शशिकांतं दुग्धम् अपाययत् ।
(विमलेश ने शशिकान्त को दूध पिलाया)

(२) गोपालः विश्वामित्रं कथाम् अश्रावयत् ।

(गोपाल ने विश्वामित्र को कहानी सुनाई)

इन वाक्यों में शशिकान्त और विश्वामित्र अप्रधान कर्म हैं और दूध तथा कहानी प्रधान कर्म हैं। यहाँ पर अप्रधान कर्म-शब्दों में भी अवश्य द्वितीया विभक्ति ही होती है।

निम्नलिखित १६ धातुएँ[1] द्विकर्मक मानी गई हैं, यही अर्थ रखने वाली अन्य धातुएँ भी इसी प्रकार द्विकर्मक होती हैं। कई धातुओं के योग में दो दो विभक्तियाँ भी लगती हैं जो कोष्ठक में दे दी हैं।

दुह्—गोपालः धेनुं पयः दोग्धि।

याच्—वामनः बलिं वसुधाम् याचते।

पच्—तण्डुलान् ओदनं पचति सूदः (तण्डुलैः)

दण्ड्—नृपः चौरम् शतं दण्डयति।

रुध्—आवासम् अवरुणद्धि सैनिकान् (आवासे)।

प्रच्छ्—यात्री माणवकं पन्थानमपृच्छत् (माणवकात्)।

चि—लताः पुष्पाण्यवचिनोति मालाकारः (लताभ्यः)।

ब्रू, शास्—आचार्यः अन्तेवासिनम् ब्रूते शास्ति वा।

जि—रामः रावणं राज्यमजयत् (रावणात्)।

मथ्—सारं संसारं मथ्नाति धीमान् (संसारात्)

मुष्—मूषकः माम् वस्तूनि नित्यं मुष्णाति (मत्)।

नी, हृ, कृष्, वह्—ग्रामम् (ग्रामात्) अजां नयति, हरति, कर्षति, वहति वा।

तृतीया विभक्ति

[क] सह, समम्, साकम् तथा सार्धम् (साथ) के योग में तृतीया विभक्ति होती है।

जनकेन 'सह', 'समम्', 'साकम्', 'सार्धम्' वा समायातः पुत्रः।

निम्नलिखित शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है।

[ख] अलम्—अलं महीपाल तव श्रमेण।

[ख] विना—धनेन विना जीवनं व्यर्थम्।

[ग] किम्—किं धनेन हि सताम।

[घ] प्रयोजनम्—किं तेन भवतामस्ति प्रयोजनम्।

[ङ] अनुकरण—कुमारः आकृत्या प्रतिभाति कुलीनः।

[च] कृतम्—कृतमनुचितेन सम्मानेन।

[छ] अभाव—विद्यया विहीनः पशुभिः समानः।

[ज] विकार—विदूषकः अक्ष्णा काणः अस्ति। सा स्त्री श्रोत्रेण बधिरा अस्ति।

१. दुह् याच् पच् दण्ड् रुधि प्रच्छि चि ब्रू शासु जि मथ् मुषाम्।
कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नी हृ कृष्वहाम्॥

उपपद विभक्तियां

[झ] कारण—जटाभिस्तापसः। वेषेण ब्रह्मचारी।

चतुर्थी विभक्ति

निम्नलिखित धातुओं एवं शब्दादि के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

[क] दा (यच्छ्)—जनकः बालकाय पुस्तकम् यच्छति।

[ख] रुच्—अध्ययनं मह्यं रोचते।

[ग] द्रुह्—द्रुह्यति राजा राज्ञेऽपरस्मै।

[घ] स्पृह्—पुष्पेभ्यः स्पृहन्ति भ्रमराः।

[ङ] कुप्—कुप्यति भगवान् ह्यर्धनिणे।

[च] क्रुध्—क्रुध्यति शशिकान्ता प्रमोदाय।

परन्तु क्रुध् और द्रुह् के साथ यदि उपसर्ग हो तो द्वितीया विभक्ति होती है। रमेशः नरेशम् अभिक्रुध्यति।

[छ] ईर्ष्—पाकिस्तानः भारतवर्षाय ईर्ष्यति।

[ज] असूय—नहि रामः रावणायासूयत्।

[झ] श्लाघ—मित्राय श्लाघते मित्रम्।

[ञ] नि+विद—निवेदयिष्यामि गुरुचरणेभ्योऽवकाशार्थम्।

[ट] नमः—नमः भगवते वासुदेवाय। नमः श्रीमद्भ्यः पितृचरणेभ्यः।

[ठ] स्वस्ति—स्वस्ति भूयात् बालकाय। स्वस्ति स्याज्जनताय।

[ड] स्वाहा—इन्द्राय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। सोमाय स्वाहा।

(ढ) स्वधा—पितृभ्यः स्वधा।

(ण) अलम्—अलम् श्रीकृष्णः कंसाय।

(त) समर्थः—हरिरलम् (समर्थः) दैत्येभ्यः।

(थ) हितम्—ब्राह्मणाय हितम्। गवे हितम्।

(द) आशीः—शिशवे कुशलं भूयात्।

(ध) तादर्थ्य—परिधानाय वस्त्रम्। निवासाय गृहम्।

पञ्चमी विभक्ति

निम्नलिखित शब्दों के योग में अथवा उनके अर्थों के योग में पंचमी विभक्ति होती है।

(क) भय—कातरः बिभेति चौरात्। सज्जनाः बिभ्यति पापात्।

(ख) अपसारण—अपसारयति गां यवेभ्यः। निवारयति बालमनृतात्।

(ग) पृथक्त्वम्—अवहीनो भ्राता स्वसुः।

(घ) अपेक्षा—जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

(ङ) पठन—आचार्यात् पठति अधीते वा।

(च) दूर—उद्यानम् ग्रामात् गव्यूतिः।

(छ) जुगुप्सा—जुगुप्सते किल योगी सांसारिकजनात्।

(ज) प्रमाद—स्वकर्तव्यात् प्रमत्तो मा भव।

(झ) प्रभृति—ततः प्रभृति कार्यदक्षोऽहम् ।

(ञ) आरभ्य—पंचम्याः आरभ्य गमिष्यामि पठितुं सदा ।

(ट) विना—अनिलात् विना न जीवनम् ।

(ठ) ऋते—ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः ।

(ड) आरात् (समीप)—आरात् इन्द्रप्रस्थात् 'शाहदरा' विद्यते ।

(ढ) अन्य—कोऽन्यः जनकात् योऽनुगृह्णाति माम् ?

(ण) इतर—अपि राजमार्गात् इतरः कश्चित् पन्थाः ?

(त) प्र+भू—गंगा हिमवतः प्रभवति ।

षष्ठी विभक्ति

निम्नलिखित शब्दों या उनके अर्थों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है ।

(क) समानता—पितुः सदृशोऽयं बालः ।

(ख) हेतु—सोऽत्र तिष्ठति कस्य हेतोः ।

(ग) स्मृ—बालः जनकस्य स्मरति (जनकं स्मरति वा) ।

(घ) सम्बन्ध—मूर्खस्य बहवो दोषाः सतां च बहवो गुणाः ।

(ङ) कृत्प्रत्यय निर्मित संज्ञा के योग में—बालस्य शयनम् । दुष्टस्य पतनम् ।

(च) कृत्प्रत्ययान्त कर्म के योग में—अन्नस्य पाकः । धनस्य दानम् ।

(छ) दूरवाची शब्द के साथ—ग्रामस्य दूरं (ग्रामात् वा) । किं दूरं व्यवसायिनाम् ।

(ज) समीपवाची शब्द के साथ—नगरस्य समीपम्, विद्यालयस्य निकटम् ।

(झ) कृते के साथ—भोजनस्य कृते (भोजन के लिए) ।

(ञ) मध्ये के साथ—तरूणां मध्ये आश्रमः ।

(ट) समक्षम् के साथ—मम समक्षमनृतं वदसि !

(ठ) अन्तः, अन्तरे के साथ—चौरः गृहस्य अन्तः (अन्तरे) गतः ।

(ड) दूरे, अन्तिके—नगस्य अन्तिके दूरे वा मुनि-गुहा ?

(ढ) तस् प्रत्यय वाले शब्दों के साथ—ग्रामस्य दक्षिणतः नदी ।

(ण) अनादर में—विरतस्यानादरः न कार्यः ।

(त) निर्धारण में—मासानां मार्गशीर्षोऽहम्, ऋतूनां कुसुमाकरः ।

सप्तमी विभक्ति

निम्नलिखित शब्दों, धातुओं एवम् उनके अर्थों के योग में सप्तमी विभक्ति होती है ।

(क) निर्धारणे—छात्रेषु कतमश्छात्रः तस्यानुजः ?

(ख) स्निह्, अनुरञ्ज्, अभिलष् आदि—जनके स्निह्यति पुत्रः ।
अनुरक्ता राजनि बाला । पुष्पेषु अभिलषति ।

(ग) वि+अव+हृ—व्यवहरति सदाचारे सज्जनः ।

(घ) अधिपति—आसीत् उशीनरेषु दान्तः शिविः राजा ।

(ङ) साधु, असाधु—रमेशकुमारः पितरि साधुः असाधुः वा ?

(च) अनादर—पिता रुदत्सु पुत्रेषु प्राव्राजीत्

(छ) निमित्ते—चर्मणि द्वीपिनं हन्ति, दन्तयोर्हन्ति कुंजरम्

(ज) किसी क्रिया के निर्दिष्ट समय, दिन, सप्ताह, मास, वर्ष आदि को बताने के लिए—सायंकाले गावः आगच्छन्ति। एतस्मिन् समये कः गमिष्यति ? गतसप्ताहे अतिवर्षा अभवत्।

(झ) पहली क्रिया में—उदिते सूर्ये विकसति कमलम्।

(ञ) संलग्न, निरत, लीन आदि अर्थ के साथ—कार्ये निरतः (संलग्नः, लीनः वा)

(ट) प्रवीणः, निपुणः, चतुरः आदि के योग में—चित्रकलायां प्रवीणः। अध्ययने निपुणः। संगीते चतुरः।

(ठ) अतिशयवाचक शब्दों के योग में षष्ठी तथा सप्तमी दोनों ही होती हैं। अनिलः बालकानां बालकेषु वा श्रेष्ठतमः अस्ति।

अभ्यास

(१) कारक विभक्ति और उपपद विभक्ति की परिभाषा लिखकर उदाहरण देकर अन्तर स्पष्ट कीजिए।

(२) द्वितीया, चतुर्थी और सप्तमी विभक्तियाँ किन-किन धातुओं के साथ होती हैं ? दो-दो उदाहरण दीजिए।

(३) द्वितीया में निर्दिष्ट द्विकर्मक धातुओं को सोदाहरण समझाइए।

(४) स्निह्, याच् नी, रुच्, सह—इनके साथ किन-किन विभक्तियों का प्रयोग होता है ?

(५) निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों को शुद्ध कीजिए और कारण भी लिखिए—रामस्य विना अयोध्या शून्या जाता। नहि तं रोचते भक्तिः। पुत्रस्य सह समागच्छत् पिता। हरिश्चंद्रात् याचते वसुवां विश्वामित्रः। रमेशकुमारः स्निह्यति स्वकनिष्ठां भगिनीम्। क्रुध्यति शशिकान्तः स्वमातुः। सुशीलायाः प्रति न कश्चिदपि वदेत् अपशब्दम्। नार्यः सदा स्वभर्त्तुः आदेशस्य पालयन्तु।

(६) निम्नलिखित के साथ कौन-कौन-सी विभक्ति आती है ? उदाहरण वाक्यों में इनका प्रयोग कीजिए :—

नमः, सह, कृते, अलम्, प्रति, विना, तुल्यम्, धिक्, अन्तरा, प्रभृति, स्वाहा, पृथक्, ऋते, अन्तरेण।

(७) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

गंगा के दोनों ओर वृक्ष हैं। नगर के चारों ओर सड़क है। मैं रमेश के बिना नहीं जाऊंगा। राम के साथ सीता अयोध्या लौट आई (प्रतिनिवृत्ता)। राममूर्ति पहलवानों के लिए काफी (अलम्) था। अधिक विस्तार से क्या लाभ।

अन्धे को दर्पण से क्या ? वह एक आँख से काणा है। बालक फूलों के लिए बाग में जाते हैं। गुरु शिष्यों को पाठ पढ़ाता है (पाठयति)। वीरों को नमस्कार। राष्ट्र का कल्याण हो (स्वस्ति)। कर्ण के समान दानवीर कोई (कोऽपि) नहीं हुआ।

(८) निम्नलिखित वाक्यों में कोष्ठक में दिए शब्दों में उचित विभक्तियां लगाकर रिक्त स्थानों पर लिखिए—

(क) शिष्यः (गुरु)················स्निह्यति।
(ख) (श्रीगणेश)··················नमः।
(ग) रामः (सीता)················विना व्यलपत्।
(घ) वालः (अश्व)················आरोहति।
(ङ) श्रीकृष्णः (सखी)·············सहाक्रीडत्।

चतुर्दश अध्याय

सर्वनाम शब्द

जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त किए जाते हैं, वे 'सर्वनाम' कहलाते हैं।

संस्कृत में सर्वनाम तो बहुत हैं किन्तु उनमें से प्रयोग में आने वाले कुछ सर्वनाम यहाँ दिए जाते हैं।

सर्व, पूर्व, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, भवत्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस् किम्, युष्मद्, अस्मद् इत्यादि। संख्यावाची एक, द्वि आदि शब्द भी सर्वनाम होते हैं।

ज्ञातव्य—सब सर्वनाम शब्द विशेषणों के समान प्रयुक्त होते हैं और उनके लिंग, वचन और विभक्ति विशेष्य के अनुसार ही होते हैं।

सर्वनाम शब्दों के साथ लगने वाली विभक्तियों के प्रत्यय निम्न प्रकार से विभिन्न स्वरूप वाले हो जाते हैं। जैसे—

विभक्तियाँ (पुंल्लिग) में

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	:	औ	इ
द्वितीया	म्	,,	आन्
तृतीया	इन	भ्याम्	ऐः (भिः)
चतुर्थी	स्मै	,,	भ्यः
पंचमी	स्मात्	,,	,,
षष्ठी	स्य	योः	इषाम्
सप्तमी	स्मिन्	,,	इषु

तद् आदि सर्वनाम शब्दों का संबोधन नहीं होता।

विभक्तियाँ स्त्रीलिंग में

प्रथमा	०	ई	आः
द्वितीया	अम्	ई	आः
तृतीया	या	भ्याम्	भिः
चतुर्थी	स्यै	भ्याम्	भ्यः
पंचमी	स्याः	भ्याम्	भ्यः
षष्ठी	,,	योः	साम्

सप्तमी	स्याम्	योः	सु

विभक्तियाँ नपुंसकलिंग में

प्रथमा	०	ई	आनि
द्वितीया	०	ई	आनि

तृतीया से सप्तमी तक पुंल्लिंग की भाँति।

तद्=वह (पुंल्लिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	,,	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	,,	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	,,	,,
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	,,	तेषु

तद् (स्त्रीलिंग)

प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	,,	,,
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	,,	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	,,	,,
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	,,	तासु

तद् (नपुंसकलिंग)

प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीयो	,,	,,	,,

शेष रूप पुंल्लिंग के समान होते हैं।

यद् (जो) पुंल्लिंग

प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	,,	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	,,	येभ्यः
पंचमी	यस्मात्	,,	,,
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	,,	येषु

यद् (स्त्रीलिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	,,	,,
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	,,	याभ्यः
पंचमी	यस्याः	,,	याभ्यः
षष्ठी	,,	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	,,	यासु

यद् (नपुंसकलिंग)

प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	,,	,,	,,

शेष रूप पुंल्लिंग के समान होंगे।

एतद् (पुंल्लिंग)

प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम् (एनम्)[1]	एतौ (एनौ)	एतान् (एनान्)
तृतीया	एतेन (एनेन)	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	,,	एतेभ्यः
पंचमी	एतस्मात्	,,	,,
षष्ठी	एतस्य	एतयोः (एनयोः)	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	,,	एतेषु

एतद् (स्त्रीलिंग)

प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम् (एनाम्)	एते (एने)	एताः (एनाः)
तृतीया	एतया (एनया)	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	,,	एताभ्यः
पंचमी	एतस्याः	,,	,,
षष्ठी	,,	एतयोः (एनयोः)	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	,,	एतासु

---

१. एतद् शब्द की 'एन' शब्द से की गई रूप-रचना का प्रयोग अन्वादेश या पुनरुक्ति (एक ही प्रकरण-वाक्य में इसी शब्द के दुबारा प्रयोग) करने पर ही किया जाता है—सामान्य अवस्था में नहीं। उदाहरणार्थ—'एनमाकारय' वाक्य में 'एनम्' का प्रयोग ठीक नहीं है। एष आगच्छति—एनमाकारय। एतेन वैयाकरणमधीतम् एनं वेदमध्यापय—आदि ठीक हैं।

एतद् (नपुंसकलिंग)

प्रथमा	एतद्, एतत्	एते	एतानि
द्वितीया	,, ,,	,,	,,

शेष रूप पुँल्लिग जैसे होते हैं।

इदम् (यह) पुँल्लिग

प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	,,	एभ्यः
पंचमी	अस्मात्	,,	,,
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	,,	एषु

इदम् (स्त्रीलिंग)

प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	,,	आभ्यः
पंचमी	अस्याः	,,	,,
षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	,,	आसु

इदम् (नपुंसकलिंग)

प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	,,	,,	,,

शेष रूप पुँल्लिग के समान होते हैं।

किम् [कौन] पुँल्लिग

प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	,,	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	,,	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	,,	,,
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	,,	केषु

किम् [स्त्रीलिंग]

प्रथमा	का	के	काः

द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	"	काभ्यः
पंचमी	कस्याः	"	"
षष्ठी	"	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	"	कासु

किम् [नपुंसकलिंग]

प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	"	"	"

शेष रूप पुंल्लिग की भाँति होते हैं।

'किम्' शब्द के साथ 'अपि', 'चित्' और 'चन' भी आवश्यकता के अनुसार जोड़े जाते हैं। इनसे 'कोई', 'किसी', 'कुछ' आदि अनिश्चयवाचक सर्वनामों का बोध होता है। जैसे—

पुँल्लिग— कोऽपि आगच्छति, कश्चिदागच्छति, कश्चनागच्छति =कोई आता है।

स्त्रीलिंग— काप्यागच्छति, काचिदागच्छति, काचनागच्छति =कोई आती है।

नपुंसकलिंग— किमपि अस्ति, किञ्चिदस्ति, किञ्चनास्ति =कुछ है।

शेष रूप पुंल्लिग के समान होते हैं।

ज्ञातव्य—अदस्, युष्मद् और अस्मद् शब्दों के साथ विभक्तियों के चिह्नों में बहुत अधिक परिवर्तन हो जाता है।

अदस्=वह (पुंल्लिग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	"	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	"	अमीभ्यः
पंचमी	अमुष्मात्	"	"

षष्ठी	अमुष्य	अमुयो:	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	,,	अमीषु

स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमू:
द्वितीया	अमूम्	,,	,,
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभि:
चतुर्थी	अमुष्यै	,,	अमूभ्य:
पंचमी	अमुष्या:	,,	,,
षष्ठी	,,	अमुयो:	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	अमुयो:	अमूषु

नपुंसकलिंग

प्रथमा	अद:	अमू	अमूनि
द्वितीया	,,	,,	,,

शेष रूप पुंल्लिग के समान होते हैं।

युष्मद् अस्मद् शब्दों के लिंग के विषय में ज्ञातव्य

प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह पुंल्लिग हो, स्त्रीलिंग हो अथवा नपुंसलिंग हो, अपने लिए 'मैं' शब्द का प्रयोग करता है, इसी प्रकार 'तू' शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। अत: युष्मद् और अस्मद् शब्द के रूप तीनों लिंगों में समान होते हैं।

युष्मद् = तू (तीनों लिंगों में एक समान रूप)

प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभि:
चतुर्थी	तुभ्यम्	,,	युष्मभ्यम्
पंचमी	त्वत्	,,	युष्मत्
षष्ठी	तव	युवयो:	युष्माकम्
सप्तमी	त्वयि	,,	युष्मासु

अहम् = मैं (तीनों लिंगों में एक समान रूप)

प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	,,	अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभि:
चतुर्थी	मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
पंचमी	मत्	,,	अस्मत्
षष्ठी	मम	आवयो:	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	,,	अस्मासु

ज्ञातव्य—नीचे दिये गये सर्व, पूर्व, प्रथम आदि शब्दों का संबोधन होता है।

सर्व = सब (पुँल्लिग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	”	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	”	सर्वेभ्यः
पंचमी	सर्वस्मात्	”	”
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	”	सर्वेषु
संबोधन	हे सर्व	हे सर्वौ	हे सर्वे

सर्व (स्त्रीलिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	”	”
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	”	सर्वाभ्यः
पंचमी	सर्वस्याः	”	”
षष्ठी	”	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	”	सर्वासु
सम्बोधन	हे सर्वे	हे सर्वे	हे सर्वाः

सर्व (नपुंसकलिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	”	”	”
संबोधन	हे सर्व	हे सर्वे	हे सर्वाणि

शेष रूप पुँल्लिग के समान होंगे।

एवम्—'अन्य' शब्द के रूप भी सर्व के समान होंगे।

पूर्व (पहला, पूर्ववर्ती) पुँल्लिग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पूर्वः	पूर्वौ	पूर्वे, पूर्वाः
द्वितीया	पूर्वम्	”	पूर्वान्
तृतीया	पूर्वेण	पूर्वाभ्याम्	पूर्वैः
चतुर्थी	पूर्वस्मै, पूर्वाय	”	पूर्वेभ्यः
पंचमी	पूर्वस्मात्, पूर्वात्	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः
षष्ठी	पूर्वस्य	पूर्वयोः	पूर्वेषाम्

सप्तमी	पूर्वस्मिन्, पूर्वे	पूर्वयोः	पूर्वेषु
सम्बोधन	हे पूर्व !	हे पूर्वौ	हे पूर्वे, हे पूर्वाः

पूर्व (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पूर्वा	पूर्वे	पूर्वाः
द्वितीया	पूर्वाम्	,,	,,
तृतीया	पूर्वया	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभिः
चतुर्थी	पूर्वस्यै, पूर्वायै	,,	पूर्वाभ्यः
पंचमी	पूर्वस्याः, पूर्वायाः	,,	,,
षष्ठी	,, ,,	पूर्वयोः	पूर्वासाम्
सप्तमी	पूर्वस्याम्, पूर्वयाम्	,,	पूर्वासु
सम्बोधन	हे पूर्वे !	हे पूर्वे !	हे पूर्वाः

पूर्व (नपुंसकलिंग)

प्रथमा	पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि
द्वितीया	,,	,,	,,
सम्बोधन	हे पूर्व	हे पूर्वे	हे पूर्वाणि

तृतीया से शेष रूप पुंल्लिग के समान होंगे ।

उभ = दोनों (तीनों लिंगों में)

क्योंकि यह शब्द दो को बताता है अतः इसका एकवचन और बहुवचन नहीं होता । इसके तीनों लिंगों में द्विवचन मात्र में रूप देखिए—

	पुंल्लिग (द्विवचन)	स्त्रीलिंग (द्विवचन)	नपुंसकलिंग (द्विवचन)
प्रथमा	उभौ	उभे	उभे
द्वितीया	उभौ	उभे	उभे
तृतीया	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
चतुर्थी	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
पंचमी	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
षष्ठी	उभयोः	उभयोः	उभयोः
सप्तमी	उभयोः	उभयोः	उभयोः

प्रथम = पहला (पुंल्लिग)

प्रथमा	प्रथमः	प्रथमौ	प्रथमे, प्रथमाः
द्वितीया	प्रथमम्	,,	प्रथमान्
तृतीया	प्रथमेन	प्रथमाभ्याम्	प्रथमैः
चतुर्थी	प्रथमाय	,,	प्रथमेभ्यः
पंचमी	प्रथमात्	,,	,,

षष्ठी	प्रथमस्य	प्रथमयोः	प्रथमानाम्
सप्तमी	प्रथमे	”	प्रथमेषु
संबोधन	हे प्रथम	हे प्रथमौ	हे प्रथमे, हे प्रथमाः

विशेष वक्तव्य—वैसे तो 'प्रथम' शब्द के रूप 'देव' के समान ही हैं किन्तु प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में दो रूप बने हैं। 'प्रथम' शब्द के स्त्रीलिंग में 'प्रथमा' शब्द के रूप 'लता' शब्द के समान होंगे और नपुंसकलिंग में 'फल' शब्द के समान।

द्वितीय=दूसरा (पुँल्लिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	द्वितीयः	द्वितीयौ	द्वितीयाः
द्वितीया	द्वितीयम्	”	द्वितीयान्
तृतीया	द्वितीयेन	द्वितीयाभ्याम्	द्वितीयैः
चतुर्थी	द्वितीयस्मै, द्वितीयाय	”	द्वितीयेभ्यः
पंचमी	द्वितीयस्मात्, द्वितीयात्	”	”
षष्ठी	द्वितीयस्य	द्वितीययोः	द्वितीयानाम्
सप्तमी	द्वितीयस्मिन्, द्वितीये	द्वितीययोः	द्वितीयेषु
संबोधन	हे द्वितीय	हे द्वितीयौ	हे द्वितीयाः

वक्तव्य—चतुर्थी, पञ्चमी और सप्तमी में दो-दो रूपों की इस शब्द में विशेषता है।

द्वितीया=दूसरी, (स्त्रीलिंग)

प्रथमा	द्वितीया	द्वितीये	द्वितीयाः
द्वितीया	द्वितीयाम्	”	”
तृतीया	द्वितीयया	द्वितीयाभ्याम्	द्वितीयाभिः
चतुर्थी	द्वितीयस्यै द्वितीयायै	”	द्वितीयाभ्यः
पंचमी	द्वितीयस्याः द्वितीयायाः	”	”
षष्ठी	द्वितीयस्याः द्वितीयायाः	द्वितीययोः	द्वितीयानाम्
सप्तमी	द्वितीयस्याम् द्वितीयायाम्	”	द्वितीयासु
सम्बोधन	हे द्वितीये	हे द्वितीये	हे द्वितीयाः

द्वितीय (नपुंसकलिंग)

प्रथमा	द्वितीयम्	द्वितीये	द्वितीयानि
द्वितीया	”	”	”

सम्बोधन	हे द्वितीय	हे द्वितीये	हे द्वितीयानि

शेष रूप पुँल्लिग के समान होंगे ।

इसी प्रकार 'तृतीय' शब्द के रूप भी बनेंगे ।

अभ्यास

(१) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए:—

यह लड़की पाठशाला जाती है । इसकी कमीज (कंचुक) में बटन (वीटिका) नहीं हैं । यह लड़का उसका मित्र है । मोहन ने जिसकी पुस्तक पढ़ी थी वह छात्र आता है । यह कलम किसकी है । मेरी दवात (मसिपात्रम्) में स्याही नहीं है । हमारा घर विद्यालय से दूर है । सब लड़कियाँ खेलने गई हैं । जो महिलाएँ सत्संग में जाती हैं उनको पुण्य लाभ होता है । तुम्हारा बस्ता (प्रसेकः) कहाँ है ? एक नगर में एक राजा रहता था । रात्रि में उसके घर कोई पंडित आता है । राजा उसे सोने का भूषण देता है । तुम सब और हम सब एक विद्यालय में पढ़ते हैं ।

(२) निम्नलिखित हिन्दी पदों के लिए संस्कृत का एक पद लिखिए—

जिन सब (लड़कियों) ने, जिन सब (लड़कों) ने, तुम सबका, हम सबका, तुम दोनों का, तेरा, हम दोनों का, वे (लड़कियाँ), वे (लड़के), वे (महि-लाएँ), वे (पुरुष), उन (लड़कियों) का, उन लड़कों का, कौन (छात्र), कौन-सी (छात्राएं), किस (पाठशाला) में, किस (विद्यालय) में, किन (लड़कियों) की, किन (लड़कों) की, कौन (दो) लड़कियां, कौन (दो) लड़के, कौन-सी दवात ।

(३) निम्नलिखित पदों के मूल शब्द, लिंग, विभक्ति तथा वचन बताइए :—

यासाम्, येषाम्, तासाम्, तेषाम्, कासाम्, केषाम्, काभ्यः, येभ्यः, एतेभ्यः, तेभ्यः, युष्माकम्, अस्मभ्यम्, कैः, तस्यै, यस्यै, तस्मात्, एतिस्मन्, कस्मात्, कस्मिन्, यस्याः, अस्याः, एतस्यै, सर्वेषाम्, सर्वस्यै, एतेषाम्, आसाम्, एषाम्, एकस्मिन्, तस्मिन्, सर्वस्मात्, सर्वस्याः, युवाम्, आवाभ्याम्, युष्मासु ।

(४) शुद्ध करके लिखिए :—

अस्येषाम्, सर्वात्, एकात्, कानाम्, सर्वात्, त्वाया, अस्माभ्यः, युष्मयोः, ऐते-षाम्, सर्वयाः, सर्वायाम् ।

(५) इन शब्दों की रूप-रचना तृतीया, चतुर्थी और पंचमी विभक्तियों में लिखिए —युष्मद्, सर्व (स्त्रीलिंग में)। इदम् (पुँल्लिग में) । उभ (स्त्रीलिंग में) ।

(६) इन शब्दों की रूप-रचना पहली, दूसरी, छठी और सातवीं विभक्ति में लिखिए —तद्, एतद्, किम् ।

पंचदश अध्याय

व्यंजनान्त (हलन्त) शब्द

हलन्त शब्दों की रूप-रचना करते समय वे ही प्रत्यय लगते हैं, जो अजन्त शब्दों में। केवल प्रथमा यिभक्ति के एकवचन में सु विभक्ति का लोप हो जाता है। शेष प्रत्यय प्राय: बिना परिवर्तन के हलन्त शब्दों के साथ जुड़ जाते हैं।

व्यंजनान्त शब्दों से साथ प्रयुक्त होने वाले प्रत्यय (विभक्तियाँ)

बिभक्ति[1]	एकबचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	०	औ	अः
द्वितीया	अम्	औ	अः
तृतीया	आ	भ्याम्	भिः
चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यः
पंचमी	अः	भ्याम्	,,
षष्ठी	अः	ओः	आम्
सप्तमी	इ	ओः	सु

पुंल्लिग तथा स्त्रीलिंग शब्दों में उपरिलिखित विभक्तियाँ प्राय: समान ही हैं।

नपुंसकलिंग की प्रथमा, द्वितीया और सम्बोधन के प्रत्ययों (विभक्तियों) में अन्तर नहीं होता। वे इस प्रकार हैं। जैसे—

बिभक्ति	एकबचन	द्विबचन	बहुवचन
प्रथमा	०	ई	इ
द्वितीया	०	,,	,,
सम्बोधन	०	ई	इ

शेष सभी विभक्तियाँ पुंल्लिग के समान ही होती हैं

विशेष—हलन्त शब्द सामान्यत: दो प्रकार के हैं :—

१. अविकृत—इनमें विभक्तियाँ परे आने पर कोई विकार अथवा परिवर्तन नहीं होता। उदाहरण—सुहृद्, विश्वजित्, मरुत्, तमोनुद् आदि। (सुहृद्, सुहृदौ, सुहृदि, सुहृत्सु)।

---

१. अजादि विभक्तियाँ—औ, अस्, अम् औ, अस्, आ, ए, अः, ओः, आम्, इ, ओः—ये अजादि विभक्तियां कहलाती हैं, क्योंकि इनके आदि में अच् (स्वर) है।
हलादि विभक्तियाँ—स्, भ्याम्, भिस्, भ्यस्, सु—ये विभक्तियाँ (प्रत्यय) हलादि कहलाती हैं, क्योंकि इनके आदि में हल् (व्यंजन) है।

२. विकृत—इनमें विभक्तियाँ परे होने पर दीर्घ, लोप, संप्रसारण आदि कोई न कोई विकार होता है। राजन्, विद्वस्, गिर्, मनस् आदि (राजा, राज्ञः, राजसु)। ये विकार या परिवर्तन रूपों से ज्ञात हो जाएँगे।

चकारान्त पयोमुच् (बादल), पुँल्लिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पयोमुक्, पयोमुग्	पयोमुचौ	पयोमुचः
द्वितीया	पयोमुचम्	,,	,,
तृतीया	पयोमुचा	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भिः
चतुर्थी	पयोमुचे	,,	पयोमुग्भ्यः
पंचमी	पयोमुचः	,,	,,
षष्ठी	,,	पयोमुचोः	पयोमुचाम्
सप्तमी	पयोमुचि	,,	पयोमुक्षु
सम्बोधन	हे पयोमुक्, हे पयोमुग्!	हे पयोमुचौ!	हे पयोमुचः!

कुछ अनुरूप चकारान्त शब्द

वारिमुच् पुं०=बादल, जलमुच् पुं०=बादल।

जकारान्त वणिज् (व्यापारी), पुँल्लिंग

प्रथमा	वणिक्, वणिग्	वणिजौ	वणिजः
द्वितीया	वणिजम्	,,	,,
तृतीया	वणिजा	वणिग्भ्याम्	वणिग्भिः
चतुर्थी	वणिजे	,,	वणिग्भ्यः
पंचमी	वणिजः	,,	,,
षष्ठी	वणिजः	वणिजोः	वणिजाम्
सप्तमी	वणिजि	,,	वणिक्षु
सम्बोधन	हे वणिक्! हे वणिग्!	हे वणिजौ!	हे वणिजः!

वणिज् जैसे कुछ जकारान्त शब्दः—

भिषज् पुं०=डाक्टर, वैद्य। ऋत्विज् पुं=यज्ञ कराने वाला, पुरोहित।

जकारान्त विश्वसृज् (ईश्वर), पुँल्लिंग

प्रथमा	विश्वसृट्	विश्वसृजौ	विश्वसृजः
द्वितीया	विश्वसृजम्	,,	,,
तृतीया	विश्वसृजा	विश्वसृड्भ्याम्	विश्वसृड्भिः
चतुर्थी	विश्वसृजे	,,	विश्वसृड्भ्यः
पंचमी	विश्वसृजः	,,	,,
षष्ठी	,,	विश्वसृजोः	विश्वसृजाम्
सप्तमी	विश्वसृजि	,,	विश्वसृट्सु
सम्बोधन	हे विश्वसृट्!	हे विश्वसृजौ!	हे विश्वसृजः!

एवम्—सम्राज् (पुं) महाराजाधिराज। इसके रूप—सम्राट् सम्राजौ सम्राजः इत्यादि। परिव्राज्=संन्यासी (पुं)

विभ्राज् पुं०=सूर्य। देवराज् पुं=इन्द्र इत्यादि।

तकारान्त भवत् आप शब्द पुंल्लिग

यह शब्द सर्वनाम है। भवत् शब्द के कर्त्ता (प्रथमा) का प्रयोग सदा प्रथम पुरुष में होता हैं। जैसे—'भवान् करोति' होता है, 'भवान् करोषि' नहीं होगा।

भवत्=आप आदरसूचक सर्वनाम, पुंल्लिग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वितीया	भवन्तम्	,,	भवतः
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	,,	भवद्भ्यः
पंचमी	भवतः	,,	,,
षष्ठी	,,	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	,,	भवत्सु

भवत् शब्द का सम्बोधन नहीं होता।

भवत् के समान रूपों वाले कुछ अन्य शब्द

मूल शब्द अर्थ			
बलवत्=शक्तिशाली	बलवान्	बलवन्तौ	बलवन्तः
भगवत्=भगवान्	भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः
श्रीमत्=श्रीमान्, धनी	श्रीमान्	श्रीमन्तौ	श्रीमन्त.
गुणवत्=गुणी	गुणवान्	गुणवन्तौ	गुणवन्तः
बुद्धिमत्=बुद्धिमान्	बुद्धिमान्	बुद्धिमन्तौ	बुद्धिमन्तः

शेष सभी रूप 'भवत् के समान होंगे। संबोधन में—हे बलवन्, हे भगवन् इत्यादि होंगे।

अन्य शब्द—हिमवत् (हिमालय), आयुष्मत् (दीर्घायु), मूर्तिमत् (आकार-वाला), शक्तिमत् (बलवान्) और धीमत् (समझदार) आदि शब्दों के रूप होंगे।

भूभृत्=पर्वत, पुंल्लिग

प्रथमा, सम्बोधन,	भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः
द्वितीया	भूभृतम्	,,	,,

शेष भवत् शब्द के समान।

तकारान्त विशेषण महत् (महान्) पुंल्लिग

प्रथमा	महान्	महान्तौ	महान्तः
द्वितीया	महान्तम्	महान्तौ	महतः

सम्बोधन	हे महन्	हे महान्तौ	हे महान्तः

शेष रूप भवत् पुँल्लिग की भाँति होंगे ।

तकारान्त गच्छत् (जाता हुआ), पुँल्लिग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वितीया	गच्छन्तम्	,,	गच्छतः
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः
चतुर्थी	गच्छते	,,	गच्छद्भ्यः
पंचमी	गच्छतः	,,	,,
षष्ठी	,,	गच्छतोः	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	,,	गच्छत्सु
सम्बोधन	हे गच्छन् !	हे गच्छन्तौ !	हे गच्छन्तः !

इसी प्रकार—

भवत्=होता हुआ । पश्यत्=देखता हुआ ।

शृण्वत्=सुनता हुआ । स्पृशत्=छूता हुआ ।

खादत्=खाता हुआ । पतत्=गिरता हुआ ।

धावत्=भागता हुआ । आदि शतृ-प्रत्ययान्त शब्दों के रूप 'गच्छत्' के समान होंगे ।

भवत् (होता हुआ), पुँल्लिग

प्रथमा	भवन्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वितीया	भवन्तम्	,,	भवतः
सम्बोधन	हे भवन् !	हे भवन्तौ !	हे भवन्तः !

शेष रूप भवत् (आपवाचक) के समान होंगे ।

दकारान्त सुहृद् (मित्र), पुँल्लिग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुहृत्, सुहृद्	सुहृदौ	सुहृदः
द्वितीया	सुहृदम्	सुहृदौ	सुहृदः
तृतीया	सुहृदा	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भिः
चतुर्थी	सुहृदे	,,	सुहृद्भ्यः
पंचमी	सुहृदः	,,	,,
षष्ठी	,,	सुहृदोः	सुहृदाम्
सप्तमी	सुहृदि	,,	सुहृत्सु
सम्बोधन	हे सुहृत् !	सुहृदौ !	हे सुहृदः !

तकारान्त मरुत् (वायु) पुँल्लिग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मरुत्, मरुद्	मरुतौ	मरुतः
द्वितीया	मरुतम्	,,	,,
तृतीया	मरुता	मरुद्भ्याम्	मरुद्भिः
चतुर्थी	मरुते	,,	मरुद्भ्यः
पंचमी	मरुतः	,,	,,
षष्ठी	,,	मरुतोः	मरुताम्
सप्तमी	मरुति	,,	मरुत्सु
सम्बोधन	हे मरुत्, हे मरुद् !	हे मरुतौ !	हे मरुतः !

इसी प्रकार—भूभृत्=राजा, पर्वत। जाग्रत्=जागता हुआ। ददत्=देता हुआ। जुह्वत् (हवन करता हुआ), दधत् (धारण करता हुआ), बिभ्रत् (धारण करता हुआ), बिभ्यत् (डरता हुआ) आदि।

नकारान्त दण्डिन् (दण्डधारी) पुँल्लिग

प्रथमा	दण्डी	दण्डिनौ	दण्डिनः
द्वितीया	दण्डिनम्	,,	,,
तृतीया	दण्डिना	दण्डिभ्याम्	दण्डिभिः
चतुर्थी	दण्डिने	,,	दण्डिभ्यः
पंचमी	दण्डिनः	,,	,,
षष्ठी	दण्डिनः	दण्डिनोः	दण्डिनाम्
सप्तमी	दण्डिनि	,,	दण्डिषु
सम्बोधन	हे दण्डिन् !	हे दण्डिनौ !	हे दण्डिनः !

इसी प्रकार नीचे दिये नकारान्त शब्दों के रूप होंगे—

गुणिन्=गुण वाला	पापिन्=पापी
करिन्, हस्तिन्=हाथी	स्वामिन्=मालिक
पक्षिन्=पक्षी	गामिन्=जानेवाला
रोगिन्=रोगी	मन्त्रिन्=मन्त्री
शशिन्=चन्द्रमा	सुखिन्=सुखी
कुशलिन्=स्वस्थ	यशस्विन्=यश वाला
दुःखिन्=दुःखी	प्रियवादिन्=मीठा बोलने वाला

नकारान्त आत्मन् (आत्मा), पुँल्लिग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	,,	आत्मनः

तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	,,	आत्मभ्यः
पंचमी	आत्मनः	,,	,,
षष्ठी	,,	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	,,	आत्मसु
सम्बोधन	हे आत्मन् !	हे आत्मानौ !	हे आत्मानः !

एवम्—महात्मन्=महात्मा के रूप होंगे ।

नकारान्त युवन् (जवान), पुँल्लिग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	युवा	युवानौ	युवानः
द्वितीया	युवानम्	,,	यूनः
तृतीया	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
चतुर्थी	यूने	,,	युवभ्यः
पंचमी	यूनः	,,	,,
षष्ठी	,,	यूनोः	यूनाम्
सप्तमी	यूनि	,,	युवसु
सम्बोधन	हे युवन् !	हे युवानौ !	हे युवानः !

नकारान्त श्वन् (कुत्ता), पुँल्लिग

प्रथमा	श्वा	श्वानौ	श्वानः
द्वितीया	श्वानम्	,,	शुनः
तृतीया	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
चतुर्थी	शुने	,,	श्वभ्यः
पंचमी	शुनः	,,	,,
षष्ठी	,,	शुनोः	शुनाम्
सप्तमी	शुनि	,,	श्वसु
सम्बोधन	हे श्वन् !	हे श्वानौ !	हे श्वानः !

नकारान्त पथिन् (मार्ग), पुँल्लिग

प्रथमा	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
द्वितीया	पन्थानम्	,,	पथः
तृतीया	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
चतुर्थी	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
पंचमी	पथः	,,	,,
षष्ठी	,,	पथोः	पथाम्

सप्तमी	पथि	पथोः	पथिषु
सम्बोधन	हे पन्थाः !	हे पन्थानौ !	हे पन्थानः !

'मथिन्' (मथानी) शब्द के रूप भी 'पथिन्' की भाँति ही होंगे।

नकारान्त राजन्, पुंल्लिग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	"	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	"	राजभ्यः
पंचमी	राज्ञः	"	"
षष्ठी	"	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि, राजनि	"	राजसु
सम्बोधन	हे राजन् !	हे राजानौ !	हे राजानः !

नकारान्त तक्षन् (बढ़ई), पुंल्लिग

प्रथमा	तक्षा	तक्षाणौ	तक्षाणः
द्वितीया	तक्षाणम्	"	तक्ष्णः
तृतीया	तक्ष्णा	तक्षभ्याम्	तक्षभिः
चतुर्थी	तक्ष्णे	"	तक्षभ्यः
पंचमी	तक्ष्णः	"	"
षष्ठी	"	तक्ष्णोः	तक्ष्णाम्
सप्तमी	तक्ष्णि, तक्षणि	"	तक्षसु
सम्बोधन	हे तक्षन् !	हे तक्षाणौ !	हे तक्षाणः !

कुछ अनुरूप शब्द

लघिमन्=छुटपन अणिमन्=बारीकी सुनामन्=सुन्दर नाम वाला
महिमन्=बड़प्पन ग्रावन्=बड़ा पत्थर सीमन्=हद, सीमा
गरिमन्=गौरव, बड़ाई, उच्चता मूर्धन्=मूर्धा, सिर

नकारान्त ब्रह्मन् (ब्रह्मा), पुंल्लिग

प्रथमा	ब्रह्मा	ब्रह्माणौ	ब्रह्माणः
द्वितीया	ब्रह्माणम्	"	ब्रह्मणः
तृतीया	ब्रह्मणा	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभिः
चतुर्थी	ब्रह्मणे	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभ्यः
पंचमी	ब्रह्मणः	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभ्यः
षष्ठी	"	ब्रह्मणोः	ब्रह्मणाम्

सप्तमी	ब्रह्मणि	ब्रह्मणोः	ब्रह्मसु
सम्बोधन	हे ब्रह्मन् !	हे ब्रह्माणौ !	हे ब्रह्माणः !

इसी प्रकार शर्मन् (शर्मा), वर्मन् (वर्मा) आदि शब्दों के रूप होंगे ।

सकारान्त विद्वस् (विद्वान्), पुँल्लिग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	"	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	"	विद्वद्भ्यः
पंचमी	विदुषः	"	"
षष्ठी	"	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	"	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वन् !	हे विद्वांसौ !	हे विद्वांसः !

इसका स्त्रीलिंग विदुषी होता है, जिसके रूप नदी के समान होते हैं।

सकारान्त पुम्स् (पुरुष), पुँल्लिग

प्रथमा	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
द्वितीया	पुमांसम्	"	पुंसः
तृतीया	पुंसा	पुंभ्याम्	पुंभिः
चतुर्थी	पुंसे	"	पुंभ्यः
पंचमी	पुंसः	"	"
षष्ठी	"	पुंसोः	पुंसाम्
सप्तमी	पुंसि	"	पुंसु
सम्बोधन	हे पुमन् !	हे पुमांसौ !	हे पुमांसः !

गरीयस् (अधिक बड़ा, अधिक भारी)

प्रथमा	गरीयान्	गरीयांसौ	गरीयांसः
द्वितीया	गरीयांसम्	"	गरीयसः
तृतीया	गरीयसा	गरीयोभ्याम्	गरीयोभिः
चतुर्थी	गरीयसे	गरीयोभ्याम्	गरीयोभ्यः
पंचमी	गरीयसः	"	"
षष्ठी	"	गरीयसोः	गरीयसाम्
सप्तमी	गरीयसि	"	गरीयःसु, गरीयस्सु
संबोधन	हे गरीयः !	हे गरीयांसौ !	हे गरीयांसः !

इसी प्रकार—महीयस्, लघीयस्, श्रेयस् आदि शब्दों के रूप होंगे ।

S

सकारान्त चन्द्रमस् (चाँद), पुँल्लिग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	चन्द्रमा:	चन्द्रमसौ	चन्द्रमस:
द्वितीया	चन्द्रमसम्	"	"
तृतीया	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभि:
चतुर्थी	चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्य:
पंचमी	चन्द्रमस:	"	"
षष्ठी	"	चन्द्रमसो:	चन्द्रमसाम्
सप्तमी	चन्द्रमसि	"	चन्द्रमस्सु
सम्बोधन	हे चन्द्रम: !	हे चन्द्रमसौ !	हे चन्द्रमस: !

शकारान्त तादृश् (वैसा), पुँल्लिग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तादृक्, तादृग्	तादृशौ	तादृश:
द्वितीया	तादृशम्	"	"
तृतीया	तादृशा	तादृग्भ्याम्	तादृग्भि:
चतुर्थी	तादृशे	"	तादृग्भ्य:
पंचमी	तादृश:	"	"
षष्ठी	"	तादृशो:	तादृशाम्
सप्तमी	तादृशि	"	तादृक्षु
सम्बोधन	हे तादृक्, हे तादृग् !	हे तादृशौ !	हे तादृश: !

तादृश् के समान कुछ अन्य शब्द

यादृश् = जैसा	एतादृश् = ऐसा	भवादृश् = आपके जैसा
ईदृश् = ऐसा	मादृश् = मेरे जैसा	युष्मादृश् = तुम्हारे जैसा
कीदृश् = कैसा	त्वादृश् = तेरे जैसा	अस्मादृश् = हमारे जैसा

षकारान्त द्विष् (शत्रु), पुँल्लिग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	द्विट्, द्विड्	द्विषौ	द्विष:
द्वितीया	द्विषम्	"	"
तृतीया	द्विषा	द्विड्भ्याम्	द्विड्भि:
चतुर्थी	द्विषे	"	द्विड्भ्य:
पंचमी	द्विषो:	"	"
षष्ठी	"	द्विषो:	द्विषाम्
सप्तमी	द्विषि	"	द्विट्सु
सम्बोधन	हे द्विट् !	हे द्विषौ !	हे द्विष: !

हकारान्त दुह् (दूध दुहने वाला), पुंल्लिग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धुक्, धुग्	दुहौ	दुहः
द्वितीया	दुहम्	"	"
तृतीया	दुहा	धुग्भ्याम्	धुग्भिः
चतुर्थी	दुहे	"	धुग्भ्यः
पंचमी	दुहः	"	"
षष्ठी	"	दुहोः	दुहाम्
सप्तमी	दुहि	"	धुक्षु
सम्बोधन	हे धुक्, धुग् !	हे दुहौ !	हे दुहः !

हकारान्त मधुलिह् (भौंरा, शहद की मक्खी), पुंल्लिग

प्रथमा	मधुलिट्-ड्	मधुलिहौ	मधुलिहः
द्वितीया	मधुलिहम्	"	"
तृतीया	मधुलिहा	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भिः
चतुर्थी	मधुलिहे	"	मधुलिड्भ्यः
पंचमी	मधुलिहः	"	"
षष्ठी	"	मधुलिहोः	मधुलिहाम्
सप्तमी	मधुलिहि	"	मधुलिट्सु
सम्बोधन	हे मधुलिट् !	हे मधुलिहौ !	हे मधुलिहः !

हकारान्त अनडुह् (बैल), पुंल्लिग

प्रथमा	अनड्वान्	अनड्वाहौ	अनड्वाहः
द्वितीया	अनड्वाहम्	"	अनडुहः
तृतीया	अनडुहा	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भिः
चतुर्थी	अनडुहे	"	अनडुद्भ्यः
पंचमी	अनडुहः	"	"
षष्ठी	"	अनडुहोः	अनडुहाम्
सप्तमी	अनडुहि	"	अनडुत्सु
सम्बोधन	हे अनड्वन् !	हे अनड्वाहौ !	हे अनड्वाहः

(ख) हलन्त स्त्रीलिंग शब्दों की रूप-रचना

चकारान्त वाच् (वाणी), स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वाक्, वाग्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	"	"

तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
चतुर्थी	वाचे	"	वाग्भ्यः
पंचमी	वाचः	"	"
षष्ठी	"	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	"	वाक्षु
सम्बोधन	हे वाक्, हे वाग् !	हे वाचौ !	हे वाचः

त्वच् (खाल), रुच् (चमक), शुच् (शोक) आदि चकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी इसी प्रकार बनते हैं।

जकारान्त रुज् (रोग). स्त्रीलिंग

बिभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रुक्, रुग्	रुजौ	रुजः
द्वितीया	रुजम्	"	"
तृतीया	रुजा	रुग्भ्याम्	रुग्भिः
चतुर्थी	रुजे	"	रुग्भ्यः
पंचमी	रुजः	"	"
षष्ठी	"	रुजोः	रुजाम्
सप्तमी	रुजि	"	रुक्षु
सम्बोधन	हे रुक्, हे रुग् !	हे रुजौ !	हे रुजः !

इसी प्रकार स्रज् (माला) आदि अन्य जकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के भी रूप होंगे।

तकारान्त सरित् (नदी), स्त्रीलिंग

प्रथमा	सरित्	सरितौ	सरितः
द्वितीया	सरितम्	"	"
तृतीया	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
चतुर्थी	सरिते	"	सरिद्भ्यः
पंचमी	सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
षष्ठी	"	सरितोः	सरिताम्
सप्तमी	सरिति	"	सरित्सु
सम्बोधन	हे सरित् !	हे सरितौ !	हे सरितः

तड़ित् (बिजली) आदि तकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप सरित् के समान होंगे।

शकारान्त दिश् (दिशा), स्त्रीलिंग

प्रथमा	दिक्, दिग्	दिशौ	दिशः
द्वितीया	दिशम्	"	"

तृतीया	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भि:
चतुर्थी	दिशे	,,	दिग्भ्य:
पंचमी	दिश:	,,	,,
षष्ठी	दिश:	दिशो:	दिशाम्
सप्तमी	दिशि	,,	दिक्षु
सम्बोधन	हे दिक्, हे दिग् !	हे दिशौ !	हे दिश: !

ईदृश् (ऐसी), तादृश् (वैसी) आदि शकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप दिश् के समान होंगे ।

दकारान्त सम्पद् (धन-सम्पत्ति), स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सम्पद्	सम्पदौ	सम्पद:
द्वितीया	सम्पदम्	,,	,,
तृतीया	सम्पदा	सम्पद्भ्याम	सम्पद्भि:
चतुर्थी	सम्पदे	,,	सम्पद्भ्य:
पंचमी	सम्पद:	,,	,,
षष्ठी	,,	सम्पदो:	सम्पदाम्
सप्तमी	सम्पदि	,,	सम्पत्सु
सम्बोधन	हे सम्पद् !	हे सम्पदौ !	हे सम्पदो !

सम्पद् के समान नीचे लिखे स्त्रीलिंग शब्दों के रूप होंगे—

विपद् =विपत्ति संसद्=सभा (पार्लियामेंट)

दृषद्=शिला, पत्थर, कलाविद्=कला जाननेवाली, मृद्=मिट्टी, शरद्=शरद् ऋतु आदि ।

धकारान्त समिध्=समिधा, हवन करने की लकड़ी

प्रथमा	समित्, समिद्	समिधौ	समिध:
द्वितीया	समिधम्	,,	,,
तृतीया	समिधा	समिद्भ्याम्	समिद्भि:
चतुर्थी	समिधे	,,	समिद्भ्य:
पंचमी	समिध:	,,	,,
षष्ठी	,,	समिधो:	समिधाम्
सप्तमी	समिधि	,,	समित्सु
संबोधन	हे समित्, द्	हे समिधौ	हे समिध:

अप्=जल (यह शब्द सदा बहुवचनान्त और स्त्रीलिंग है)

	बहुवचन		बहुवचन
प्रथमा	आप:	द्वितीया	अप:

तृतीया	अद्भिः	षष्ठी	अपाम्
चतुर्थी	अद्भ्यः	सप्तमी	अप्सु
पंचमी	अद्भ्यः	संबोधन	हे आपः !

रेफान्त गिर् (वाणी), स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गीः	गिरौ	गिरः
द्वितीया	गिरम्	,,	,,
तृतीया	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः
चतुर्थी	गिरे	,,	गीर्भ्यः
पंचमी	गिरः	,,	,,
षष्ठी	,,	गिरोः	गिराम्
सप्तमी	गिरि	,,	गीर्षु
सम्बोधन	हे गीः !	हे गिरौ !	हे गिरः !

वक्तव्य—हलादि विभक्तियों में गिर् और पुर् के इ उ दीर्घ हो जाते हैं।

गिर् के समान अन्य शब्द—

द्वार् (दरवाजा)—द्वाः द्वारौ द्वारः इत्यादि।
पुर् (नगर)—पूः पुरौ पुरः इत्यादि।

षकारान्त आशिष् (आशीर्वाद), स्त्रीलिंग

प्रथमा	आशीः	आशिषौ	आशिषः
द्वितीया	आशिषम्	,,	,,
तृतीया	आशिषा	आशीर्भ्याम्	आशीर्भिः
चतुर्थी	आशिषे	,,	आशीर्भ्यः
पंचमी	आशिषः	,,	,,
षष्ठी	,,	आशिषोः	आशिषाम्
सप्तमी	आशिषि	,,	आशीःषु, आशीष्षु
सम्बोधन	हे आशीः !	हे आशिषौ !	हे आशिषः !

प्रावृष् (वर्षा ऋतु), स्त्रीलिंग

प्रथमा	प्रावृट्, ड्	प्रावृषौ	प्रावृषः
द्वितीया	प्रावृषम्	,,	,,
तृतीया	प्रावृषा	प्रावृड्भ्याम्	प्रावृड्भिः
चतुर्थी	प्रावृषे	,,	प्रावृड्भ्यः

पंचमी	प्रावृषः	प्रावृड्भ्याम्	प्रावृड्भ्यः
षष्ठी	प्रावृषः	प्रावृषोः	प्रावृषाम्
सप्तमी	प्रावृषि	प्रावृषोः	प्रावृट्सु
सम्बोधन	हे प्रावृट्-ड् !	हे प्रावृषौ !	हे प्रावृषः !

उपानह् (जूता), स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	उपानत्-द्	उपानहौ	उपानहः
द्वितीया	उपानहम्	,,	,,
तृतीया	उपानहा	उपानद्भ्याम्	उपानद्भिः
चतुर्थी	उपानहे	,,	उपानद्भ्यः
पंचमी	उपानहः	,,	,,
षष्ठी	,,	उपानहोः	उपानहाम्
सप्तमी	उपानहि	,,	उपानत्सु
सम्बोधन	हे उपानत् !	हे उपानहौ !	हे उपानहः !

(ग) हलन्त नपुसकलिंग शब्दों की रूप-रचना

महत् (बड़ा)

प्रथमा सम्बोधन	महत्	महती	महान्ति
द्वितीया	,,	,,	,,

शेष पुंल्लिग महत् के समान।

नकारान्त कर्मन् (कर्म)

प्रथमा	कर्म	कर्मणी	कर्माणि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	कर्मणा	कर्मभ्याम्	कर्मभिः
चतुर्थी	कर्मणे	,,	कर्मभ्यः
पंचमी	कर्मणः	,,	,,
षष्ठी	,,	कर्मणोः	कर्मणाम्
सप्तमी	कर्मणि	,,	कर्मसु
सम्बोधन	हे कर्मन् !	हे कर्मणी !	हे कर्माणि !

अनुरूप शब्द

जन्मन् [जन्म], चर्मन् [चमड़ा], छद्मन् [धोखा], नर्म्मन् [हँसी], पर्व्वन् [दिन-त्योहार], भस्मन् [राख], मर्म्मन् [रहस्य], वर्म्मन् [हथियार], वर्त्मन् [रास्ता]; वेश्मन् [घर], शर्म्मन् [आनन्द, कल्याण], सद्मन् (घर) इत्यादि शब्दों के रूप कर्मन् के समान ही होंगे।

सकारान्त मनस् (मन)

	एकवचव	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मन:	मनसी	मनांसि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभि:
चतुर्थी	मनसे	,,	मनोभ्य:
पंचमी	मनस:	,,	,,
षष्ठी	,,	मनसो:	मनसाम्
सप्तमी	मनसि	,,	मनस्सु, मन:सु
सम्बोधन	हे मन: !	हे मनसी !	हे मनांसि !

कुछ अनुरूप शब्द—

पयस्=पानी, दूध	चेतस्=मन	शिरस्=सिर
नभस्=आकाश	रक्षस्=राक्षस	स्रोतस्=चश्मा, झरना
सरस्=तालाब	वचस्=वाणी	वक्षस्=छाती
तमस्=:अन्धकार	तेजस्=तेज	छन्दस्=वेद
वयस्=आयु, पक्षी	वासस्=कपड़ा	अम्भस्=पानी
उरस्=छाती	यशस्=कीर्ति	अयस्=लोहा

अभ्यास

(१) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

आपका घर यहाँ से कितनी (कियत्) दूर है ? सुहृद् लोगों की सहायता से मन की सभी इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं। गुरुकुल में पढ़ने वाले छात्र समिधाएँ (समिधा) लाते हैं। राजाओं (राजन्) के लिए प्रजा का पालन धर्म है। यह नौकर अपने स्वामी (स्वामिन्) की सेवा करता है। युवा (युवन्) पुरुषों के ऊपर ही देश की उन्नति का भार होता है। भगवान् ने कुत्ते को (शुने) सूंघने की विचित्र शक्ति दी है। आतमा की उन्नति के लिए परिश्रम करो। राजाओं की (राजन्) सेनाएँ परस्पर प्रेम से रहती हैं। माता-पिता अपने बच्चों को विद्वान् (विद्वस्) देखना (द्रष्टुम्) चाहते हैं। चन्द्रमा (चन्द्रमस्) की चाँदनी में सबके चित्त (चेतस्) प्रसन्न होते हैं (तुष्, प्र+सद्=प्रसीद)।

(२) निम्नलिखित हिन्दी के शब्दों के लिए संस्कृत का एक-एक शब्द लिखिए—

वायुओं का, मित्र लोगों के लिए, तक्षा के द्वारा, समिधाओं से, हाथियों (दो) का, दो राजाओं (भूभृत्) में, दो आशीर्वादों के लिए, विद्वान् का, चन्द्रमा से (अपा०), दो दिन में, ज्वाला में, वाणियों के लिए (गिर्), (दो) युवा लोगों का, युवा के लिए, कुत्ते (श्वन्) की, आपका, आपसे, आपके द्वारा।

प्रेमन् (प्रेम, Love)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	प्रेम	प्रेमणी, प्रेम्णी	प्रेमाणि
द्वितीया	,,	,, ,,	,,
तृतीया	प्रेम्णा	प्रेमभ्याम्	प्रेमभिः
चतुर्थी	प्रेम्णे	,,	प्रेमभ्यः
पंचमी	प्रेम्णः	,,	प्रेमभ्यः
षष्ठी	,,	प्रेम्णोः	प्रेम्णाम्
सप्तमी	प्रेम्णि, प्रेमणि	,,	प्रेमसु
सम्बोधन	हे प्रेम !	हे प्रेमणी, हे प्रेम्णी !	हे प्रेमाणि !

नामन् (नाम), रोमन् (रोएं) आदि की रूप-रचना भी 'प्रेमन्' के समान समझनी चाहिए ।

तकारान्त जगत् (संसार)

प्रथमा, द्वितीया, सम्बोधन— जगत् जगती जगन्ति

शेष रूप महत् के समान होते हैं ।

नकारान्त अहन् (दिन) शब्द

प्रथमा	अहः	अहनी, अह्नी	अहानि
द्वितीया	,,	,, ,,	,,
तृतीया	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः
चतुर्थी	अह्ने	,,	अहोभ्यः
पंचमी	अह्नः	,,	,,
षष्ठी	,,	अह्नोः	अह्नाम्
सप्तमी	अहनि, अह्नि	,,	अहःसु
सम्बोधन	हे अहः !	हे अहनी, अह्नी !	हे अहानि !

षकारान्त धनुष् शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धनुः	धनुषी	धनूंषि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः
चतुर्थी	धनुषे	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
पंचमी	धनुषः	,,	,,
षष्ठी	,,	धनुषोः	धनुषाम्
सप्तमी	धनुषि	,,	धनुष्षु
सम्बोधन	हे धनुः !	हे धनुषी !	हे धनूंषि !

(३) निम्नलिखित पदों की रूप-रचना में जहाँ-जहाँ अन्तर हो, रूपों का निर्देश करके बताइए—

युवन्—आत्मन्, पुम्स्—चन्द्रमस्, राजन्—शशिन्, मधुलिह्—अनडुह् ।

(४) निम्नलिखित शब्दों के निर्दिष्ट विभक्तियों में रूप लिखिए—

सुहृद् २—३—४, तक्षन् ५—६—७, करिन् ३—४—५, अहन् ३—५—७, धनुष्, २—४—६, स्वामिन् २—५—६, आशिष् ३—४—७

(५) शुद्ध करके लिखिए—

मनानाम्, चित्तेषाम्, राजने, चन्द्रमसस्य, आत्माय, अनडुहाः, पुमहेषु, चन्द्रमाम्, राजन्भ्याम्, राजानाम् ।

(६) इनके मूल शब्द, विभक्ति और वचन बताइए—

हर्योः, मत्याम्, सर्वस्याः, मनसाम्, श्रियाम्, महद्भ्यः, गवि, यूना, श्वसु, चतुर्णाम्, देवस्य, नद्याम्, भानोः, पितरि, पथः, अमीषाम्, भवतोः, गच्छन्ती, रामाय, भूपतिना, एतस्य, तव, कस्य, अस्माकम्, धनुषोः, सर्वेषाम्, आत्मानम्, नार्यः, चन्द्रमोभ्याम्, राज्ञा ।

(७) पयस्, नामन् और विपद् शब्दों के पूरे रूप लिखिए ।

षोडश अध्याय

संख्यावाचक शब्द

संख्यावाचक विशेषण पाँच प्रकार के होते हैं—

१. **गणनावाचक** (Car nals), जैसे—एक, द्वि।

२. **पूरण या क्रमवाचक** (Ordinals), जैसे—प्रथम, द्वितीय, तृतीय।

३. **आवृत्तिवाचक** (Numeral adverbs of frequency), जैसे—सकृत्, द्विः, त्रिः, चतुः, पञ्चकृत्वः।

४. **समुदायवाचक** (Numeral adverds of Collection) जैसे—त्रयः-त्रयी-त्रयम्, चतुष्टयः-चतुष्टयी-चतुष्टयम्, पंचतयः-पंचतयी-पंचतयम्, षट्कः (a collection of six etc.)

५. **प्रकारवाचक या विभागवाचक** (denoting way of part) एकधा, द्विधा, त्रिधा, चतुर्धा, पंचधा, षोढा, शतधा, सहस्रधा।

'एक' शब्द (नित्य एकवचन)

विभक्ति	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	एकः	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	„
तृतीया	एकेन	एकया	एकेन
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
पंचमी	एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्
षष्ठी	एकस्य	„	एकस्य
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

'द्वि' शब्द (नित्य द्विवचन)

	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	„	„	„
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	„	„	„
पंचमी	„	„	„
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	„	„	„

त्रि (तीन) शब्द (नित्य बहुवचन)

विभक्ति	पुँल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	,,	,,
तृतीया	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
पंचमीं	,,	,,	,,
षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

चतुर् (चार) शब्द (नित्य बहुवचन)

प्रथमा	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वितीया	चतुरः	,,	,,
तृतीया	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पंचमी	,,	,,	,,
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

नकारान्त पञ्चन् से दशन् तक शब्द सभी लिंगों में समान

	पञ्चन् (पाँच)	षष् (छः)	सप्तन् (सात)
प्रथमा	पञ्च	षट्	सप्त
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	पञ्चभिः	षड्भिः	सप्तभिः
चतुर्थी	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः
पंचमी	,,	,,	,,
षष्ठी	पञ्चानाम्	षण्णाम्	सप्तानाम्
सप्तमी	पञ्चसु	षट्सु	सप्तसु

	अष्टन् (आठ)	नवन् (नौ)	दशन् (दस)
प्रथमा	अष्ट, अष्टौ	नव	दश
द्वितीया	,, ,,	,,	,,
तृतीया	अष्टभिः, अष्टाभिः	नवभिः	दशभिः
चतुर्थी	अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
पंचमी	,, ,,	,,	,,
षष्ठी	अष्टानाम्	नवानाम्	दशानाम्
सप्तमी	अष्टसु, अष्टासु	नवसु	दशसु

एकोनविंशति (१६) से अष्टानवति (६८) और नवनवति (६६) तक संख्या-वाचक शब्दों की रूप-रचना केवल स्त्रीलिंग के एकवचन में समझनी चाहिए।

गणना या संख्यावाचक शब्द (एक से सौ तक)

संख्यावाचक शब्द (साधारण—Cardinal)

१. एक
२. द्वि
३. त्रि
४. चतुर्
५. पञ्चन्
६. षष्
७. सप्तन्
८. अष्टन्
९. नवन्
१०. दशन्
११. एकादशन्
१२. द्वादशन्
१३. त्रयोदशन्
१४. चतुर्दशन्
१५. पञ्चदशन्
१६. षोडशन्
१७. सप्तदशन्
१८. अष्टादशन्
१९. एकोनविंशतिः
२०. विंशतिः
२१. एकविंशतिः
२२. द्वाविंशतिः
२३. त्रयोविंशतिः
२४. चतुर्विंशतिः
२५. पंचविंशतिः
२६. षड्विंशतिः
२७. सप्तविंशतिः
२८. अष्टाविंशतिः
२९. एकोनत्रिंशत्
३०. त्रिंशत्
३१. एकत्रिंशत्
३२. द्वात्रिंशत्
३३. त्रयस्त्रिंशत्
३४. चतुस्त्रिंशत्
३५. पंचत्रिंशत्
३६. षट्त्रिंशत्
३७. सप्तत्रिंशत्
३८. अष्टत्रिंशत्
३९. एकोनचत्वारिंशत्
४०. चत्वारिंशत्
४१. एकचत्वारिंशत्
४२. द्वाचत्वारिंशत्, द्विचत्वारिंशत्
४३. त्रयश्चत्वारिंशत्
४४. चतुश्चत्वारिंशत्
४५. पंचचत्वारिंशत्
४६. षट्चत्वारिंशत्
४७. सप्तचत्वारिंशत्
४८. अष्टचत्वारिंशत्
४९. एकोनपंचाशत्
५०. पंचाशत्
५१. एकपंचाशत्
५२. द्विपंचाशत्
५३. त्रिपंचाशत्, त्रयःपंचाशत्
५४. चतुःपंचाशत्
५५. पंचपंचाशत्
५६. षट्पंचाशत्
५७. सप्तपंचाशत्
५८. अष्टपंचाशत्

५९. एकोनषष्टिः
६०. षष्टिः
६१. एकषष्टिः
६२. द्विषष्टिः
६३. त्रिषष्टिः, त्रयःषष्टिः
६४. चतुःषष्टिः
६५. पंचषष्टिः
६६. षट्षष्टिः
६७. सप्तषष्टिः
६८. अष्टषष्टिः, अष्टाषष्टिः
६९. एकोनसप्ततिः
७०. सप्ततिः
७१. एकसप्ततिः
७२. द्वासप्ततिः, द्विसप्ततिः
७३. त्रिसप्ततिः, त्रयःसप्ततिः
७४. चतुःसप्ततिः
७५. पंचसप्ततिः
७६. षट्सप्ततिः
७७. सप्तसप्ततिः
७८. अष्टसप्ततिः, अष्टासप्ततिः
७९. एकोनाशीतिः
८०. अशीतिः
८१. एकाशीतिः
८२. द्व्यशीतिः
८३. त्र्यशीतिः
८४. चतुरशीतिः
८५. पंचाशीतिः
८६. षडशीतिः
८७. सप्ताशीतिः
८८. अष्टाशीतिः
८९. एकोननवतिः
९०. नवतिः
९१. एकनवतिः
९२. द्विनवतिः, द्वानवतिः
९३. त्रिनवतिः, त्रयोनवतिः
९४. चतुर्णवतिः
९५. पंचनवतिः
९६. षण्णवतिः
९७. सप्तानवतिः
९८. अष्टनवतिः
९९. नवनवतिः, एकोनशतम्
१००. शतम्

१,००० सहस्रम्
१०,००० अयुतम्
१००,००० लक्षम्
१,०००,००० नियुतम्
१०,०००,००० कोटिः
१,००,०००,००० दशकोटिः
१,०००,०००,००० अर्बुदम्
१०,०००,०००,००० अब्जम्
१,००,०००,०००,००० खर्वम्

त्रि से अष्टादशन् पर्यन्त संख्यावाचक शब्द बहुवचनान्त होते हैं। आगे की संख्याएँ एकोनविंशतिः आदि एकवचनान्त होती हैं—इनके लिंग, वचन विशेष्य के अनुसार नहीं होते। विंशति, षष्टि, कोटि आदि के रूप 'मति' शब्द के समान केवल एकवचन में होते हैं। त्रिंशत् आदि तकारान्त शब्दों के रूप तकारान्त 'सरित्' शब्द के समान होते हैं। शत, सहस्र आदि के रूप नपुंसकलिंग फल के समान होते हैं। महापद्म आदि के रूप पुंल्लिग शब्दों के समान होते हैं।

पूरणार्थक (Ordinals)

	पुँल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
पहला	प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
दूसरा	द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्
तीसरा	तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्
चौथा	चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
पाँचवाँ	पंचमः	पचमी	पंचमम्
छठा	षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
सातवाँ	सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
आठवाँ	अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
नौवाँ	नवमः	नवमी	नवमम्
दसवाँ	दशमः	दशमी	दशमम्
ग्यारहवाँ	एकादशः	एकादशी	एकादशम्
बारहवाँ	द्वादशः	द्वादशी	द्वादशम्
तेरहवाँ	त्रयोदशः	त्रयोदशी	त्रयोदशम्
चौदहवाँ	चतुर्दशः	चतुर्दशी	चतुर्दशम्
पन्द्रहवाँ	पंचदशः	पंचदशी	पंचदशम्
सोलहवाँ	षोडशः	षोडशी	षोडशम्
सत्रहवाँ	सप्तदशः	सप्तदशी	सप्तदशम्
अठारहवाँ	अष्टादशः	अष्टादशी	अष्टादशम्
उन्नीसवाँ	एकोनविंशः	एकोनविंशा	एकोनविंशम्
	एकोनविंशतितमः	एकोनविंशतितमी	एकोनविंशतितमम्
बीसवाँ	विंशः	विंशा	विंशम्
	विंशतितमः	विंशतितमी	विंशतितमम्
इक्कीसवाँ	एकविंशः	एकविंशा	एकविंशम्
	एकविंशतितमः	एकविंशतितमी	एकविंशतितमम्
बाईसवाँ	द्वाविंशः	द्वाविंशा	द्वाविंशम्
	द्वाविंशतितमः	द्वाविंशतितमी	द्वाविंशतितमम्
तेईसवाँ	त्रयोविंशः	त्रयोविंशा	त्रयोविंशम्
	त्रयोविंशतितमः	त्रयोविंशतितमी	त्रयोविंशतितमम्
चौबीसवाँ	चतुर्विंशः	चतुर्विंशा	चतुर्विंशम्
	चतुर्विंशतितमः	चतुर्विंशतितमी	चतुर्विंशतितमम्
पच्चीसवाँ	पंचविंशः	पंचविंशा	पंचविंशम्
	पंचविंशतितमः	पंचविंशतितमी	पंचविंशतितमम्

छब्बीसवाँ	षड्विंशः	षड्विंशा	षड्विंशम्
	षड्विंशतितमः	षड्विंशतितमी	षड्विंशतितमम्

पंचाशत्तमः। शततमः, सहस्रतमः (आदि)

संख्यावाचक शब्दों की संस्कृत बनाने में प्रथम इकाई, फिर दहाई और फिर सैंकड़ा आदि का प्रयोग होता है। और इसके मध्य में अधिक या उत्तर शब्द प्रयुक्त होता है। उदाहरण—

१०८=अष्टोत्तरशतम् या अष्टाधिकशतम्।
२२३=त्रयोविंशत्युत्तरद्विशतम्, त्रयोविंशत्यधिकद्विशतम्
१४२७=सप्तविंशत्युत्तरचतुःशताधिकैकसहस्रम्।
१३४२३=त्रयोविंशत्यधिकचतुःशताधिकत्रयोदशसहस्रम्।
४७७=सप्तसप्तत्युत्तरचतुःशतम्।
५८३=त्र्यशीत्युत्तरपंचशतम्
६९३=त्रिनवत्यधिकषट्शतम्।
१५३९=एकोनचत्वारिंशदुत्तरपंचदशशतम्,
या नवत्रिंशदुत्तरपंचदशशतम्।
२३६२११=एकादशाधिकद्विशतोत्तरषट्त्रिंशत्सहस्राधिकद्विलक्षम्।

इसी प्रकार बढ़ती हुई दहाई, सैंकड़ा, हजार आदि प्रत्येक को अधिक या उत्तर शब्द लगाकर लिखना चाहिए।

अर्द्ध—आधा, पादोन—पौना, सपाद—सवा, सार्ध—डेढ़

पुंल्लिग—अर्द्धः	स्त्रीलिंग—अर्द्धा	नपुंसकलिंग—अर्द्धम्
पुंल्लिग—पादोनः	स्त्रीलिंग—पादोना	नपुंसकलिंग—पादोनम्
पुंलिग—सपादः	स्त्रीलिंग—सपादा	नपुंसकलिंग—सपादम्
पुंलिग—सार्धः	स्त्रीलिंग—सार्धा	नपुंसकलिंग—सार्धम्

उदाहरण—

१. आधे जल की गगरी छलकती है।	अर्द्धो घटो घोषमुपैति नूनम्।
२. पौने सात बजे मास्टर जी आते हैं।	पादोन-सप्तवादन-समये अध्यापकः आगच्छति।
३. मुझे सवा पाँच रुपये दे दो।	मह्यं सपादपंचरूप्यकाणि देहि।
४. डेढ़ आने के नये नौ पैसे होते हैं।	सार्धस्य आणकस्य नवीनानि नवपणकानि भवन्ति।
५. पिताजी साढ़े नौ बजे कार्यालय गए।	पिता सार्धनववादनसमये कार्यालयम् अगच्छत्।
६. अब वे पौने छः बजे आयेंगे।	अधुना ते पादोनषड्वादन-समये आगमिष्यन्ति।

७. पुस्तक के सवा सात अध्याय पढ़ चुका हूँ। — पुस्तकस्य सपादसप्ताध्यायीम् अपठम्

८. पौने तीन घंटे व्यर्थ ही बिताए। — पादोनत्रिहोरा-समयः व्यर्थमेव यापितः।

अभ्यास

(१) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

१. तीन बालक जाते हैं।
२. लोग दो आँखों से देखते हैं।
३. पाँच लड़कियाँ खेलती हैं।
४. चारों फूल गुरु को दे दो।
५. चारों स्त्रियों को बुलाओ (आ+ह्वे =आह्वय)
६. पाँच बालकों को कहो।
७. छः अध्यापिकाओं ने पुस्तकें दे दीं।
८. सात पेड़ों के पत्ते गिरते हैं।
९. आठों बालकों में अनिल चतुर है।
१०. नौ पेड़ों पर फल लगे हैं।

(२) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

१. पहला लड़का योग्य है।
२. दूसरी लड़की परिश्रमी नहीं है।
३. तीसरा फल कच्चा है।
४. वह पहली कक्षा का चौथा विद्यार्थी है।
५. पाँचवीं कक्षा की चौथी लड़की को पढ़ाओ।
६. यह नवमी कक्षा का कौनसा छात्र है?
७. पाँचवीं गली में कौन-सी कन्या रहती है?
८. तू दसवें वृक्ष के फल ला।

३. निम्नलिखित संख्याओं को संस्कृत शब्दों में लिखिए...

१९, २८, ५३, ८६, ९५, ३३७, ४५६, ५७५, १३७६, १९४७, १९७४।

(४) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. व्यासोऽष्टादश पुराणानि रचितवान्।
२. अस्मिन् वर्गे पंचाशत् बालकाः सन्ति।
३ स मह्यं शतं रूप्यकाणि धारयति।
४. सहस्रं सैनिकाः अस्मिन् युद्धे निहताः।
५. बालकानां चतुष्टयम् अत्र वर्तते।
६. पंचाशता रूप्यकैः क्रीतोऽयं वृषभः।
७. षष्टितमं बालकं मत्समीपं प्रेषय।

(५) चतुर् (पुंल्लिग), त्रि (स्त्रीलिंग) और अष्टन् शब्द के रूप लिखिए।

द्वितीय खण्ड

प्रथम अध्याय

क्रिया-प्रकरण

(तिङन्त-प्रकरण)

संस्कृत में क्रियाएँ अधिकतः धातुओं से बनती हैं। धातु के आगे भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रत्यय लगाकर शब्दों के भिन्न-भिन्न रूप बनाए जाते हैं—जैसे—'भू' धातु से ति (प्रत्यय) लगाकर 'भवति' क्रियापद बनाया जाता है, जिसका 'होता है' अर्थ है।

क्रियापद बनाने के लिए धातु के अन्त में जो प्रत्यय जोड़े जाते हैं, वे तिङ्प्रत्यय कहलाते हैं। तिङ्प्रत्यय वाली क्रिया को 'तिङन्त पद' कहेंगे। तिङ्प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

परस्मैपद की मूल विभक्तियाँ

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिप्	तस्	झि
मध्यम पुरुष	सिप्	थस्	थ
उत्तम पुरुष	मिप्	वस्	मस्

आत्मनेपद की मूल विभक्तियाँ

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	त	आताम्	झ
मध्यम पुरुष	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	इट्	वहिङ्	महिङ्

धातुओं का विभाजन

सेट्, वेट्, अनिट्

पीछे पृष्ठ १४ पर गणों के विभाग और उनके विकरण बता आए हैं। उसीके हिसाब से धातुओं का पृथक्-पृथक् गण[1] में उनका विभाजन किया गया है।

रूप-रचना करते हुए धातुओं को तीन विभागों में बाँटा जाता है—

१. सेट्—जिनके रूपों में धातु और आर्धधातुक प्रत्यय के बीच में एक 'इ' जुड़ जाती है उन्हें 'सेट्' धातु कहते हैं।

२. वेट्—जिन धातुओं में 'इ' विकल्प से जुड़ती है उन्हें 'वेट्' धातु कहते हैं।

---

१. भ्वाद्यदादी जुहोत्यादिः दिवादिः स्वादिरेव च।
तुदादिश्च रुधादिश्च तनादिः क्रीचुरादयः॥

३. अनिट्—जिन धातुओं में 'इ' नहीं लगती उन्हें 'अनिट्' कहते हैं।

सकर्मक, अकर्मक

सकर्मक—जिन धातुओं के अर्थ को पूरा करने के लिए कर्म की आवश्यकता पड़े वे सकर्मक होती हैं। जैसे—रामः खादति (राम खाता है)। यहाँ 'खाद्' धातु के खाना अर्थ को पूरा करने के लिए कर्म 'फलम्' आदि लगेगा तब कहेंगे—रामः फलम् खादति (राम फल खाता है)। इसलिए 'खाद्' धातु सकर्मक हुई।

अकर्मक—जिन धातुओं को कर्म की आवश्यकता नहीं होती, वे अकर्मक कहलाती हैं। जैसे—रामः हसति (राम हँसता है)। यहाँ 'हस्' धातु के अर्थ को पूरा करने के लिए कर्म की आवश्यकता नहीं, अतः यह अकर्मक है।

नीचे कुछ ऐसी अकर्मक धातुओं को श्लोक में दिया गया है। देखिए—

लज्जा-सत्ता-स्थिति-जागरणम्, वृद्धि-क्षयभय-जीवित-मरणम्।
शयन-क्रीडा-रुचि-दीप्त्यर्थम् धातुगणं तमकर्मकमाहुः।

परस्मैपद, आत्मनेपद, उभयपद

संस्कृत में लकारों के स्थान पर आदेश रूप में होने वाले प्रत्यय दो प्रकार के हैं—परस्मैपद और आत्मनेपद। परस्मैपद का सरल अर्थ है—'वह पद जो दूसरे के लिए प्रयुक्त हो।' आत्मनेपद का सरल अर्थ है—'वह पद जो अपने लिए प्रयुक्त हो।'

परन्तु परस्मैपद और आत्मनेपद का यह नियम हर जगह ठीक नहीं उतरता। दोनों पद एक-दूसरे के लिए प्रयुक्त होते हैं। इसलिए यह जान लेना चाहिए कि किस धातु के रूप परस्मैपद में बनते हैं और किसके आत्मनेपद में।

कुछ इस प्रकार की धातु भी हैं, जिनकी रूप-रचना परस्मैपद और आत्मनेपद दोनों में होती है। वे उभयपदी कहलाती हैं। जैसे—सः चोरयति (चोरयते वा)।

कई बार विशेष अवस्थाओं में—उपसर्ग आदि जुड़ने से परस्मैपदी धातु आत्मनेपदी बन जाती है और कई बार उपसर्ग आदि जुड़ने से आत्मनेपदी धातु परस्मैपदी बन जाती है। इन्हें आगे यथास्थान बतायेंगे।

वाच्य

क्रिया बनाने के लिए धातुओं की रूप-रचना तीन वाच्यों में की जाती है—

१. कर्तृवाच्य, २. कर्मवाच्य, ३. भाववाच्य।

१. **कर्तृवाच्य**—जहाँ वाक्य में क्रिया कर्ता के पुरुष और वचन के अनुसार हो वहाँ क्रिया कर्तृवाच्य की कहलाती है। जैसे—

'रामः गच्छति' इस वाक्य में 'गच्छति' क्रिया कर्ता राम के अनुसार प्रथम पुरुष एकवचन की है, अतः यह कर्तृवाच्य है।

२. **कर्मवाच्य**—जब वाक्य में 'क्रिया' कर्ता के अनुसार न होकर कर्म के अनुसार पुरुष और वचन वाली हो वह कर्मवाच्य कहलाती है। जैसे—

'रामेण पाठः पठ्यते' (राम से पाठ पढ़ा जाता है) इस वाक्य में 'पाठ' कर्म प्रधान हो गया है अतः यह कर्मवाच्य है।

भाववाच्य—जब अकर्मक क्रिया का भाव (अर्थ) ही प्रधान हो जाए वहाँ भाववाच्य होता है। जैसे—

रामेण हस्यते (राम से हँसा जाता है) इस वाक्य में हँसना धातु का अर्थ ही प्रधान हो गया है अतः यह भाववाच्य है।

ज्ञातव्य—कर्मवाच्य और भाववाच्य का वर्णन आगे करेंगे, यहाँ से दसों गणों में कर्तृवाच्य का वर्णन विस्तार से आरम्भ किया जाता है।

काल और प्रकार

क्रिया के काल और प्रकार को बताने के लिए भिन्न-भिन्न लकारों का प्रयोग होता है। पृष्ठ १५ पर बता आये हैं कि लकार दस हैं किन्तु यहाँ केवल पाठ्यक्रम में नियत पाँच लकारों के ही रूप दिये जायेंगे—

१. लट् (वर्तमान काल Present Tense) (सः पठति)

२. लृट् (सामान्य भविष्यत् Simple Future) (बालः पठिष्यति)।

३. लोट् (आज्ञा, उपदेश आदि Imperative mood) (मोहिनी पठतु)।

४. लङ् (भूतकाल Imperfect past Tense) (सः अपठत्)।

५. लिङ् (क) विधिलिङ्—आज्ञा, निमन्त्रण (potential mood) (सः पठेत्)।

(ख) आशीर्लिङ्—(आशीर्वाद) तव कल्याणं भूयात्।

पुरुष (Persons)

पुरुष तीन हैं— उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, प्रथम पुरुष।

उत्तम पुरुष—कार्य करने वाला अपने लिए जिन शब्दों का प्रयोग करता है वे उत्तम पुरुष कहलाते हैं। जैसे—**अहम् आवाम् वयम्**। इनके साथ प्रयोग में आने वाली क्रिया भी उत्तम पुरुष की क्रिया कहलाती है।

मध्यम पुरुष—जब कर्म किसी सम्मुख व्यक्ति को निर्देश करता है तो वह मध्यम पुरुष कहलाता है। जैसे—**त्वम् युवाम् यूयम्**। इनके साथ प्रयोग में आने वाली क्रिया भी मध्यम पुरुष की क्रिया कहलाती है।

प्रथम पुरुष—जब कर्ता मध्यम पुरुष के अतिरिक्त किसी तीसरे व्यक्ति के विषय में बात कहता है तो वह प्रथम पुरुष होगा। जैसे—**सः तौ ते** आदि। इनके साथ प्रयोग में आने वाली क्रिया भी प्रथम पुरुष की क्रिया कहलाएगी।

१. **प्रथम पुरुष**—(सः, तौ, ते। सा, ते, ताः। तत्, ते, तानि, बालः बालौ बालाः; छात्रा छात्रे छात्राः आदि।

२. **मध्यम पुरुष**—(त्वम् युवाम् यूयम्)।

३. **उत्तम पुरुष**—(अहम् आवाम् वयम्)।

वचन

वचन तीन हैं—

(१) एकवचन—(सः, त्वम्, अहम्) Singular Numler.

(२) द्विवचन—(तौ, युवाम्, आवाम्) Dual Number,

(३) बहुवचन—(ते, यूयम्, वयम्) Plural Numler.

इस प्रकार वाक्य में पुरुष और वचन के अनुसार ही क्रिया का प्रयोग शुद्ध होता है। इसके विपरीत प्रयोग अशुद्ध समझा जाता है।

विकरण

प्रत्येक गण का कोई न कोई विकरण (चिह्न) होता है। भ्वादिगण का विकरण 'अ' है।

१. लट् लकार (वर्तमानकाल)

जब क्रिया द्वारा वर्तमान समय में काम का करना या होना पाया जाए तो धातु से लट् लकार का प्रयोग होता है। लट् लकार में प्रयुक्त होने वाले परस्मैपदी प्रत्यय ये हैं—

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ति	तः	अन्ति
मध्यम पुरुष	सि	थः	थ
उत्तम पुरुष	मि	वः	मः

सूचना—भ्वादिगण, दिवादिगण, तुदादिगण और चुरादिगण के लट्, लृट्, लोट् और लङ् लकार के उत्तम पुरुष में मि वः मः से पहले आ भी लगता है।

पठ्=पठना, वर्तमानकाल (लट् लकार)।

धातु, विकरण और प्रत्ययों का संयोग।

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ्+अ+ति=पठति	पठ्+अ+तः=पठतः	पठ्+अ+अन्ति=पठन्ति
पठ्+अ+सि=पठसि	पठ्+अ+थः=पठथः	पठ्+अ+थ=पठथ
पठ्+अ+आमि=पठामि	पठ्+अ+आवः= पठावः	पठ्+अ+आमः= पठामः

इसी प्रकार 'भू' धातु के साथ भी विकरण और प्रत्यय जुड़ेंगे। भू के ऊ को ओ और फिर उसे 'अव्' हो जाता है। भू के रूप देखिए।

भू=होना

१. वर्तमानकाल (लट् लकार) (Present tense)

भू+अ+ति=भवति।

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति

मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

इनका कर्ता के साथ संयोग और अर्थ देखिए—

प्रथम पुरुष	सः भवति	तौ भवतः	ते भवन्ति
	(वह होता है)	(वे दो होते हैं)	(वे सब होते हैं)
मध्यम पुरुष	त्वम् भवसि	युवाम् भवथः	यूयम् भवथ
	(तू होता है)	(तुम दो होते हो)	(तुम सब होते हो)
उत्तम पुरुष	अहम् भवामि	आवाम् भवावः	वयम् भवामः
	(मैं होता हूँ)	(हम दो होते हैं)	(हम सब होते हैं।)

२. लृट् लकार (भविष्यत्काल) (Future tense)

जब आने वाले समय (भविष्य) में कार्य का होना या करना पाया जाता है, वहाँ लृट् लकार होता है। इसके प्रत्यय लट् लकार जैसे ही होते हैं। लृट् में धातु के सेट्, अनिट् या वेट् होने का ध्यान रखना चाहिए।

भविष्यत्काल में लृट् लकार के प्रत्यय और धातु के मध्य में स्य प्रत्यय का सदा प्रयोग होता है, यह स्मरण रखना चाहिए।

लृट् लकार 'आर्धधातुक' कहलाता है। आर्धधातुक में जिन धातुओं से इ होती है, वे सेट् तथा जिनसे इ नहीं होती, वे **अनिट्** कहलाती हैं। जिनसे इ विकल्प से होती है, वे **वेट्** कहलाती हैं। भू धातु सेट् है। **अनिट्** और **वेट्** धातुओं का आगे यथास्थान वर्णन करेंगे।

लृट् लकार में सेट् धातुओं से प्रयुक्त होने वाले प्रत्यय—इ+स्य+ति=इष्यति।

परस्मैपद

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	इष्यति	इष्यतः	इष्यन्ति
मध्यम पुरुष	इष्यसि	इष्यथः	इष्यथ
उत्तम पुरुष	इष्यामि	इष्यावः	इष्यामः

भू धातु के भविष्यत्काल (लृट् लकार) में रूप कर्ता और अर्थ सहित

भू+इ+स्य+ति=भविष्यति अथवा भू+इष्यति=भविष्यति।

प्रथम पुरुष	(सः) भविष्यति	(तौ) भविष्यतः	(ते) भविष्यन्ति
	(वह होगा)	(वे दो होंगे)	(वे सब होंगे)
मध्यम पुरुष	त्वम् भविष्यसि	युवाम् भविष्यथः	यूयम् भविष्यथ
	(तू होगा)	(तुम दो होगे)	(तुम सब होगे)
उत्तम पुरुष	अहम् भविष्यामि	आवाम् भविष्यावः	वयम् भविष्यामः
	(मैं होऊँगा)	(हम दो होंगे)	(हम सब होंगे)

३. लोट् लकार (आज्ञार्थ) (Imperative mood)

आदेश देना, उपदेश देना आदि कार्यों में इस लकार का प्रयोग होता है। लोट्

लकार में भी धातु के बाद 'अ' विकरण लगता है । लोट् लकार में 'ति तः अन्ति' आदि प्रत्ययों को 'तु ताम् अन्तु' आदि हो जाता है। देखिए—

परस्मैपद में लोट् लकार के प्रत्यय

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तु	ताम्	अन्तु
मध्यम पुरुष	—	तम्	त
उत्तम पुरुष	आनि	आव	आम

भू के लोट् में रूप कर्ता और अर्थ सहित

भू+अ+तु—भवतु।

प्रथम पुरुष	(सः) भवतु	(तौ) भवताम्	(ते) भवन्तु
	(वह हो)	(वे दो हों)	(वे सब हों)
मध्यम पुरुष	(त्वम्) भव	(युवाम्) भवतम्	(यूयम्) भवत
	(तू हो)	(तुम दो हो)	(तुम सब हो)
उत्तम पुरुष	(अहम्) भवानि	(आवाम्) भवाव	(वयम्) भवाम
	(मैं होऊँ)	(हम दो हों)	(हम सब हों)

४. लङ् लकार (भूतकाल) (Past Tense)

बीते हुए समय में यदि क्रिया का होना या करना पाया जाए वहाँ धातु से लङ् लकार होता है। लङ् लकार में भी धातु के बाद 'अ' विकरण लगता है। लङ् लकार में 'ति तः अन्ति' आदि के स्थान पर निम्नलिखित प्रत्यय होते हैं—

परस्मैपद में लङ् लकार के प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	त्	ताम्	अन्
मध्यम पुरुष	:	तम्	त
उत्तम पुरुष	अम्	व	म

ज्ञातव्य—लङ् लकार में हलादि धातुओं से पूर्व 'अ' भी जुड़ता है। और स्वरादि धातुओं से पूर्व 'आ' लगकर वृद्धि हो जाती है।

भू धातु के लङ् में रूप कर्ता और अर्थ सहित

अ+भू+अ+त्=अभवत्।

प्रथम पुरुष	(सः) अभवत्	(तौ) अभवताम्	(ते) अभवन्
	(वह हुआ)	(वे दो हुए)	(वे सब हुए)
मध्यम पुरुष	(त्वम्) अभवः	(युवाम्) अभवतम्	(यूयम्) अभवत
	(तू हुआ)	(तुम दो हुए)	(तुम सब हुए)
उत्तम पुरुष	(अहम्) अभवम्	(आवाम्) अभवाव	(वयम्) अभवाम
	(मैं हुआ)	(हम दो हुए)	(हम सब हुए)

५. विधिलिङ् (Potential mood)

आज्ञा माँगना, निमन्त्रण देना, प्रेरणा तथा प्रार्थना करना, चाहिए आदि अर्थों में इस लकार का प्रयोग किया जाता है। विधिलिङ् में भी धातु के बाद 'अ' विकरण लगता है। विधिलिङ् के प्रत्यय इस प्रकार हैं—

विधिलिङ् के प्रत्यय (परस्मैपद में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इत्	इताम्	इयुः
मध्यम पुरुष	इः	इतम्	इत
उत्तम पुरुष	इयम्	इव	इम

भू के विधिलिङ् लकार में रूप

भू + अ + इत् = भवेत्।

प्रथम पुरुष	(सः) भवेत् (वह हो या उसे होना चाहिए)	(तौ) भवेताम् (वे दो हों या उन दो को होना चाहिए)	(ते) भवेयुः (वे सब हों या उन सबको होना चाहिए)
मध्यम पुरुष	(त्वम्) भवेः (तू हो या तुझे होना चाहिए)	(युवाम्) भवेतम् (तुम दो हो या तुम दो को होना चाहिए)	(यूयम्) भवेत (तुम सब हो या तुम सबको होना चाहिए)
उत्तम पुरुष	(अहम्) भवेयम् (मैं होऊँ या मुझे होना चाहिए)	(आवाम्) भवेव (हम दो हों या हम दो को होना चाहिए)	(वयम्) भवेम (हम सब हों या सबको होना चाहिए)

धातुओं से विशेष प्रत्यय

आगे कृदन्त प्रकरण आएगा। उसमें धातुओं से अनेक प्रकार के प्रत्यय लगाने का वर्णन किया जाएगा। प्रत्येक धातु के साथ, उन कृत्प्रत्ययों में से कुछ उपयोगी प्रत्यय लगाकर एक-एक रूप दिया जाता है जिससे विद्यार्थी इनके स्वरूप से अवगत हो जाएँ।

क्त, क्तवतु्=भूतकाल को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त होते हैं।

क्त्वा—'करके' अर्थ में यह प्रत्यय होता है। उपसर्गपूर्वक धातु होने पर क्त्वा को ल्यप् (य) हो जाता है।

तुमुन्—'करने के लिए' अर्थ में तुमुन् प्रत्यय होता है।

तव्य, अनीयर्—ये प्रत्यय 'करने के लिए' या 'चाहिए' अर्थ में लगते हैं।

शतृ—'करता हुआ' अर्थ में शतृ प्रत्यय होता है।

णिच्—प्रेरणा अर्थ में णिच् (अय्) प्रत्यय होता है।

य—कर्मवाच्य और भाववाच्य में 'य' प्रत्यय होता है।

सन्—'करना चाहता हुआ' अर्थ में धातु से सन् प्रत्यय होता है और धातु को द्वित्व हो जाता है।

उपसर्ग—धातु के साथ उपसर्ग लगने से भी अर्थ-भेद हो जाता है। यहाँ ऐसे

भी सोपसर्ग धातुप्रयोग दिए गए हैं।

नीचे इन सब प्रत्ययों से युक्त धातु का एक-एक रूप देखिए। आगे भी सब धातुओं के साथ इन प्रत्ययों से युक्त एक-एक रूप दिया जाएगा।

इन सब प्रत्ययों का विस्तृत वर्णन पृथक् भी यथास्थान दिया जाएगा।

कृदन्तान्त रूप-रचना—

भू + क्त = भूतः

भू + क्तवत् = भूतवान्

भू + क्त्वा = भूत्वा, संभूय (ल्यप्)

भू + तुमुन् = भवितुम्

भू + तव्य = भवितव्यम्

भू + शतृ = भवत्

भू + अनीय = भवनीय

प्रेरणार्थक—भावयति = हुवाता है।

कर्मवाच्य—भूयते = हुआ जाता है।

सन्नन्त—बुभूषति = होना चाहता है।

सोपसर्ग प्रयोग—

प्र + भवति = प्रभवति—पैदा होता है।

परा + भवति = पराभवति—तिरस्कार करता है।

अनु + भवति = अनुभवति—महसूस करता है।

अति + भवति = अतिभवति—किसी से अच्छा होता है।

सम् + भवति = सम्भवति—सम्भव होता है या इकट्ठा होता है।

पठ् धातु के अन्य लकारों में रूप—

लृट् लकार भविष्यत्काल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लोट् लकार—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

लङ् लकार—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

कृदन्तान्त-रूप-रचना—

पठ् + क्त = पठितः — प्रेरणार्थक—पाठयति
पठ् + क्तवत् = पठितवान् — सन्नन्त—पिपठिषति
पठ् + क्त्वा = पठित्वा — कर्मवाच्य—पठ्यते

पच् = पकाना

लट् लकार—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचति	पचतः	पचन्ति
मध्यम पुरुष	पचसि	पचथः	पचथ
उत्तम पुरुष	पचामि	पचावः	पचामः

ज्ञातव्य—पच् धातु अनिट् है अतः इसके भविष्यत्काल में धातु के साथ 'इ' नहीं लगेगी। च् को क् और स् को ष् होकर दोनों मिलकर क्ष् हो जाएगा।

लृट् लकार—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पक्ष्यसि	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः

लोट् लकार—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	पचतु	पचताम्	पचन्तु
मध्यम पुरुष	पच	पचतम्	पचत
उत्तम पुरुष	पचानि	पचाव	पचाम

लङ् लकार—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
मध्यम पुरुष	अपचः	अपचतम्	अपचत
उत्तम पुरुष	अपचम्	अपचाव	अपचाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
मध्यम पुरुष	पचेः	पचेतम्	पचेत
उत्तम पुरुष	पचेयम्	पचेव	पचेम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

पच् + क्त = पक्वः (पक्वा, पक्वम्) — प्रेरणार्थक—पाचयति
पच् + क्तवत् = पक्ववान् (वती) — सन्नन्त—पिपक्षति
पच् + क्त्वा = पक्त्वा — कर्मवाच्य—पच्यते
पच् + तुम् = पक्तुम् — सोपसर्ग प्रयोग—सुपचति
पच् + तव्य = पक्तव्यः (पक्तव्या, पक्तव्यम्)
पच् + शतृ = पचत् (पचन्, पचन्ती)

पच्+अनीय=पचनीयः (-या,-यम्)

नम्=झुकना, नमस्कार करना

लट् लकार—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नमति	नमतः	नमन्ति
म० पु०	नमसि	नमथः	नमथ
उ० पु०	नमामि	नमावः	नमामः

ज्ञातव्य—नम् धातु अनिट् है। भविष्यत्काल में म् को अनुस्वार हो जाएगा।

लृट् लकार—भविष्यत् काल

प्र० प्र०	नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति
म० पु०	नंस्यसि	नंस्यथः	नंस्यथ
उ० पु०	नंस्यामि	नंस्यावः	नंस्यामः

लोट् लकार—आज्ञार्थक

प्र० पु०	नमतु	नमताम्	नमन्तु
म० पु०	नम	नमतम्	नमत
उ० पु०	नमानि	नमाव	नमाम

लङ् लकार—भूतकाल

प्र० पु०	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
म० पु०	अनमः	अनमतम्	अनमत
उ० पु०	अनमम्	अनमाव	अनमाम

विधिलिङ् लकार

प्र० पु०	नमेत्	नमेताम्	नमेयुः
म० पु०	नमेः	नमेतम्	नमेत
उ० पु०	नमेयम्	नमेव	नमेम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

नम्+क्त=नतः, नता, नतम्
नम्+क्तवत्=नतवान्, नतवती
नम्+क्त्वा=नत्वा
प्रणत्य, प्रणम्य
नम्+तुम्=नन्तुम्
नम्+तव्य=नन्तव्यः, नन्तव्यां
नम्=शतृ=नमत्, नमन्, नमन्ती
नम्+अनीय—नमनीय

प्रेरणार्थक—नामयति, नमयति
सन्नन्त—निनंसति
कर्मवाच्य—नम्यते

सोपसर्ग प्रयोग—

प्रणमति=प्रणाम करता है।
परिणमति=बदलता है।
प्रतिनमति=नमस्ते का उत्तर देता है।
विपरिणमति—विकृत होता है।

स्मृ=याद करना

ज्ञातव्य—स्मृ धातु की ऋ को अर् गुण होकर स्मर् हो जाता है। तब रूप चलते हैं।

लट् लकार—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति
म० पु०	स्मरसि	स्मरथः	स्मरथ
उ० पु०	स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः

लृट् लकार—भविष्यत्काल

प्र० पु०	स्मरिष्यति	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति
म० पु०	स्मरिष्यसि	स्मरिष्यथः	स्मरिष्यथ
उ० पु०	स्मरिष्यामि	स्मरिष्यावः	स्मरिष्यामः

लोट् लकार—आज्ञार्थक

प्र० पु०	स्मरतु	स्मरताम्	स्मरन्तु
म० पु०	स्मर	स्मरतम्	स्मरत
उ० पु०	स्मराणि	स्मराव	स्मराम

लङ् लकार—भूतकाल

प्र० पु०	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्
म० पु०	अस्मरः	अस्मरतम्	अस्मरत
उ० पु०	अस्मरम्	अस्मराव	अस्मराम

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः
म० पु०	स्मरेः	स्मरेतम्	स्मरेत
उ० पु०	स्मरेयम्	स्मरेव	स्मरेम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

स्मृ + क्त = स्मृत
स्मृ + क्तवत् = स्मृतवान्
स्मृ + क्त्वा = स्मृत्वा, संस्मृत्य
स्मृ + तुमुन् = स्मर्तुम्
स्मृ + तव्य = स्मर्तव्यम्
स्मृ + अनीय = स्मरणीयः
स्मृ + शतृ — स्मरत्, स्मरन्, स्मरन्ती

प्रेरणार्थक—स्मारयति
कर्मवाच्य—स्मर्यते
सोपसर्ग प्रयोग—
वि + स्मृ = विस्मरति = भूलता है।
अप + स्मृ = अपस्मरति = पागल होता है, मिर्गी से पीड़ित होता है।

जि (जय्) = जीतना

ज्ञातव्य—जि धातु की इ को ए गुण (अय्) होकर जयति आदि रूप बनते हैं।

लट् लकार = वर्तमानकाल

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जयति	जयत:	जयन्ति
म० पु०	जयसि	जयथ:	जयथ
उ० पु०	जयामि	जयाव:	जयाम:

ज्ञातव्य—जि धातु अनिट् है अत: इसके भविष्यत्काल में इ नहीं लगती। जि की इ को ए गुण हो जाता है।

लृट् लकार—भविष्यत्काल

प्र० पु०	जेष्यति	जेष्यत:	जेष्यन्ति
म० पु०	जेष्यसि	जेष्यथ:	जेष्यथ
उ० पु०	जेष्यामि	जेष्याव:	जेष्याम:

लोट् लकार—आज्ञार्थक

प्र० पु०	जयतु	जयताम्	जयन्तु
म० पु०	जय	जयतम्	जयत
उ० पु०	जयानि	जयाव	जयाम

लङ् लकार—भूतकाल

प्र० पु०	अजयत्	अजयताम्	अजयन्
म० पु०	अजय:	अजयतम्	अजयत
उ० पु०	अजयम्	अजयाव	अजयाम

विधिलिङ् लकार

प्र० पु०	जयेत्	जयेताम्	जयेयु:
म० पु०	जये:	जयेतम्	जयेत
उ० पु०	जयेयम्	जयेव	जयेम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

जि + क्त = जित:, जिता, जितम्
जि + क्तवत् = जितवान्, जितवती
जि + क्त्वा = जित्वा, विजित्य
जि + तुम् = जेतुम्
जि + तव्य = जेतव्य:, जेतव्या, जेतव्यम्
जि + शतृ = जयत्—जयन्, जयन्ती
जि + अनीय = जयनीय: (जयनीया, जयनीयम्)

प्रेरणार्थक—जाययति—ते
सन्नन्त—जिगीषति
कर्मवाच्य—जीयते
सोपसर्ग प्रयोग—
विजयते = जीतता है। (आत्म०)
पराजयते = हराता है।

परिवर्तनशील धातु

गम् (गच्छ) = जाना

ज्ञातव्य — 'गम्' धातु को लट्, लोट, लङ् और विधिलिङ् में 'गच्छ' आदेश हो जाता है।

लट् लकार—वर्तमानकाल

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लृट् लकार—भविष्यत्काल

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

लोट् लकार—आज्ञार्थक

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

लङ् लकार—भूतकाल

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम रुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम पुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

गम् + क्त = गतः (गता, गतम्)	प्रेरणार्थक — गमयति = भेजता है
गम् = क्तवत् — गतवत् (गतवान्, गतवती)	कर्मवाच्य—गम्यते।
	सन्नन्त—जिगमिषति
गम् + क्त्वा = गत्वा,	**सोपसर्ग प्रयोग**
प्रगत्य, प्रगम्य	आगच्छति = आता है।
गम् + तुम् = गन्तुम्	प्रत्यागच्छति = लौटता है।
गम् + तव्यत् = गन्तव्य	अनुगच्छति = पीछे जाता है।
गम् + शतृ = गच्छत्	अधिगच्छति = प्राप्त करता है।

गम्+अनीय=गमनीय	अवगच्छति=समझता है।
	निर्गच्छति=निकलता है।
	अतिगच्छति=बिताता है।
	उपगच्छति=पास जाता है।
	उद्गच्छति=ऊपर चढ़ता है या उगता है।
	अभिगच्छति=पहुँचता है।

पा (पिब्)=पीना

ज्ञातव्य—'पा' धातु को 'पिब' आदेश होता है चार लकारों में, भविष्यत्काल को छोड़कर।

लट् लकार—वर्तमानकाल

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

ज्ञातव्य—पा, घ्रा, स्था, दा, दृश्, सद्—ये सभी परिवर्तनशील धातु अनिट् हैं। अतः इन धातुओं से भविष्यत्काल में 'इ' नहीं लगेगी।

लृट् लकार—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

लोट् लकार—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

लङ् लकार—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यम पुरुष	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुष	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

पा+क्त=पीतः, पीतम् **प्रेरणार्थक**—पाययति

पा + क्तवत् = पीतवान्
पा + क्त्वा = पीत्वा, संपीय
पा + तुम् = पातुम्
पा + तव्य = पातव्यम्
पा + शतृ = पिबत्
पा + अनीय = पानीयम्

सन्नन्त—पिपासति
कर्मवाच्य—पीयते
सोपसर्ग—संपिबते = चूस जाता है।

घ्रा (जिघ्र) = सूंघना

ज्ञातव्य—'घ्रा' धातु को चार लकारों में 'जिघ्र' आदेश होता है, भविष्यत्काल को छोड़कर।

लट् लकार—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जिघ्रति	जिघ्रतः	जिघ्रन्ति
मध्यम पुरुष	जिघ्रसि	जिघ्रथः	जिघ्रथ
उत्तम पुरुष	जिघ्रामि	जिघ्रावः	जिघ्रामः

लृट् लकार—भविष्यत्काल

प्र० पु०	घ्रास्यति	घ्रास्यतः	घ्रास्यन्ति
म० पु०	घ्रास्यसि	घ्रास्यथः	घ्रास्यथ
उ० पु०	घ्रास्यामि	घ्रास्यावः	घ्रास्यामः

लोट् लकार—आज्ञार्थक

प्र० पु०	जिघ्रतु	जिघ्रताम्	जिघ्रन्तु
म० पु०	जिघ्र	जिघ्रतम्	जिघ्रत
उ० पु०	जिघ्राणि	जिघ्राव	जिघ्राम

लङ् लकार—भूतकाल

प्र० पु०	अजिघ्रत्	अजिघ्रताम्	अजिघ्रन्
म० पु०	अजिघ्रः	अजिघ्रतम्	अजिघ्रत
उ० पु०	अजिघ्रम्	अजिघ्राव	अजिघ्राम

विधिलिङ् लकार

प्र० पु०	जिघ्रेत्	जिघ्रेताम्	जिघ्रेयुः
म० पु०	जिघ्रेः	जिघ्रेतम्	जिघ्रेत
उ० पु०	जिघ्रेयम्	जिघ्रेव	जिघ्रेम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

घ्रा + क्त = घ्रात
घ्रा + क्तवत् = घ्रातवान्
घ्रा + क्त्वा = घ्रात्वा

प्रेरणार्थक—घ्रापयति
कर्मवाच्य—घ्रीयते
सन्नन्त—जिघ्रासति

घ्रा+तुम्=घ्रातुम्
घ्रा+तव्य=घ्रातव्य
घ्रा+शतृ=जिघ्रत्
घ्रा=अनीय=घ्राणीय

सोपसर्ग प्रयोग—
आ+घ्रा—आघ्रातम्=सूँघा, चूमा हुआ।

स्था (तिष्ठ)=ठहरना

ज्ञातव्य—'स्था' धातु की चार लकारों में 'तिष्ठ' आदेश हो जाता है।

लट् लकार—वर्तमानकाल

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठत:	तिष्ठन्ति
मध्यम पुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथ:	तिष्ठथ
उत्तम पुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठाव:	तिष्ठाम:

लृट् लकार—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	स्थास्यति	स्थास्यत:	स्थास्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्थास्यसि	स्थास्यथ:	स्थास्यथ
उत्तम पुरुष	स्थास्यामि	स्थास्याव:	स्थास्याम:

लोट् लकार—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यम पुरुष	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तम पुरुष	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

लङ् लकार—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यम पुरुष	अतिष्ठ:	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तम पुरुष	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयु:
मध्यम पुरुष	तिष्ठे:	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उत्तम पुरुष	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

स्था+क्त=स्थित
स्था+क्तवत्=स्थितवान्
स्था+क्त्वा=स्थित्वा
स्था+तुम्=स्थातुम्
स्था+तव्य=स्थातव्य
स्था+शतृ=तिष्ठत्

प्रेरणार्थक—स्थापयति—ते
सन्नन्त—तिष्ठासति
कर्मवाच्य—स्थीयते
सोपसर्ग प्रयोग—
प्रतिष्ठते=प्रस्थान करता है।
उपतिष्ठति=उपस्थित होता है।

स्था + अनीय = स्थानीय

अनुतिष्ठति = अनुष्ठान करता है।
अधितिष्ठति = बसता है।
प्रतिष्ठति = प्रतिष्ठा करता है।
उत्तिष्ठति = उठता है, खड़ा होता है।

दृश् (पश्य) देखना

ज्ञातव्य—'दृश्' धातु को चार लकारों में 'पश्य' आदेश हो जाता है।

लट् लकार—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लृट् लकार—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लोट् लकार—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुष	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुष	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

लङ् लकार—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम पुरुष	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
मध्यम पुरुष	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उत्तम पुरुष	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

कृदन्तान्त रूप रचना—

दृश् + क्त = दृष्ट
दृश् + क्तवत् = दृष्टवान्
दृश् + क्त्वा = दृष्ट्वा
दृश् + तुम् = द्रष्टुम्
दृश् + तव्य = द्रष्टव्य
दश + शतृ = पश्यत्—पश्यन्, पश्यन्ती

प्रेरणार्थक—दर्शयति
सन्नन्त—दिदृक्षते
कर्मवाच्य—दृश्यते

दृश्+अनीय=दर्शनीय

दा (यच्छ)=देना

ज्ञातव्य—'दा' धातु को चार लकारों में 'यच्छ' आदेश होता है।

लट् लकार—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यच्छति	यच्छतः	यच्छन्ति
मध्यम पुरुष	यच्छसि	यच्छथः	यच्छथ
उत्तम पुरुष	यच्छामि	यच्छावः	यच्छामः

लृट् लकार—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
मध्यम पुरुष	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उत्तम पुरुष	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

लोट् लकार—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	यच्छतु	यच्छताम्	यच्छन्तु
मध्यम पुरुष	यच्छ	यच्छतम्	यच्छत
उत्तम पुरुष	यच्छानि	यच्छाव	यच्छाम

लङ् लकार—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अयच्छत्	अयच्छताम्	अयच्छन्
मध्यम पुरुष	अयच्छः	अयच्छतम्	अयच्छत
उत्तम पुरुष	अयच्छम्	अयच्छाव	अयच्छाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	यच्छेत्	यच्छेताम्	यच्छेयुः
मध्यम पुरुष	यच्छेः	यच्छेतम्	यच्छेत
उत्तम पुरुष	यच्छेयम्	यच्छेव	यच्छेम

कृदन्त रूप-रचना—

दा+क्त=दत्त

दा+क्तवत्=दत्तवान्

दा+क्त्वा=दत्त्वा

दा+तमुन्=दातुम्

दा+तव्य=दातव्य

दा+अनीय=दानीय

दा+शतृ=यच्छत्

प्रेरणार्थक—दापयति

कर्मवाच्य—दीयते

सन्नन्त—दित्सति

सद् (सीद)=दुःखी होना

ज्ञातव्य—'सद्' धातु को चार लकारों में 'सीद' आदेश हो जाता है।

लट् लकार—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सीदति	सीदतः	सीदन्ति
मध्यम पुरुष	सीदसि	सीदथः	सीदथ
उत्तम पुरुष	सीदामि	सीदावः	सीदामः

लृट् लकार—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	सत्स्यति	सत्स्यतः	सत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	सत्स्यसि	सत्स्यथः	सत्स्यथ
उत्तम पुरुष	सत्स्यामि	सत्स्यावः	सत्स्यामः

लोट् लकार—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	सीदतु	सीदताम्	सीदन्तु
मध्यम पुरुष	सीद	सीदतम्	सीदत
उत्तम पुरुष	सीदानि	सीदाव	सीदाम

लङ् लकार—भूतकाल

प्रथम पुरुष	असीदत्	असीदताम्	असीदन्
मध्यम पुरुष	असीदः	असीदतम्	असीदत
उत्तम पुरुष	असीदम्	असीदाव	असीदाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	सीदेत्	सीदेताम्	सीदेयुः
मध्यम पुरुष	सीदेः	सीदेतम्	सीदेत
उत्तम पुरुष	सीदेयम्	सीदेव	सीदेम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

सद्+क्त=सन्न
सद्+क्तवत्=सन्नवान्
सद्+क्त्वा=सत्त्वा
सद्+तुम्=सत्तुम्
सद्+तव्य=सत्तव्यः
सद्+शतृ=सीदत्
सद्+अनीय=सदनीय

प्रेरणार्थक—सादयति-ते
भाववाच्य—सद्यते
सोपसर्ग प्रयोग—
प्रसीदति=प्रसन्न होता है।
अवसीदति=कोसता है, दुःखी होता है।
उपसीदति=निकट बैठता है।
निषीदति=बैठता है।
विषीदति=विषाद करता है। (खिन्न होता है)।

भ्वादिगण की परस्मैपदी कुछ अन्य धातु

स्मरणीय—निम्नलिखित भ्वादिगण की परस्मैपदी धातुओं के रूप भी 'भू' पठ् आदि के रूपों के समान बनते हैं। ये अनुवाद करने में आवश्यक हैं। इनके अर्थ स्मरण कर लें। यहां इनके लट्, लृट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में प्रथम पुरुष एकवचन के रूप

दिये गए हैं। (शेष रूप प्राय; भू, पठ् आदि के समान होते हैं)। साथ ही कृदन्तान्त णिजन्त, सन्नन्त तथा कर्मवाच्य में लट् के अन्य पुरुष एकवचन के रूप भी दे दिए गये हैं।

अट् (घूमना) अटति, अटिष्यति, अटतु, आटत् अटेत्।
आटयति-ते। अटिटिषति। अट्यते। अटित। अटित्वा। अटितुम्। अटितव्य।

अर्च् (पूजा करना) अर्चति, अर्चिष्यति, अर्चतु, आर्चत्, अर्चेत्।
आर्चयति-ते अर्चिचिषति। अर्च्यते। अर्चित। अर्चित्वा। अर्चितुम्। अर्चनीय। अर्चितव्य

अर्ज् (कमाना, इकट्ठा करना) अर्जति, अर्जिष्यति, अर्जतु, आर्जत्, अर्जेत्।
अर्जयति-ते। अर्ज्यते। अर्जित्वा। अर्जित। अर्जितुम्। अर्जितव्य। अर्जनीय।

अर्ह् (योग्य होना) अर्हति, अर्हिष्यति, अर्हतु, आर्हत्, अर्हेत्।
अर्हयति। अर्हिहिषति। अर्ह्यते। अर्हित। अर्हित्वा। अर्हितुम्। अर्हितव्य। अर्हणीय।

कूज् (मधुर शब्द करना) कूजति, कूजिष्यति, कूजतु, अकूजत्, कूजेत्।
कूजयति-ते। कूजिजिषति। कूजित। कूजित्वा। कूजितुम्। कूजितव्य।

कृष् (खींचना, खेती करना) कर्षति, कर्क्ष्यति, कर्षतु, अकर्षत्, कर्षेत्।
कर्षयति-ते। कर्षिषिषति। कृष्यते। कृष्ट। कृष्ट्वा। क्रष्टुम्। क्रष्टव्य।

क्रन्द् (चिल्लाकर रोना) क्रन्दति, क्रन्दिष्यति, क्रन्दतु, अक्रन्दत्, क्रन्देत्।
क्रन्दयति-न्ते, चिक्रन्दिषति। क्रन्द्यते। क्रन्दित। क्रन्दितुम्। क्रन्दित्वा। क्रन्दितव्य।

क्रीड् (खेलना) क्रीडति, क्रीडिष्यति, क्रीडतु, अक्रीडत्, क्रीडेत्।
क्रीडयति-ते। चिक्रीडिषति क्रीड्यते। क्रीडित। क्रीडितुम्। क्रीडितव्य। क्रीडित्वा।

क्षि (कम होना, क्षीण होना) क्षयति, क्षेष्यति, क्षयतु, अक्षयत्, क्षयेत्।
क्षाययति-ते। क्षीयते। क्षित, क्षीण। क्षेतुम्। क्षित्वा। क्षेतव्य, क्षयनीय।

खेल् (खेलना) खेलति, खेलिष्यति, खेलतु, अखेलत्, खेलेत्।
खेलयति-ते। खेल्यते। खेलित। खेलितुम्। खेलित्वा। खेलितव्य।

गर्ज् (गर्जना) गर्जति, गर्जिष्यति, गर्जतु, अगर्जत्, गर्जेत्।
गर्जयति-ते। गर्ज्यते। गर्जित्वा। गर्जित। गर्जितुम्। गर्जितव्य।

गर्व् (घमंड करना) गर्वति, गर्विष्यति, गर्वतु, अगर्वत्, गर्वेत्।
गर्वयति-ते। गर्व्यते। गर्वित्वा। गर्वित। गर्वितुम्। गर्वितव्य।

गै (गाना) गायति, गास्यति, गायतु, अगायत्, गायेत्
गायति-ते। गीयते; गीत्वा। गीत। गातव्य। गातुम्। गेय।

चर् (जाना, चरना) चरति, चरिष्यति, चरतु, अचरत्, चरेत्।
चारयति। चर्यते। चरित्वा। चरितुम्। चरित।

चल् (चलना) चलति, चलिष्यति, चलतु, अचलत्, चलेत्।
चालयति। चल्यते। चलित्वा। चलितुम्। चलित। चलितव्य।

चुम्ब् (चूमना) चुम्बति, चुम्बिष्यति, चुम्बतु, अचुम्बत्, चुम्बेत्।

Sunita namboodiri Xth D

चुम्बयति-ते। चुम्ब्यते। चुम्बित्वा। चुम्बित। चुम्बितुम्। चुम्बितव्य।

चूष् (चूसना) चूषति, चूषिष्यति, चूषतु, अचूषत्, चूषेत्।

चूषयति-ते। चूष्यते। चूषितुम्। चूषित। चूषित्वा। चूषितव्य।

जप् (जपना) जपति, जपिष्यति, जपतु, अजपत्, जपेत्।

जापयति-ते। जप्यते। जपित्वा। जपित। जपितुम्। जपितव्य।

जीव् (जीना) जीवति, जीविष्यति, जीवतु, अजीवत्, जीवेत्।

जीवयति-ते। जीव्यते। जीवितुम्। जीवित। जीवितव्य। जीवित्वा।

ज्वल् (जलना) ज्वलति, ज्वलिष्यति, ज्वलतु, अज्वलत्, ज्वलेत्।

ज्वालयति। ज्वल्यते। ज्वलितुम्। ज्वलित। ज्वलितव्य। ज्वलित्वा।

तप् (तपना, जलना) तपति, तप्स्यति, तपतु, अतपत्, तपेत्।

तापयति-ते। तप्त। तप्यते। तप्तुम्। तप्त्वा। तप्तव्य।

तृ (तैरना) तरति, तरिष्यति, तरतु, अतरत् तरेत्।

तारयति-ते। तीर्यते। तीर्ण। तीर्त्वा। तर्तुम्। तरितव्य।

त्यज् (छोड़ना) त्यजति, त्यक्ष्यति, त्यजतु, अत्यजत् त्यजेत्।

त्याजयति-ते। त्यज्यते। त्यक्तुम्। त्यक्त्वा। त्याज्य।

दंश् (काटना) दशति, दक्ष्यति, दशतु, अदशत्, दशेत्।

दंशयति। दश्यते। दष्टुम्। दष्ट। दष्ट्वा। दष्टव्य।

दह् (जलाना) दहति, धक्ष्यति, दहतु, अदहत्, दहेत्।

दाहयति-ते। दह्यते। दग्धुम्। दग्ध। दग्ध्वा। दग्धव्य।

धाव् (भागना) धावति-ते, धाविष्यति-ते, धावतु-ताम्, अधावत्-त धावेत्-त॥

धावयति-ते। धाव्यते। धावित्वा। धावितुम्। धावित। धावितव्य।

ध्यै (ध्यान करना) ध्यायति, ध्यास्यति, ध्यायतु, अध्यायत्, ध्यायेत्।

ध्याययति-ते। ध्यायते। ध्यातुम्। ध्येय। ध्यात। ध्यात्वा। ध्यातव्य।

नद् (आवाज करना) नदति, नदिष्यति, नदतु, अनदत्, नदेत्।

नादयति-ते। नद्यते। नदितुम्। नदित। नदित्वा। नदितव्य।

पत् (गिरना) पतति, पतिष्यति, पततु, अपतत्, पतेत्।

पातयति-ते। पत्यते। पतित। पतितवत्। पतित्वा। पतितुम्। पतितव्य। पतनीय। पतत् (पतन्-पतन्ती)।

फल् (फल देना) फलति, फलिष्यति, फलतु, अफलत्, फलेत्।

फालयति-ते। फल्यते। फलित। फलितुम्। फलित्वा। फलितव्य।

बुध् (जानना) बोधति-ते, बोधिष्यति-ते, बोधतु-ताम्, अबोधत्-त, बोधत्-त।

बोधयति। बुध्यते। बुद्ध। बोद्धुम्। बुद्ध्वा। बोद्धव्य।

भज् (सेवा करना) भजति-ते, भजिष्यति-ते, भजतु-ताम्, अभजत्-त भजेत्-त।

भाजजति-ते। भज्यते। भक्त। भक्तुम्। भक्त्वा। भक्तव्य।

भ्रम् (घूमना) भ्रमति (भ्राम्यति), भ्रमिष्यति, भ्रमतु, अभ्रमत्, भ्रमेत्।

भ्रामयति । भ्रम्यते । भ्रान्तम् । भ्रमितुम् । भ्रान्त्वा । भ्रमितव्य ।

यज् (देव पूजा, यज्ञ करना) यजति-ते, यक्ष्यति-ते, यजतु-ताम्, अजयत्-त, यजेत्-त । याजयति । इज्यते । इष्ट । यष्टुम् । इष्ट्वा । यष्टव्य ।

रुह् (उगना, चढ़ना) रोहति, रोक्ष्यति, रोहतु, अरोहत्, रोहेत् । रोहयति । (रोपयति) । रुह्यते । रोढुम् । रूढ । आरुह्य ।

वम् (उल्टी करना) वमति, वमिष्यति, वमतु, अवमत्, वमेत् । वामयति-ते । वम्यते । वमित । वमितुम् । वमित्वा । वमितव्य।

वस् (वसना) वसति, वत्स्यति, वसतु, अवसत्, वसेत् । वासयति-ते । उष्यते । उषित । वस्तुम् । उषित्वा । वस्तव्य ।

वाञ्छ् (चाहना) वाञ्छति, वाञ्छिष्यति, वाञ्छतु, अवाञ्छत्, वाञ्छेत् । वाञ्छयति । वाञ्छ्यते । वाञ्छित । वाञ्छितुम् । वाञ्छित्वा । वाञ्छितव्य ।

शुच् (शोक करना) शोचति, शोचिष्यति, शोचतु, अशोचत्, शोचेत् । शोचयति-ते । शुच्यते । शोचितुम् । शुचित । शुचित्वा । शोचितव्य ।

सृ (चलना, सरकना) सरति, सरिष्यति, सरतु, असरत् सरेत् । सारयति-ते । स्रियते । सर्तुम् । सृत । सृत्वा । सर्तव्य ।

रक्ष् (रक्ष करना) रक्षति, रक्षिष्यति, रक्षतु, अरक्षत्, रक्षेत् । रक्षयति । रक्ष्यते । रिरक्षिषति । रक्षित । रक्षितुम् रक्षित्वा । संरक्ष्य । रक्षितव्य । रक्षणीय । रक्षत् ।

हस् (हसना) हसति, हसिष्यति, हसतु, अहसत्, हसेत् । हासयति । हस्यते । जिहसिषति । हसित । हसितुम् । हसित्वा । हसितव्यम् । हसनीय । हसत् ।

खाद् (खाना) खादति, खदिष्यति, खादतु, अखादत्, खादेत् । खादयति । खाद्यते । खादित । खादित्वा । खादितुम् । खादितव्य । खादनीय । खादत् ।

वद् (बोलना) वदति, वदिष्यति, वदतु, अवदत् वदेत् । वादयति । उद्यते । उदित । उदित्वा । वदितुम् । वदितव्य । वदनीय । वदत् ।

उदाहरण

१. वर्षाऋतु में अनेक वनस्पतियां पैदा होती हैं ।	वर्षतौ अनेके वनस्पतयः प्रभवन्ति ।
२. कालिदास का समय संस्कृत की उन्नति का काल था ।	कालिदासस्य समयः संस्कृतभाषायाः उत्कर्षकाल आसीत् ।
३. गुणी गुणहीन का तिरस्कार करता है ।	गुणी गुणहीनं पराभवति ।
४. वीरों से शत्रु पराजित हुए ।	शूरैः शत्रवः परजिताः अभवन् ।
५. सज्जनों का अपमान न करना चाहिए	सज्जनानामपमानः न कर्तव्यः ।
६. वह मिर्गी से पीड़ित पुरुष है ।	सोऽपस्मारेण पीडितः पुरुषोऽस्ति ।

७. लोग श्रेष्ठ नर का अनुकरण करते हैं।	जनाः श्रेष्ठं नरमनुगच्छन्ति।
८. पुत्र पिता की नकल करता है।	पुत्रः पितरमनुकरोति।
९. निःसन्देह आज वर्षा होगी।	निःसंशमद्य वर्षा भविष्यति।
१०. वह स्कूल से निकल गया।	सः विद्यालयान्निरगच्छत्।
११. सर्वनाश सहन करना कठिन होता है।	सर्वनाशस्तु दुःसहः भवति।
१२. चरागाह में गौएँ चरती हैं।	गोचरभूमौ चरन्ति गावः।
१३. इस आश्रम में आराम करो।	एतस्मिन्नाश्रमे विश्रमत।
१४. मेहनत से काम बनते हैं।	परिश्रमेण कार्याणि सिध्यन्ति।

अभ्यास

(१) निम्नलिखित वाक्यों का शुद्ध संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) बच्चे, बूढ़े और स्त्रियां सब लोग वहाँ आए। (२) कौन वहाँ से आया है? (३) पतित को उठाओ। (४) घाव पर निरन्तर चोटें लगती हैं। (५) अधिक बोलना उचित नहीं होता। (६) सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। (७) अभिमानी का सिर नीचा होता है। (८) हनुमान राम के पास आया। (९) आपने बहुत उपकार किया। (१०) श्रीकृष्ण का अवतार कब हुआ? (११) मेरी इन शंकाओं को दूर करें।

(२) धातु किसे कहते हैं? क्रियापद और धातु में क्या अन्तर है। उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(३) गण किसे कहते हैं? गण कितने होते हैं? उनके नाम लिखिए।

(४) भ्वादिगण में कौन सा विकरण लगता है?

(५) परस्मैपदी धातुओं में लङ् के तीनों पुरुषों में कौन-कौन-से प्रत्यय लगते हैं।

(६) वर्तमानकाल, विधि तथा भविष्यत् काल में कौन-कौन-सा लकार लगता है।

(७) इन रूपों के लकार, पुरुष और वचन लिखिए—भवन्ति, भव, भवेः, भविष्यति।

(८) सकर्मक और अकर्मक धातुओं में क्या अन्तर है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए, किन अर्थों वाले धातु अकर्मक होते हैं?

(९) इन वाक्यों को शुद्ध कीजिए—

आवां किं हसथ? यूयं किं पठिष्यथः? हिमालयात् गंगा उद्गच्छन्ति। भो बालाः! स्वपाठं पठन्तु। भवान् अत्र आगच्छ। वयं रामायणम् पठावः।

(१०) रक्ष् धातु के वर्तमानकाल में रूप लिखिए।

(११) पा और गम् धातु के भविष्यत्काल में रूप लिखिए।

द्वितीय अध्याय

भ्वादिगण की आत्मनेपदी धातु

पीछे बता आए हैं कि धातु तीन प्रकार की होती हैं—कुछ परस्मैपदी, कुछ आत्मनेपदी और कुछ उभयपदी। अब तक परस्मैपदी धातुओं के पांच लकारों में रूप बताए गए हैं। अब आत्मनेपदी धातुओं का वर्णन किया जाएगा।

आत्मनेपद के प्रत्यय लट्—वर्तमान काल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ते	इते	अन्ते
मध्यम पुरुष	से	इथे	ध्वे
उत्तम पुरुष	इ	वहे	महे

ज्ञातव्य—आत्मनेपदी धातुओं के साथ भी गण का विकरण लगता है। भ्वादिगण का विकरण अ है जो सेव् आदि धातुओं के साथ भी लगेगा।

सेव्—सेवा करना

लट् लकार—वर्तमानकाल

सेव्+अ+ते=सेवते।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
मध्यम पुरुष	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उत्तम पुरुष	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लृट् लकार—भविष्यत्काल के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	स्यते	स्येते	स्यन्ते
मध्यम पुरुष	स्यसे	स्यथे	स्यध्वे
उत्तम पुरुष	स्ये	स्यावहे	स्यामहे

लृट् में सेव् के रूप

ज्ञातव्य—सेव् धातु सेट् है। भविष्यत्काल में 'इ' लगकर 'स्य' के स् को ष् हो जाता है।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
मध्यम पुरुष	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उत्तम पुरुष	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

लोट् लकार—आज्ञार्थक के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	ताम्	इताम्	अन्ताम्
मध्यम पुरुष	स्व	इथाम्	ध्वम्

उत्तम पुरुष	ऐ	आवहै	आमहै

लोट् में सेव् के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेबताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
मध्यम पुरुष	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

लङ् लकार—भूतकाल के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	त	इताम्	अन्त
मध्यम पुरुष	थाः	इथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	इ	(आ) वहि	(आ) महि

लङ् में सेव् के रूप

प्रथम पुरुष	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यम पुरुष	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उत्तम पुरुष	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

विधिलिङ् लकार के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	ईत	ईयाताम्	ईरन्
मध्यम पुरुष	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
उत्तम पुरुष	ईय	ईवहि	ईमहि

विधिलिङ् में सेव् के रूप

प्रथम पुरुष	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
मध्यम पुरुष	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

कृदन्तान्त रूप-रचना—

सेव् + क्त = सेवितः
सेव् + क्तवत् = सेवितवत्
(सेवितवान्, सेवितवती)
सेव् + क्त्वा = सेवित्वा
सेव् + तुम् = सेवितुम्
सेव् + तव्य = सेवितव्य
सेव् + अनीय = सेवनीय
सेव् + शानच् = सेवमान

प्रेरणार्थक—सेवयति—ते
कर्मवाच्य—सेव्यते

सोपसर्ग प्रयोग—
नि + सेव् = निषेवते—
उपयोग में लाता है।

ज्ञातव्य—आत्मनेपदी धातुओं से शानच् प्रत्यय होता है। अतः सेव् धातु से 'शतृ' प्रत्यय न होकर 'शानच्' प्रत्यय होता है। शानच् के श् और च् का लोप हो जाता है, और प्रायः म् का आगम हो जाता है। आगे की सभी आत्मनेपदी धातुओं से शानच् होकर रूप बनेंगे। जैसे—सेव् + शानच् = सेवमानः इत्यादि।

लभ्—प्राप्त करना

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम पुरुष	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम पुरुष	लभे	लभावहे	लभामहे

ज्ञातव्य—लभ् धातु अनिट् है (भविष्यत्काल में लभ् के भ् को प् हो जाता है।)

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम पुरुष	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरुष	लभै	लभावहै	लभामहै

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरुष	अलभथाः	अलभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरुष	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम पुरुष	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम पुरुष	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

कृदन्तान्त रूप-रचना—

लभ् + क्त = लब्धः (लब्धा, लब्धम्)	प्रेरणार्थक रूप—लम्भयति—ते
लभ् + क्तवत् = लब्धवान् (—वती)	सन्नन्त—लिप्सति
लभ् + क्त्वा = लब्ध्वा	कर्मवाच्य—लभ्यते
लभ् + तुम् = लब्धुम्	सोपसर्ग प्रयोग—
लभ् + तव्य = लब्धव्यः (व्या, व्यम्)	उपलभते—प्राप्त करता है।
लभ् + अनीय = लभनीयः (-या, -यम्)	विप्रलभते—धोखा देता है।
लभ् + शानच् = लभमानः (-ना, -नम्)	उपालभते—उलाहना देता है।

वृत्=होना

लट् लकार—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्तते	वर्तेते	वर्तन्ते
मध्यम पुरुष	वर्तसे	वर्तेथे	वर्तध्वे
उत्तम पुरुष	वर्ते	वर्तावहे	वर्तामहे

ज्ञातव्य—'वृत्' धातु वेट् (सेट् भी और अनिट् भी है)

लृट् लकार—भविष्यत्काल (अनिट् पक्ष में)

प्रथम पुरुष	वर्त्स्यते	वर्त्स्येते	वर्त्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	वर्त्स्यसे	वर्त्स्येथे	वर्त्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	वर्त्स्ये	वर्त्स्यावहे	वर्त्स्यामहे

(सेट् पक्ष में)

प्रथम पुरुष	वर्तिष्यते	वर्तिष्येते	वर्तिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	वर्तिष्यसें	वर्तिष्येथे	वर्तिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	वर्तिष्ये	वर्तिष्यावहे	वर्तिष्यामहे

लोट् लकार—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	वर्तताम्	वर्तेताम्	वर्तन्ताम्
मध्यम पुरुष	वर्तस्व	वर्तेथाम्	वर्तध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्तै	वर्तावहै	वर्तामहै

लङ् लकार—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अवर्तत	अवर्तेताम्	अवर्तन्त
मध्यम पुरुष	अवर्तथाः	अवर्तेथाम्	अवर्तध्वम्
उत्तम पुरुष	अवर्ते	अवर्तावहि	अवर्तामहि

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	वर्तेत	वर्तेयाताम्	वर्तेरन्
मध्यम पुरुष	वर्तेथाः	वर्तेयाथाम्	वर्तेध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्तेय	वर्तेवहि	वर्तेमहि

कृदन्तान्त रूप-रचना—

वृत्+क्त=वृत्तः (वृत्ता, वृत्तम्)
वृत्+क्तवत्=वृत्तवान् (-वती)
वृत्+क्त्वा=वृत्त्वा।
वृत्+तव्य=वर्तितव्यः (व्या, व्यम्)
वृत्+शानच्=वर्तमानः (ना,-नम्)
वृत्+अनीय=वर्तनीय (-या,-यम्)
वृत्+तुम्=वर्तितुम्

प्रेरणार्थक रूप—वर्तयति-ते
भाववाच्य—वृत्यते
सन्नन्त—विवर्तिषति-ते
सोपसर्ग—
निवर्तते=लौटता है। कार्यमुक्त होता है।
विवर्तते=खुलता है

परावर्तते—वापस लौटता है।
आवर्तते=घूमता है, घेरता है।
अनुवर्तते=अनुसरण करता है।
प्रवर्तते=काम में लगता है।
अभिवर्तते=अभिमुख होता है।

वृध् (वर्ध्) = बढ़ना

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्धते	वर्धेते	वर्धन्ते
मध्यम पुरुष	वर्धसे	वर्धेथे	वर्धध्वे
उत्तम पुरुष	वर्धे	वर्धावहे	वर्धामहे

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	वर्धिष्यते	वर्धिष्येते	वर्धिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	वर्धिष्यसे	वर्धिष्येथे	वर्धिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	वर्धिष्ये	वर्धिष्यावहे	वर्धिष्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	वर्धताम्	वर्धेताम्	वर्धन्ताम्
मध्यम पुरुष	वर्धस्व	वर्धेथाम्	वर्धध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्धै	वर्धावहै	वर्धामहै

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अवर्धत	अवर्धेताम्	अवर्धन्त
मध्यम पुरुष	अवर्धथाः	अवर्धेथाम्	अवर्धध्वम्
उत्तम पुरुष	अवर्धे	अवर्धावहि	अवर्धामहि

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	वर्धेत	वर्धेयाताम्	वर्धेरन्
मध्यम पुरुष	वर्धेथाः	वर्धेयाथाम्	वर्धेध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्धेय	वर्धेवहि	वर्धेमहि

कृदन्तान्त रूप-रचना—

वृध्+क्त=वृद्धः (वृद्धा, वृद्धम्)
वृध्+क्तवत्=वृद्धवान् (-वती)
वृध्+क्त्वा=वृद्ध्वा
वृध्+तुम्=वर्धितुम्
वृध्+तव्य=वर्धितव्यः (वर्धितव्या, वर्धितव्यम्)।
वृध्+शानच्=वर्धमानः (वर्धमाना, वर्धमानम्)।
वृध्+अनीय=वर्धनीयः (वर्धनीयम्)।

प्रेरणार्थक—वर्धयति—ते
भाववाच्य—वृध्यते।
सन्नन्त—विवर्धिषति—ते।

कुछ आत्मनेपदी धातुओं के पाँचों लकारों का एक-एक रूप दिया जाता है। उन्हें सेव् के समान चला लें। उनके कृदन्तान्तादि रूप भी दिये गये हैं।

ईक्ष् (देखना) ईक्षते, ईक्षिष्यते, ईक्षताम्, ऐक्षत। ईक्षेत, ईक्षयति। ईक्ष्यते। ईक्षितः। ईक्षितवान्। ईक्षित्वा। ईक्षितुम्। ईक्षितव्यः। ईक्षणीयः। ईक्षमाणः।

सोपसर्ग—निरीक्षते=देखभाल करता है। परीक्षते=परीक्षा लेता है। उपेक्षते=लापरवाही करता है। समीक्षते—समीक्षा करता है। वीक्षते=ध्यान से देखता है। अन्वीक्षते=पड़ताल करता है। उत्प्रेक्षते=उत्प्रेक्षा करता है।

उत्+डी (उड़ना) उड्डयते, उड्डयिष्यते, उड्डयताम्, उदडयत, उड्डयेत। उड्डाययति—ते। उड्डीयते। उड्डीय। उड्डयितुम्। उड्डयितव्यः। उड्डयनीयः। उड्डीयमानः।

ज्ञातव्य—'डी' धातु उत् उपसर्गपूर्वक ही प्रयुक्त होती है।

कम्प् (काँपना) कम्पते, कम्पिष्यते, कम्पताम्, अकम्पत, कम्पेत। कम्पयति—ते। कम्प्यते। कम्पितुम्। कम्पित्वा। कम्पितव्यः। कम्पनीयः। कम्पमानः।

कूर्द् (कूदना) कूर्दते, कूर्दिष्यते, कूर्दताम्, अकूर्दत, कूर्देत। कूर्दयति—ते। कूर्द्यते। कूर्दितुम्। कूर्दित्वा। कूर्दितव्यः। कूर्दनीयः। कूर्दमानः।

क्षम् (क्षमा करना) क्षमते, क्षमिष्यते (क्षंस्यते) क्षमताम्, अक्षमत, क्षमेत। क्षामयति—ते। क्षम्यते। क्षंतुम्। क्षन्तव्यः। क्षमनीयः। क्षममाणः।

बाध् (पीड़ा देना, बाधा डालना) बाधते, बाधिष्यते, बाधताम्, अबाधत। बाधेत। बाधयति। बाध्यते। बाधितुम्। बाधित्वा। बाधितव्यः, बाधनीयः। बाधमानः।

भाष् (बोलना) भाषते। भाषिष्यते। भाषताम्। अभाषत। भाषेत। भाषयते। भाष्यते। भाषितव्यः। भाषणीयः। भाषमाणः। भाषितुम्। भाषित्वा।

भास् (चमकना) भासते। भासिष्यते। भासताम्। अभासत। भासेत। भासयते। भास्यते। भासितव्यः। भासनीयः। भासितुम्। भासित्वा। भासमानः।

यत् (यत्न करना) यतते। यतिष्यते। यतताम्। अयतत। यतेत। यातयति—ते। यतितव्यः। यतनीयः। यतितुम्। यतित्वा। यतमानः।

आ+रभ् (आरम्भ करना) आरभते। आरप्स्यते। आरभताम्। आरभत। आरभेत। आरम्भयति—ते। आरभ्यते। आरभ्य। आरब्धुम्। आरब्धव्यः। आरम्भनीयः। आरभमाणः।

रम् (रमण करना) रमते। रंस्यते। रमताम्। अरमत। रमेत। रमयति—ते, रम्यते। रन्तुम्। रन्त्वा। रन्तव्यः। रमणीयः। रममाणः।

रुच् (अच्छा लगना) रोचते। रोचिष्यते। रोचताम्। अरोचत। रोचेत। रोचयते, रुच्यते। रोचितुम्। रोचित्वा। रोचितव्यः। रोचमानः।

वन्द् (प्रणाम करना) वन्दते। वन्दिष्यते। वन्दताम्। अवन्दत। वन्देत। वन्दितम्। वन्दित्वा। वन्दयति। वन्द्यते। वन्दितव्यः। वन्दनीयः। वन्दमानः।

शिक्ष् (सीखना) शिक्षते। शिक्षिष्यते। शिक्षताम्। अशिक्षत। शिक्षेत।

शिक्षयति—ते । शिक्ष्यते । शिक्षितुम् । शिक्षित्वा । शिक्षितव्यः । शिक्षणीयः । शिक्षमाणः ।

शुभ् (सुशोभित होना) शोभते । शोभिष्यते । शोभताम् । अशोभत । शोभेत । शोभयति—ते । शुभ्यते । शोभितः । शोभितव्यः । शोभनीयः । शोभित्वा । शोभितुम् । शोभमानः ।

मुद् (प्रसन्न होना) मोदते, मोदिष्यते, मोदताम्, अमोदत, मोदेत । मोदयति । मुमुदिषति । मुद्यते । मुदित । मुदित्वा । मोदितुम् । मोदितव्यः । मोदनीयः । मोदमानः ।

सह् (सहन करना) सहते, सहिष्यते, सहताम्, असहत, सहेत । साहयति । सह्यते । सोढः । सहित्वा, सोढ्वा । सहितुम्, सोढुम् । सहितव्य, सोढव्य । सहनीयः । सहमानः ।

भ्वादिगण की उभयपदी धातु

उभयपदी धातु वे हैं, जिनके रूप परस्मैपद तथा आत्मनेपद दोनों में बनते हैं। वैसे तो परस्मैपद में भ्वादिगणी धातुओं के रूप पठ् के समान और आत्मनेपद में सेव् के समान ही बनते हैं, फिर भी कुछ उभयपदी धातुओं के दोनों पदों में पूरे रूप सुगमता से जानकारी के लिए यहां दिये जाते हैं।

नी (ले जाना, पहुँचाना)

लट्—वर्तमानकाल

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथम पुरुष	नयति	नयतः	नयन्ति	नयते	नयेते	नयन्ते
मध्यम पुरुष	नयसि	नयथः	नयथ	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उत्तम पुरुष	नयामि	नयावः	नयामः	नये	नयावहे	नयामहे

लृट्—भविष्यत्काल

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
प्रथम पुरुष	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
मध्यम पुरुष	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
उत्तम पुरुष	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
प्रथम पुरुष	नयतु	नयताम्	नयन्तु	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
मध्यम पुरुष	नय	नयतम्	नयत	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
उत्तम पुरुष	नयानि	नयाव	नयाम	नयै	नयावहै	नयामहै

लङ्—भूतकाल

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
प्रथम पुरुष	अनयत्	अनयताम्	अनयन्	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
मध्यम पुरुष	अनय:	अनयतम्	अनयत	अनयथा:	अनयेथाम्	अनयध्वम्
उत्तम पुरुष	अनयम्	अनयाव	अनयाम	अनये	अनयावहि	अनयामहि

विधिलिङ

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
प्रथम पुरुष	नयेत्	नयेताम्	नयेयु:	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
मध्यम पुरुष	नये:	नयेतम्	नयेत	नयेथा:	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
उत्तम पुरुष	नयेयम्	नयेम	नयेन	नयेय	नयेवहि	नयेमहि

कृदन्तान्त रूप-रचना—

नी + क्त = नीत: (पुं०)
नी + क्तवत् = नीतवान् (पुं०)
नी + क्त्वा = नीत्वा
नी + तुमुन् = नेतुम्
नी + तव्य = नेतव्य: (पुं०)
नी + अनीय = नयनीय: (पुं०)
नी + शतृ = (नयन् पुं०)
नी + शानच् = नयमान: (पुं०)

प्रेरणार्थक—नाययति—ते
कर्मवाच्य—नीयते, नेष्यते
नीयताम्, अनीयत, नीयेत।
सन्नन्त—निनीषति

उपसर्ग योग में

आ + नी (लाना) आनयति। प्र + नी = (प्रेम करना या विवाह करना) प्रणयति। उप + नी (भेंट करना या यज्ञोपवीत संस्कार करना) उपनयति। निर् + नी (फैसला करना) निर्णयति। वि + नी (विनति करना) विनयते। उत् + नी—उन्नयति = ऊपर ले जाता है। अप + नी – अपनयति = दूर करता है, हटाता है। अनु + नी = अनुनयति = बार-बार प्रार्थना करता है।

कुछ महत्त्वपूर्ण भ्वादिगणी उभयपदी धातुओं के रूप

हृ (हरण करना) हरति-हरते। हरिष्यति-हरिष्यते। हरतु-हरताम्। अहरत्-अहरत। हरेत्-हरेत।
हारयति, हारयते। ह्रियते। जिहीर्षति। हृत:। हृत्वा। हर्तुम्। हर्तव्य। हरणीय। हरत्-हरमाण।

याच् (माँगना)—याचति-याचते। याचिष्यति-याचिष्यते। याचतु-याचताम्। अयाचत्-अयाचत। याचेत्-याचेत।

याचयति। याचयते। याच्यते। यियाचिषते, याचित। याचित्वा। याचितुम्, याचितव्य। याचनीय। याचत्-याचमान।

भज् (सेवा करना, स्मरण करना) भजति—ते, भक्ष्यति—ते, भजतु—ताम्, अभजत्—त, भजेत्—त। भाजयति—ते। भज्यते। भक्त। भक्तुम्। भक्त्वा। भक्तव्य।

बुध् (जानना) बोधति—ते, वोधिष्यति—ते, बोधतु—ताम्, अबोधत्—त, बोधत्-बोधेत। बोधयति—ते, बुध्यते। बुद्ध। वोद्धव्य। बुद्ध्वा।

ह्वे (बुलाना) (आ + ह्वे) आह्वयति—ते, आह्वास्यति—ते, आह्वयतु—ताम्, आह्वयत्-आह्वयत आह्वयेत्—येत, ह्वाययति—ते। हूयत। हूत। ह्वातुम्। हूत्वा, ह्वेतव्य।

यज् (यज्ञ करना)—यजति—यजते। यक्ष्यति—यक्ष्यते। यजतु—यजताम्। अयजत्—अयजत। यजेत्—यजे।त

याजयति। इज्यते। इष्टम्। इष्ट। यष्टुम्। यष्टव्य। यियक्षति।

वह् (बहना, ढोना, ले जाना) वहति-ते, वक्ष्यति-ते, वहते·ताम्, अवहत्-त, वहेत्-त।

वाहयति-ते। उह्यते। ऊढ। ऊढ्वा। वोढुम्। वोढव्य।

(प्र + वह्) = तेज बहना। सम् + वह् = मालिश करना।

(उत् + वह्) = उठाना, निर्वाह करना। वि + वह् = विवाह करना। अप + वह् = परे करना।

शप् (शाप देना, कसम खाना) शपति—ते, शप्स्यति—ते, शपतु—ताम् अशपत्—त, शपेत्—त।

शापयति-ते। शप्यते। शप्तुम्। शप्त। शप्त्वा। शप्तव्य।

(आ +) श्रि (आश्रय लेना) आश्रयति—ते, आश्रयिष्यति—ते, आश्रयतु—ताम्, आश्रयत्—त, आश्रयेत्—त।

आश्राययति। आश्रिषति। आश्रयितुम्। आश्रयित्वा। आश्रित। आश्रयितव्य।

done

उदाहरण—

१. यदि तू गुरु की सेवा करेगा तो फल पाएगा।	यदि त्वं गुरुं सेविष्यसे तर्हि फलं लप्स्यसे।
२. उसे फल अच्छे लगते हैं, अतः वह बार-बार मांगता है।	तस्मै फलानि रोचन्ते, अतः सः मुहुर्मुहुः याचते।
३. बहू सास को प्रणाम करती है, पर पति के सम्मुख लजाती है।	वधूः श्वश्रूं नमते, किन्तु पत्युः सम्मुखे लज्जते।
४. इनाम पाकर बालक बहुत प्रसन्न हुए।	पारितोषिकणि लब्ध्वा बालाः नितराम् अमोदन्त।
५. क्या बोलता है, सोच समझकर बोल।	किं जल्पसे, विचार्य वद।

६. जो सेवा करता है, उसे शिक्षक अच्छी तरह शिक्षा देते हैं।	यः सेवते तं गुरवः सुष्ठु शिक्षन्ते ।
७. अनिल किस विषय को सीखता है ?	अनिलः कं विषयं शिक्षते ?
८. अनिल किस गुरु द्वारा शिक्षा पाता है ?	अनिल : केन गुरुणा शिक्ष्यते ?
९. प्रवीणकुमारी शिक्षा के लिए यत्न करती है।	प्रवीणकुमारी शिक्षायै यतते ।
१०. पटेल का यश दिन-रात बढ़ने लगा ।	पटेलस्य यशः रात्रिन्दिवम् वर्धते ।

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) प्रभु किसी का गर्व नहीं सहते । (२) हमसे इतना कष्ट नहीं सहा जाता । (३) बाली और सुग्रीव आपस में लड़ने लगे। (४) कान्त और कामिनी इकट्ठे काँप उठे । (५) शीला ने तेरी और कमला की प्रशंसा की। (६) हम दोनों एक ही जगह होंगे। (७) आत्मा न कभी पैदा होती है, न कभी मरती है। (८) शिष्य ने गुरु की शिक्षा मान ली । (९) उसने छोटे भाई का अपमान किया है। (१०) जो जल्दी करेंगे, वे समय पर पहुंचेंगे।

(२) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(१) त्वं यत् भोजनं (लभसे) तत् किं तुभ्यं (रोचते)? (२) यदा कुसुमलता (लज्जते) तदा तस्याः पतिः (मोदते) । (३) शिष्याः गुरुम् (वन्दन्ते) शिक्षां च (लभन्ते) । (४) यदि त्वं (यतिष्यसे) तर्हि समयेन फलं (प्राप्स्यसे) । (५) यूयं चक्षुषी उन्मील्य (ईक्षध्वम्) यत् पक्षिणः (उड्डयन्ते ।) (६) पुष्पाणि वृन्तात् (स्रंसन्ते) । (७) स सत्यभाषणाय (संकल्पते) । (८) त्वं मृषा (असत्यं) कथं (भाषते) ? (९) पवनस्य वेगेन पत्राणि (कम्पन्ते) ।(१०)यूयं स्वयमेव (यतध्वम्)।

३ निम्नलिखित धातुओं की निर्दिष्ट लकारों में रूप-रचना लिखिए:—

नम्—लृट्, गम्—लङ, नी—लोट्, दृश्—लृट्, पा—विधिलिङ्, पच्—लङ्, मुद्—लृट्, घ्रा—लट्, लभ्—लोट्, सेव्—लट्, शिक्ष्—लङ्, याच्—लट्, नी—लृट्, पठ्— विधिलिङ्, स्मृ—लङ्, पच्—लृट्, ध्मा—लृट्, जि—लृट्।

४ क्रिया शुद्ध करके इन वाक्यों को दुबारा लिखिए:—

वयं पठिष्यावः। यूयं पक्ष्यन्ति। इमे छात्राः पठेम । नृपाः सर्वे प्रजाः रक्षथ। पचिष्यति पाचकः शाकम् । भ्रमराः पुष्पाणि जिघ्रिष्यन्ति। अलयः पुष्पेषु उत्पतामः। वयं सैनिकाः शत्रून् जयिष्यामः । बालकाः पराजयेते । छात्रौ कक्षायां गत्वा

अध्यापकं नमिष्यन्ति। अस्माकं मनांसि सर्वदा अन्येषां कार्येषु मोदताम्। छायायामुपविश्य पथिकाः प्रतीक्षते। नेतारः परस्परं उपहसिष्यति। वयं मन्त्रिणं द्रक्ष्यावः।

५ इनके हिन्दी में अर्थ लिखिए—
नयेत, नेष्यते, प्रणयति, हरतु, हरेम, याचिष्यते, याचध्वम्, याचमानः।

६ निम्नलिखित क्रियाओं के मूल धातु, लकार, पुरुष और वचन लिखिए:—
मोदते, नंस्यते, ऐक्षत, मोदेताम् सेवेरन्।

तृतीय अध्याय

अदादिगण

(कोई विकरण नहीं)

अदादिगण की धातुओं में कोई विकरण नहीं लगता। धातु के मूल रूप के आगे क्रिया-प्रत्यय लगकर रूप बनते हैं और अद् + ति = अत्ति। स्ना + ति = स्नाति। अस् + ति = अस्ति इत्यादि।

विशेष—इस गण में विधिलिङ् के प्रत्यय पूर्व से कुछ भिन्न हैं जो निम्नलिखित हैं—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यात्	याताम्	युः
मध्यम पुरुष	याः	यातम्	यात
उत्तम पुरुष	याम्	याव	याम

अद् = खाना

लट्—वर्तमानकाल

प्रथम पुरुष	अत्ति	अत्तः	अदन्ति
मध्यम पुरुष	अत्सि	अत्थः	अत्थ
उत्तम पुरुष	अद्मि	अद्वः	अद्मः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ
उत्तम पुरुष	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु
मध्यम पुरुष	अद्धि	अत्तम्	अत्त
उत्तम पुरुष	अदानि	अदाव	अदाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	आदत्	आत्ताम्	आदन्
मध्यम पुरुष	आदः	आत्तम्	आत्त
उत्तम पुरुष	आदम्	आद्व	आद्म

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
मध्यम पुरुष	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
उत्तम पुरुष	अद्याम्	अद्याव	अद्याम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

अद् + क्त = जग्धः
अद् + क्तवत् = जग्धवान्
अद् + क्त्वा = जग्ध्वा
अद् + तुम् = अत्तुम्
अद् + तव्य = अत्तव्यः (अत्तव्या, अत्तव्यम्)
अद् + अनीय = अदनीयः
अद् + शतृ = अदन्

प्रेरणार्थक = आदयति—ते।
कर्मवाच्य = अद्यते।

अस् = होना

ज्ञातव्य—'अस्' धातु के लट् और लोट् लकार के द्विवचन, बहुवचन तथा विधिलिङ् में 'अ' का लोप हो जाता है जो नीचे के रूपों से ज्ञात हो जाएगा।

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्वः	स्मः

लृट्—भविष्यत्काल

भविष्यत्काल में 'अस्' को 'भू' हो जाता है।

प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरुष	एधि	स्तम्	स्त
उत्तम पुरुष	असानि	असाव	असाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसीः	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्युः
मध्यम पुरुष	स्याः	स्यातम्	स्यात
उत्तम पुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम

ज्ञातव्य—शतृ प्रत्यय को छोड़कर नीचे के प्रायः सभी प्रत्ययों के साथ 'अस्' को 'भू' आदेश होकर रूप बनते हैं—

कृदन्तान्त रूप-रचना—

अस्+क्त=भूतः (भूता, भूतम्) — प्रेरणार्थक—भावयति—ते
अस्+क्तवत्=भूतवान् — कर्मवाच्य—भूयते
अस्+क्त्वा=भूत्वा — सन्नन्त—बुभूषति
अस+तव्य=भवितव्यः
अस्+अनीय=भवनीयः
अस्+शतृ=सत् (सन् पुं०), सती (स्त्री०)

हन्=मारना, हत्या करना

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
मध्यम पुरुष	हंसि	हथः	हथ
उत्तम पुरुष	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उत्तम पुरुष	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
मध्यम पुरुष	जहि	हतम्	हत
उत्तम पुरुष	हनानि	हनाव	हनाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
मध्यम पुरुष	अहन्	अहतम्	अहत
उत्तम पुरुष	अहनम्	अहन्व	अहम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
मध्यम पुरुष	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उत्तम पुरुष	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

हन् + क्त = हतः (हता, हतम्) प्रेरणार्थक—घातयति—ते

हन् + क्तवत् = हतवान् (-वती,-वत्) कर्मवाच्य—हन्यते

हन् + क्त्वा = हत्वा सन्नन्त – जिघांसति

हन् + तुम् = हन्तुम्

हन् + तव्य = हन्तव्यः, (-तव्या,-तव्यम्)

हन् + अनीय = हननीयः (या, -यम्)

सन् + शतृ = घ्नन् (घ्नती, घ्नत्)

ज्ञातव्य—निम्नलिखित रुद् आदि धातुओं के साथ अनेक स्थानों पर 'इ' भी लगेगी, जो रूपों में ज्ञात हो जायेगा।

रुद् = होना

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रोदिति	रुदितः	रुदन्ति
मध्यम पुरुष	रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ
उत्तम पुरुष	रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	रोदिष्यति	रोदिष्यतः	रोदिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	रोदिष्यसि	रोदिष्यथः	रोदिष्यथ
उत्तम पुरुष	रोदिष्यामि	रोदिष्यावः	रोदिष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	रोदितु	रुदिताम्	रुदन्तु
मध्यम पुरुष	रुदिहि	रुदितम्	रुदित
उत्तम पुरुष	रोदानि	रोदाव	रोदाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अरोदत् (अरोदीत्)	अरुदिताम्	अरुदन्
मध्यम पुरुष	अरोदः (अरोदीः)	अरुदितम्	अरुदित
उत्तम पुरुष	अरोदम्	अरुदिव	अरुदिम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	रुद्यात्	रुद्याताम्	रुद्युः
मध्यम पुरुष	रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्यात
उत्तम पुरुष	रुद्याम्	रुद्याव	रुद्याम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

रुद् + क्त = रुदितः प्रेरणार्थक—रोदयति—ते

रुद् + क्तवत् = रुदितवान् भाववाच्य—रुद्यते

रुद् + क्त्वा = रुदित्वा

रुद् + तुम् = रोदितुम्

रुद् + तव्य = रोदितव्यः

रुद् + अनीय = रोदनीयः (रोदनीया, रोदनीयम्)

रुद् + शतृ = रुदन् (पुं०), (रुदन्ती स्त्री०)

सन्नन्त—रुरुदिषति

श्वस् = साँस लेना

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	श्वसिति	श्वसितः	श्वसन्ति
मध्यम पुरुष	श्वसिषि	श्वसिथः	श्वसिथ
उत्तम पुरुष	श्वसिमि	श्वसिवः	श्वसिमः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	श्वसिष्यति	श्वसिष्यतः	श्वसिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	श्वसिष्यसि	श्वसिष्यथः	श्वसिष्यथ
उत्तम पुरुष	श्वसिष्यामि	श्वसिष्यावः	श्वसिष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	श्वसितु	श्वसिताम्	श्वसन्तु
मध्यम पुरुष	श्वसिहि	श्वसितम्	श्वसित
उत्तम पुरुष	श्वसानि	श्वसाव	श्वसाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अश्वसत् (अश्वसीत्)	अश्वसिताम्	अश्वसन्
मध्यम पुरुष	अश्वसः (अश्वसीः)	अश्वसितम्	अश्वसित
उत्तम पुरुष	अश्वसम्	अश्वसिव	अश्वसिम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	श्वस्यात्	श्वस्याताम्	श्वस्युः
मध्यम पुरुष	श्वस्याः	श्वस्यात	श्वस्यात
उत्तम पुरुष	श्वस्याम्	श्वस्याव	श्वस्याम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

श्वस् + क्त = श्वसितः (-ता, -तम्)

श्वस् + क्तवत् = श्वसितवान् (-वती)

श्वस् + क्त्वा = श्वसित्वा

श्वस् + तुम् = श्वसितुम्

श्वस् + तव्य = श्वसितव्यः (-व्या)

प्रेरणार्थक—श्वासयति—ते

भाववाच्य—श्वस्यते

सोपसर्ग प्रयोग—

वि + श्वस् = विश्वसिति = विश्वास करता है।

प्र + श्वस् = प्रश्वसिति = साँस बाहर निकालता है।

श्वस् + अनीय = श्वसनीयः (-या)
श्वस् + शतृ = श्वसत्

निः + श्वस् = दुःख भरी सांस लेना।
उत् + श्वस् = ऊंची सांस लेना

स्वप् = सोना

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्वपिति	स्वपितः	स्वपन्ति
मध्यम पुरुष	स्वपिषि	स्वपिथः	स्वपिथ
उत्तम पुरुष	स्वपिमि	स्वपिवः	स्वपिमः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	स्वप्स्यति	स्वप्स्यतः	स्वप्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्वप्स्यसि	स्वप्स्यथः	स्वप्स्यथ
उत्तम पुरुष	स्वप्स्यामि	स्वप्स्यावः	स्वप्स्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	स्वपितु	स्वपिताम्	स्वपन्तु
मध्यम पुरुष	स्वपिहि	स्वपितम्	स्वपित
उत्तम पुरुष	स्वपानि	स्वपाव	स्वपाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अस्वपत् (अस्वपीत्)	अस्वपिताम्	अस्वपन्
मध्यम पुरुष	अस्वपः (अस्वपीः)	अस्वपितम्	अस्वपित
उत्तम पुरुष	अस्वपम्	अस्वपिव	अस्वपिम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	स्वप्यात्	स्वप्याताम्	स्वप्युः
मध्यम पुरुष	स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात
उत्तम पुरुष	स्वप्याम्	स्वप्याव	स्वप्याम

कृदन्तान्त रूप रचना—

स्वप् + क्त = सुप्तः (सुप्ता, सुप्तम्)
स्वप् + क्तवत् = सुप्तवान् (-वती, -वत्)
स्वप् + क्त्वा = सुप्त्वा
स्वप् + तुम् = स्वप्तुम्
स्वप् + तव्यः = स्वप्तव्यः (-तव्या-तव्यम्)
स्वप् + अनीय = स्वपनीय (-नीया,-नीयम्)
स्वप् + शतृ = स्वपन् (स्वपन्ती, स्वपत्)

प्रेरणार्थक—स्वापयति—ते
भाववाच्य—सुप्यते
सन्नन्त—सुषुप्सति।

जागृ=जागना

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जागर्ति	जागृतः	जाग्रति
मध्यम पुरुष	जागर्षि	जागृथः	जागृथ
उत्तम पुरुष	जागर्मि	जागृवः	जागृमः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	जागरिष्यति	जागरिष्यतः	जागरिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	जागरिष्यसि	जागरिष्यथः	जागरिष्यथ
उत्तम पुरुष	जागरिष्यामि	जागरिष्यावः	जागरिष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	जागर्तु	जागृताम्	जाग्रतु
मध्यम पुरुष	जागृहि	जागृतम्	जागृत
उत्तम पुरुष	जागराणि	जागराव	जागराम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अजागः	अजागृताम्	अजागरुः
मध्यम पुरुष	अजागः	अजागृतम्	अजागृत
उत्तम पुरुष	अजागरम्	अजागृव	अजागृम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	जागृयात्	जागृयाताम्	जागृयुः
मध्यम पुरुष	जागृयाः	जागृयातम्	जागृयात
उत्तम पुरुष	जागृयाम्	जागृयाव	जागृयाम

कृदन्तान्त रूपरचना—

जागृ+क्त=जागरितः (-ता,—तम्) प्रेरणार्थक—जागरयति—ते

जागृ+क्तवत्=जागृतवान् (-वती,-वत्) भाववाच्य—जागर्यते

जागृ+क्त्वा=जागरित्वा सन्नन्त—जिजागरिषति

जागृ+तुम्=जागरितुम्

जागृ+तव्य=जागरितव्यः (व्या, व्यम्)

जागृ+अनीय=जागरणीयः

जागृ+शतृ=जाग्रत् (जाग्रत्, जाग्रती, जाग्रत्)

इ=जाना, पहुँचना

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एति	इतः	यन्ति
मध्यम पुरुष	एषि	इथः	इथ
उत्तम पुरुष	एमि	इवः	इमः

लृट्—भविष्यत्काल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एष्यति	एष्यतः	एष्यन्ति
मध्यम पुरुष	एष्यसि	एष्यथः	एष्यथ
उत्तम पुरुष	एष्यामि	एष्यावः	एष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	एतु	इताम्	यन्तु
मध्यम पुरुष	एहि	इतम्	इत
उत्तम पुरुष	अयानि	अयाव	अयाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	ऐत्	ऐताम्	आयन्
मध्यम पुरुष	ऐः	ऐतम्	ऐत
उत्तम पुरुष	आयम्	ऐव	ऐम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	इयात्	इयाताम्	इयुः
मध्यम पुरुष	इयाः	इयातम्	इयात
उत्तम पुरुष	इयाम्	इयाव	इयाम

कृदन्तान्त रुप-रचना—

इ+क्त=इतः (इता, इतम्) प्रेरणार्थक—गमयति

इ+क्तवत्=इतवान् (-वती,-वत्) कर्मवाच्य—ईयते

इ+क्त्वा=इत्वा सन्नन्त—जिगमिषति

ज्ञातव्य—नीचे दी गई विद् धातु के वर्तमानकाल में दो-दो रूप बनते हैं।

विद्=जानना

लट्—वर्तमानकाल

प्रथम पुरुष	वेत्ति (वेद)	वित्तः (विदतुः)	विदन्ति (विदुः)
मध्यम पुरुष	वेत्सि (वेत्थ)	वित्थद(ःवि थुः)	वित्थ (विद)
उत्तम पुरुष	वेद्मि (वेद)	विद्वः (विद्व)	विद्मः (विद्म)

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	वेदिष्यति	वेदिष्यतः	वेदिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	वेदिष्यसि	वेदिष्यथः	वेदिष्यथ
उत्तम पुरुष	वेदिष्यामि	वेदिष्यावः	वेदिष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	वेत्तु	वित्ताम्	विदन्तु
मध्यम पुरुष	विद्धि	वित्तम्	वित्त
उत्तम पुरुष	वेदानि	वेदाव	वेदाम

लङ्—भूतकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अवेत्-द्	अविताम्	अविदुः
मध्यम पुरुष	अवेत्, अवेः	अवित्तम्	अवित्त
उत्तम पुरुष	अवेदम्	अविद्व	अविद्म

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	विद्यात्	विद्याताम्	विद्युः
मध्यम पुरुष	विद्याः	विद्यातम्	विद्यात
उत्तम पुरुष	विद्याम्	विद्याव	विद्याम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

विद्+क्त=विदितः (विदिता, विदितम्) प्रेरणार्थक—वेदयति-ते

विद्+क्तवत्=विदितवान् (-वती,-वत्) कर्मवाच्य—विद्यते

विद्+क्त्वा=विदित्वा सन्नन्त—विविदिषति

विद्+तव्य=वेदितव्यः (वेदितव्यम्)

विद्+अनीय=वेदनीयः (वेदनीया; वेदनीयम्)

विद्+शतृ=विदन् (विदती, विदत्)

शास्=शासन करना

लट्—वर्तमानकाल

प्रथम पुरुष	शास्ति	शिष्टः	शासति
मध्यम पुरुष	शास्सि	शिष्ठः	शिष्ठ
उत्तम पुरुष	शास्मि	शिष्वः	शिष्मः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	शासिष्यति	शासिष्यतः	शासिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	शासिष्यसि	शासिष्यथः	शासिष्यथ
उत्तम पुरुष	शासिष्यामि	शासिष्यावः	शासिष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	शास्तु	शिष्टाम्	शासतु
मध्यम पुरुष	शाधि	शिष्टम्	शिष्ट
उत्तम पुरुष	शासानि	शासाव	शासाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अशात्	अशिष्टाम्	अशासुः
मध्यम पुरुष	अशाः (अशात्)	अशिष्टम्	अशिष्ट
उत्तम पुरुष	अशासम्	अशिष्व	अशिष्म

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	शिष्यात्	शिष्याताम्	शिष्युः
मध्यम पुरुष	शिष्याः	शिष्यातम्	शिष्यात
उत्तम पुरुष	शिष्याम्	शिष्याव	शिष्याम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

शास्+क्त=शिष्टः (शिष्टा, शिष्टम्) प्रेरणार्थक—शासयति-ते

शास्+क्तवत्=शिष्टवान् (-वती,-वत्) कर्मवाच्य—शिष्यते

शास्+क्त्वा=शिष्ट्वा, शासित्वा सन्नन्त—शिशासिषति

शास्+तुम्=शासितुम्

शास्+तव्य=शासितव्यः (शासितव्या, शासितव्यम्)

शास्+अनीय=शासनीयः (शासनीया, शासनीयम्)

शास्+शतृ=शासत्

दुह्=दूध दुहना

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति
मध्यम पुरुष	धोक्षि	दुग्धः	दुग्ध
उत्तम पुरुष	दोह्मि	दुह्वः	दुह्मः

लृट् लकार—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	धोक्ष्यति	धोक्ष्यतः	धोक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	धोक्ष्यसि	धोक्ष्यथः	धोक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	धोक्ष्यामि	धोक्ष्यावः	धोक्ष्यामः

लोट् लकार—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	दोग्धु	दुग्धाम्	दुहन्तु
मध्यम पुरुष	दुग्धि	दुग्धम्	दुग्ध
उत्तम पुरुष	दोहानि	दोहाव	दोहाम

लङ् लकार—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अधोक्-ग्	अदुग्धाम्	अदुहन्
मध्यम पुरुष	अधोग्	अदुग्धम्	अदुग्ध
उत्तम पुरुष	अदोहम्	अदुह्व	अदुह्म

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्युः
मध्यम पुरुष	दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात
उत्तम पुरुष	दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम

कृदन्तान्त रूप रचना

दुह् + क्त = दुग्धः (दुग्धा दुग्धम्) प्रेरणार्थक—दोहयति—ते
दुह् + क्तवत् = दुग्धवान् (-वती, -वत्) कर्मवाच्य—दुह्यते
दुह् + क्त्वा = दुग्ध्वा सन्नन्त—दुदुहिषति
दुह् + तुम् = दोग्धुम्
दुह् + तव्य = दोग्धव्यः (दोग्धव्या, दोग्धव्यम्)
दुह् + अनीयः = दोहनीयः (दोहनीया, दोहनीयम्)
दुह् + शतृ = दुहन्, दुहानः (दुहाना, दुहत्)

या = जाना

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	याति	यातः	यान्ति
मध्यम पुरुष	यासि	याथः	याथ
उत्तम पुरुष	यामि	यावः	यामः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	यास्यति	यास्यतः	यास्यन्ति
मध्यम पुरुष	यास्यसि	यास्यथः	यास्यथ
उत्तम पुरुष	यास्यामि	यास्यावः	यास्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	यातु	याताम्	यान्तु
मध्यम पुरुष	याहि	यातम्	यात
उत्तम पुरुष	यानि	याव	याम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अयात्	अयाताम्	अयुः
मध्यम पुरुष	अयाः	अयातम्	अयात
उत्तम पुरुष	अयाम्	अयाव	अयाम

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	यायात्	यायाताम्	यायुः
मध्यम पुरुष	यायाः	यायातम्	यायात
उत्तम पुरुष	यायाम्	यायाव	यायाम

कृदन्तान्त—यातः, यातवान्, यात्वा, यातुम्, यातव्यः, यात्, यानीयः।

प्रेरणार्थक—यातयति—ते

सन्नन्त—यियासति।

कर्मवाच्य—यास्यते।

सोपसर्ग प्रयोग—निर् + या—निर्याति = निकलता है। आ + या—आयाति =

आता है। प्र+या—प्रयाति=प्रस्थान करता है। अप+या—अपयाति=दूर होता है। अनु+या—अनुयाति=पीछे जाता है।

२. स्ना (स्नान करना)—स्नाति, स्नास्यति, स्नातु, अस्नात्, स्नायात्।

कृदन्तान्त रूप-रचना—

स्ना+क्त=स्नातः (स्नाता, स्नातम्) प्रेरणार्थक—स्नापयति—ते

स्ना+क्तवत्=स्नातवान् (वती, वत्) सन्नन्त—सिस्नासति

स्ना+क्त्वा=स्नात्वा

स्ना+तुम्=स्नातुम्

स्ना+तव्य=स्नातव्यः (स्नातव्या, स्नातव्यम्)

स्ना+अनीय=स्नानीयः (स्नानीया, स्नानीयम्)

स्ना+शतृ+स्नात्

३. पा (रक्षा करना)—पाति, पास्यति, पातु, अपात्, पायात्।

कृदन्तान्त रूप-रचना—

पा+क्त=पातः प्रेरणार्थक—पाययति—ते

पा+क्तवत्=पातवान् कर्मवाच्य—पायते

पा+क्त्वा=पात्वा

पा+तुम्=पातुम्

पा+तव्य=पातव्यः (पातव्या, पातव्यम्)

पा+अनीय=पानीयः (पानीया, पानीयम्)

पा+शतृ=पात्

अदादिगण की आत्मनेपदी धातु

अधि+इ=पढ़ना, अध्ययन करना

वक्तव्य—पढ़ने अर्थ वाली इ(ङ्) धातु 'अधि' उपसर्ग युक्त ही प्रयुक्त होती है, अतः यहां उपसर्ग युक्त ही रूप दिये जाते हैं।

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अधीते	अधीयाते	अधीयते
मध्यम पुरुष	अधीषे	अधीयाथे	अधीध्वे
उत्तम पुरुष	अधीये	अधीवहे	अधीमहे

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	अध्येष्यते	अध्येष्येते	अध्येष्यन्ते
मध्यम पुरुष	अध्येष्यसे	अध्येष्येथे	अध्येष्यध्वे
उत्तम पुरुष	अध्येष्ये	अध्येष्यावहे	अध्येष्यावहे

लोट्—आज्ञार्थक

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अधीताम्	अधीयाताम्	अधीयताम्
मध्यम पुरुष	अधीष्व	अधीयाथाम्	अधीध्वम्
उत्तम पुरुष	अध्ययै	अध्ययावहै	अध्ययामहै

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अध्यैत	अध्यैयाताम्	अधीयैयत
मध्यम पुरुष	अध्यैथाः	अध्यैयाथाम्	अध्यैध्वम्
उत्तम पुरुष	अध्यैयि	अध्यैवहि	अध्यैमहि

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	अधीयीत	अधीयाताम्	अधीयीरन्
मध्यम पुरुष	अधीयीथाः	अधीयाथाम्	अधीयीध्वम्
उत्तम पुरुष	अधीयीय	अधीयीवहि	अधीयीमहि

कृदन्तान्त रूप रचना—

अधि+इ+क्त=अधीतः (अधीता, अधीतम्)

अधि+इ+क्तवत्=अधीतवान् (वती, -वत्)

अधि+क्त्वा=अधीत्य

अधि+तुम्=अध्येतुम्

अधि+तव्य=अध्येतव्यः (-तव्या,-तव्यम्)

अधि+अनीय=अध्ययनीयः (अध्ययनीया, अध्ययनीयम्)

अधि+शानच्=अधीयानः (अधीयाना)

प्रेरणार्थक—अध्यापति

कर्मवाच्य—अधीयते

सन्नन्त—अधिजिगांसते

आस्=बैठना

लट्—वर्तमानकाल

प्रथम पुरुष	आस्ते	आसाते	आसते
मध्यम पुरुष	आस्से	आसाथे	आध्वे
उत्तम पुरुष	आसे	आस्वहे	आस्महे

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	आसिष्यते	आसिष्येते	आसिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	आसिष्यसे	आसिष्येथे	आसिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	आसिष्ये	आसिष्यावहे	आसिष्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्
मध्यम पुरुष	आस्स्व	आसाथाम्	आध्वम्
उत्तम पुरुष	आसै	आसावहै	आसामहै

लङ् —भूतकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आस्त	आसाताम्	आसत
मध्यम पुरुष	आस्थाः	आसाथाम्	आध्वम्
उत्तम पुरुष	आसि	आस्वहि	आस्महि

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	आसीत	आसीयाताम्	आसीरन्
मध्यम पुरुष	आसीथाः	आसीयाथाम्	असीध्वम्
उत्तम पुरुष	आसीय	आसीवहि	आसीमहि

कृदन्तान्त रूप रचना

आस् + क्त = आसितः (-ता, -तम्)
आस् + क्तवत् = आसितवान् (-वती)
आस् + क्त्वा = आसित्वा
आस् + तुम् = आसितुम्
आस् + तव्य = आसितव्यः (—व्या)
आस् + अनीय = आसनीयः (आसनीया, आसनीयम्)
आस् + शानच् = आसीनः (—ना, नम्)

प्रेरणार्थक—आसयति—ते
कर्मवाच्य—आस्यते
सन्नन्त—आसिसिषते
सोपसर्ग प्रयोग—
अन्वास्ते = किसी के बैठने पर बाद में बैठता है।
अध्यास्ते = औरों को दबाकर बैठता है।
उदास्ते = शिथिल होता है।
उपास्ते = उपासना करता है।

शी = सोना, नींद लेना (या लेटना)

लट् — वर्तमानकाल

प्रथम पुरुष	शेते	शयाते	शेरते
मध्यम पुरुष	शेषे	शयाथे	शेध्वे
उत्तम पुरुष	शये	शेवहे	शेमहे

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शशिष्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
मध्यम पुरुष	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
उत्तम पुरुष	शयै	शयावहै	शयामहै

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अशेत	अशयाताम्	अशेरत
मध्यम पुरुष	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्
उत्तम पुरुष	अशयि	अशेवहि	अशेमहि

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
मध्यम पुरुष	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
उत्तम पुरुष	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

कृदन्तान्त रूप रचना

शी + क्त = शयितः (-ता,-तम्) — प्रेरणार्थक—शाययति—ते

शी + क्तवतु = शयितवान् (-वती,-वत्) — कर्मवाच्य—शय्यते

शी + क्त्वा = शयित्वा — सन्नन्त = शिशयिषते

शी + तुम् = शयितुम् — सोपसर्ग प्रयोग—

शी + तव्य = शयितव्यः (—व्या,-व्यम्) — संशेते = संशय करता है।

शी + अनीय = शयनीयः (-या,-यम्) — अनुशेते = पश्चात्ताप करता है।

शी + शानच् = शयानः (-ना,-नम्)

अदादिगण की उभयपदी धातु

ब्रू (वच्) = बोलना

परस्मैपद

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रवीति (आह)	ब्रूतः (आहतुः)	ब्रुवन्ति (आहुः)
मध्यम पुरुष	ब्रवीषि (आत्थ)	ब्रूथः (आहथुः)	ब्रूथ
उत्तम पुरुष	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः

ब्रू धातु के लट् के पाँच वचनों में 'आह, आहतुः' आदि रूप भी बनते हैं।

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः

ज्ञातव्य—ब्रू धातु को लृट् लकार में तथा कृदन्तान्त प्रत्ययों में 'वच्' आदेश हो जाता है।

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु
मध्यम पुरुष	ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत
उत्तम पुरुष	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्
मध्यम पुरुष	अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत
उत्तम पुरुष	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
मध्यम पुरुष	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
उत्तम पुरुष	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम

आत्मनेपद

लट्—वर्तमानकाल

प्रथम पुरुष	ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते
मध्यम पुरुष	ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे
उत्तम पुरुष	ब्रुवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते
मध्यम पुरुष	वक्ष्यसे	वक्ष्येथे	वक्ष्यध्वे
उत्तम पुरुष	वक्ष्ये	वक्ष्यावहे	वक्ष्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम्
मध्यम पुरुष	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्
उत्तम पुरुष	ब्रुवै	ब्रुवावहै	ब्रुवामहै

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत
मध्यम पुरुष	अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
उत्तम पुरुष	अब्रुवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीरन्
मध्यम पुरुष	ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्
उत्तम पुरुष	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि

कृदन्तान्त रूप रचना—

ब्रू+क्त=उक्तः (उक्ता, उक्तम्)

ब्रू+क्तवत्+उक्तवान् (उक्तवती, उक्तवत्)

ब्रू+क्त्वा=उक्त्वा

ब्रू+तुम्=वक्तुम्

ब्रू+तव्य=वक्तव्यः (वक्तव्या, वक्तव्यम्)

प्रेरणार्थक=वाचयति-ते

कर्मवाच्य=उच्यते

सन्नन्त=विवक्षति

ब्रू+अनीय=वचनीयः (वचनीया, वचनीयम्)
ब्रू+शानच्=ब्रुवाणः (ब्रुवाणा, ब्रुवाणम्)

स्तु=स्तुति करना

वक्तव्य—भविष्यत्काल को छोड़कर अन्य चारों लकारों में स्तु धातु से 'ई' का आगम विकल्प से होता है। ई आने पर 'स्तु' के उ को ओ और फिर ओ को अव् आदेश हो जाता है। अन्य जो विभिन्नताएँ हैं उन्हें रूपों में ही देखिए और स्मरण कीजिए। यह धातु उभयपदी है किन्तु हम यहाँ विद्यार्थियों की सुगमता के लिए केवल परस्मैपद के ही रूप दे रहे हैं।

(परस्मैपद)

लट्—वर्तमानकाल 'ई' आगम के अभाव में

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्तौति	स्तुतः	स्तुवन्ति
मध्यम पुरुष	स्तौषि	स्तुथः	स्तुथ
उत्तम पुरुष	स्तौमि	स्तुवः	स्तुमः

लट्—'ई' आगम होने पर

प्रथम पुरुष	स्तवीति	स्तुवीतः	स्तुवन्ति
मध्यम पुरुष	स्तवीषि	स्तुवीथः	स्तुवीथ
उत्तम पुरुष	स्तवीमि	स्तुवीवः	स्तुवीम

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	स्तोष्यति	स्तोष्यतः	स्तोष्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्तोष्यसि	स्तोष्यथः	स्तोष्यथ
उत्तम पुरुष	स्तोष्यामि	स्तोष्यावः	स्तोष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक, 'ई' आगम के अभाव में

प्रथम पुरुष	स्तौतु	स्तुताम्	स्तुवन्तु
मध्यम पुरुष	स्तुहि	स्तुतम्	स्तुत
उत्तम पुरुष	स्तवानि	स्तवाव	स्तवाम

लोट्—'ई' आगम होने पर

प्रथम पुरुष	स्तवीतु	स्तुवीताम्	स्तुवन्तु
मध्यम पुरुष	स्तुवीहि	स्तुवीतम्	स्तुवीत
उत्तम पुरुष	स्तवानि	स्तवाव	स्तवाम

लङ्—भूतकाल, 'ई' आगम के अभाव में

प्रथम पुरुष	अस्तौत्	अस्तुताम्	अस्तुवन्
मध्यम पुरुष	अस्तौः	अस्तुतम्	अस्तुत
उत्तम पुरुष	अस्तवम्	अस्तुव	अस्तुम

लङ्—'ई' आगम होने पर

प्रथम पुरुष	अस्तवीत्	अस्तुवीताम्	अस्तवन्
मध्यम पुरुष	अस्तवीः	अस्तुवीतम्	अस्तुवीत
उत्तम पुरुष	अस्तवम्	अस्तुवीव	अस्तुवीम

विधिलिङ् लकार, 'ई' आगम के अभाव में

प्रथम पुरुष	स्तुयात्	स्तुयाताम्	स्तुयुः
मध्यम पुरुष	स्तुयाः	स्तुयातम्	स्तुयात
उत्तम पुरुष	स्तुयाम्	स्तुयाव	स्तुयाम

विधिलिङ् 'ई' आगम होने पर

प्रथम पुरुष	स्तुवीयात्	स्तुवीयाताम्	स्तुवीयुः
मध्यम पुरुष	स्तुवीयाः	स्तुवीयातम्	स्तुवीयात
उत्तम पुरुष	स्तुवीयाम्	स्तुवीयाव	स्तुवीयाम

कृदतान्त रूप-रचना

स्तु + क्त = स्तुतः (स्तुता, स्तुतम्)
स्तु + क्तवत् = स्तुतवान् (-वती,-वत्)
स्तु + क्त्वा = स्तुत्वा, प्रस्तुत्य, संस्तुत्य
स्तु + तुम् = स्तोतुम्
स्तु + तव्य = स्तोतव्यः (स्तोतव्या,-व्यम्)
स्तु + अनीय = स्तवनीयः (-नीया,-नीयम्)
स्तु + शत् = स्तुवन् (-वती,-वतम्)
स्तु + आन = स्तुवानः (-ना,-नम्)

प्रेरणार्थक—स्तावयति—ते
कर्मवाच्य—स्तूयते
सन्नन्त—तुष्टूषति
सोपसर्ग प्रयोग —
प्र + स्तु = प्रस्तौति = पेश करता है या प्रस्तुत करता है।

अप + स्तु = अपस्तौति = निन्दा करता है।

उदाहरण :—

१. यदि तुम संतुष्ट हो तो हम भी प्रसन्न हैं।	यदि यूयं तुष्टाः स्थः तर्हि वयमपि प्रसन्नाः स्मः।
२. वे शरीफ बन जाएँ और आज्ञाकारी हों।	ते सज्जनाः सन्तु आज्ञाकारिणश्च भवन्तु।
३. शायद वह आए।	संभवतः स आगच्छेत्।
४. संभव है तू पास हो जाए।	सम्भवतः त्वं उत्तीर्णः स्याः।
५. हम धन-सम्पत्तियों के स्वामी हों।	वयं स्याम पतयो रयीणाम्।
६. हम दोनों मेधाकर पण्डित के विद्यार्थी थे।	आवां मेधाकरपण्डितस्य विद्यार्थिनौ आस्व।
७. तुम हमारे घर रोटी खाओ।	यूयम् अस्माकं गृहे भोजनम् अत्त।
८. सैनिक पंक्तियों में कूच करते हैं।	सैनिकाः पंक्तिषु प्रयान्ति।

९. शिष्य गुरु के पीछे जाता है।	शिष्यः गुरुमनुयाति।
१०. नटी जाना चाहती है।	नटी गन्तुमिच्छति (जिगमिषति)
११. जवाहरलाल ने बुद्धि के बल पर शासन किया।	जवाहरलालः बुद्धिबलेन अशात्।
१२. वेदों को पढ़ कर सुख पाओ।	वेदान् अधीत्य सुखं लभध्वम्।
१३. पराक्रमी ही शत्रुओं को मारते हैं।	पराक्रमिणः एव शत्रून् घ्नन्ति।
१४. पक्षियों के बच्चों को न मार, न मार।	खगशावकान् मा जहि, मा जहि।

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) जब मनुष्य बुढ़ापे को प्राप्त होता है तो मन के ताप को पाता है। (२) शासक न्यायपूर्वक शासन करें। (३) जालिम (अन्यायी) चटाई पर बैठा है। (४) बैठ, तू कुछ नहीं जानता। (५) वह इस नीति-शास्त्र को नित्य पढ़ता और सुनता है। (६) जो श्रद्धा से पढ़ेगा उसे गुरुजी पढ़ाएँगे। (७) हाथी मच्छर के पैर की विपादिका में सोता है। (८) यह सुनकर सीता दुःखभरी साँस लेती है। (९) शिवजी संकट से रक्षा करें। (१०) सीता लक्ष्मण को सान्त्वना देती है। (११) विश्वास करो, तुम को धन दूँगा।

(२) निम्नलिखित के लिए संस्कृत का एक क्रियापद लिखिए—
हम सब जाएँगे। उन दोनों ने मारा। तुम दोनों सो जाओ। (वे सब) बैठते हैं। (तुम दो) सोओगे। (राजा लोग) शासन करते हैं। साँस लेता हूँ। (हम सब) खाते हैं। (तुम सब) स्तुति करोगे। (वे सब) पढ़ते थे। तू रोया था। (तू) जायेगा और मारेगा। बोलूंगा। वह जाता है और स्तुति करता है। हम सब साँस लेते हैं।

(३) अर्थ बताकर यहाँ लिखित वचन से भिन्न दोनों वचनों में रूप लिखिये—
दुहन्ति, वेद्मि, आस्ताम्, अधीते, शास्ति, आसते, अशयि, रोदिष्यति, आदत्, इत, शये, स्वपिमः, अहन्, श्वसिष्यति, जागरिष्यामि, स्तुतः, धोक्षि, स्वप्यात्, स्वप्स्याम, अस्वपीत्, शाधि, स्वपिहि, रोदितु, ब्रवीतु, स्वपानि, अधोक्, शयीत, शेताम्, अधीयीत, अधीताम्, आसिष्ये।

(४) शुद्ध कीजिए—
सोन्नम् अदति। अत्र बालकौ आसताम्। पद्मानि भाति सरसि। स व्याघ्रम् अहनत्। बलिकाः शय्यासु शयाते। अहं वेत्ति। पुत्राः ब्रूते।

(५) अस् धातु के वर्तमानकाल और भूतकाल में पूरे रूप लिखिए।

चतुर्थ अध्याय

जुहोत्यादिगण

(धातु को द्वित्व)

सामान्य नियम—

(क) जुहोत्यादिगण में कोई विकरण नहीं होता।

(ख) केवल धातु को द्वित्व कर दिया जाता है।

(ग) धातु को द्वित्व करने के बाद जो-जो परिवर्तन होते हैं, वे रूपों में दिये गये हैं।

हु=हवन करना

(परस्मैपद)

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जुहोति	जुहुतः	जुह्वति
मध्यम पुरुष	जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ
उत्तम पुरुष	जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	होष्यति	होष्यतः	होष्यन्ति
मध्यम पुरुष	होष्यसि	होष्यथः	होष्यथ
उत्तम पुरुष	होष्यामि	होष्यावः	होष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	जुहोतु	जुहुताम्	जुह्वतु
मध्यम पुरुष	जुहुधि	जुहुतम्	जुहुत
उत्तम पुरुष	जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवुः
मध्यम पुरुष	अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत
उत्तम पुरुष	अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः
मध्यम पुरुष	जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात
उत्तम पुरुष	जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

हु + क्त = हुत: (पुं०), हुता (स्त्री०), हुतम् (नपुं०)
हु + क्तवत् = (पुं०), हुतवती (स्त्री०)
हु + क्त्वा = हुत्वा
हु + तुम् = होतुम्
हु + तव्य = होतव्य: (पुं०), होतव्या (स्त्री०), होतव्यम् (नपुं०)
हु + अनीय — हवनीया (पुं०), हवनीया (स्त्री०) हवनीयम् (नपुं०)
हु + शतृ = जुह्वत् (पुं०, नपुं०), जुह्वती (स्त्री०)

प्रेरणार्थक—हावयति, ते।
भाववाच्य—हूयते।
सन्नन्त—जुहूषति

भृञ् = धारण करना, भरना, पालन-पोषण करना

(परस्मैपद)

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	बिभर्ति	बिभृत:	बिभ्रति
मध्यम पुरुष	बिभर्षि	बिभृथ:	बिभृथ
उत्तम पुरुष	बिभर्षि	बिभृव:	बिभृम:

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	भरिष्यति	भरिष्यत:	भरिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भरिष्यसि	भरिष्यथ:	भरिष्यथ
उत्तम पुरुष	भरिष्यामि	भरिष्याव:	भरिष्याम:

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	बिभर्तु	बिभृताम्	बिभ्रतु
मध्यम पुरुष	बिभृहि	बिभृतम्	बिभृत
उत्तम पुरुष	बिभराणि	बिभराव	बिभराम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अबिभ:	अबिभृताम्	अबिभरु:
मध्यम पुरुष	अबिभ:	अबिभृतम्	अबिभृत
उत्तम पुरुष	अबिभरम्	अबिभृव	अबिभृम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	बिभृयात्	बिभृयाताम्	बिभृयु:
मध्यम पुरुष	बिभृया:	बिभृयातम्	बिभृयात
उत्तम पुरुष	बिभृयाम्	बिभृयाव	बिभृयाम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

भृ + क्त + भृत: (पुं०), भृता (स्त्री०), भृतम् (नपुं०)
भृ + क्तवत् = भृतवान् (पुं०), भृतवती (स्त्री०)

प्रेरणार्थक—भारयति—ते
कर्मवाच्य—भ्रियते।

भृ+क्त्वा=भृत्वा सन्नन्त—बुभूर्षति
भृ+तुम्=भर्तुम्
भृ+तव्य=भर्तव्यः (भर्तव्या, भर्तव्यम्)
भृ+अनीय=भरणीयः (पुं०)
भृ+शतृ=बिभ्रत्
भृ+शानच्=बिभ्राणः (पुं०)

दा=देना, (उभयपदी)

(परस्मैपद)

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ददाति	दत्तः	ददति
मध्यम पुरुष	ददासि	दत्थः	दत्थ
उत्तम पुरुष	ददामि	दद्वः	दद्मः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
मध्यम पुरुष	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उत्तम पुरुष	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	ददातु	दत्ताम्	ददतु
मध्यम पुरुष	देहि	दत्तम्	दत्त
उत्तम पुरुष	ददानि	ददाव	ददाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
मध्यम पुरुष	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उत्तम पुरुष	अददाम्	अदद्व	अदद्म

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
मध्यम पुरुष	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उत्तम पुरुष	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

(आत्मनेपद)

लट्—वर्तमानकाल

प्रथम पुरुष	दत्ते	ददाते	ददते
मध्यम पुरुष	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उत्तम पुरुष	ददे	दद्वहे	दद्महे

लृट्—भविष्यत्काल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
मध्यम पुरुष	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उत्तम पुरुष	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
मध्यम पुरुष	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उत्तम पुरुष	ददै	ददावहै	ददामहै

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अदत्त	अददाताम्	अददत
मध्यम पुरुष	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उत्तम पुरुष	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
मध्यम पुरुष	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उत्तम पुरुष	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

कृदन्तान्त रूप-रचना—

दा+क्त=दत्तः (दत्ता, दत्तम्)
दा+क्तवत्=दत्तवान् (-वती)
दा+क्त्वा=दत्वा, प्रदाय
दा+तुम्=दातुम्
दा+तव्य=दातव्यः (दातव्या, दातव्यम्)
दा+अनीय=दानीयः (दानीया, दानीयम्)
दा+शतृ=ददत्
दा+शानच्=ददानः (ददाना, ददानम्)

प्रेरणार्थक—दापयति-ते
कर्मवाच्य—दीयते
सन्नन्त—दित्सति

धा=धारण करना, (उभयपदी)
(परस्मैपद)

लट्—वर्तमानकाल

प्रथम पुरुष	दधाति	धत्तः	दधति
मध्यम पुरुष	दधासि	धत्थः	धत्थ
उत्तम पुरुष	दधामि	दध्वः	दध्मः

(आत्मनेपद)

प्रथम पुरुष	धत्ते	दधाते	दधते

मध्यम पुरुष	धत्से	दधाथे	धद्ध्वे
उत्तम पुरुष	दधे	दध्वहे	दध्महे

लृट्—भविष्यत्काल

(परस्मैपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	धास्यति	धास्यत:	धास्यन्ति
मध्यम पुरुष	धास्यसि	धास्यथ:	धास्यथ
उत्तम पुरुष	धास्यामि	धास्याव:	धास्याम:

(आत्मनेपद)

प्रथम पुरुष	धास्यते	धास्येते	धास्यन्ते
मध्यम पुरुष	धास्यसे	धास्येथे	धास्यध्वे
उत्तम पुरुष	धास्ये	धास्यावहे	धास्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

(परस्मैपद)

प्रथम पुरुष	दधातु	धत्ताम्	दधतु
मध्यम पुरुष	धेहि	धत्तम्	धत्त
उत्तम पुरुष	दधानि	दधाव	दधाम

(आत्मनेपद)

प्रथम पुरुष	धत्ताम्	दधाताम्	दधताम्
मध्यम पुरुष	धत्स्व	दधाथाम्	धद्ध्वम्
उत्तम पुरुष	दधै	दधावहै	दधामहै

लङ्—भूतकाल

(परस्मैपद)

प्रथम पुरुष	अदधात्	अधत्ताम्	अदधु:
मध्यम पुरुष	अदधा:	अधत्तम्	अधत्त
उत्तम पुरुष	अदधाम्	अदध्व	अदध्म

(आत्मनेपद)

प्रथम पुरुष	अधत्त	अदधाताम्	अदधत
मध्यम पुरुष	अधत्था:	अदधाथाम्	अधद्ध्वम्
उत्तम पुरुष	अदधि	अदध्वहि	अदध्महि

विधिलिङ्

(परस्मैपद)

प्रथम पुरुष	दध्यात्	दध्याताम्	दध्यु:
मध्यम पुरुष	दध्या:	दध्यातम्	दध्यात
उत्तम पुरुष	दध्याम्	दध्याव	दध्याम

(आत्मनेपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दधीत	दधीयाताम्	दधीरन्
मध्यम पुरुष	दधीथाः	दधीयाथाम्	दधीध्वम्
उत्तम पुरुष	दधीय	दधीवहि	दधीमहि

कृदन्तान्त रूप रचना—

धा+क्त=धत्तः (धत्ता, धत्तम्)
धा+क्तवान्=धत्तवान् (-वती, -वत्)
धा+क्त्वा=धत्वा, परिधाय
धा+तुम्=धातुम्
धा+तव्य=धातव्यः (-व्या, -व्यम्)
धा+अनीय=धानीयः
धा+शतृ=दधत् (दधती, दधत्)
धा+शानच्=दधानः (दधाना, दधानम्)

प्रेरणार्थक—धापयति—ते
कर्मवाच्य—धीयते
सन्नन्त—धित्सति
सोपसर्ग प्रयोग—
नि+धा=निदधाति=ध्यान करता है।
वि+धा=विदधाति=करता है।
(सहसा विदधीत न क्रियाम्)
सम्+धा=सन्दधाति=संधान करता है।
परि+धा=परिदधाति=धारण करता है।

भी=डरना

(परस्मैपद)

लट्—वर्तमानकाल

प्रथम पुरुष	बिभेति	बिभीतः	बिभ्यति
मध्यम पुरुष	बिभेषि	बिभीथः	बिभीथ
उत्तम पुरुष	बिभेमि	बिभीवः	बिभीमः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भेष्यसि	भेष्यथः	भेष्यथ
उत्तम पुरुष	भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	बिभेतु	बिभीताम्	बिभ्यतु
मध्यम पुरुष	बिभीहि	बिभीतम्	बिभीत
उत्तम पुरुष	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम

१. 'भी' धातु के बहुत से स्थानों पर दो दो रूप बनते हैं किन्तु विद्यार्थियों को कठिनता से दूर रखने के लिए उन दूसरे रूपों को यहाँ नहीं दिया गया।

लङ्—भूतकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अबिभेत्	अबिभीताम्	अबिभयुः
मध्यम पुरुष	अबिभेः	अबिभीतम्	अबिभीत
उत्तम पुरुष	अबिभयम्	अबिभीव	अबिभीम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	बिभीयात्	बिभीयाताम्	बिभीयुः
मध्यम पुरुष	बिभीथाः	बिभीयातम्	बिभीयात
उत्तम पुरुष	बिभीयाम्	बिभीयाव	बिभीयाम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

भी + क्त = भीतः (भीता, भीतम्) प्रेरणार्थक—भायाति—ते, भीषयते

भी + क्तवत् = भीतवान् (भीतवती) भाववाच्य—भीयते

भी + क्त्वा = भीत्वा सन्नन्त—बिभीषते

भी + तुम् = भेतुम्

भी + तव्य = भेतव्यः (भेतव्या, भेतव्यम्)

भी + अनीय = भयनीयः (भयनीया, भयनीयम्)

भी + शतृ = बिभ्यत्

हा = छोड़ना

(परस्मैपद)

लट्—वर्तमानकाल

प्रथम पुरुष	जहाति	जहीतः	जहति
मध्यम पुरुष	जहासि	जहीथः	जहीथ
उत्तम पुरुष	जहामि	जहीवः	जहीमः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	हास्यति	हास्यतः	हास्यन्ति
मध्यम पुरुष	हास्यसि	हास्यथः	हास्यथ
उत्तम पुरुष	हास्यामि	हास्यावः	हास्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	जहातु	जहीताम्	जहतु
मध्यम पुरुष	जहाहि, जहीहि	जहीतम्	जहीत
उत्तम पुरुष	जहानि	जहाव	जहाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अजहात्	अजहीताम्	अजहुः
मध्यम पुरुष	अजहाः	अजहीतम्	अजहीत
उत्तम पुरुष	अजहाम्	अजहीव	अजहीम

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जह्यात्	जह्याताम्	जह्युः
मध्यम पुरुष	जह्याः	जह्यातम्	जह्यात
उत्तम पुरुष	जह्याम्	जह्याव	जह्याम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

हा + क्त = हीनः (हीना, हीनम्) **प्रेरणार्थक**—हापयति-ते

हा + क्तवत् = हीनवान् (हीनवती) **कर्मवाच्य**

हा + क्त्वा = हित्वा, विहाय **सन्नन्त**—जिहासति

हा + तुम् = हातुम्

हा + तव्य = हातव्यः (हातव्या, हातव्यम्)

हा + अनीय = हानीयः (हानीया, हानीयम्)

हा + शतृ = जहत्

Todo

उदाहरण—

१. ऋषि देवों का यज्ञ करता है — ऋषिः देवान् जुहोति।

२. राम, सीता तथा लक्ष्मण वन में हवन करते हैं। — सीता रामस्तथा लक्ष्मणः वने जुह्वति।

३. तूने कब यज्ञ किया? — त्वं कदा अजुहोः ?

४. मैं पिछले वर्ष प्रतिदिन हवन करता था। — गतवर्षेऽहं प्रतिदिनम् अजुहवम्।

५. केवल पेट को कौन नहीं भर लेता। — उदरं को न बिभर्ति केवलम्।

६. मैंने बड़े परिश्रम से लड़कों को पाला। — अहमतिश्रमेण पुत्रान् अबिभरम्।

७. शासक उत्तम हों तो प्रजा का न्याय से पालन करें। — यदि शासकाः उत्तमाः स्युर्स्तर्हि न्यायेन प्रजा बिभृयुः।

८. दीपावली के शुभ दिन हम हवन करेंगे। — दीपावल्याः शुभे दिवसे वयं होष्यामः।

९. बालक ताले को देखकर डरता है। — बालः विष्कम्भं वीक्ष्य बिभेति।

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

ऋषि वन में यज्ञ करते थे, और नहीं डरते थे। तुमने पुत्र को सब कुछ दे दिया, पर वह अब बुढ़ापे में तुम्हारा पालन नहीं करता। तुम उस समय उसके क्रोध से डर गये थे। सुषुप्ति में पुरुष न सुनता है, न देखता है, न सूंघता है, न छूता है, न अभिवादन करता है, न आनन्द पाता है, न कुछ छोड़ता है, न आना-जाना करता है। (वे सब) पालन करें, (तुम दोनों) कपड़े पहनो।

(२) निम्नलिखित धातुओं की निर्दिष्ट लकारों में रूप-रचना कीजिए:—

हु—लट् तथा लङ्, भृ—लट् तथा विधिलिङ्, भी—लोट् तथा लृट्, दा—लट् तथा लोट्, धा—लृट् तथा विधिलिङ्, पा—लृट् तथा लङ्।

(३) दिये गये रूपों के परिचय दीजिए कि वे किस-किस धातु से किस काल (लकार) पुरुष और वचन की क्रियाएँ हैं—

जहाति, जुहोमि, बिभर्ति, ददति, जहीमः, अजहात्, अजुहोत, अबिभः, अबिभेत् अददुः, अदधात्, अजहिम, जहातु, जुहोतु, बिभर्तु, बिभ्यतु, ददतु, धेहि, जहाम।

पंचम अध्याय

दिवादिगण

(य विकरण)

(क) दिवादिगण के धातुओं में श्यन् विकरण लगता है। श् और न् का लोभ हो जाता है, 'य' शेष रह जाता है। 'दिव्' धातु की 'इ' को चार लकारों में दीर्घ 'ई' हो जाता है।

जैसे—दिव्+य+ति=दीव्यति।

दिवादिगण को परस्मैपदी धातु

दिव्=चमकना

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दीव्यति	दीव्यत:	दीव्यन्ति
मध्यम पुरुष	दीव्यसि	दीव्यथ:	दीव्यथ
उत्तम पुरुष	दीव्यामि	दीव्याव:	दीव्याम:

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	देविष्यति	देविष्यत:	देविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	देविष्यसि	देविष्यथ:	देविष्यथ
उत्तम पुरुष	देविष्यामि	देविष्याव:	देविष्याम:

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
मध्यम पुरुष	दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत
उत्तम पुरुष	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
मध्यम पुरुष	अदीव्य:	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उत्तम पुरुष	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयु:

मध्यम पुरुष	दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत
उत्तम पुरुष	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

दिव्+क्त=द्यूतम्, द्यूनः — प्रेरणार्थक—देवयति—ते

दिव्=क्तवत्=द्यूतवान् (-वती) — कर्मवाच्य—दीव्यते

दिव्+क्त्वा=देवित्वा, द्यूत्वा — सन्नन्त—दिदेविषति

दिव्+तुम्=देवितुम्

दिव्+तव्य=देवितव्यः

दिव्+अनीय=देवनीयः (देवनीया, देवनीयम्)

दिव्+शतृ=दीव्यत् (दीव्यन्, दीव्यन्ती, दीव्यत्)

भ्रम्=घूमना

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भ्राम्यति	भ्राम्यतः	भ्राम्यन्ति
मध्यम पुरुष	भ्राम्यसि	भ्राम्यथः	भ्राम्यथ
उत्तम पुरुष	भ्राम्यामि	भ्राम्यावः	भ्राम्यामः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यतः	भ्रमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भ्रमिष्यसि	भ्रमिष्यथः	भ्रमिष्यथ
उत्तम पुरुष	भ्रमिष्यामि	भ्रमिष्यावः	भ्रमिष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	भ्राम्यतु	भ्राम्यताम्	भ्राम्यन्तु
मध्यम पुरुष	भ्राम्य	भ्राम्यतम्	भ्राम्यत
उत्तम पुरुष	भ्राम्याणि	भ्राम्याव	भ्राम्याम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अभ्राम्यत्	अभ्राम्यताम्	अभ्राम्यन्
मध्यम पुरुष	अभ्राम्यः	अभ्राम्यतम्	अभ्राम्यत
उत्तम पुरुष	अभ्राम्यम्	अभ्राम्याव	अभ्राम्याम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	भ्राम्येत्	भ्राम्येताम्	भ्राम्येयुः
मध्यम पुरुष	भ्राम्येः	भ्राम्येतम्	भ्राम्येत
उत्तम पुरुष	भ्राम्येयम्	भ्राम्येव	भ्राम्येम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

भ्रम्+क्त=भ्रान्तः (भ्रान्ता, भ्रान्तम्) — प्रेरणार्थक—भ्रामयति—ते

भ्रम्+क्तवत्=भ्रान्तवान् (-वती) — भाववाच्य—भ्राम्यते

भ्रम् + क्त्वा = भ्रान्त्वा
भ्रम् + तुम् = भ्रान्तुम्
भ्रम् + तव्य = भ्रमितव्य:
भ्रम् + शतृ = भ्राम्यन् (भ्राम्यन्ती)
भ्रम् + अनीय: = (भ्रमणीया, भ्रमणीयम्)

सन्नन्त—बिभ्रमिषति
सोपसर्ग प्रयोग—
परिभ्राम्यति = चारों ओर घूमता है।

व्यध् = बींधना, शिकार करना

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विध्यति	विध्यत:	विध्यन्ति
मध्यम पुरुष	विध्यसि	विध्यथ:	विध्यथ
उत्तम पुरुष	विध्यामि	विध्याव:	विध्याम:

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	व्यत्स्यति	व्यत्स्यत:	व्यत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	व्यत्स्यसि	व्यत्स्यथ:	व्यत्स्यथ
उत्तम पुरुष	व्यत्स्यामि	व्यत्स्याव:	व्यत्स्याम:

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	विध्यतु	विध्यताम्	विध्यन्तु
मध्यम पुरुष	विध्य	विध्यतम्	विध्यन्त
उत्तम पुरुष	विध्यानि	विध्याव	विध्याम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अविध्यत्	अविध्यताम्	अविध्यन्
मध्यम पुरुष	अविध्य:	अविध्यतम्	अविध्यत
उत्तम पुरुष	अविध्यम्	अविध्याव	अविध्याम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	विध्येत्	विध्येताम्	विध्येयु:
मध्यम पुरुष	विध्ये:	विध्येतम्	विध्येत
उत्तम पुरुष	विध्येयम्	विध्येव	विध्येम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

व्यध् + क्त = विद्ध:, विद्धा, विद्धम् — प्रेरणार्थक—वेधयति-ते
व्यध् + क्तवत् = विद्धवान् (-वती) — कर्मवाच्य—विध्यते

१. व्यध् धातु के 'य्' को 'इ' संप्रसारण हो जाता है भविष्यत्काल को छोड़कर। यह संप्रसारण कई कृदन्तान्त रूपों में भी होता है।

व्यध् + क्त्वा = विद्ध्वा — सन्नन्त = विवेधिषति
व्यध् + तुम् = वेद्धुम्

व्यध्+अनीय=वेधनीयः (वेधनीया, वेधनीयम्)
व्यध्+शतृ=विध्यन् (विध्यन्ती)

जन् (जा)=उत्पन्न होना

वक्तव्य—'जन्' धातु को भविष्यत्काल में छोड़कर 'जा' आदेश हो जाता है।

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जायते	जायेते	जायन्ते
मध्यम पुरुष	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उत्तम पुरुष	जाये	जायावहे	जायामहे

लृट् भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
मध्यम पुरुष	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उत्तम पुरुष	जायै	जायावहै	जायामहै

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
मध्यम पुरुष	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उत्तम पुरुष	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
मध्यम पुरुष	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उत्तम पुरुष	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

कृदन्तान्त रूप-रचना—

जन्+क्त=जातः (जाता, जातम्)
जन्+क्तवत्=जातवान् (-वती)
जन्+क्त्वा=जनित्वा
जन्+तुम्=जनितुम्
जन्+तव्य=जनितव्यः (-व्या, -व्यम्)
जन्+अनीय=जननीयः (जननीया, जननीयम्)
जन्+शानच्=जायमानः (जायमाना, जायमानम्)

प्रेरणार्थक—जानयति—ते
भाववाच्य—जन्यते
सन्नन्त—जिजनिषति

विद् = होना

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विद्यते	विद्येते	विद्यन्ते
मध्यम पुरुष	विद्यसे	विद्येथे	विद्यध्वे
उत्तम पुरुष	विद्ये	विद्यावहे	विद्यामहे

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	वेत्स्यते	वेत्स्येते	वेत्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	वेत्स्यसे	वेत्स्येथे	वेत्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	वेत्स्ये	वेत्स्यावहे	वेत्स्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	विद्यताम्	विद्येताम्	विद्यन्ताम्
मध्यम पुरुष	विद्यस्व	विद्येथाम्	विद्यध्वम्
उत्तम पुरुष	विद्यै	विद्यावहै	विद्यामहै

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अविद्यत	अविद्येताम्	अविद्यन्त
मध्यम पुरुष	अविद्यथाः	अविद्येथाम्	अविद्यध्वम्
उत्तम पुरुष	अविद्ये	अविद्यावहि	अविद्यामहि

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	विद्येत	विद्येयाताम्	विद्येरन्
मध्यम पुरुष	विद्येथाः	विद्येयाथाम्	विद्येध्वम्
उत्तम पुरुष	विद्येय	विद्येवहि	विद्येमहि

कृदन्तान्त रूप-रचना

विद् + क्त = वित्तः (वित्ता, वित्तम्)

विद् + क्तवत् = वित्तवान् (-वती)

विद् + क्त्वा = वित्त्वा

विद् + तुम् = वेत्तुम्

विद् + तव्य = वेत्तव्यः (वेत्तव्या, वेत्तव्यम्)

विद् + अनीय = वेदनीयः (वेदनीया, वेदनीयम्)

विद् + शानच् = विद्यमानः (विद्यमाना, विद्यमानम्)

भाववाच्य—विद्यते, अविद्यत, विद्यताम्, विद्येत, वेत्स्यते

सन्नन्त—विविदिषति

युध् = लड़ना

लट्—वर्तमानकाल

प्रथम पुरुष	युध्यते	युध्येते	युध्यन्ते
मध्यम पुरुष	युध्यसे	युध्येथे	युध्यध्वे
उत्तम पुरुष	युध्ये	युध्यावहे	युध्यामहे

लृट्—भविष्यत्काल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	योत्स्यते	योत्स्येते	योत्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	योत्स्यसे	योत्स्येथे	योत्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	योत्स्ये	योत्स्यावहे	योत्स्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	युध्यताम्	युध्येताम्	युध्यन्ताम्
मध्यम पुरुष	युध्यस्व	युध्येथाम्	युध्यध्वम्
उत्तम पुरुष	युध्यै	युध्यावहै	युध्यामहै

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अयुध्यत	अयुध्येताम्	अयुध्यन्त
मध्यम पुरुष	अयुध्यथाः	अयुध्येथाम्	अयुध्यध्वम्
उत्तम पुरुष	अयुध्ये	अयुध्यावहि	अयुध्यामहि

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	युध्येत	युध्येयाताम्	युध्येरन्
मध्यम पुरुष	युध्येथाः	युध्येयाथाम्	युध्येध्वम्
उत्तम पुरुष	युध्येय	युध्येवहि	युध्येमहि

कृदन्तान्त रूप-रचना—

युध् + क्त + युद्धम् — प्रेरणार्थक—योधयति—ते

युध् + क्तवत् = युद्धवान् (-वती) — भाववाच्य—युध्यते

युध् + क्त्वा = युद्ध्वा — सन्नन्त—युयुत्सति

युध् + तुम् = योद्धुम्

युध् + तव्य = योद्धव्यः (योद्धव्या, योद्धव्यम्)

युध् + अनीय = योधनीयः

युध् + शानच् = युध्यमानः (योध्यमान)

दिवादिगण की कुछ अन्य उपयोगी परस्मैपदी धातुओं के रूप

शम्—(शान्त होना) शाम्यति, शमिष्यति, शाम्यतु, अशाम्यत्, शाम्येत्। शामयति-ते, शाम्यते, शिशमिषति, शान्त, शमित्वा, शान्त्वा, शमितुम्, शमितव्य, शमनीय, शाम्यत्।

नृत्—(नाचना) नृत्यति, नर्तिष्यति, (नर्त्स्यति आदि भी) नृत्यतु, अनृत्यत्, नृत्येत्। नर्तयति। नृत्यते, निनर्तिषति, नृत्त, नर्तित्वा, नर्तितुम्, नर्तितव्य, नर्तनीय। नृत्यत्।

क्रुध्—(क्रोध करना) क्रुध्यति, क्रोत्स्यति, क्रुध्यतु, अक्रुध्यत् अक्रुध्येत्। क्रोधयति। क्रुध्यते। चुक्रुत्सति। क्रुद्ध। क्रुद्ध्वा। क्रोद्धस्। क्रोद्धव्य, क्रोधनीय। क्रुध्यत्।

नश्—(नष्ट होना) नश्यति, नशिष्यति (नङ्क्ष्यति), नश्यतु, अनश्यत्, नश्येत्।

नाशयति । नश्यते । निनशिषति । नष्ट । नष्ट्वा (नशित्वा) । नशितुम्, नशितव्य (नष्टव्य) । नशनीय । नश्यत् ।

लुभ्—(लोभ करना) लुभ्यति, लोभिष्यति, लुभ्यतु, अलुभ्यत्, लुभ्येत् । लोभयति, लुभ्यते । लुलुप्सति । लुब्ध । लोब्धुम् । लोब्धव्य । लोभनीय । लुभ्यत् ।

मुह्—(बेहोश होना) मुह्यति, मोहिष्यति, मुह्यतु, अमुह्यत् मुह्येत् ।

शुध्—(शुद्ध होना) शुध्यति, शोत्स्यति शुद्ध्यतु, अशुध्यत्, शुध्येत् ।

त्रस्—(डसना) त्रस्यति, त्रसिष्यति, त्रस्यतु, अत्रस्यत्, त्रस्येत् ।

पुष्—(पुष्ट होना) पुष्यति, पोक्ष्यति, पुष्यतु, अपुष्यत्, पुष्येत् ।

कुप्—(क्रोध करना) कुप्यति, कोपिष्यति, कुप्यतु, अकुप्यत्, कुप्येत् ।

शुष्—(सूखना) शुष्यति, शोक्ष्यति, शुष्यतु अशुष्यत्, शुष्येत् ।

तुष्—(प्रसन्न होना) तुष्यति, तोक्ष्यति, तुष्यतु, अतुष्यत्, तुष्येत् ।

सिव्—(सीना) सीव्यति, सेविष्यति, सीव्यतु, असीव्यत्, सीव्येत् ।

सिध्—(सिद्ध होना) सिध्यति, सेत्स्यति, सिध्यतु, असिध्यत्, सिध्येत् ।

(आत्मनेपदी)

मन्—(मानना) मन्यते, मंस्यते, मन्यताम्, अमन्यत, मन्येत ।

खिद्—(दुःखी होना) खिद्यते, खेत्स्यते, खिद्यताम्, अखिद्यत, खिद्येत ।

(उभयपदी)

क्लिश्—(दुःख सहना) क्लिश्यति—ते, क्लेशिष्यति—ते, क्लिश्यतु—ताम् । अक्लिश्यत्—त, क्लिश्येत्—त ।

उदाहरण—

१. सूर्य के प्रकाश से रत्न चमकते हैं ।	सूर्यस्य प्रकाशेन रत्नानि दीव्यन्ति ।
२. पूर्णिमा में पूरा चाँद आकाश में चमकता है ।	पूर्णिमायां पूर्णः चन्द्रः आकाशे दीव्यति ।
३. जब रात होगी तब तारे आकाश में चमकेंगे ।	यदा रात्रिर्भविष्यति तदा ताराः आकाशे देविष्यन्ति ।
४. परोपकारी पुरुष का मुंह तेज से चमकता है ।	परोपकारिणः पुरुषस्य मुखं तेजसा दीव्यति ।
५. सीपी चाँदी की तरह चमकती है, मूढ़ पुरुष उसमें लुभाता है ।	शुक्ता रजतवत् दीव्यति, मूढ़ः पुरुषः तस्यां लुभ्यति ।
६. मैं कक्षा में चमकूँ, यह मेरी सबसे तीव्र इच्छा है ।	अहं कक्षायां दीव्येयम् एषा एव मम तीव्रतमा इच्छा अस्ति ।
७. हम (दोनों) खेलों में चमकें तो हमारे स्कूल का यश हो ।	यदि आवां क्रीडासु दीव्येव तर्हि अस्माकं विद्यालयस्य यशः भवेत् ।
८. दुर्जन और शत्रुजन नष्ट हों, सज्जनों का यश चमके ।	दुर्जनाः शत्रुजनाश्च नश्यन्तु, सज्जनानाम् च यशः दीव्यतु ।

९. यदि युद्ध में सारी सेना नष्ट हो जाएगी तो क्या करोगे ?	यदि युद्धे सर्वाऽपि सेना नंक्ष्यति तर्हि किं करिष्यथ ?
१०. वर्षा के समय धोबी वस्त्रों को धोएगा; पर वे सूखेंगे नहीं।	वर्षाकाले रजकः वस्त्राणि क्षालयिष्यति, परं तानि न शोक्ष्यन्ति।

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) आकाश में सूर्य तेज (तीव्रम्) चमकता है। (१) दोनों लड़कियाँ कक्षा में चमकेंगी। (३) सच्चे नेताओं के नाम चमकेंगे। (४) जल देने से वृक्ष नष्ट नहीं होगा। (५) मैं सोने को आग में शुद्ध करूँगा। (६) जल से अंग शुद्ध होते हैं। (७) मन सत्य से शुद्ध होता है। (८) विद्या और तप से प्राणी की आत्मा शुद्ध होती है। (९) बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है।

(२) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

विमले नभसि ताराः दीव्यन्ति। प्रातः सायं संध्योपासनेन, परमात्मनः प्रसादेन, सदाचारेण च सर्वेषां मनांसि शाम्यन्ति। सत्यपि क्रोधे शांतविचारेण क्रुद्धानां जनानां चेतांसि अपि शाम्यन्ति। कपिलवस्तौ महाराजस्य शुद्धोदनस्य गेहे सिद्धार्थ-नामा पुत्रः अजायत। तस्य जन्मना राज्ञो मनोरथाः सम्पूर्णा इति विचार्य एव तस्य नाम सिद्धार्थ इति कृतम्। सिद्धार्थो यदा अजायत तदैव तस्य जननीं प्रसवपीड़ा अविध्यत्। तस्याः मरणानन्तरं शुद्धोदनस्यापरा भार्या सिद्धार्थमपोषयत्। महात्मा गांधी जवाहरलालश्च उभौ देशस्य स्वतंत्रतायै आंग्लैः सह चतुर्दशवर्ष-पर्यन्तं सततमयुध्येताम्।

(३) निम्नलिखित धातुओं के तत्तद् लकारों में सभी पुरुषों और वचनों में रूप लिखिए—

दिव्—लृट्, शम्—लट्, भ्रम्—लङ्, विध्—लृट्, नश्—विधिलिङ्, मुह्—लट्, सिव्—लट्, लृट्; सिध्—लोट्, विद्—लट्, युध्—लृट्, मन्—लट्, लङ्; खिद्—विधिलिङ्, क्लिश्—लृट्, लोट्।

(४) इनके मूल धातु, अर्थ, लकार, पुरुष तथा वचन लिखिए—

द्रुह्यति। खिद्यते। क्षोत्स्यति। द्रोहिष्यति। अविद्यत।

षष्ठ अध्याय

स्वादिगण

(क) स्वादिगण की धातुओं में 'श्नु' विकरण लगता है। श्नु के श् का लोप हो जाता है, 'नु' शेष रहता है। नु के 'उ' को कई स्थानों पर 'ओ' गुण हो जाता है।

आप् = प्राप्त करना

(परस्मैपद)

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
उत्तम पुरुष	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ
उत्तम पुरुष	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम पुरुष	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
मध्यम पुरुष	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम पुरुष	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
मध्यम पुरुष	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
उत्तम पुरुष	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम

कृदन्तान्त रूप-रचना

आप्+क्त=आप्तः (आप्ता, आप्तम्) **प्रेरणार्थक—आपयति—ते**

आप्+क्तवत्—आप्तवान्
आप्+क्त्वा=आप्त्वा, प्राप्य
आप्+तुम्=आप्तुम्
आप्+तव्य=आप्तव्य:
आप्+अनीय=आपनीय:
आप्+शतृ—आप्नुवत् (न्)

कर्मवाच्य—आप्यते
सन्नन्त—ईप्सति
सोपसर्ग प्रयोग—
प्राप्नोति=पाता है।
समाप्नोति—समाप्त करता है।
अवाप्नोति—हस्तगत करता है।
व्याप्नोति—व्याप्त होता है।
श्रद्धया सत्यमाप्यते

शक्=समर्थ होना
(परस्मैपद)

5

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नोति	शक्नुत:	शक्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	शक्नोषि	शक्नुथ:	शक्नुथ
उत्तम पुरुष	शक्नोमि	शक्नुव:	शक्नुम:

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	शक्ष्यति	शक्ष्यत:	शक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	शक्ष्यसि	शक्ष्यथ:	शक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	शक्ष्यासि	शक्ष्याव:	शक्ष्याम:

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
उत्तम पुरुष	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
मध्यम पुरुष	अशक्नो:	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उत्तम पुरुष	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयु:
मध्यम पुरुष	शक्नुया:	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उत्तम पुरुष	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

कृदन्तान्त रूप-रचना—
शक्+क्त=शक्त: (शक्ता, शक्तम्)
शक्+क्तवत्=शक्तवान् (-वती)
शक्+क्त्वा=शक्त्वा

प्रेरणार्थक—शाकयति—ते
कर्मवाच्य—शक्यते

शक्+तव्य=शक्तव्यः (शक्तव्या, शक्तव्यम्)
शक्+शतृ=शक्नुवन् (शक्नुवती, शक्नुवत्)
शक्+अनीयः=शकनीयः (शकनीया, शकनीयम्)

चि=इकट्ठा करना (फूल तोड़ना)
(परस्मैपद)

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिनोति	चिनुतः	चिन्वन्ति
मध्यम पुरुष	चिनोषि	चिनुथः	चिनुथ
उत्तम पुरुष	चिनोमि	चिनुवः, चिन्वः	चिनुमः, चिन्मः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	चेष्यति	चेष्यतः	चेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चेष्यसि	चेष्यथः	चेष्यथ
उत्तम पुरुष	चेष्यामि	चेष्यावः	चेष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	चिनोतु	चिनुताम्	चिन्वन्तु
मध्यम पुरुष	चिनु	चिनुतम्	चिनुत
उत्तम पुरुष	चिनवानि	चिनवाव	चिनवाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अचिनोत्	अचिनुताम्	अचिन्वन्
मध्यम पुरुष	अचिनोः	अचिनुतम्	अचिनुत
उत्तम पुरुष	अचिनवम्	अचिनुव	अचिनुम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	चिनुयात्	चिनुयाताम्	चिनुयुः
मध्यम पुरुष	चिनुयाः	चिनुयाताम्	चिनुयात
उत्तम पुरुष	चिनुयाम्	चिनुयाव	चिनुयाम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

चि+क्त=चितः (चिता, चितम्)
चि+क्तवत्=चितवान्
चि+क्त्वा=चित्वा
चि+तुम्=चेतुम्
चि+तव्य=चेतव्यः(-व्या-व्यम्)
चि+शतृ=चिन्वन्
चि+अनीय=चयनीयः, चयनीया

प्रेरणार्थक—चाययति—ते
कर्मवाच्य—चीयते
सन्नन्त—चिचीषति

सोपसर्ग प्रयोग—

सम्+चि=संचिनोति=संचय करता है।
परि+चि=परिचिनोति=परिचय करता है।
निस्+चि=निश्चिनोति=निश्चय करता है।
अव+चि=अवचिनोति=इक्कट्ठा करता है।

चयनीयम् अप+चि=अपचिनोति=नष्ट करता है।
उप+चि=उपचिनोति=बढ़ाता है।

श्रु=सुनना

वक्तव्य—१. 'श्रु' धातु भ्वादिगण की है। किन्तु इसके रूप स्वादिगण की धातु के समान होते हैं। अतः इसे यहाँ दिया गया है।

२. 'श्रु' धातु को चार लकारों में 'शृ' आदेश और 'श्नु' प्रत्यय होता है। भविष्यत्काल को छोड़कर। जैसे—शृ+नु+ति=शृणोति।

श्रु=सुनना

(परस्मैपद)

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
मध्यम पुरुष	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
उत्तम पुरुष	शृणोमि	शृणुवः, शृण्वः	शृणुमः, शृण्मः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
मध्यम पुरुष	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उत्तम पुरुष	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु
मध्यम पुरुष	शृणु	शृणुतम्	शृणुत
उत्तम पुरुष	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
मध्यम पुरुष	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
उत्तम पुरुष	अशृणवम्	अशृणुव, अशृण्व	अशृणुम, अशृण्म

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
मध्यम पुरुष	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
उत्तम पुरुष	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

श्रु+क्त=श्रुतः (श्रुता, श्रुतम्) — प्रेरणार्थक—श्रावयति—ते
श्रु+तुम्=श्रुतवान् (श्रुतवती) — कर्मवाच्य—श्रूयते
श्रु+क्त्वा=श्रुत्वा — सन्नन्त—शुश्रूषति (सेवा करता है)
श्रु+तुम्=श्रोतुम्

श्रु+तव्य=श्रोतव्यः (श्रोतव्या, श्रोतव्यम्) श्रु+शतृ=शृण्वन्
श्रु+अनीय=श्रवणीयः (श्रवणीया, श्रवणीयम्)

स्वादिगण की कुछ और मुख्य धातु

धु=हिलाना (प०) धुनोति, धविष्यति, धुनोतु, अधुनोत्, धुनुयात् ।
वृ=चुनना (प०) वृणोति, वरिष्यति, वृणोतु, अवृणोत्, वृणुयात् ।
(आ०) वृणुते, वरिष्यते, वृणुताम्, अवृणुत, वृण्वीत ।

सु (रस निकालना) सुनोति, सोष्यति, सुनोतु, असुनोत्, सुनुयात् । सावयति । सूयते । सुसूषति । सुत । सुत्वा । सोतुम् । सोतव्य । सवनीय । सुन्वत् ।

साध्=सिद्ध करना—साध्नोति, साधिष्यति, साध्नोतु, असाध्नोत् साध्नुयात् ।

उदाहरण—

१. आर्य सोम का रस निकालते थे और उसे पिया करते थे ।
आर्याः सोममसुन्वन् तं च अपिबन् ।

२. श्रोता लोग श्रद्धा से राम की कथा को सुनते थे ।
श्रोतारः श्रद्धया रामस्य कथामशृण्वन् ।

३. जो इस नीतिशास्त्र को नित्य पढ़ता है और सुनता है, वह कभी इन्द्र से भी पराभव को नहीं प्राप्त होता ।

अधीते य इदं नित्य नीतिशास्त्रं शृणोति च ।
न पराभवमाप्नोति शक्रादपि कदाचन ॥

४. योगी और तत्त्व को जानने वाला—देखता हुआ, सुनता हुआ, छूता हुआ, सूंघता हुआ, खाता हुआ, जाता हुआ, सोता हुआ, सांस लेता हुआ, कूदता हुआ, छोड़ता हुआ, ग्रहण करता हुआ, आँखें खोलता हुआ, आँखें बन्द करता हुआ—यही विचार करे कि इन्द्रियाँ इन्द्रियों के अर्थों (विषय) में प्रवृत्त ही रही हैं, मैं कुछ नहीं कर रहा ।

नैव किञ्चित् करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित् ।
पश्यन् शृण्वन् स्पृशन् जिघ्रन् अश्नन् गच्छन् स्वपन् श्वसन् ॥
प्लवन् विसृजन् गृह्णन् उन्मिषन् निमिषन्नपि ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन् ॥

५. जो दूसरों का सम्मान करता है और मीठे वचन बोलता है, वह अवश्य ही अपना काम सिद्ध कर लेता है ।
यः परेषां सम्मानं करोति, मधुराणि च वचनानि वदति सोऽवश्यमेव निजं कार्यं साध्नोति ।

६. शकुन्तला, प्रियंवदा तथा अनसूया जब वन में फूल चुन रही थीं, उसी समय दुष्यन्त वहाँ आ गया ।
शकुन्तला, प्रियंवदा तथा अनसूया यदा वने पुष्पाणि अचिन्वन् तावदेव तत्र दुष्यन्तः प्रागच्छत् ।

७. आजकल तरुण-तरुणियाँ तरह-तरह से बालों को सजाते हैं।
अद्यत्वे तरुणाः तरुण्यश्च विविधैः प्रकारैः केशान् प्रसाध्नुवन्ति ।

८. एकदम कोई कार्य न करे, अविवेक बड़ी विपत्तियों का घर है, सोच-विचार कर काम करने वाले को, गुणों पर मुग्ध होने वाली संपत्तियाँ स्वयं वरण करती है ।

सहसा विदधीत न क्रियाम्, अविवेकः परमापदां पदम् ।
वृणुते हि विमृश्यकारिणम्, गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः ॥

९. अज्ञान से ज्ञान ढक गया है, इससे प्राणी मोह को प्राप्त होते हैं ।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं, तेन मुह्यन्ति जन्तवः ।

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) सुनो ! तुम कब फूल चुनोगे (तोड़ोगे) ? (२) तुम कब काम ठीक कर सकोगे ? (३) आलस्य में विद्या प्राप्त नहीं होती है । (४) शिष्य अपना पाठ ध्यान से सुनें । (५) सावित्री ने सत्यवान् को पति चुना (वृ) । (६) तुम जा सकते हो । (७) दुष्यन्त को पाकर शकुन्तला परम प्रसन्न हुई । (८) भाग्य विपरीत होने पर भी धैर्य न छोड़ना चाहिए, धैर्य से वह (मनुष्य) गति को पा ले । (९) बादल सूर्य को ढक लेते हैं ।

(२) निम्नलिखित धातुओं के निर्दिष्ट लकारों में रूप लिखिए—

सु—लृट् (परस्मैपद) । आप्—लट्, शक्—लङ्, विधिलिङ्, श्रु—लङ्, साध्—लोट् ।

(३) निम्नलिखित पदों के प्रकृति-प्रत्यय अर्थात् धातु, लकार, पुरुष और वचन बताइए—

शक्नुयाम् । सोष्यति । आप्स्यसि । सुन्वीत । अश्रृणोत् ।

सप्तम अध्याय

तुदादिगण

('अ' विकरण)

विकरण की दृष्टि से भ्वादि और तुदादि एक जैसे हैं, दोनों में 'अ' विकरण आता है। परन्तु भ्वादिगण के धातुओं के इ, उ तथा ऋ को गुण हो जाता है, और तुदादिगण में गुण नहीं होता। अन्य साधारण परिवर्तन रूपों में देखिए।

तुद्=कष्ट देना

परस्मैपदी धातु

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
मध्यम पुरुष	तुदसि	तुदथः	तुदथ
उत्तम पुरुष	तुदामि	तुदावः	तुदामः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ
उत्तम पुरुष	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु
मध्यम पुरुष	तुद	तुदतम्	तुदत
उत्तम पुरुष	तुदानि	तुदाव	तुदाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
मध्यम पुरुष	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
उत्तम पुरुष	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
मध्यम पुरुष	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत
उत्तम पुरुष	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

तुद्+क्त=तुन्न:
तुद्+क्तवत्=तुन्नवान् (तुन्नवती)
तुद्+क्त्वा=तुत्वा
तुद्+तुम्=तोत्तुम्
तुद्+तव्य=तोत्तव्य: (तोत्तव्या, तोत्तव्यम्)
तुद्+अनीय=तोदनीय: (तोदनीया)
तुद्+शतृ=तुदन् (तुदन्ती)

प्रेरणार्थक—तोदयति-ते
कर्मवाच्य—तुद्यते
सन्नन्त—तुतुत्सति

इष्=इच्छा करना

इष् धातु को 'इच्छ' आदेश होता है भविष्यत्काल को छोड़कर। शतृ प्रत्यय लगने पर भी 'इष' को 'इच्छ' होता है।

लट्—वर्तमानकाल

प्रथम पुरुष	इच्छति	इच्छत:	इच्छन्ति
मध्यम पुरुष	इच्छसि	इच्छथ:	इच्छथ
उत्तम पुरुष	इच्छामि	इच्छाव:	इच्छाम:

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	एषिष्यति	एषिष्यत:	एषिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	एषिष्यसि	एषिष्यथ:	एषिष्यथ
उत्तम पुरुष	एषिष्यामि	एषिष्याव:	एषिष्याम:

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
मध्यम पुरुष	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उत्तम पुरुष	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
मध्यम पुरुष	ऐच्छ:	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उत्तम पुरुष	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयु:
मध्यम पुरुष	इच्छे:	इच्छेतम्	इच्छेथ
उत्तम पुरुष	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

कृदन्तान्त रूप-रचना—

इष्+क्त=इष्ट: (इष्टा, इष्टम्)
इष्+क्तवत्=इष्टवान् (इष्टवती)
इष्+क्त्वा=इषित्वा, इष्ट्वा

प्रेरणार्थक—एषयति-ते
कर्मवाच्य—इष्यते
सन्नन्त—एषिषिति

इष् + तुम् = एषितुम्, एष्टुम्
इष् + तव्य = एष्टव्यः (एष्टव्या)
इष् + अनीय = एषणीयः (एषणीया)
इष् + शतृ = इच्छन् (इच्छन्ती)

सोपसर्ग प्रयोग—
अनु + इष् = (ढूंढ़ना) अन्विच्छति
(उद्योगमन्विच्छति चाप्रमत्तः)

स्पृश् = छूना

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशन्ति
म० पु०	स्पृशसि	स्पृशथः	स्पृशथ
उ० पु०	स्पृशामि	स्पृशावः	स्पृशामः

ज्ञातव्य—स्पृश् धातु की 'ऋ' को भविष्यत्काल में विकल्प से र् हो जाता है। जहाँ र् नहीं होता वहाँ ऋ को 'अर्' गुण हो जाता है। अतः दो प्रकार के रूप बनते हैं।

लृट्—भविष्यत्काल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्पर्क्ष्यति	स्पर्क्ष्यतः	स्पर्क्ष्यन्ति
म० पु०	स्पर्क्ष्यसि	स्पर्क्ष्यथः	स्पर्क्ष्यथ
उ० पु०	स्पर्क्ष्यामि	स्पर्क्ष्यावः	स्पर्क्ष्यामः

अथवा

प्र० पु०	स्प्रक्ष्यति	स्प्रक्ष्यतः	स्प्रक्ष्यन्ति
म० पु०	स्प्रक्ष्यसि	स्प्रक्ष्यथः	स्प्रक्ष्यथ
उ० पु०	स्प्रक्ष्यामि	स्प्रक्ष्यावः	स्प्रक्ष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्र० पु०	स्पृशतु	स्पृशताम्	स्पृशन्तु
म० पु०	स्पृश	स्पृशतम्	स्पृशत
उ० पु०	स्पृशानि	स्पृशाव	स्पृशाम

लङ्—भूतकाल

प्र० पु०	अस्पृशत्	अस्पृशताम्	अस्पृशन्
म० पु०	अस्पृशः	अस्पृशतम्	अस्पृशत
उ० पु०	अस्पृशम्	अस्पृशाव	अस्पृशाम

विधिलिङ् लकार

प्र० पु०	स्पृशेत्	स्पृशेताम्	स्पृशेयुः
म० पु०	स्पृशेः	स्पृशेतम्	स्पृशेत
उ० पु०	स्पृशेयम्	स्पृशेव	स्पृशेम

कृदन्तान्त रूप-रचना—
स्पृश् + क्त = स्पृष्टः (स्पृष्टा, स्पृष्टम्)   प्रेरणार्थक—स्पर्शयति—ते

स्पृश् + क्तवत् = स्पृष्टवान् (-वती) कर्मवाच्य—स्पृश्यते
स्पृश् + क्त्वा = स्पृष्ट्वा सोपसर्ग प्रयोग—
स्पृश् + तुम् = स्प्रष्टुम् अप + स्पृश् = अपस्पृशति = मुँ...
स्पृश् + तव्य — स्प्रष्टव्यः धोता है, आचमन करता है।
स्पृश् + अनीय = स्पर्शनीयः
स्पृश् + शतृ = स्पृशन् (स्पृशन्ती, स्पृशत्)

छिप् = फेंकना

क्षिपति। क्षेप्स्यति। क्षिपतु। अक्षिपत्। क्षिपेत्।
क्षिप् + क्त = क्षिप्तः प्रेरणार्थक—क्षेपयति—ते
क्षिप् + क्तवत् = क्षिप्तवान् कर्मवाच्य = क्षिप्यते
क्षिप् + क्त्वा = क्षिप्त्वा, प्रक्षिप्य सोपसर्ग प्रयोग—
क्षिप् + तुम् = क्षेप्तुम् अधिक्षिपति = झिड़कता है।
क्षिप् + तव्य = क्षेप्तव्यः (पुं०) प्रक्षिपति = फेंकता है या मिलावट
क्षेप्तव्या (स्त्री०) करता है।
क्षिप् + अनीय = क्षेपणीयः (क्षेपणीया) निक्षिपति = धरोहर रखता है।
उत्क्षिपति = ऊपर उछालता है।
क्षिप् + शतृ = क्षिपन् संक्षिपति = संक्षेप करता है।
विक्षिपति = अव्यवस्थित करता है।

मुच् = छोड़ना
(उभयपदी)

मुञ्चति-ते। मोक्ष्यति-ते। मुञ्चतु-ताम्। अमुञ्चत्-त। मुञ्चेत्-त।
मुच् + क्त = मुक्तः (पुं०) प्रेरणार्थक—मोचयति—ते
मुच् + क्तवत् = मुक्तवान् (पुं०) कर्मवाच्य—मुच्यते
मुच् + क्त्वा = मुक्त्वा सन्नन्त—मुमुक्षति
मुच् + तुम् = मोक्तुम्
मुच् + तव्य = मोक्तव्यः (पुं०)
मुच् + अनीय = मोचनीयः (पुं०), मोचनीया (स्त्री०)
मुच् + शतृ = मुञ्चन् (पुं०), मुञ्चन्ती (स्त्री०)
मुच् + शानच् = मुञ्चानः (पुं०) मुञ्चाना (स्त्री०)

सिच्—सींचना
(उभयपदी)

सिञ्चति—सिञ्चते। सेक्ष्यति—सेक्ष्यते। सिञ्चतु—सिञ्चताम्। असिञ्चत् —असिञ्चत। सिञ्चेत् —सिञ्चेत।

कृदन्तान्त रूप-रचना—

सिच् + क्त = सिक्तः (सिक्ता, सिक्तम्) प्रेरणार्थक—सेचयति—ते

सिच् + क्तवत् = सिक्तवान् (-वती) कर्मवाच्य—सिच्यते
सिच् + क्त्वा = सिक्त्वा सन्नन्त—सिसिक्षति
सिच् + तुम् = सेक्तुम् सोपसर्ग प्रयोग—
सिच् + तव्य = सेक्तव्यः (सेक्तव्या) अभि + षिच् = अभिषिञ्चति
सिच् + अनीय = सेचनीयः (सेचनीया, सेचनीयम्) अभिषेक करता है।
सिच् + शतृ = सिञ्चन्, (सिञ्चन्ती)
सिच् + शानच् = सिञ्चानः (सिञ्चाना)

मृ = मरना
(आत्मनेपद)
लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते
म० पु०	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
उ० पु०	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे

लृट्—भविष्यत्काल[1]

प्र० पु०	मरिष्यति	मरिष्यतः	मरिष्यन्ति
म० पु०	मरिष्यसि	मरिष्यथः	मरिष्यथ
उ० पु०	मरिष्यामि	मरिष्यावः	मरिष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्र० पु०	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्
म० पु०	म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्
उ० पु०	म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै

लङ्—भूतकाल

प्र० पु०	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त
म० पु०	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
उ० पु०	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि

विधिलिङ् लकार

प्र० पु०	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्
म० पु०	म्रियेथाः	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम्
उ० पु०	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमहि

कृदन्तान्त रूप-रचना—
मृ + क्त = मृतः (मृता, मृतम्) प्रेरणार्थक—मारयति—ते

---

१. 'मृ' धातु को चार लकारों में 'म्रिय्' आदेश हो जाता है और 'मृ' धातु भविष्यत्काल में नित्य परस्मपदी है।

मृ+क्तवत्=मृतवान् (-वती) कर्मवाच्य—म्रियते
मृ+क्त्वा=मृत्वा सन्नन्त—मुमूर्षति
मृ+तुम्=मर्तुम् मरना चाहता है अथवा जिसकी
मृ+तव्य=मर्तव्यः (-व्या, -व्यम्) मृत्यु दिखाई दे रही हो।
मृ+अनीय=मरणीयः (मरणीया, मरणीयम्)
मृ+शानच्=म्रियमाणः (म्रियमाणा, म्रियमाणम्)

तुदादिगण की कुछ अन्य धातु

प्रच्छ्—(पूछना) पृच्छति, प्रक्ष्यति, पृच्छतु, अपृच्छत्, पृच्छेत्।
प्रच्छयति। पृच्छ्यते। पिपृच्छिषति। पृष्ट। पृष्ट्वा। प्रष्टुम। प्रष्टव्य। पृच्छत्।

कृष्—(खेती करना, हल चलाना) कृषति, क्रक्ष्यति, कृषतु, अकृषत् कृषेत्।
कर्षयति। कृष्यते। कृष्ट। कृष्ट्वा, क्रष्टुम्। क्रष्टव्य। कर्षणीय। कर्षत्।

विन्द् (पाना) (उभयपदी) विन्दति—विन्दते। वेदिष्यति—वेदिष्यते।
वेत्स्यति—वेत्स्यते। विन्दतु—विन्दताम्। अविन्दत्—अविन्दत। विन्देत्—विन्देत। वेदयति। विद्यते। विविदिषति। विन्न-वित्त। वित्त्वा। वेदितुम्-वेत्तुम्। वेदितव्य। वेदनीय। विन्दन्—विन्दानः।

कृत् (काटना) कृन्तति, कर्तिष्यति, कृन्ततु, अकृन्तत्, कृन्तेत्।

कृ (बिखेरना) किरति, करिष्यति, किरतु, अकिरत् किरेत्।

गुम्फ् (गूंथना, बांधना) गुम्फति, गुम्फिष्यति, गुम्फतु, अगुम्फत्, गुम्फेत्।

दिश् (निर्देश करना) दिशति, देक्ष्यति, दिशतु, अदिशत् दिशेत्।

मिल् (मिलना) मिलति, मिलिष्यति (मेलिष्यति), मिलतु, अमिलत् मिलेत्।

स्फुट् (फूटना) स्फुटति, स्फुटिष्यति, स्फुटतु, अस्फुटत्, स्फुटेत्।

लग् (लगना) लगति, लगिष्यति, लगतु, अलगत्, लगेत्।

लिख् (लिखना) लिखति, लिखिष्यति (लेखिष्यति), लिखतु, अलिखत् लिखेत्।

विश् (प्रवेश करना) विशति, वेक्ष्यति, विशतु, अविशत्, विशेत्।

उप+विश् (बैठना) इसके रूप उपविशति आदि भी विश् के समान होंगे।

स्फुर् (फड़कना) स्फुरति, स्फुरिष्यति, स्फुरतु, अस्फुरत्, स्फुरेत्।

सृज् (बनाना) सृजति, स्रक्ष्यति, सृजतु, असृजत् सृजेत्।

लिम्प् (लीपना)—(उ० प०) लिम्पति-लिम्पते, लेप्स्यति-लेप्स्यते, लिम्पतु-लिम्पताम्, अलिम्पत्-अलिम्पत, लिम्पेत्-लिम्पेत।

उदाहरण—

१. किसी गाँव में कृषि-मन्त्री आए और पूछा कि गेहूँ के वृक्ष कितने बड़े होते हैं। किसान ने मज़ाक से कहा—आम से तो लम्बे ही होते हैं।
कस्मिश्चिद् ग्रामे कृषिमन्त्री आगच्छत् अपृच्छत् च यत् गोधूमानां वृक्षाः कियद्दीर्घाः भवन्ति? कृषकः परिहासेनादवत्—आम्रवृक्षास्तु दीर्घतरा एव

भवन्ति।

२. अरे ढीठ, छोड़-छोड़ मुझे घर जाना है।
अरे घृष्ट ! मुञ्च मुञ्च, मया गृहं गन्तव्यम्।

३. क्या पुलिस वाले अपराधी को छोड़ दें ?
किम् आरक्षिणः अपराधिनं मुञ्चेयुः ?

४. हम परीक्षा में मौखिक प्रश्नों को पूछेंगे।
वयं परीक्षायां मौखिकान् प्रश्नान् प्रक्ष्यामः।

५. क्या चाहता है, क्या चाहता है छोड़ मुझे।
किमिच्छसि, किमिच्छसि, मुञ्च माम्।

६. पिता बोला—यदि तू मुझे तंग करेगा तो मैं तुझे खूब पीटूंगा।
पिताऽवदत्—यदि त्वं मां तोत्स्यसि तर्हि अहं त्वां बहु ताडयिष्यामि।

७. कवि ने काव्य बनाया, माली ने माला बनाई, मूर्तिकार ने मूर्ति बनाई, इसी तरह जगदीश्वर ने संसार को बनाया।
कविः काव्यमसृजत्, मालाकारः मालामरचयत्। मूर्तिकारः मूर्तिमसृजत् तथैव जगदीश्वरः सृष्टिमसृजत्।

८. कीचड़ को धोने की अपेक्षा उसे दूर से ही न छूना उत्तम है।
प्रक्षालनाद्धि पंकस्य दूरादस्पर्शनं वरम्।

९. दिन और रात, सायंकाल और प्रभात, शिशिर और वसन्त पुनः पुनः आते हैं, इसी प्रकार काल की लीला होती रहती है और आयु बीत जाती है, किन्तु आशा रूपी वायु फिर भी नहीं छोड़ती।

दिनमपि रजनी सायं प्रातः, शिशिरवसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुः, तदपि न मुञ्चत्याशावायुः।

१०. फिर रात आती है, फिर दिन आता है, फिर पक्ष, फिर बार, बार मास, अयन और वर्ष आते हैं, पर लोग आशा और ईर्ष्या को नहीं छोड़ते।

पुनरपि रजनी, पुनरपि दिवसः, पुनरपि पक्षः, पुनरपि मासः।
पुनरप्ययनं पुनरपि वर्षं, तदपि न मुञ्चत्याशामर्षम्॥

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) अनिल ! कुत्ते को छड़ी से क्यों तंग करता है ? (२) कृष्ण ने ग्वालों को तंग किया। (३) जो तुझे तंग करे उसे पीट। (४) मैं नये ग्रंथ का सृजन करूँगा। (५) कुम्हार ने कितने बड़े घड़े बनाये (६) गुरु ने कैसे-कैसे प्रश्न पूछे ? (७) तू मुझसे क्या चाहता है ? (८) वे उन लड़कियों से कुछ न पूछेंगी। (९) अरे छोड़-छोड़, उँगली पकड़ते-पकड़ते पहुँचा (मणिबन्धम्) पकड़ते हो ? (१०) मैं तो कम्बल को छोड़ता हूँ, कम्बल मुझको नहीं छोड़ता। (११) अन्धकार अंगों को लिप्त कर रहा है।

(२) नीचे लिखी धातुओं के निर्दिष्ट लकारों में रूप लिखिए ।

(१) प्रच्छ, इष्, लिप्, तुद्—लट्, लङ्, लृट्‌ प्रथम पुरुष में ।

(२) वद् कृष्, मुच्—लोट्, विधिलिङ् मध्यम पुरुष में।

(३) आ+दा—कर्मवाच्य लट् में।

(४) स्पृश्, प्रच्छ्, विद्—लृट् उत्तम पुरुष में ।

(५) तुद, स्पृश्—लोट् उत्तम पुरुष एकवचन में।

(३) इनके तीनों पुरुषों में एकवचन तथा बहुवचन में रूप लिखिए :—
मोक्ष्यति, पृच्छसि, ऐच्छत्, विन्दते ।

(४) नीचे लिखी क्रियाओं के लकार, पुरुष तथा वचन बताइए :—
विन्दते, अमुञ्चे, कृन्ततु, उद्विजन्ते, आक्षिपसि, मुञ्चति, स्रक्ष्यामि, म्रियस्व ।

(५) नीचे लिखे पदों का प्रयोग करते हुए संस्कृत वाक्य बनाइए :—
तुदति । इच्छामः । ऐच्छत् । कृषन्ति ।

(६) तुदादिगण के इन परस्मैपदी धातुओं के केवल लट् प्रथम पुरुष में रूप लिखिए :—
उञ्छ् (बीनना), त्रुट् (ढूंढना, कटना), विश् (घुसना, बैठना), सृज् (बनाना), स्पृश् (छूना) ।

(७) इन तुदादिगण उभयपदी धातुओं के केवल लङ् प्रथम पुरुष एकवचन में रूप लिखिए :—
कृष् (जोतना), क्षिप् (फेंकना), तुद् (सताना), उप+दिश् (उपदेश करना) ।

अष्टम अध्याय

रुधादिगण

रुधादिगण का विकरण 'श्नम्' है। 'श्नम्' के श् और म् का लोप होकर 'न' ही शेष रह जाता है। दूसरे गणों में विकरणों का प्रयोग धातु और तिङ्-प्रत्यय के मध्य होता है, परन्तु इस गण में विकरण का प्रयोग धातु के अन्तिम व्यंजन से पहले किया जाता है। उदाहरण—रु+न+ध्=रुनध्। अन्य परिवर्तन रूपों में देखिए।

रुध्—रोकना (उभयपदी)

(परस्मैपद)

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रुणद्धि	रुन्धः	रुन्धन्ति
मध्यम पुरुष	रुणत्सि	रुन्धः	रुन्ध
उत्तम पुरुष	रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	रोत्स्यति	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	रोत्स्यसि	रोत्स्यथः	रोत्स्यथ
उत्तम पुरुष	रोत्स्यामि	रोत्स्यावः	रोत्स्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	रुणद्धु	रुन्धाम्	रुन्धन्तु
मध्यम पुरुष	रुन्धि	रुन्धम्	रुन्ध
उत्तम पुरुष	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अरुणत्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्
मध्यम पुरुष	अरुणः	अरुन्धम्	अरुन्ध
उत्तम पुरुष	अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः
मध्यम पुरुष	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात
उत्तम पुरुष	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम

(आत्मनेपद)

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रुन्धे	रुन्धाते	रुन्धते
मध्यम पुरुष	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्ध्वे
उत्तम पुरुष	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	रोत्स्यते	रोत्स्येते	रोत्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	रोत्स्यते	रोत्स्येथे	रोत्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	रोत्स्ये	रोत्स्यावहे	रोत्स्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	रुन्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्
मध्यम पुरुष	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्ध्वम्
उत्तम पुरुष	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अरुन्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत
मध्यम पुरुष	अरुन्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्ध्वम्
उत्तम पुरुष	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
मध्यम पुरुष	रुन्धीयाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्
उत्तम पुरुष	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि

कृदन्तान्त रूप-रचना—

रुध्+क्त=रुद्धः (रुद्धा, रुद्धम्) **प्रेरणार्थक**—रोधयति—ते
रुध्+क्तवत्=रुद्धवान् (-वती) **कर्मवाच्य**—रुध्यते
रुध्+क्त्वा=रुद्ध्वा **सन्नन्त**—रुरुधिषति
रुध्+तुम्=रोद्धुम् **सोपसर्ग प्रयोग—**
रुध्+तव्य=रोद्धव्यः (-व्या) अव+रुध्=अवरुणद्धि=विघ्न डालता है।।
रुध्+अनीय=रोधनीयः (-या) अनु+रुध्—अनुरुणद्धि=अनुरोध करता है।
रुध्+शतृ=रुन्धन् (रुन्धन्ती)
रुध्+शानच्=रुन्धानः (-ना) वि+रुध्—विरुणद्धि=विरोध करता है।

भुज्=रक्षा करना, भोगना, खाना (उभयपदी)

परस्मैपद में भुज् धातु मुख्य रूप से 'रक्षा करने' अर्थ में आती है।

(परस्मैपद)

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भुनक्ति	भुङ्क्तः	भुञ्जन्ति
मध्यम पुरुष	भुनक्षि	भुङ्क्थः	भुङ्क्थ
उत्तम पुरुष	भुनज्मि	भुञ्ज्वः	भुञ्ज्मः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	भोक्ष्यति	भोक्ष्यतः	भोक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भोक्ष्यसि	भोक्ष्यथः	भोक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	भोक्ष्यामि	भोक्ष्यावः	भोक्ष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	भुनक्तु	भुङ्क्ताम्	भुञ्जन्तु
मध्यम पुरुष	भुङ्ग्धि	भुङ्क्तम्	भुङ्क्त
उत्तम पुरुष	भुनजानि	भुनजाव	भुनजाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अभुनक्-ग्	अभुङ्क्ताम्	अभुञ्जन्
मध्यम पुरुष	अभुनक्-ग्	अभुङ्क्तम्	अभुङ्क्त
उत्तम पुरुष	अभुनजम्	अभुञ्ज्व	अभुञ्ज्म

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	भुञ्ज्यात्	भुञ्ज्याताम्	भुञ्ज्युः
मध्यम पुरुष	भुञ्ज्याः	भुञ्ज्यातम्	भुञ्ज्यात
उत्तम पुरुष	भुञ्ज्याम्	भुञ्ज्याव	भुञ्ज्याम

भुज् (आत्मनेपद में) खाना, उपभोग करना

आत्मनेपद में 'भुज्' धातु का प्रयोग प्रधानतः खाने और भोगने अर्थ में होता है।

लट्—वर्तमानकाल

प्र० पु०	भुङ्क्ते	भुञ्जाते	भुञ्जते
म० पु०	भुङ्क्षे	भुञ्जाथे	भुङ्ग्ध्वे
उ० पु०	भुञ्जे	भुञ्ज्वहे	भुञ्ज्महे

लृट्—भविष्यत्काल

प्र० पु०	भोक्ष्यते	भोक्ष्येते	भोक्ष्यन्ते
म० पु०	भोक्ष्यसे	भोक्ष्येथे	भोक्ष्यध्वे
उ० पु०	भोक्ष्ये	भोक्ष्यावहे	भोक्ष्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

प्र० पु०	भुङ्क्ताम्	भुञ्जाताम्	भुञ्जताम्
म० पु०	भुङ्क्ष्व	भुञ्जाथाम्	भुङ्ग्ध्वम्

उ० पु०	भुनजै	भुनजावहै	भुनजामहै

लङ्—भूतकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पु०	अभुङ्क्त	अभुञ्जाताम्	अभुञ्जत
मध्यम पु०	अभुङ्क्था:	अभुञ्जाथाम्	अभुङ्ग्ध्वम्
उत्तम पु०	अभुञ्जि	अभुञ्ज्वहि	अभुञ्ज्महि

विधिलिङ् लकार

प्रथम पु०	भुञ्जीत	भुञ्जीयाताम्	भुञ्जीरन्
मध्यम पु०	भुञ्जीथा:	भुञ्जीयाथाम्	भुञ्जीध्वम्
उत्तम पु०	भुञ्जीय	भुञ्जीवहि	भुञ्जीमहि

कृदन्तान्त रूप-रचना—

भुज्+क्त—भुक्तः (भुक्ता, भुक्तम्)
भुज्+तवत्=भुक्तवान् (-वती, -वत्)
भुज्+क्त्वा=भुक्त्वा
भुज्+तुम्=भोक्तुम्
भुज्+तव्य=भोक्तव्यः (भोक्तव्या, भोक्तव्यम्)
भुज्+अनीय=भोजनीयः (भोजनीया)
भुज्+शतृ=भुञ्जन् (भुञ्जन्ती, भुञ्जत्)
भुज्+शानच्=भुञ्जानः (भुञ्जाना)

प्रेरणार्थक—भोजयति—ते
कर्मवाच्य—भुज्यते
सन्नन्त—बुभुजिषति

युज्=जोड़ना (उभयपदी)

(परस्मैपद)

लट्—वर्तमानकाल

प्र० पु०	युनक्ति	युङ्क्तः	युञ्जन्ति
म० पु०	युनक्षि	युङ्क्थः	युङ्क्थ
उ० पु०	युनज्मि	युञ्ज्वः	युञ्ज्मः

लृट्—भविष्यत्काल

प्र० पु०	योक्ष्यति	योक्ष्यतः	योक्ष्यन्ति
म० पु०	योक्ष्यसि	योक्ष्यथः	योक्ष्यथ
उ० पु०	योक्ष्यामि	योक्ष्यावः	योक्ष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्र० पु०	युनक्तु	युङ्क्ताम्	युञ्जन्तु
म० पु०	युङ्ग्धि	युङ्क्तम्	युङ्क्त
उ० पु०	युनजानि	युनजाव	युनजाम

लङ्—भूतकाल

प्र० पु०	अयुनक्-ग्	अयुङ्क्ताम्	अयुञ्जन्

म० पु०	अयुनक्-ग्	अयुङ्क्तम्	अयुङ्क्त
उ० पु०	अयुनजम्	अयुञ्ज्व	अयुञ्ज्म

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पु०	युञ्ज्यात्	युञ्ज्याताम्	युञ्ज्युः
मध्यम पु०	युञ्ज्याः	युञ्ज्यातम्	युञ्ज्यात
उत्तम पु०	युञ्ज्याम्	युञ्ज्याव	मुञ्ज्याम

(आत्मनेपद)

लट्—वर्तमानकाल

प्रथम पुरुष	युङ्क्ते	युञ्जाते	युञ्जते
मध्यम पुरुष	युङ्क्षे	युञ्जाथे	युङ्ग्ध्वे
उत्तम पुरुष	युञ्जे	युञ्ज्वहे	युञ्ज्महे

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	योक्ष्यते	योक्ष्येते	योक्ष्यन्ते
मध्यम पुरुष	योक्ष्यसे	योक्ष्येथे	योक्ष्यध्वे
उत्तम पुरुष	योक्ष्ये	योक्ष्यावहे	योक्ष्यामहे

लोट्—प्राज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	युङ्क्ताम्	युञ्जाताम्	युञ्जताम्
मध्यम पुरुष	युङ्क्ष्व	युञ्जाथाम्	युङ्ग्ध्वम्
उत्तम पुरुष	युनजै	युनजावहै	युनजामहै

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अयुङ्क्त	अयुञ्जाताम्	अयुञ्जत
मध्यम पुरुष	अयुङ्क्थाः	अयुञ्जाथाम्	अयुङ्ग्ध्वम्
उत्तम पुरुष	अयुञ्जि	अयुञ्ज्वहि	अयुञ्ज्महि

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	युञ्जीत	युञ्जीयाताम्	युञ्जीरन्
मध्यम पुरुष	युञ्जीथाः	युञ्जीयाथाम्	युञ्जीध्वम्
उत्तम पुरुष	युञ्जीय	युञ्जीवहि	युञ्जीमहि

कृदन्तान्त रूप-रचना—

युज्+क्त=युक्तः (युक्ता, युक्तम्) प्रेरणार्थक—योजयति—ते
युज्=क्तवत्=युक्तवान् (-वती) कर्मवाच्य—युज्यते
युज्+क्त्वा=युक्त्वा सन्नन्त—युयुक्षति—ते
युज्+तुम्=योक्तुम् उपसर्ग प्रयोग—
युज्+तव्य=योक्तव्यः(-व्या) वि+युज्=वियुनक्ति=अलग होता है।
युज्+अनीय=योजनीयः (योजनीया,) उद्+युज्=उद्युनक्ति=उद्योग करता है।

युज्+शतृ=युञ्जन् (युञ्जन्ती)
युज्+शानच्=युञ्जानः (-ना)

नि+युज्=नियुनक्ति=नियुक्त करता है, काम में लगाता है।

रुधादिगण की अन्य आवश्यक धातुएँ—

भिद् (भोड़ना) भिनत्ति, भेत्स्यति, भिनत्तु, अभिनत्, भिन्द्यात्।

भञ्ज् (तोड़ना) भनक्ति, भक्ष्यति, भनक्तु, अभनक्, भञ्ज्यात्।

छिद् (काटना, छेदना) छिनत्ति, छेत्स्यति, छिनत्तु, अच्छिनत्, छिन्द्यात्।

हिंस् (मारना) हिनस्ति, हिंसिष्यति, अहिनत्, हिनस्तु, हिंस्यात्।

उदाहरण—

१. वह मेरा मार्ग क्यों रोकता है?	स मम मार्गं कस्मात् रुणद्धि?
२. कृष्ण, गोपी का मार्ग न रोक।	कृष्ण! गोप्याः मार्गं मा रुन्धि।
३. जो चाहता है कि उसका मार्ग कोई न रोके, वह दूसरे से अच्छा व्यवहार करे।	यः इच्छति यत् तस्य मार्गं न कोऽपि रुन्ध्यात्, स परैः सह सद्व्यवहारं कुर्यात्।
४. विघ्न मेरा मार्ग कभी न रोकेंगे।	विघ्नाः मम मार्गं कदापि न रोत्स्यन्ति।
५. इस स्वादु भोजन को तुम्हीं खाओ।	एतत् स्वादिष्टं भोजनं त्वमेव भुङ्क्ष्व।
६. वीर धरती को भोगता है।	वीरः पृथ्वीं भुनक्ति।
७. वे पापी पाप का भोजन खाते हैं, जो केवल अपने लिए पकाते हैं।	भुञ्जते ते त्वघं पापाः ये पचन्त्यात्मकारणात्।
८. तब मैंने होटल में खाना खाया था।	यदाहं भोजनालये भोजनम् अभुञ्जि।
९. छत्रसाल राजा की आज्ञा से सैनिकों ने किला घेर लिया।	छत्रसालस्य नृपस्याज्ञया सैनिकाः दुर्गमरुन्धन्।
१०. उन्होंने परमाणु अस्त्र से जापान का नगर तोड़-फोड़ दिया।	ते परमाण्वस्त्रेण जापानस्य नगरम् अभिन्दन्।
११. बोलना बन्द करो और अब लिखने में लग जाओ।	मा वदत, अधुना लेखने युङ्ग्ध्वम्।
१२. बादल पर्वतों को नहीं फोड़ते।	वारिदाः पर्वतान् न भिन्दन्ति।

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) समुद्र देशों को अलग नहीं करता, अपितु आपस में जोड़ता है।

(२) हे गोविन्द! तुझ से मैं जिस तरह नियुक्त किया गया हूँ वैसे ही मैं कार्य करता हूँ।

(३) भीड़ ने पार्लियामेंट का रास्ता (लोकसभा-मार्ग) रोक लिया।

(४) भाखड़ा बांध सतलुज (शतद्रु) के प्रवाह को रोकता है।

(५) जो हिंसा करता है वह पाप का भागी होता है।

(६) भारतीय सैनिकों ने शौर्य से चीनियों को रोका था।

(७) सुनार (स्वर्णकार) सोने के सब टुकड़ों को जोड़ेगा।

(८) हृदय की गाँठ (ग्रन्थि) भिद जाती है, सारे संशय कट जाते हैं।

(२) इन धातुओं के यथानिर्दिष्ट रूप लिखिए—

(क) युज्, रुध्, भिद्—लङ् बहुवचन।

(ख) भञ्ज्, छिद्, रुध्—लट्, विधिलिङ्, प्रथम पुरुष।

(ग) भुज्, भिद्, रुध्—लृट्।

(घ) भुज्, भिद्—लङ् आत्मनेपद।

(३) इनके लकार, पुरुष तथा वचन बताइए—

युञ्जीरन्। रुन्धाते। रुध्यते। भुङ्क्ते। भोक्ष्यति। सेत्स्यति।

नवम अध्याय

तनादिगण

('उ' विकरण)

इस गण का विकरण 'उ' है। इस गण में दो ही मुख्य धातु हैं—
१. तन् (फैलाना)   २. कृञ् (करना) दोनों उभयपदी हैं।

तन्=फैलाना

(परस्मैपद)

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति
मध्यम पुरुष	तनोषि	तनुथः	तनुथ
उत्तम पुरुष	तनोमि	तनुवः, तन्वः	तनुमः, तन्मः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ
उत्तम पुरुष	तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु
मध्यम पुरुष	तनु	तनुतम्	तनुत
उत्तम पुरुष	तनवानि	तनवाव	तनवाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्
मध्यम पुरुष	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत
उत्तम पुरुष	अतनवम्	अतनुव, अतन्व	अतनुम, अतन्म

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः
मध्यम पुरुष	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात
उत्तम पुरुष	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम

(आत्मनेपद)

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तनुते	तन्वाते	तन्वते
म० पु०	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
उ० पु०	तन्वे	तनुवहे, तन्वहे	तनुमहे, तन्महे

लृट्—भविष्यत्काल

प्र० पु०	तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते
म० पु०	तनिष्यसे	तनिष्येथे	तनिष्यध्वे
उ० पु०	तनिष्ये	तनिष्यावहे	तनिष्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

प्र० पु०	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्
म० पु०	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
उ० पु०	तनवै	तनवावहै	तनवामहै

लङ्—भूतकाल

प्र० पु०	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
म० पु०	अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्
उ० पु०	अतन्वि	अतनुवहि, अतन्वहि	अतनुमहि, अतन्महि

विधिलिङ् लकार

प्र० पु०	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
म० पु०	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
उ० पु०	तन्वीय	तन्वीमहि	तन्वीमहि

कृदन्तान्त रूप-रचना—

तन्=क्त=ततः (तता, ततम्) प्रेरणार्थक—तानयति-ते

तन्+क्तवत्=तनवान् (तनवती) कर्मवाच्य—तन्यते

तन्+क्त्वा=तनित्वा, वितत्य, वितन्य सन्नन्त—तितनिषति

तन्+तुम्=तनितुम् सोपसर्ग प्रयोग—

तन्+तव्य=तनितव्यः (तनितव्या) वि+तन्=फैलाना।

तन्+अनीय=तननीयः (तननीया) प्र+तन्=फैलाना।

तन्+शतृ=तन्वानः (तन्वाना) सम्+तन्=सन्ततिः।

कृ (कृञ्)=करना (उभयपदी)

(परस्मैपद)

लट्—वर्तमानकाल

प्र० पु०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म० पु०	करोषि	कुरुथः	कुरुथ

उ० पु०	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लृट्—भविष्यत्काल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
म० पु०	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उ० पु०	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्र० पु०	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
म० पु०	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उ० पु०	करवाणि	करवाव	करवाम

लङ्—भूतकाल

प्र० पु०	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
म० पु०	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उ० पु०	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

विधिलिङ् लकार

प्र० पु०	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
म० पु०	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उ० पु०	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

(आत्मनेपद)

लट्—वर्तमानकाल

प्र० पु०	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
म० पु०	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उ० पु०	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लृट्—भविष्यत्काल

प्र० पु०	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
म० पु०	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उ० पु०	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

प्र० पु०	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
म० पु०	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उ० म०	करवै	करवावहै	करवामहै

लङ्—भूतकाल

प्र० पु०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
म० पु०	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उ० पु०	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
म० प०	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उ० पु०	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

कृदन्तान्त रूप-रचना—

कृ+क्त=कृतः (कृता, कृतम्)
कृ+क्तवत्=कृतवान् कृतवती
कृ+क्त्वा=कृत्वा
कृ+तुम्=कर्तुम्
कृ+तव्य=कर्तव्यः (कर्तव्या, कर्तव्यम्)
कृ+अनीय=करणीयः (करणीया, करणीयम्)
कृ+शतृ—कुर्वन् (कुर्वन्ती, कुर्वत्)
कृ+शानच्—कुर्वाणः (कुर्वाणा)

प्रेरणार्थक—कारयति—ते
कर्मवाच्य—क्रियते
सन्नन्त—चिकीर्षति
सोपसर्ग प्रयोग—
अप+कृ=अपकार। सम्+कृ=संस्कार। अनु+कृ=अनुकरण। दुस्+कृ=दुष्कृत्य=बुरा काम। वि+कृ=विकार। अधि+कृ=अधिकार। प्रति+कृ=प्रतिकार। (बदला)। उप+कृ=उपकार। वि+आ+कृ=व्याकरण (शब्द रचना को खोलकर बताना) अप+आ+कृ=अपाकरोति=दूर हटाता है। निर्+आ+कृ=निराकरोति दूर करता है। (गुडुची) ज्वरं निराकरोति।
अन्य शब्दों सहित—
अलं+कृ—अलंकरोति=सजाता है। (अलंकरोतीत्यलंकारः)
अंगी+कृ = अंगीकरोति= स्वीकार करता है।

उदाहरण—

१. सुन्दरी आभूषणों से अंगों को सजाती है।	सुन्दरी आभूषणैः अंगानि अलंकरोति।
२. नाई बालक का मुंडन-संस्कार करता है।	नापितः बालस्य मुंडन-संस्कारं करोति।
३. जुलाहा सूतों से ताना तनता है।	तन्तुवायः सूत्रैः प्रतानं तनोति।

४. जिसने योग से चित्त का, पद से वाणी का, और वैद्यक से शरीर का मल दूर किया, मुनियों में श्रेष्ठ उस पतंजलि को हाथ जोड़कर मैं नमस्कार करता हूँ।	योगेन चित्तस्य, पदेन वाचः, शरीरस्य मलं च वैद्यकेन योऽपाकरोत् तं प्रवरं मुनीनाम् पतंजलिं प्रांजलिः आनतोऽस्मि।
५. एक कर्म करता है, फल अनेक जन भोगते हैं।	एकः कर्माणि कुरुते, फलं भुङ्क्ते महाजनः।
६. न तू स्वयं काम करता है, न मजदूरों से करवाता है।	न त्वं स्वयं कार्यं करोषि, नापि श्रमिकैः कारयसि।
७. वह न तो काम करता दिखाई देता है, न करवाता हुआ।	स न हि दृश्यते कुर्वन् न चैव कारयन्।
८. सम्पादक लेखों को सुधारता है।	सम्पादकः लेखान् संस्करोति।
९. सुन्दरी अंगराग से शरीर सजाती है	सुन्दरी अंगरागेण देहमलंकरोति।
१०. जो अलंकार के बिना शब्द अर्थ को काव्य स्वीकार करता है, वह कृती अग्नि को अनुष्ण (ठंडा) क्यों नहीं स्वीकार करता?	अंगीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलंकृती। असौ न मनुते कस्मादनुष्णम् अनलंकृती?

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) शायद वह इस काम को करे। (२) यदि वह काम करे तो अच्छा करे। (३) क्या जाने कोई भी काम करे या न करे। (४) वे दोनों बालाएँ संभव है काम करें। (५) अध्यापिकाओ, तुम इस कार्य को करो। (६) वृष्टि हो तो किसान बीज वपन करें। (७) तू ही यह काम कर। (८) तू वही कर जो तेरे पूर्वजों ने किया है।

(२) हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

(क) प्रजातन्त्र-पद्धत्यामनेके गुणाः सन्ति। प्रजा एव अत्र राज्यं करोति। न हि एकेनात्र राज्यं क्रियते। प्रजाभिः निर्वाचिताः प्रतिनिधयः शासनं प्रकुर्वन्ति। प्रजातन्त्र-पद्धतिस्तदैव सफला यदा प्रजाः सुशिक्षिताः शिष्टाः न्यायपरायणाः कर्तव्यनिष्ठाः परोपकारव्रताः नीतिनिपुणाश्च भवेयुः।

(ख) शरदि न वर्षति गर्जति, वर्षति वर्षासु निःस्वनो मेघः।
नीचो वदति न कुरुते, न वदति सुजनः करोत्येव॥

(ग) कुरु कर्मैव तस्मात् त्वं पूर्वैः पूर्वतरैः कृतम्।

(३) निम्नलिखित धातुओं के निर्दिष्ट लकारों में रूप लिखिए :—

तन—लट्, लृट् (आत्मनेपद), कृ—लट् (परस्मैपद)।

(४) इन पदों का परिचय दीजिए :—

क्तवती । करोति । कुर्यात् । वितनुते । उपकृतम् । संस्करोति । उपकुर्वंते ।

(५) केवल पु ष बतलाइए :—

अकरवम् । अधिकरोति । अनुकुर्वन्ति । तनुत । कुर्यात् ।

(६) शुद्ध कीजिए :—

ते एतत्कार्यं करोति । कर्म कुर्यात् त्वम् वयं पूजां करोति । अहं करिष्यामहे वचनं तव ।

दशम अध्याय

क्र्यादिगण

इस गण का विकरण श्ना ('ना') है। हलन्त अविकारी तिङ्-प्रत्ययों के परे रहते 'ना' के 'आ' को 'ई' हो जाता है। उदाहरण के लिए—क्री + ना + तः = 'क्रीणीतः।' अन्य परिवर्तन रूपों में ही देखिए।

क्री = खरीदना (उभयपदी)

(परस्मैपद)

लट् लकार—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
मध्यम पुरुष	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उत्तम पुरुष	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

लृट् लकार—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
उत्तम पुरुष	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

लोट् लकार—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	क्रीणांतु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
मध्यम पुरुष	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत
उत्तम पुरुष	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम

लङ् लकार—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
मध्यम पुरुष	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उत्तम पुरुष	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
मध्यम पुरुष	क्रीणीयाः	क्रीणायातम्	क्रीणीयात
उत्तम पुरुष	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

(आत्मनेपद)

लट्—वर्तमानकाल

प्रथम पुरुष	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
मध्यम पुरुष	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
उत्तम पुरुष	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते
मध्यम पुरुष	क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यध्वे
उत्तम पुरुष	क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
मध्यम पुरुष	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
उत्तम पुरुष	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
मध्यम पुरुष	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
उत्तम पुरुष	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
मध्यम पुरुष	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उत्तम पुरुष	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

कृन्दतान्त रूप-रचना—

क्री+क्त=क्रीतः, क्रीता, क्रीतम् प्रेरणार्थक—क्रापयति—ते

क्री+क्तवत्=क्रीतवान् (-वती) कर्मवाच्य—क्रीयते

क्री+क्त्वा=क्रीत्वा सन्नन्त—चिक्रीषते

क्री+तुम्=क्रेतुम् सोपसर्ग प्रयोग—

क्री+तव्य=क्रेतव्यः (क्रेतव्या,-तव्यम्) वि+क्री=विक्रीणाति—बेचता है।

क्री+अनीय=क्रयणीयः (क्रयणीया, क्रयणीयम्)

क्री+शतृ—क्रीणन् (क्रीणती, क्रीणत्)

क्री+शानच्=क्रीणानः (क्रीणाना, क्रीणानम्)

ज्ञा (जा)=जानना, (उभयपदी)

(परस्मैपद)

वक्तव्य—'ज्ञा' धातु को चार लकारों में 'जा' आदेश होता है, भविष्यत्काल में नहीं होता।

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जानाति	जानीतः	जानन्ति
म० पु०	जानासि	जानीथः	जानीथ
उ० पु०	जानामि	जानीवः	जानीमः

लृट्—भविष्यत्काल

प्र० पु०	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति
म० पु०	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
उ० पु०	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्र० पु०	जानातु	जानीताम्	जानन्तु
म० पु०	जानीहि	जानीतम्	जानीत
उ० पु०	जानानि	जानाव	जानाम

लङ्—भूतकाल

प्र० पु०	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
म० पु०	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
उ० पु०	अजानाम्	अजानीव	अजानीम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः
मध्यम पुरुष	जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात
उत्तम पुरुष	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम

(आत्मनेपद)

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानीते	जानाते	जानते
मध्यम पुरुष	जानीषे	जानाथे	जानीध्वे
उत्तम पुरुष	जाने	जानीवहे	जानीमहे

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	ज्ञास्यते	ज्ञास्येते	ज्ञास्यन्ते
मध्यम पुरुष	ज्ञास्यसे	ज्ञास्येथे	ज्ञास्यध्वे
उत्तम पुरुष	ज्ञास्ये	ज्ञास्यावहे	ज्ञास्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्
मध्यम पुरुष	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्
उत्तम पुरुष	जानै	जानावहै	जानामहै

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अजानीत	अजानाताम्	अजानत
मध्यम पुरुष	अजानीथाः	अजानाथाम्	अजानीध्वम्
उत्तम पुरुष	अजानि	अजानीवहि	अजानीमहि

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्
मध्यम पुरुष	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्
उत्तम पुरुष	जानीय	जानीवहि	जानीमहि

कृदान्तान्त रूप-रचना—

ज्ञा + क्त = ज्ञातः, ज्ञातम्
ज्ञा + क्तवत् = ज्ञातवान् (-वती)
ज्ञा + क्त्वा = ज्ञात्वा
ज्ञा + तुम् = ज्ञातुम्
ज्ञा + तव्य = ज्ञातव्यः (ज्ञातव्या)
ज्ञा + अनीय = ज्ञानीयः (-या)
ज्ञा + शतृ = जानन् (जानती)
ज्ञा + शानच् = जानानः (-ना)

प्रेरणार्थक—ज्ञापयति—ते
कर्मवाच्य—ज्ञायते
सन्नन्त—जिज्ञासति
सोपसर्ग प्रयोग—
अनु + ज्ञा = अनुज्ञा = आज्ञा
अभि + ज्ञा = अभिज्ञा = अनुभूत का स्मरण।
प्रति + ज्ञा = प्रतिज्ञा = प्रण।
अव + ज्ञा = अवज्ञा + अपमान।
वि + ज्ञा = विज्ञान = विशेष जानना।
सम् + ज्ञा = संज्ञा = सचेत होना, नाम।

ग्रह् = ग्रहण करना (उभयपदी)

(परस्मैपद)

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
मध्यम पुरुष	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ:
उत्तन पुरुष	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति
मध्यम पुरुष	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ
उत्तम पुरुष	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः

लोट् लकार—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
मध्यम पुरुष	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत
उत्तम पुरुष	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम

लङ्—भूतकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
मध्यम पुरुष	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उत्तम पुरुष	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
मध्यम पुरुष	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
उत्तम पुरुष	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

(आत्मनेपद)

लट्—वर्तमानकाल

प्रथम पुरुष	गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णते
मध्यम पुरुष	गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे
उत्तम पुरुष	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	ग्रहीष्यते	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्यन्ते
मध्यम पुरुष	ग्रहीष्यसे	ग्रहीष्येथे	ग्रहीष्यध्वे
उत्तम पुरुष	ग्रहीष्ये	ग्रहीष्यावहे	ग्रहीष्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	गृह्णीताम्	गृह्णाताम्	गृह्णताम्
मध्यम पुरुष	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्
उत्तम पुरुष	गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अगृह्णीत	अगृह्णाताम्	अगृह्णत
मध्यम पुरुष	अगृह्णीथाः	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीध्वम्
उत्तम पुरुष	अगृह्णि	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्
मध्यम पुरुष	गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्
उत्तम पुरुष	गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि

कृदन्तान्त रूप-रचना—

ग्रह् + क्त = गृहीतः, गृहीता, गृहीतम्   प्रेरणार्थक—ग्राहयति—ते

ग्रह + क्तवत् = गृहीतवान्   कर्मवाच्य—गृह्यते

ग्रह् + क्त्वा = गृहीत्वा   सन्नन्त—जिघृक्षति—ते

ग्रह् + तुम् = ग्रहीतुम्   सोपसर्ग प्रयोग—

ग्रह् + तव्य = ग्रहीतव्यः (-व्या) अनु + ग्रह् = अनुगृह्णाति = अनुग्रह करता है।
ग्रह् + अनीय = ग्रहणीयः (-या) अव + ग्रह् — अवगृह्णाति = पकड़ता है।
ग्रह् + शतृ = गृह्णन् (-ती) प्रति + ग्रह् = प्रतिगृह्णाति = लेता है।
ग्रह् + शानच् = गृह्णानः (-ना) सम् + ग्रह् = संग्रह करता है।

बन्ध् = बाँधना
(परस्मैपद)

लट्—वर्तमानकाल

प्रथम पुरुष	बध्नाति	बध्नीतः	बध्नन्ति
मध्यम पुरुष	बध्नासि	बध्नीथः	बध्नीथ
उत्तम पुरुष	बध्नामि	बध्नीवः	बध्नीमः

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	भन्त्स्यति	भन्स्यतः	भन्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	भन्त्स्यसि	भन्त्स्यथः	भन्त्स्यथ
उत्तम पुरुष	भन्त्स्यामि	भन्त्यावः	भन्त्स्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	बध्नातु	बध्नीताम्	बध्नन्तु
मध्यम पुरुष	बधान	बध्नीतम्	बध्नीत
उत्तम पुरुष	बध्नानि	बध्नाव	बध्नाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अबध्नात्	अबध्नीताम्	अबध्नन्
मध्यम पुरुष	अबध्नाः	अबध्नीतम्	अबध्नीत
उत्तम पुरुष	अबध्नाम्	अबध्नीव	अबध्नीम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	बध्नीयात्	बध्नीयाताम्	बध्नीयुः
मध्यम पुरुष	बध्नीयाः	बध्नीयातम्	बध्नीयात
उत्तम पुरुष	बध्नीयाम्	बध्नीयाव	बध्नीयाम

कृदन्तान्त रूप-रचना —

बध् + क्त = बद्धः, बद्धा, बद्धम् प्रेरणार्थक — बन्धयति — ते
बन्ध् + क्तवत् = बद्धवान्, -वती कर्मवाच्य — बध्यते
बध् + क्त्वा = बद्ध्वा सोपसर्ग प्रयोग —
बन्ध् + तुम् = बद्धुम् अनुबध्नाति = साथ बँधता है।
बन्ध् + अनीय = बन्धनीयः, बन्धनीया, बन्धनीयम्
बन्ध् + तव्य = बद्धव्यः, बद्धव्या निबध्नाति = हठ करता है।
बन्ध् + शतृ = बध्नन् (बध्नती)

क्र्यादिगण की कुछ आवश्यक धातुएँ

मुष् (चुराना) मुष्णाति, मोषिष्यति, मुष्णातु, अमुष्णात्, मुष्णीयात् । मोषयति । मुष्यते । मुमोषिषति । मुषित । मुषित्वा मोषितुम् । मोषितव्य । मोषणीय । मुष्णन् ।

लू (काटना) लुनाति, लविष्यति, लुनातु, अलुनात्, लुनीयात् ।

अश् (खाना) अश्नाति, अशिष्यति, अश्नातु, आश्नात्, अश्नीयात् ।

पू (पवित्र करना) पुनाति, पविष्यति, पुनातु, अपुनात्, पुनीयात् ।

पुष् (पुष्ट करना, पालना) पुष्णाति, पोषिष्यति, पुष्णातु, अपुष्णात्, पुष्णीयात् ।

प्री (प्रसन्न करना) प्रीणाति, प्रेष्यति, प्रीणातु, अप्रीणात् प्रीणीयात् ।

मन्थ् (मथना) मथ्नाति, मथिष्यति, मथ्नातु, अमथ्नात्, मथ्नीयात् ।

क्लिश् (कष्ट देना) क्लिश्नाति, क्लेशिष्यति, क्लिश्नातु, अक्लिश्नात्, क्लिश्नीयात् ।

उदाहरण—

१. वह मित्र होता है जो सहायता देता है,	यः साहाय्यं ददाति, सः सुहृद् भवति ।
२. गेहूँ को कौन खरीदेगा ?	गोधूमान् कः क्रेष्यति ?
३. परिश्रम करे, खूब पढ़े, इनाम पाये ।	परिश्रमं कुर्यात्, बहु पठेत्, पारितोषिकं च गृह्णीयात् ।
४. उसने दूध से शरीर पुष्ट किया ।	स दुग्धेन शरीरमपुष्णात् ।
५. चूहे अन्न को रात दिन चुराते हैं ।	मूषकाः अन्नं रात्रिदिवं मुष्णन्ति ।
६. मैं मीठी बातों से कान्ता का चित्त चुराऊँगी ।	अहं मधुरया वाचा कान्तायाः चित्तं मोषिष्यामि ।
७. बन्धन-रहित घोर अन्धकार के समान बादल रे स्वच्छन्द ।	हे निर्बन्ध ! अन्धतम-सम वारिद ! रे स्वच्छन्द !
८. जो ऊपर को काटता है, यह 'उल्लू' कहा जाता है ।	यः ऊर्ध्वं लुनाति स 'उलूकः' इत्युच्यते ।
९. माता प्यार से सन्तान को पालती-पोषती है ।	माता प्रेम्णा सन्तर्ति पुष्णाति ।

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) बनिया सस्ते में खरीदकर महँगा बेचता था ।

(२) बकरियों को बेचकर घोड़े खरीदूँगा ।

(३) आप पंडित के उपदेश को हृदय से ग्रहण करें ।

(४) तुझे रुपये ग्रहण करने चाहिएँ ।

(५) हमारा उपदेश उससे नहीं ग्रहण किया जाता ।

(६) जो कहते हैं कि वे बहुत जानते हैं, वास्तव में वे कुछ नहीं जानते।
(७) गुरु ही ज्ञान को ग्रहण करवाता है।
(८) गीले पैर से खाना खाये, पर सोये नहीं।
(९) ठग लोग बेचारे मुसाफिर का धन ठगते हैं।

(२) रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में दिए धातु के उचित रूप से कीजिए—
(१) किं पादत्राणं त्वां······(क्लिश्)।
(२) घृतमंगानि······(पुष्)।
(३) आत्मा अविज्ञातः विजानताम् विज्ञातः चाविजानताम्।
(४) पिता पुत्रं······(ग्रह्) आगच्छति।
(५) नाहं······(ज्ञा) यत् त्वं किं······(कृ)।
(६) अहं गतवर्षे एतत् गृहम्······(क्री)।
(७) कुपुत्रः पितरौ······(क्लेश्)।
(८) यशोदा कृष्णं नवनीतेन···(पुष्)।

(३) इनके लोट् मध्यम पुरुष द्विवचन में रूप लिखिए—
क्री, ग्रह्, ज्ञान, मुष्, बन्ध्, पुष्।

(४) इनके धातु, काल, पुरुष और वचन लिखिए—
अक्रीणात्, क्रीणातु, जानाति, ज्ञास्यते, गृह्णातु, प्रतिगृह्णाति, अमुष्णात्, मोषिष्यामि।

(५) बन्ध्, मुष्, ज्ञा के विधिलिङ् प्रथम पुरुष के रूप बताइए।

(६) पू, लू, स्तु के लट्, लोट्, लृट् के उत्तम पुरुष एकवचन के रूप बताइए।

(७) इनके लिए संस्कृत के क्रियापद लिखिए—
मरते हैं, भर रहे थे, (तुम) पकड़ो, (तुम सब) बांधो, जानते हो, डरूँ, मार दिया, भोगेगा, खाइए।

(८) इन क्रियापदों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—
लविष्यति, अश्नीयात्, पुष्णातु, प्रीणाति, अक्लिश्नात्।

एकादश अध्याय

चुरादिगण

'अय्' विकरण

चुरादिगण का विकरण णिच् (अय्) है। चुरादिगण की सभी धातु प्रायः उभयपदी हैं। इनके रूप भ्वादिगण की धातुओं के समान होते हैं।

चुर्—चोरी करना

(परस्मैपद)

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
म० पु०	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उ० पु०	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लृट्—भविष्यत्काल

प्र० पु०	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
म० पु०	चोरयिष्यसि	चोरियष्यथः	चोरयिष्यथ
उ० पु०	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्र० पु०	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
म० पु०	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उ० पु०	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

लङ्—भूतकाल

प्र० पु०	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
म० पु०	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उ० पु०	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

विधिलिङ् लकार

प्र० पु०	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
म० पु०	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उ० पु०	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

(आत्मनेपद)

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते
म० पु०	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
उ० पु०	चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे

लृट् लकार—भविष्यत्काल

प्र० पु०	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	चोरयिष्यन्ते
म० पु०	चोरयिष्यसे	चोरयिष्येथे	चोरयिष्यध्वे
उ० पु०	चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

प्र० पु०	चोरयताम्	चोरयेताम्	चोरयन्ताम्
म० पु०	चोरयस्व	चोरयेथाम्	चोरयध्वम्
उ० पु०	चोरयै	चोरयावहै	चोरयामहै

लङ्—भूतकाल

प्र० पु०	अचोरयत	अचोरयेताम्	अचोरयन्त
म० पु०	अचोरयथाः	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्
उ० पु०	अचोरये	अचोरयावहि	अचोरयामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	चोरयेत	चोरयेयाताम्	चोरयेरन्
म० पु०	चोरयेथाः	चोरयेयाथाम्	चोरयेध्वम्
उ० पु०	चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेवहि

कृदन्तान्त रूप-रचना—

चुर्+क्त=चोरितः, चोरिता, चोरितम्

चुर्+क्तवत्=चोरितवान् (-वती)

चुर्+क्त्वा=चोरयित्वा

चुर्+तुम्=चोरयितुम्

चुर्+तव्य=चोरयितव्यः, चोरयितव्या, चोरयितव्यम्

चुर्+अनीय=चोरणीयः, चोरणीया, चोरणीयम्

चुर्+शतृ=चोरयन्, चोरयन्ती, चोरयत्

चुर्+शानच्=चोरयमाणः, चोरयमाणा

प्रेरणार्थक—चोरयति—ते

कर्मवाच्य—चोर्यते

सन्नन्त—चुचोरयिषति

पृ (पूर्)—भरना

(परस्मैपद)

लट्—वर्तमानकाल

प्रथम पुरुष	पूरयति	पूरयतः	पूरयन्ति

मध्यम पुरुष	पूरयसि	पूरयथः	पूरयथ
उत्तम पुरुष	पूरयामि	पूरयावः	पूरयामः

लृट्—भविष्यत्काल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पूरयिष्यति	पूरयिष्यतः	पूरयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पूरयिष्यसि	पूरयिष्यथः	पूरयिष्यथ
उत्तम पुरुष	पूरयिष्यामि	पूरयिष्यावः	पूरयिष्यामः

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	पूरयतु	पूरयताम्	पूरयन्तु
मध्यम पुरुष	पूरय	पूरयतम्	पूरयत
उत्तम पुरुष	पूरयाणि	पूरयाव	पूरयाम

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अपूरयत्	अपूरयताम्	अपूरयन्
मध्यम पुरुष	अपूरयः	अपूरयतम्	अपूरयत
उत्तम पुरुष	अपूरयम्	अपूरयाव	अपूरयाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	पूरयेत्	पूरयेताम्	पूरयेयुः
मध्यम पुरुष	पूरयेः	पूरयेतम्	पूरयेत
उत्तम पुरुष	पूरयेयम्	पूरयेव	पूरयेम:

(आत्मनेपद)

लट्—वर्तमानकाल

प्रथम पुरुष	पूरयते	पूरयेते	पूरयन्ते
मध्यम पुरुष	पूरयसे	पूरयेथे	पूरयध्वे
उत्तम पुरुष	पूरये	पूरयावहे	पूरयामहे

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	पूरयिष्यते	पूरयिष्येते	पूरयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	पूरयिष्यसे	पूरयिष्येथे	पूरयिष्यध्वे
उत्तम तुरुष	पूरयिष्ये	पूरयिष्यावहे	पूरयिष्यामहें

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	पूरयताम्	पूरयेताम्	पूरयन्ताम्
मध्यम पुरुष	पूरयस्व	पूरयेथाम्	पूरयध्वम्
उत्तम पुरुष	पूरयै	पूरयावहै	पूरयामहै

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अपूरयत	अपूरयेताम्	अपूरयन्त
मध्यम पुरुष	अपूरयथाः	अपूरयेथाम्	अपूरयध्वम्

उत्तम पुरुष	अपूरये	अपूरयावहि	अपूरयामहि

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	पूरयेत	पूरयेयाताम्	पूरयेरन्
मध्यम पुरुष	पूरयथाः	पूरयेयाथाम्	पूरयेध्वम्
उत्तम पुरुष	पूरयेय	पूरयेवहि	पूरयेमहि

कृदन्तान्त रूप-रचना—

पूर् + क्त = पूरितः, पूरिता, पूरितम् प्रेरणार्थक—पूरयति-ते
पूर् + क्तवत् = पूरितवान् (-वती) कर्मवाच्य—पूर्यते
पूर् + क्त्वा = पूरयित्वा सन्नन्त—पुपूरयिषति
पूर् + तुम् = पूरयितुम्
पूर् + तव्य = पूरयितव्यः, पूरयितव्या, पूरयितव्यम्
पूर् + शतृ + पूरयन्, पूरयन्ती, पूरयत्
पूर् + शानच् = पूरयमाणः, पूरयमाणा, पूरयमाणम्
पूर् + अनीय = पूरणीयः, पूरणीया, पूरणीयम् ।

चुरादिगण की कुछ अन्य आवश्यक धातुएं

भक्ष् = खाना
(परस्मै०) भक्षयति, भक्षयिष्यति, भक्षयतु, अभक्षयत्, भक्षयेत् ।
(आत्मने०) भक्षयते, भक्षयिष्यते, भक्षयताम्, अभक्षयत, भक्षयेत ।

कृदन्तान्त रूप-रचना—

भक्ष् + क्त = भक्षितः, भक्षिता, भक्षितम्, प्रेरणार्थक—भक्षयति-ते
भक्ष् + क्तवत् = भक्षितवान्, (-वती) कर्मवाच्य—भक्ष्यते
भक्ष् + क्त्वा = भक्षयित्वा सन्नन्त—बिभक्षयिषति
भक्ष् + तुम् = भक्षयितुम्
भक्ष् + तव्य = भक्षयितव्यः (-व्या, -व्यम्)
भक्ष् + शतृ = भक्षयन्, भक्षयन्ती
भक्ष् + शानच् = भक्षयमाणः, भक्षयमाणा
भक्ष् + अनीय = भक्षणीयः, भक्षणीया, भक्षणीयम् ।

तुल् = तोलना ।
(परस्मै०) तोलयति, तोलयिष्यति, तोलयतु, अतोलयत्, तोलयेत् ।
(आत्मने०) तोलयते, तोलयिष्यते, तोलयताम्, अतोलयत तोलयेत ।

कृदन्तान्त रूप-रचना—

तुल् + क्त = तोलितः, तोलिता, तोलितम् प्रेरणार्थक —तोलयति—ते
तुल् + क्तवत् = तोलितवान् (-वती) कर्मवाच्य—तोल्यते
तुल् + क्त्वा = तोलयित्वा सन्नन्त—तुतूलयिषति
तुल् + तुम् = तोलयितुम्

तुल्+तव्य=तोलयितव्यः, तोलयितव्या, तोलयितव्यम्
तुल्+शतृ=तोलयन्, तोलयन्ती
तुल्+शानच्=तोलयमानः, तोलयमाना, तोलयमानम्
तुल्+अनीय=तोलनीयः, तोलनीया, तोलनीयम्

घुष्=घोषणा करना।
(परस्मै०) घोषयति, घोषयिष्यति, घोषयतु, अघोषयत्, घोषयेत्।
(आत्मने०) घोषयते, घोषयिष्यते, घोषयताम्, अघोषयत, घोषयेत।

कृदन्तान्त रूप-रचना—

घुष्+क्त=घोषितः, घोषिता, घोषितम्   प्रेरणार्थक—घोषयति—ते
घुष्+क्तवत्=घोषितवान् (-वती)   कर्मवाच्य—घोष्यते
घुष्+तुम्=घोषयितुम्   सन्नन्त—जुघूषयिषति
घुष्+क्त्वा=घोषयित्वा
घुष्+तव्य=घोषयितव्यः, घोषयितव्या, घोषयितव्यम्
घुष्+अनीय=घोषणीयः, घोषणीया
घुष्+शतृ=घोषयन्, घोषयन्ती
घुष्+शानच्=घोषयमाणः, घोषयमाणा

गण्=गिनना।
(परस्मै०) गणयति, गणयिष्यति, गणयतु, अगणयत्, गणयेत्।
(आत्मने०) गणयते, गणयिष्यते, गणयताम्, अगणयत, गणयेत।

कृदन्तान्त रूप-रचना—

गण्+क्त=गणितः, गणिता, गणितम्   प्रेरणार्थक—गणयति-ते
गण्+क्तवत्=गणितवान्   कर्मवाच्य—गण्यते
गण्+क्त्वा=गणयित्वा   सन्नन्त—जिगणयिषति
गण्+तुम्=गणयितुम्
गण्+तव्य=गणयितव्यः (-तव्या, -तव्यम्)
गण्+अनीय=गणनीयः, गणनीया, गणनीयम्।
गण्+शतृ=गणयन्
गण्+शानच्=गणयमानः (-माना, -मानम्)

पूज्=पूजा करना।
(परस्मै०) पूजयति, पूजयिष्यति, पूजयतु, अपूजयत्, पूजयेत्।
(आत्मने०) पूजयते, पूजयिष्यते, पूजयताम् अपूजयत, पूजयेत।

कृदन्तान्त रूप-रचना—

पूज्+क्त=पूजितः, पूजिता, पूजितम्
पूज्+क्तवत्=पूजितवान् (-वती)   प्रेरणार्थक—पूजयति—ते
पूज्+त्वा=पूजयित्वा   कर्मवाच्य—पूज्यते

पूज् + तुम् = पूजयितुम् सन्नन्त—पुपूजयिषति
पूज् + तव्य = पूजयितव्यः (-तव्या, -तव्यम्)
पूज् + शतृ = पूजयन्, पूजयन्ती
पूज् + शानच् = पूजयमानः, पूजयमाना, पूजयमानम्
पूज् + अनीय = पूजनीयः, पूजनीया, पूजनीयम्

रच् = रचना करना, बनाना।

(परस्मै०) रचयति, रचयिष्यति, रचयतु, अरचयत्, रचयेत्।
(आत्मने०) रचयते, रचयिष्यते, रचयताम्, अरचयत, रचयेत।

कृदन्तान्त रूप-रचना—

रच् + क्त = रचितः, रचिता, रचितम् प्रेरणार्थक—रचयति–ते
रच् + क्तवत् = रचितवान् (-वती) कर्मवाच्य—रच्यते
रच् + क्त्वा = रचयित्वा सन्नन्त—रिरचयिषति
रच् + तुम् = रचयितुम्
रच् + तव्य = रचयितव्यः रचयितव्या, रचयितव्यम्
रच् + अनीय = रचनीयः, रचनीया, रचनीयम्
रच् + शतृ = रचयन्, रचयन्ती
रच् + शानच् = रचयमाणः, रचयमाणा

वर्ण् = वर्णन करना।

(परस्मै०) वर्णयति, वर्णयिष्यति, वर्णयतु, अवर्णयत्, वर्णयेत्।
(आत्मने०) वर्णयते, वर्णयिष्यते, वर्णयताम्, अवर्ण॰॰त, वर्णयेत।

कृदन्तान्त रूप-रचना—

वर्ण् + क्त + = वर्णितः, वर्णिता, वर्णितम्
वर्ण् + क्तवत् = वर्णितवान् (-वती,) प्रेरणार्थक—वर्णयति—ते
वर्ण् + क्त्वा = वर्णयित्वा कर्मवाच्य—वर्ण्यते
वर्ण् + तुम् = वर्णयितुम् सन्नन्त—विवर्णयिषति
वर्ण + तव्य = वर्णयितव्यः, वर्णयितव्या, वर्णयितव्यम्
वर्ण् + अनीय = वर्णनीयः, वर्णनीया, वर्णनीयम्
वर्ण् + शतृ = वर्णयन्, वर्णयन्ती
वर्ण् + शानच् = वर्णयमानः, वर्णयमाना

पाल् = पालन करना।

(परस्मै०) पालयति, पालयिष्यति, पालयतु, अपालयत्, पालयेत्।
(आत्मने०) पालयते, पालयिष्यते, पालयताम्, अपालयत, पालयेत।

कृदन्तान्त रूप-रचना

पाल् + क्त = पालितः, पालिता, पालितम् प्रेरणार्थक—पालयति—ते
पाल + क्तवत् = पालितवान् (-वती) कर्मवाच्य—पाल्यते

पाल्+क्त्वा=पालयित्वा सन्नन्त—पिपालयिषति
पाल्+तुम्=पालयितुम्
पाल्+तव्य=पालयितव्यः, पालयितव्या
पाल्+शतृ=पालयन्, पालयन्ती
पाल्+शानच्=पालयमानः, पालयमाना, पालयमानम्
पाल्+अनीय=पालनीयः, पालनीया, पालनीयम्

चिन्त् (सोचना) चिन्तयति, चिन्तयिष्यति, चिन्तयतु, अचिन्तयत्, चिन्तयेत् ।
चिन्तयते, चिन्तयिष्यते, चिन्तयताम्, अचिन्तयत, चिन्तयेत ।
प्रेरणा० चिन्तयति । चिन्त्यते । चिचिन्तयिषति । चिन्तित । चिन्तयित्वा ।
चिन्तयितुम् । चिन्तयितव्य । चिन्तनीय । चिन्तयत् । चिन्तयमान ।

तड् (ताड्—पीटना) ताडयति-ते, ताडयिष्यति-ते, ताडयतु-ताम्, अताडयत्-त ।
ताडयेत्-त । प्रे० —ताडयति । ताडयते । तिताडयिषति । ताडित । ताडयित्वा । ताडयितव्य । ताडनीय । ताडयत् । ताडयमान ।

कथ् (कहना) कथयति-ते । कथयिष्यति-ते । कथयतु-ताम् । अकथयत्-त ।
कथयेत्-त । प्रे० —कथयति । कथ्यते । चिकथयिषति । कथित ।
कथयित्वा । कथयितुम् । कथयितव्य । कथनीय । कथयत् । कथयमान ।

स्पृह्=चाहना ।
(परस्मै०) स्पृहयति, स्पृहयिष्यति, स्पृहयतु, अस्पृहयत्, स्पृहयेत् ।
(आत्मने०) स्पृहयते, स्पृहयिष्यते, स्पृहयताम्, अस्पृहयत, स्पृहयेत ।

सूच्—सूचना देना ।
(परस्मै०) सूचयति, सूचयिष्यति, सूचयतु, असूचयत्, सूचयेत् ।
(आत्मने०) सूचयते, सूचयिष्यते, सूचयताम्, असूचयत, सूचयेत ।

वर्=चुनना, पसन्द करना ।
(परस्मै०) वरयति, वरयिष्यति, वरयतु, अवरयत्, वरयेत् ।
(आत्मने०) वरयते, वरयिष्यते, वरयताम्, अवरयत, वरयेत ।

प्रीण्=प्रसन्न करना ।
(परस्मै०) प्रीणयति, प्रीणयिष्यति, प्रीणयतु, अप्रीणयत्, प्रीणयेत् ।
(आत्मने०) प्रीणयते, प्रीणयिष्यते प्रीणयताम् अप्रीणयत, प्रीणयेत ।

उदाहरण—

१. फूलों का सौन्दर्य किसका चित्त नहीं चुराता ?	पुष्पाणां सौन्दर्यं कस्य चित्तं न चोरयति ?
२. क्या मैंने तुम्हारी भैंस चुराई है ?	किमहं तव महिषीमचोरयम् ?
३. कृष्ण की तरह गौएँ चराओगे या माखन चुराओगे ?	कृष्ण इव गाश्चारयिष्यथ नवनीतं वा चोरयिष्यथ ?

४. सुलोचना के नेत्र किसका मन नहीं चुराते ?	सुलोचनायाः नेत्रे कस्य मनः न चोरयेते ?
५. चोर धन चुराते हैं तो न्यायाधीश उन्हें दण्ड देते हैं।	चौराः धनं चोरयन्ते, तर्हि न्यायाधीशाः तान् दण्डयन्ते ।
६. जो छात्र गड़बड़ करेंगे उन्हें गुरु दण्ड देंगे।	ये बालाः उपद्रवं करिष्यन्ति तान् गुरवः दण्डयिष्यन्ति ।
७. कौन कहता है कि मैं पुत्रों को नहीं पालता ?	कः कथयति यदहं पुत्रान् न पालयामि ?
८. पिता ने बेचारे पुत्र को बिना कारण ही मारा।	पिता वराकं पुत्रमकारणम् एवाताडयत् ।

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) न्यायाधीश अपराधी को क्यों नहीं दण्ड देते ?
(२) उसके पास बहुत पैसा है, वह क्यों चिन्ता करे ?
(३) बालक उद्दंड है, इसे क्यों नहीं पीटूंगा ?
(४) कहिए, मैं आपकी कैसे सेवा करूं ?
(५) बालिकाएँ सारे फल खा जातीं तो क्या हानि थी ?
(६) बर्तनों को कौन धोये ?
(७) व्यापारी ठीक तरह तोलें, कोई कम न तोले ।
(८) तुम अपने वचनों का पालन करोगे तो सुखी रहोगे ।
(९) जहाँ नारियाँ पूजी जाती हैं, वहाँ देवता वास करते हैं ।
(१०) सौ तक गिनती गिनो ।
(११) क्या आप सेक्रेट्री (सचिव) को सूचित कर देंगे ।

(२) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(१) श्वा सिंहासनस्थोऽपि किं नाश्नाति उपानहम् ।
(२) यः यथा स्वकृतं कर्म वपति स जनः स्वयमेव तथैव लुनाति ।
(३) अलुनाल्लक्ष्मीपालः स्वदुराचारसस्यम् ।
(४) कोऽयं यो जानाति विदेशीयानां रहस्यम् ?
(५) गोपालदेवस्तु सर्वदा रेखागणितस्य विषयम् एव जिज्ञासति ।
(६) न ज्ञायते कदा भगवान् भास्करः देविष्यति ।
(७) प्रत्यहमधुना शीतं वर्धते ।
(८) पूर्णिमायां यदा चन्द्रमसः पूर्णबिम्बमाकाशे दीव्यति तदा निर्मलं नभः सर्वेषां मनांसि प्रीणयति ।
(९) पश्यत, कोऽयं तूष्णीकः वस्तूनि समादाय चोर इवापसरति ।

(१०) नगरेषु निवासगृहाणां शोचनीयाऽवस्था वर्तते, अनायासेन आवासोचितं गृहं न प्राप्यते ।

(३) रूप लिखिए—

(१) भुज्, युज् तथा मृ—विधिलिङ् व लोट् लकार में ।

(२) चिन्त्, पुष्, ज्ञा तथा क्री के लोट् तथा लङ् लकार में (दोनों पदों—परस्मै०, आत्मने०—में)

(३) कथ्, तड्, तुल् तथा घोष् के लङ् व लृट् लकार में (दोनों पदों में)

(४) इनके प्रकृति-प्रत्यय (धातु, लकार, पुरुष और वचन) लिखिए—
पूजयति, तोलयतु, अक्षालयत्, सूचयेत्, पालयिष्यत ।

(५) नीचे लिखे पदों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—
चूर्णयतु, अचिन्तयम्, रचयेत्, गणयताम्, गणयते ।

द्वादश अध्याय

आशीर्लिङ् और लुङ् लकार

तृतीय अध्याय में बताया था कि क्रिया के कालों और अवस्थाओं को प्रकट करने के लिए लकारों का प्रयोग होता है। ये लकार दस हैं। पहले उच्चतर माध्यमिक परीक्षाओं में केवल पाँच (लट्, लृट्, लङ्, लोट्, और विधिलिङ्) लकारों के रूप और इनके प्रयोग पूछे जाते थे किन्तु अब नवीन पाठ्यक्रम में 'आशीर्लिङ्' और 'लुङ्' इन दो लकारों का और समावेश कर दिया गया है। अतः इनकी जानकारी भी विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है। इस अध्याय में इन दोनों लकारों के रूप और उनके प्रयोग दिये जाते हैं।

आशीर्लिङ्—इस लकार का प्रयोग आशीर्वाद देने में होता है, किसी के प्रति सद्भाव व्यक्त करने, कल्याण चाहने और 'चाहिए' अर्थों में भी इस लकार का प्रयोग होता है।

आशीर्लिङ् के परस्मैपद के प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यात्	यास्ताम्	यासुः
मध्यम पुरुष	याः	यास्तम्	यास्त
उत्तम पुरुष	यासम्	यास्व	यास्म

भू धातु के साथ आशीर्लिङ् के प्रत्ययों का संयोग

प्रथम पुरुष	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
मध्यम पुरुष	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
उत्तम पुरुष	भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म

आशीर्लिङ् में एक अन्य धातु के रूप

प्रथम पुरुष	पठ्यात्	पठ्यास्ताम्	पठ्यासुः
मध्यम पुरुष	पठ्याः	पठ्यास्तम्	पठ्यास्त
उत्तम पुरुष	पठ्यासम्	पठ्यास्व	पठ्यास्म

इसी प्रकार—आशीर्लिङ् में निम्नलिखित धातुओं के रूप होंगे।

रक्ष्—रक्ष्यात्। स्मृ—स्मर्यात्। श्रु—श्रूयात्।

हस्—हस्यात्। गम्—गम्यात्। यज्—इज्यात्।

खाद्—खाद्यात्। पा (पीना)—पेयात्। दा—देयात्।

वद्—उद्यात्। ह्—ह्लियात्। दृश्—दृश्यात्।

पच्—पच्यात्। नी—नीयात्। घ्रा—घ्रायात्, घ्रेयात्।

नम्—नम्यात् । जि—जीयात् । स्था—स्थेयात् ।
त्यज्—त्यज्यात् । वच्—उच्यात् । कृ—क्रियात् ।
वह्—उह्यात् । स्वप्—सुप्यात् । ग्रह्—गृह्यात् ।
वस्—उष्यात् । हन्—वध्यात् । दिव्—दीव्यात् इत्यादि ।

उदाहरण—

आपका कल्याण हो ।	भवतः कल्याणं भूयात् ।
तुम दीर्घायु होवो ।	त्वं दीर्घायुः भूयाः ।
मनुष्य ईश्वर को स्मरण करे ।	मानवः ईश्वरं स्मर्यात् ।
बच्चों को दूध पीना चाहिए ।	बालकाः दुग्धं पेयासुः ।
मैं सौ वर्ष जीऊँ ।	अहं शतं समाः जीयासम् ।
वे बुरे शब्द न बोलें ।	ते अपशब्दान् न उद्यासुः ।
नारी दान दे ।	नारी दानं देयात् ।
मोहन अच्छा काम करे ।	मोहनः शोभनं कार्यं कुर्यात् ।
मित्र, मेरी बात सुनो ।	मित्र, मम वार्तां श्रूयाः ।

लघु अभ्यास

१. निम्नलिखित अनुच्छेद का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) संसार में सबका कल्याण हो । (ख) सब लोग ईश्वर का स्मरण करें । (ग) विद्यार्थियो ! आप सब दीर्घायु और बलवान् हों। (घ) तुम्हारा कुशल हो । (ङ) लोग यज्ञ करें, ईश्वर को स्मरण करें और सुखी हों । (च) कोई बुरे शब्द न कहे । (छ) हम आशीर्वाद देते हैं कि तुम शत्रुओं को जीतो । (ज) भगवत्कथा सुनिए और सुख प्राप्त कीजिए ।

२. हस्, स्मृ, पा, हृ, श्रु और दृश् धातु के आशीर्लिङ् में 'पठ्' के समान रूप लिखिए और कण्ठस्थ कीजिए ।

लुङ् लकार

सामान्य भूतकाल को प्रकट करने के लिए 'लुङ्' लकार का प्रयोग भी होता है । प्रायः देर से हुई क्रिया के लिए ही यह लकार प्रयुक्त होता है ।

लुङ् लकार के परस्मैपद के प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	त्	ताम्	उः (अन्)
मध्यम पुरुष	:	तम्	त
उत्तम पुरुष	अम्	व	म

कई धातुओं के साथ इनमें परिवर्तन भी हो जाता है जो रूपों से ज्ञात हो जायेगा । लुङ् लकार में भी हलादि धातुओं के आदि में अ लगता है और अजादि धातुओं के आदि से आ ।

भू=होना, लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
मध्यम पुरुष	अभूः	अभूतम्	अभूत
उत्तम पुरुष	अभूवम्	अभूव	अभूम

दा=देना, लुङ्

प्रथम पुरुष	अदात्	अदाताम्	अदुः
मध्यम पुरुष	अदाः	अदातम्	अदात
उत्तम पुरुष	अदाम्	अदाव	अदाम

इसी प्रकार—निम्नलिखित धातुओं के रूप लुङ् में होंगे—

पा—अपात् । स्था=अस्थात् । घ्रा—अघ्रात् ।

गम्=जाना लुङ्

प्रथम पुरुष	अगमत्	अगमताम्	अगमन्
मध्यम पुरुष	अगमः	अगमतम्	अगमत
उत्तम पुरुष	अगमम्	अगमाव	अगमाम

इसी प्रकार 'दृश्' के 'अदर्शत्' आदि रूप होंगे।

पठ्=पढ़ना, लुङ् (दो विधि के रूप हैं)—

(पहला आदिवृद्धि रहित)

प्रथम पुरुष	अपठीत्	अपठिष्टाम्	अपठिषुः
मध्यम पुरुष	अपठीः	अपठिष्टम्	अपठिष्ट
उत्तम पुरुष	अपठिषम्	अपठिष्व	अपठिष्म

(विकल्प) (दूसरी विधि में वृद्धि सहित)

प्रथम पुरुष	अपाठीत्	अपाठिष्टाम्	अपाठिषुः
मध्यम पुरुष	अपाठीः	अपाठिष्टम्	अपाठिष्ट
उत्तम पुरुष	अपाठिषम्	अपाठिष्व	अपाठिष्म

इसी प्रकार निम्नलिखित धातुओं के आदिवृद्धि वाले रूप होंगे।

वद्—अवादीत् । पच्—अपाक्षीत् । स्मृ—अस्मार्षीत् । श्रु—अश्रौषीत् ।

कृ—अकार्षीत् । वस्—अवात्सीत् । जि—अजैषीत् । नी—अनैषीत् ।

आदिवृद्धि रहित 'अपठीत्' के समान कुछ रूप—

रक्ष्—अरक्षीत् । नम्—अनंसीत् । हस्—अहसीत् इत्यादि ।

सूचना—लुङ् लकार की संक्षिप्त जानकारी के लिए उक्त रूप पर्याप्त हैं।

आशीर्लिङ् और लुङ् लकार के आत्मनेपद के प्रत्यय एवं रूप भी आप भविष्य में पढ़ेंगे।

उदाहरण—

पक्षी सरोवरों पर चले गए=खगाः सरोवरेषु अगमन् । आपने हमारी बात

नहीं सुनी=भवान् अस्माकं वार्ता न अश्रौषीत्। अज भारत का सम्राट् हुआ है= अजः भारतस्य सम्राट् अभूत्। हरिश्चन्द्र ने विश्वामित्र को सारा राज्य दे दिया= हरिश्चन्द्रः विश्वामित्राय सम्पूर्णं राज्यम् अदात्।

क्या तूने सारी पुस्तक पढ़ी=किं त्वं सम्पूर्णं पुस्तकम् अपाठीः? हाँ, मैंने सब चित्र देखे हैं=आम्, अहं सर्वाणि चित्राणि अदर्शम्। हम सब ने शत्रुओं को जीता= वयम् शत्रून् अजैषिष्म। तुम सबने क्या-क्या काम किये?=यूयं कानि कानि कार्याणि अकार्ष्ट?

नन्द और यशोदा सदा श्रीकृष्ण को याद करते रहे=नन्दः यशोदा च सदैव श्रीकृष्णम् अस्मार्ष्टाम्।

अभ्यास

१. निम्नलिखित वाक्यों में लुङ् लकार की क्रियाएँ लगाकर संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) यह आम वृक्ष से गिर पड़ा। (ख) अच्छे छात्रों ने गुरुओं को प्रणाम किया। (ग) तुमने सत्य कहा और जीते। (घ) मैंने आज कथा नहीं सुनी? (ङ) क्या तुम खेलने नहीं गये? (च) रसोइये ने भोजन नहीं बनाया। (छ) भरत शकुन्तला का पुत्र था। (ज) श्रीकृष्ण गोकुल में रहते थे। (झ) किसान दो बैलों को खेत में ले गया। (ञ) हमने कई चलचित्र देखे।

२. नम्, नी, कृ, श्रु, जि, गम् और दा धातु के लुङ् लकार में पूरे रूप अपनी पंजिका पर लिखिए और कण्ठस्थ कीजिए।

३. निम्नलिखित रूपों में रिक्त स्थानों को पूर्ण कीजिए—

आशीर्लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	श्रूयात्	श्रूयास्ताम्	......
मध्यम पुरुष	श्रूयाः	......	श्रूयास्त
उत्तम पुरुष	....	श्रूयास्व	श्रूयास्म

लुङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	......
मध्यम पुरुष	......	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट
उत्तम पुरुष	अकार्षम्	....	अकार्ष्म

त्रयोदश अध्याय

यगन्त प्रकरण

वाच्य (Voice)

वाच्य—क्रिया के जिस रूप से, वाक्य में कर्ता, कर्म, अथवा भाव की प्रधानता जानी जाए, उसे 'वाच्य' कहते हैं। जैसेः—

(१) सः पुस्तकं पठति। (कर्ता की प्रधानता)
(२) तेन पुस्तकं पठ्यते। (कर्म की प्रधानता)
(३) श्यामेन रुद्यते। (भाव की प्रधानता)

वाच्य तीन होते हैं—(१) कर्तृवाच्य, (२) कर्मवाच्य, (३) भाववाच्य।

(१) कर्तृवाच्य—जहाँ वाक्य में कर्ता प्रधान होता है, वहाँ कर्तृवाच्य होता है। कर्तृवाच्य में कर्ता प्रथमान्त, कर्म द्वितीयान्त और क्रिया प्रायः गणों की लगती है। जैसे—

वह पुस्तक पढ़ता है = सः पुस्तकं पठति।
मैं गाँव को जाता हूँ = अहं ग्रामं गच्छामि।
तू भोजन खाता है = त्वं भोजनं खादसि।
लता ने भोजन खाया = लता भोजनम् अभक्षयत्।
कृष्ण मथुरा गया—कृष्णः मथुरामगच्छत्।
गोपाल हँसता है—गोपालः हसति।
मनोरमा नाचेगी—मनोरमा नर्तिष्यति।

(२) कर्मवाच्य—जहाँ वाक्य में कर्म प्रधान होता है वहाँ कर्मवाच्य होता है। कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार होती है; अर्थात् कर्म में प्रथमा विभक्ति हो जाती है और कर्ता में तृतीया विभक्ति। क्रिया का वचन कर्म के अनुसार होता है। इसमें धातु के अन्त में यक् (य) जुड़ता है और क्रियाओं के रूप दिवादिगण के आत्मनेपदी धातुरूपों के समान होते हैं। जैसे :—

उससे काम किया जाता है—तेन कार्यम् क्रियते।
अनिल से भोजन खाया जाता है—अनिलेन भोजनं भक्ष्यते।
कृष्ण से वन को जाया जाएगा—कृष्णेन वनं गमिष्यते।
लड़कियों से पुस्तकें पढ़ी जाती हैं—बालिकाभिः पुस्तकानि पठ्यन्ते
श्याम से ग्रन्थ लिखे जाते हैं—श्यामेन ग्रन्थाः लिख्यन्ते।
उससे ग्रन्थ पढ़ा गया—तेन ग्रन्थः अपठ्यत।
मनोरमा से धोती चुराई गई—मनोरमा धौतवस्त्रम् अचोर्यत।

राम से रावण मारा गया--रामेण रावणः अहन्यत।

छात्राओं से चित्र देखे जाते हैं=छात्राभिः चित्राणि दृश्यन्ते।

कर्मवाच्य क्रियाओं की रचना के कुछ नियम—

(क) कर्मवाच्य क्रिया बनाने के लिए धातु के साथ यक् (य) जोड़ दिया जाता है। इसलिए इसे यगन्त प्रकरण भी कहते हैं।

(ख) स्वरान्त धातुओं के अन्तिम स्वर में गुण, वृद्धि आदि नहीं होते।

(ग) कर्मवाच्य का 'य' प्रत्यय लगने से पूर्व धातु में वे सभी परिवर्तन होते हैं जो उनके परस्मैपद रूपों में होते हैं। जैसे—जि-जीय, कृ-क्रिय, स्मृ-स्मर्य, ऋ-अर्य, कॄ-कीर्य, पॄ-पूर्य, बन्ध्-बध्य, वच्-उच्य, ग्रह्-गृह्य इत्यादि।

(घ) दा, दे, दी, धा धे, गा गै, पा और हा—इनके अंतिम स्वर को दीर्घ ई आदेश हो जाता है। जैसे—

दा, दे और दी का दीय; गै का गीय; धा, धे का धीय; मा का मीय; तथा हा का हीय होकर दीयते, धीयत, मीयते आदि रूप बनते हैं।

कर्मवाच्य में क्रियाओं की रूपावली

पठ्=पढ़ना (कर्मवाच्य में रूप)

लट्—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पठ्यते	पठ्येते	पठ्यन्ते
म० पु०	पठ्यसे	पठ्येथे	पठ्यध्वे
उ० पु०	पठ्ये	पठ्यावहे	पठ्यामहे

लृट्—भविष्यत्काल

प्र० पु०	पठिष्यते	पठिष्येते	पठिष्यन्ते
म० पु०	पठिष्यसे	पठिष्येथे	पठिष्यध्वे
उ० पु०	पठिष्ये	पठिष्यावहे	पठिष्यामहे

लृट् लकार में केवल आत्मनेपद के प्रत्यय ही लगते हैं—यक् (य) नहीं जोड़ा जाता। पठ्+स्यते—पठ्+इ+स्यते=पठिष्यते।

लोट्—आज्ञार्थक

प्र० पु०	पठ्यताम्	पठ्येताम्	पठ्यन्ताम्
म० पु०	पठ्यस्व	पठ्येथाम्	पठ्यध्वम्
उ० पु०	पठ्यै	पठ्यावहै	पठ्यामहै

लङ्—भूतकाल

प्र० पु०	अपठ्यत	अपठ्येताम्	अपठ्यन्त
म० पु०	अपठ्यथाः	अपठ्येथाम्	अपठ्यध्वम्
उ० पु०	अपठ्ये	अपठ्यावहि	अपठ्यामहि

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पठ्येत	पठ्येयाताम्	पठ्येरन्
म० पु०	पठ्येथाः	पठ्येयाथाम्	पठ्येध्वम्
उ० पु०	पठ्येय	पठ्येवहि	पठ्येमहि

बुध्=जानना

लट्—वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	बुध्यते	बुध्येते	बुध्यन्ते
मध्यम पुरुष	बुध्यसे	बुध्येथे	बुध्यध्वे
उत्तम पुरुष	बुध्ये	बुध्यावहे	बुध्यामहे

लृट्—भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	बोधिष्यते	बोधिष्येते	बोधिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	बोधिष्यसे	बोधिष्येथे	बोधिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	बोधिष्ये	बोधिष्यावहे	बोधिष्यामहे

लोट्—आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	बुध्यताम्	बुध्येताम्	बुध्यन्ताम्
मध्यम पुरुष	बुध्यस्व	बुध्येथाम्	बुध्यध्वम्
उत्तम पुरुष	बुध्यै	बुध्यावहै	बुध्यामहै

लङ्—भूतकाल

प्रथम पुरुष	अबुध्यत	अबुध्येताम्	अबुध्यन्त
मध्यम पुरुष	अबुध्यथाः	अबुध्येथाम्	अबुध्यध्वम्
उत्तम पुरुष	अबुध्ये	अबुध्यावहि	अबुध्यामहि

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	बुध्येत	बुध्येयाताम्	बुध्येरन्
मध्यम पुरुष	बुध्येथाः	बुध्येयाथाम्	बुध्येध्वम्
उत्तम पुरुष	बुध्येय	बुध्येवहि	बुध्येमहि

कुछ धातुओं के लट्, लृट्, लोट् लङ् तथा विधिलिङ् लकार में, प्रथम पुरुष एकवचन के रूप यहां दिये जा रहे हैं:—

गम्=गम्य—गम्यते, गमिष्यते, गम्यताम्, अगम्यत, गम्येत ।

लिख्=लिख्य—लिख्यते लिखिष्यते, लिख्यताम्, अलिख्यत, लिख्येत ।

कृ=क्रिय—क्रियते, करिष्यते, क्रियताम्, अक्रियत, क्रियेत ।

भक्ष्=भक्ष्य—भक्ष्यते, भक्षिष्यते, भक्ष्यताम्, अभक्ष्यत, भक्ष्येत ।

इसी प्रकार अन्य सकर्मक धातुओं के साथ भी 'य' लगाकर उनके रूप 'पठ्' के समान सभी पुरुषों के तीनों वचनों में जानने चाहिएँ ।

विद्यार्थियों की सुविधा के लिए कुछ सकर्मक और अकर्मक धातुओं के रूप यहां

दिये जाते हैं :—

पा (पीना) पीयते	ग्रह् (ग्रहण करना) गृह्यते
धा (धारणा करना) धीयते	वच् (कहना) उच्यते
दा (देना) दीयते	चुर् (चुराना) चोर्यते
घ्रा (सूँघना) घ्रायते	दिव् (चमकना) दीव्यते
ह्वे (बुलाना) हूयते	प्रच्छ् (पूछना) प्रच्छ्यते,
गै (गाना) गीयते	अद् (खाना) अद्यते
नी (ले जाना) नीयते	यज् (यज्ञ करना) इज्यते
हा (छोड़ना) हीयते	जन् (पैदा होना) जायते (जन्यते)
चि (चुनना) चीयते	व्यध् (बींधना) विध्यते
शी (सोना) शय्यते	बन्ध् (बाँधना) बध्यते
जागृ (जागना) जागर्यते	रुध् (रोकना) रुध्यते
स्मृ (याद करना) स्मर्यते	वस् (रहना) उष्यते
स्तृ (फैलाना) स्तर्यते	अस् (होना) भूयते
कॄ (बिखेरना) कीर्यते	शास् (शासन करना) शिष्यते
तन् (फैलाना) तायते (तन्यते)	वन्द् (नमस्कार करना) वन्द्यते
	वह् (उठाना) उह्यते

(३) भाववाच्य—जहाँ अकर्मक (Intransitive) क्रिया का अर्थ या भाव ही प्रधान हो वहाँ भाववाच्य कहलाता है। भाववाच्य में कर्ता में तृतीया होती है और क्रिया में प्रत्येक लकार का केवल प्रथम पुरुष का एकवचन ही होता है। जैसे—

१. अकर्मक वे धातु हैं, जिनके साथ कर्म नहीं आता। इन अर्थों को प्रकट करने वाली धातु भी अकर्मक होती हैं जैसे—

लज्जा, सत्ता, स्थिति, जागरणम्, वृद्धि, क्षय, भय, जीवित, मरणम्।
शयन क्रीड़ा रुचि दीप्त्यर्थं धातुगणं तम् अकर्मकम् आहुः ॥

किशोर से रोया जाता है—किशोरेण रुद्यते।
लता से लजाया जाता है—लतया लज्यते।
शेर से गर्जा जाता है—सिंहेन गर्ज्यते।
तुझ मूढ़ से जिया जाता है—त्वया मूढेन जीव्यते।
मुझसे हँसा जाता है—मया हस्यते।
कायरों से मरा जाता है—कातरैः म्रियते।
पक्षियों से काँपा जाता है—पक्षिभिः कम्प्यते।
हमसे नहीं ठहरा जाता है—अस्माभिः न स्थीयते।
मुझसे वीर हुआ जाता है—मया वीरेण भूयते।
तुम सबसे जागा जाता है—युष्माभिः जागर्य्यते।
पशुओं से सोया जाता है—पशुभिः सुप्यते।
तुझसे डरा जाता है—त्वया भीयते।

ज्ञातव्य—अकर्मक धातुओं के भाववाच्य में प्रत्येक लकार में केवल प्रथम पुरुष का एकवचन ही होता है। द्विवचन, बहुवचन और मध्यम पुरुष, उत्तम पुरुष नहीं होते। इनके एकवचन में होने वाले रूप देखिए—

	लट्	लृट्	लोट्	लङ्	विधिलिङ्
भू—	भूयते	भविष्यते	भूयताम्	अभूयत	भूयेत
रुद्—	रुद्यते	रोदिष्यते	रुद्यताम्	अरुद्यत	रुद्येत
हस्—	हस्यते	हसिष्यते	हस्यताम्	अहस्यत	हस्येत
म्रि—	म्रियते	मरिष्यते	म्रियताम्	अम्रियत	म्रियेत
जि—	जीयते	जेष्यते	जीयताम्	अजीयत	जीयेत

वाच्य-परिवर्तन के नियम

कर्तृवाच्य की क्रिया यदि सकर्मक हो तो कर्मवाच्य में परिवर्तित होती है और यदि अकर्मक हो तो भाववाच्य में परिवर्तित हो जाती है। इसी प्रकार कर्मवाच्य और भाववाच्य की क्रिया भी कर्तृवाच्य में विपरीत होकर परिवर्तित हो सकती है। उदाहरण—

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
(क) स विद्यालयं गच्छति	तेन विद्यालयः गम्यते।
(ख) बालिका पुस्तकं पठति	बालिकया पुस्तकं पठ्यते।
(ग) स कार्यं न करोति	तेन कार्यं न क्रियते।

किस वाक्य में कौन-सा वाच्य है, यह देखने के लिए—

(१) सबसे पहले कर्ता, कर्म तथा क्रिया को ढूंढ़ो।

(२) उसके उपरान्त कर्ता और कर्म के विशेषण पर ध्यान दो।

(३) फिर यह देखो कि क्रिया सकर्मक है या अकर्मक और उसका वाच्य क्या है।

(४) क्रिया देखकर वाच्य का निश्चय करो। (तव्य, अनीय, यत्, कृत्प्रत्ययांत की क्रिया कर्तृवाच्य में कदापि नहीं होती।)

(५) यदि कर्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा हो तो वाक्य 'कर्मवाच्य' में होता है, यदि कर्ता में तृतीया हो और कर्म हो ही नहीं, अपितु क्रिया अकर्मक हो तो वाच्य 'भाववाच्य' में होता है और यदि कर्ता में प्रथमा विभक्ति हो और कर्म में द्वितीया विभक्ति हो तो वाच्य 'कर्तृवाच्य' में होता है।

(६) क्रिया जिस काल या लकार की होगी, वाच्य-परिवर्तन करने पर भी उसी काल तथा उसी लकार में होगी, उदाहरणतया भूतकाल में सः अकथयत् (कर्तृवाच्य)—तेन अकथ्यत (कर्मवाच्य)।

(७) कर्ता में जो विशेषण होंगे उनमें कर्ता के अनुसार ही विभक्ति और वचन होंगे। कर्म में जो विशेषण होंगे, उनमें कर्म के अनुसार ही विभक्ति तथा वचन होंगे। उदाहरण—

कर्तृवाच्य—वीरा: सैनिका: युध्यन्ते ।
भाववाच्य—वीरै: सैनिकै: युध्यते ।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य

कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य में परिवर्तित करने के लिए कर्ता की प्रथमा विभक्ति को तृतीया में बदल दिया जाता है। साथ ही कर्तृवाच्य में जो क्रिया कर्ता के अनुसार होती है, उसे कर्म के अनुसार कर देना पड़ता है। उदाहरण—

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
अहं पाठं पठामि	मया पाठ: पठ्यते ।
अहं बालं पश्यामि	मया बाल: दृश्यते ।
अध्यापिका प्रश्नान् प्रक्ष्यति	अध्यापिकया प्रश्ना: प्रक्ष्यन्ते ।
बाला: उत्तरं ददति	बालै: उत्तरं दीयते ।
राम: रावणवधम् अकरोत्	रामेण रावणवध: अक्रियत ।
श्यामचन्द्र: व्याकरणम् अलिखत्	श्यामचन्द्रेण व्याकरणम् अलिख्यत ।

भूतकाल में कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने के लिए 'क्त' प्रत्यय भी लगाया जाता है। उदाहरण—

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य में क्त का प्रयोग
अहं शिशुम् अपश्यम्	मया शिशु: दृष्ट: ।
अध्यापिका प्रश्नम् अपृच्छत्	अध्यापिकया प्रश्न: पृष्ट: ।
बालिका उत्तरम् अयच्छत्	बालिकया उत्तरम् दत्तम् ।
एका बालिका पाठं न अस्मरत्	एकया बालिकया पाठ: न स्मृत: ।
कमला अध्यापिकायै जलम् आनयत्	कमलया अध्यापिकायै जलम् आनीतम् ।
अध्यापिका जलम् अपिबत्	अध्यापिकया जलं पीतम् ।
इयम् अध्यापिका न अहसत्	अनया अध्यापिकया न हसितम् ।
बाला: अपि न अहसन्	बालै: अपि न हसितम् ।

भ्वादिगण की भू और पठ् धातु से लेकर चुरादिगण की धातुओं तक पुस्तकस्थ धातु-रूप-रचना के अंत में कर्मवाच्य या भाववाच्य के वर्तमानकाल का एक-एक रूप दिया गया है, वहाँ देख लें।

विशेष—अकर्मक धातु के भाववाच्य में 'क्त' के प्रयोग का रूप नपुंसकलिंग में होगा।

जैसे—बालेन स्नातम्। बालाभ्याम् स्नातम्। बालै: स्नातम् इत्यादि।

अन्यत्—

बालिकया, बालिकाभ्याम्, बालिकाभि:, अनेन, तेन, त्वया, अस्माभि: च स्नातम् (यहाँ 'स्नातम्' ही शुद्ध है—स्नाता, स्नातानि आदि अशुद्ध होंगे)।

द्विकर्मक क्रिया में कर्मवाच्य (विशेष ज्ञान के लिए)

गां दोग्धि पय: (गौ से दूध दुहता है)—यह द्विकर्मक वाक्य है। 'पय:' मुख्य

कर्म है और 'गाम्' गौण कर्म। कुछ क्रियाएं स्वभावतः द्विकर्मक होती हैं और सभी सकर्मक धातु 'प्रेरणा' में द्विकर्मक हो जाती हैं। प्रेरणार्थक अर्थात् द्विकर्मक क्रियाओं को कर्मवाच्य में बदलते हुए यह परिवर्तन होता है कि सभी धातुओं का सदा आत्मने-पदी रूप होगा और दिवादिगणी धातुओं के समान रूपावली होगी।

इन उदाहरणों को ध्यान से देखिए—

धातु	सामान्य क्रिया	कर्मवाच्य	द्विकर्मक कर्तृवाच्य	द्विकर्मक कर्मवाच्य
भू	भवति	भूयते	भावयति-ते	भाव्यते
अद्	अत्ति	अद्यते	आदयति-ते	आदय्यते
हु	जुहोति	हूयते	हावयति	हाव्यते
दिव्	दीव्यति	दीव्यते	देवयति-ते	देवय्यते
सु	सुनोति	सूयते	सावयति-ते	सावय्यते
तुद्	तुदति	तुद्यते	तोदयति-ते	तोदय्यते
रुध्	रुणद्धि	रुध्यते	रोधयति-ते	रोधय्यते
तन्	तनोति	तन्यते	तानयति-ते	तान्यते
क्री	क्रीणाति	क्रीयते	क्रापयति-ते	क्राप्यते
चुर्	चोरयति	चोर्यते	चोरयति-ते	चोर्यते
चल्	चलति	चल्यते	चालयति-ते	चाल्यते
पठ्	पठति	पठ्यते	पाठयति-ते	पाठ्यते
दृश्	पश्यति	दृश्यते	दर्शयति-ते	दर्श्यते
प्रच्छ्	पृच्छति	पृच्छ्यते	पृच्छयति-ते	प्रच्छाय्यते
दा	ददाति	दीयते	दापयति-ते	दाप्यते
स्मृ	स्मरति	स्मर्यते	स्मारयति-ते	स्मार्य्यते
नी	नयति	नीयते	नाययति-ते	नाय्यते
पा	पिबति	पीयते	पाययति-ते	पाय्यते
स्था	तिष्ठति	स्थीयते	स्थापयति-ते	स्थाप्यते

सन्नन्त का कर्मवाच्य

णिजन्त की भाँति ही सन्नन्त के भी कर्मवाच्य में प्रायः साधारण से भिन्न रूप होते हैं। जैसे—

	सन्नन्त परस्मैपद	सन्नन्त आत्मनेपद	सन्नन्त कर्मवाच्य
लट्	बुबोधिषति	बुबोधिषते	बुबोधिष्यते
लृट्	बुबोधिषिष्यति	बुबोधिषिष्यते	बुबोधिषिष्यते
लोट्	बुबोधिषतु	बुबोधिषताम्	बुबोधिष्यताम्
लङ्	अबुबोधिषत्	अबुबोधिषत	अबुबोधिष्यत

अभ्यास

(१) निम्नलिखित वाक्यों को कर्तृवाच्य में परिवर्तित कीजिए—
बालकैः स्थीयते। बालिकाभिः ग्रंथाः पठ्यन्ते। बालिकया सुप्यते। सीतया ग्रंथः पठितः। युष्माभिः रामायणं पठ्यते। बालकेन कुसुमानि दृष्टानि। युवाभ्यां पाठशालायाम् स्थीयते। अपह्रियते जीवनम् केन। त्वया स्वकार्यं कृतम्। प्रारभ्यते न खुल कार्यं विघ्नभयेन नीचैः। शुना अपरः श्वा परिभूयते। वने व्याघ्रैः मृगाः व्यापाद्यन्ते। भुवि मांसं यथा सारमेयैः खाद्यते, सलिले च मीनैः खाद्यते तथैव खे द्विजैः खाद्यते।

(२) निम्नलिखित वाक्यों का कर्मवाच्य में प्रयोग कीजिए—
रामः काशीं गतः। बालिकाः वृन्दावनम् गताः। यूयम् गृहम् आगताः। वयमायाताः गृहम्।

(३) निम्नलिखित वाक्य में से कर्मवाच्य तथा भाववाच्य के उदाहरण पृथक्-पृथक् बतलाइए—
अस्माभिरपि कृतं कर्म। रामेणापि स्मर्यते। तक्षकैः काष्ठानि भिद्यन्ते। नृपैः प्रजायै धनधान्यादिकं प्रदीयते। त्वया किमलोक्यते। बालया कथं लज्ज्यते? स्तेनेन बहूनि रत्नानि अचोर्यन्त। मुनिभिः वनेषु उष्यते।

(४) निम्नलिखित वाक्यों में वाच्य-परिवर्तन कीजिए—
(i) विद्वान् शास्त्राणि शिष्यं ब्रूते।
(ii) किंकरं कटं कारयति कृष्णः।
(iii) पुत्रः पितरमप्रीणयत् प्रज्ञया।
(iv) भ्रमरः कुसुमोदरे वसति मधु च पिबति।
(v) पुष्पाणि भृशं रोचन्ते मह्यम्।

चतुर्दश अध्याय

प्रत्ययान्त धातु

प्रत्ययान्त धातुएँ चार प्रकार की होती हैं—

(क) णिजन्त (Causals)

(ख) सन्नन्त (Desiderative)

(ग) यङन्त (Frequentative)

(घ) नामधातु (Denominative)

णिजन्त (प्रेरणार्थक) क्रिया

'प्रेरणा' अथवा 'दूसरे से कार्य करवाने' के अर्थ में दसों गणों के धातुओं से णिच् प्रत्यय होता है और फिर भ्वादिगण में निर्दिष्ट 'ति तः अन्ति' आदि क्रिया प्रत्यय लगने से जो रूप बनते हैं, उन्हें णिजन्त कहा जाता है। जैसे—करोति—कारयति (आदि)।

धातु	साधारण रूप	प्रेरणार्थक रूप
भू	भवति	भावयति, भावयते
अद्	अत्ति	आदयति
हु	जुहोति	हावयति
दिव्	दीव्यति	देवयति
सु	सुनोति	सावयति
तुद्	तुदति	तोदयति
रुध्	रुणद्धि	रोधयति
तन्	तनोति	तानयति
क्री	क्रीणाति	क्रापयति
चुर्	चोरयति	चोरयति, चोरयते

णिच् प्रत्यय—जिन धातुओं को प्रेरणार्थक बनाना हो उनके साथ 'णिच्' प्रत्यय लगाया जाता है। उदाहरणार्थ—

घोड़ा चलता है=अश्वः चलति।

सारथी घोड़े को चलाता है=सारथिः अश्वं चालयति।

बालक पढ़ता है=बालकः पठति।

गुरु बालक को पढ़ाता है=गुरुः बालकं पाठयति।

इसी प्रकार प्रत्येक धातु से प्रेरणार्थक रूप बनाते समय णिच् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। इसलिए इसे णिजन्त-क्रिया कहते हैं।

सूचना—णिच् प्रत्यय लगाने के बाद भावय, चालय, पाठय आदि धातुओं के रूप चुरादिगण की 'चोरय' आदि के समान बनते हैं। पठ् के पाँचों लकारों में रूप दिये जाते हैं। देखिए—

(पठ्) पाठय=पढ़ाना, वर्तमानकाल (लट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाठयति	पाठयतः	पाठयन्ति
म० पु०	पाठयसि	पाठयथः	पाठयथ
उ० पु०	पाठयामि	पाठयावः	पाठयामः

भविष्यत्काल (लृट्)

प्र० पु०	पाठयिष्यति	पाठयिष्यतः	पाठयिष्यन्ति
म० पु०	पाठयिष्यसि	पाठयिष्यथः	पाठयिष्यथ
उ० पु०	पाठयिष्यामि	पाठयिष्यावः	पाठयिष्यामः

भूतकाल (लङ्)

प्र० पु०	अपाठयत्	अपाठयताम्	अपाठयन्
म० पु०	अपाठयः	अपाठयतम्	अपाठयत
उ० पु०	अपाठयम्	अपाठयाव	अपाठयाम

आज्ञार्थक (लोट्)

प्र० पु०	पाठयतु	पाठयताम्	पाठयन्तु
म० पु०	पाठय	पाठयतम्	पाठयत
उ० पु०	पाठयानि	पाठयाव	पाठयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	पाठयेत्	पाठयेताम्	पाठयेयुः
म० पु०	पाठयेः	पाठयेतम्	पाठयेत
उ० पु०	पाठयेयम्	पाठयेव	पाठयेम

इसी प्रकार इस प्रकरण में आगे दी जाने वाली सभी धातुओं के रूप सभी कालों में होंगे।

१. सब धातुओं से प्रेरणार्थक रूप बनाते समय धातु के उपधा के अ को आ वृद्धि और धातु के अन्तिम इ, ई, उ, ऊ तथा ऋ को ऐ, औ तथा आर् वृद्धि होती है।

	धातु	सामान्य रूप	णिजन्त रूप
अ—	चल्	चलति	चालयति
	पठ्	पठति	पाठयति
	वद्	वदति	वादयति
इ—	चि	चयति	चाययते
	जि	जयति	जापयति
ऊ—	भू	भवति	भावयति-ते
ऋ—	स्मृ	स्मरति	स्मारयति

२. धातु के अन्तिम अक्षर से पूर्व यदि इ, उ या ऋ हो तो गुण हो जाता है :—

धातु	सामान्य रूप	णिजन्त रूप
मुद्	मोदते	मोदयते, मोदयति
बुध्	बोधते	बोधयते, बोधयति
दा	ददाति	दापयति
पा	पिबति	पाययति
अधि+इ=	अधीते	अध्यापयति
इ	एति	गमयति
लभ्	लभते	लम्भयति
हन्	हन्ति	घातयति
रुह्	रोहति	रोहयति, रोपयति

कुछ और धातुओं के प्रेरणार्थक रूप

पच्—पाचयति	ज्ञा—ज्ञापयति	आस्—आसयति
मुष्—मोषयति	आप्—आपयति	जन्—जनयति
व्यध्—व्याधयति	पाल्—पालयति	इष्—एषयति
सिच्—सेचयति-ते	ब्रू—वाचयति	शक्—शाकयति
कृ—कारयति-ते	युज्—योजयति-ते	वृत्—वर्तयति
स्पृश्—स्पर्शयति	नश्—नाशयति	भ्रम्—भ्रामयति, भ्रमयति
गम्—गमयति	दृश्—दर्शयति	स्वप्—स्वापयति-ते
स्था—स्थापयति	वृध्—वर्धयति-ते	शम्—शमयति, शामयति
नी—नाययति	नम्—नमयति, नामयति	शी—शाययति
स्तु—स्तावयति	श्वस्—श्वासयति	श्रु—श्रावयति

रूप रचना—बोधयति, बोधयिष्यति, बोधयतु, अबोधयत्, बोधयेत् (आदि) (बोधयते आदि भी होंगे)

(ख) सन्नत (Desiderative)

जाता है—जाना चाहता है। पढ़ता है—पढ़ना चाहता है। जानता है—जानना चाहता है। धारण करता है—धारण करना चाहता है। देखता है—देखना चाहता है।

ऊपर दो प्रकार के वाक्य दिए गए हैं—साधारण वाक्य और इच्छाबोधक वाक्य। इच्छाबोधक अर्थ में संस्कृत धातुओं में सन् प्रत्यय तथा कुछ विशेष कार्य होते हैं। इसीलिए इस कार्य को सन्नन्त-प्रक्रिया कहते हैं।

नियम—

१. धातु के अंत में 'सन्' प्रत्यय लग जाता है (सन् का 'न्' लुप्त होकर 'स' शेष रह जाता है)।

२. सन् के स से पूर्व इ, उ आदि स्वर हो या क् आदि व्यञ्जन हों तो स को ष हो जाता है।

३. धातु को द्वित्व हो जाता है।

४. कुछ अन्य परिवर्तन भी होते हैं, जैसे द्वित्व होने के बाद, यदि धातु का आदि अक्षर वर्गों का चतुर्थ वर्ण हो तो उसे तीसरा वर्ण हो जाता है (घ को ग, झ को ज, ढ को ड, ध को द, भ को ब)।

५. फिर क्रिया के अन्य सब कार्य साधारण नियमपूर्वक होते हैं।

६. कुछ सन्नन्त धातु आत्मनेपदी हो जाती है और कुछ परस्मैपदी तथा कुछ उभयपदी होती है।

उदाहरण—

भू—बुभूषति-ते	वि+जि—विजिगीषते	गम्—जिगमिषति
श्रु—शुश्रूषते	अधि+इ—अधिजिगांसते	अद्—जिघत्सति
ज्ञा—जिज्ञासते	मृ—मुमूर्षति	क्री—चिक्रीषते
ग्रह्—जिघृक्षति	भुज्—बुभुक्षते	वि+धा—विधित्सति
गॄ—जिगरिषति	जि—जिगीषति	हृ—जिहीर्षति-ते
कॄ—चिकरिषति	पा—पिपासति	दह्—दिधक्षति
कृ—चिकीर्षति	जीव्—जिजीविषति	शी—शिशयिषते
दृश्—दिदृक्षते	लिख्—लिलेखिषति	स्वप्—सुषुप्सति
ब्रू (वच्)—विवक्षति	रुद्—रुरुदिषति	लभ्—लिप्सते
हन्—जिघांसति	प्रच्छ्—पिपृच्छिषति	
धा—धित्सति	पच्—पिपक्षति-ते	

गन्तुम् इच्छति—जिगमिषति। पठितुमिच्छति—पिपठिषति। ज्ञातुमिच्छति—जिज्ञासते। धातुमिच्छति—धित्सति। द्रष्टुमिच्छति—दिदृक्षति। इत्यादि।

सूचना—१. सन्नन्त के रूप के आगे यदि 'आ' लगा दें तो वह संज्ञा-शब्द बन जाता है। जैसे—पिपठिषा=पढ़ने की इच्छा। जिगमिषा=जाने की इच्छा। जिजीविषा=जीने की इच्छा। जिज्ञासा=जानने की इच्छा। दिदृक्षा=देखने की इच्छा। चिकीर्षा=करने की इच्छा। विजिगीषा=जीतने की इच्छा। बुभुक्षा=भूख। पिपासा=प्यास इत्यादि। इनकी रूप-रचना लता आदि आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के समान होती है।

सूचना—२. सन्नन्त रूप के अन्त में 'उ' लगा दें तो वह कर्ता बन जाता है। जैसे—जिज्ञासुः=जानने का इच्छुक। पिपासुः=प्यासा। चिकीर्षुः=करने का इच्छुक। बुभुक्षुः=भूखा। जिजीविषुः=जीने का इच्छुक। मुमुक्षुः=मोक्ष चाहने वाला। मुमूर्षुः=मरण के समीप व्यक्ति। इत्यादि।

सूचना—३. ऊपर दिए गए सन्नन्त धातुओं के रूप परस्मैपद में भू धातु के समान और आत्मनेपद में सेव् धातु के समान सभी लकारों में होंगे। जैसे—

परस्मैपद—

	लट्	लृट्	लोट्	लङ्	विधिलिङ्
पिपठिष—	पिपठिषति	पिपठिषिष्यति	पिपठिषतु	अपिपठिषत्	पिपठिषेत्
जिगमिष=	जिगमिषति	जिगमिषिष्यति	जिगमिषतु	अजिगमिषत्	जिगमिषेत्

आत्मनेपदी—

जिज्ञास—	जिज्ञासते	जिज्ञासिष्यते	जिज्ञासताम्	अजिज्ञासत	जिज्ञासेत
शुश्रूष—	शुश्रूषते	शुश्रूषिष्यते	शुश्रूषताम्	अशुश्रूषत	शुश्रूषेत

उदाहरण—

(क)

१. माता बालक को नहलाती है=माता बालं स्नापयति।
२. बालक विद्यालय में पढ़ाए जाते हैं=बालाः विद्यालये पाठ्यन्ते।
३. चोर छुरे से लोगों को डराता है=चौरः छुरिकया जनान् भाययति (भीषयति)।
४. पिता पुत्रों को जगाता है=पिता पुत्रान् जागरयति।
५. पति पत्नी को प्रसन्न करता है=पतिः पत्नीं प्रीणयति।
६. ब्रह्मा भी मनुष्य को प्रसन्न नहीं कर सकता=ब्रह्मापि जनं रञ्जयितुं न शक्नोति।
७. माली पौधों को रोपता है=मालाकारः पादपान् रोपयति (रोहयति)
८. बुद्धिमान् चतुराई से कार्य सिद्ध करता है=बुद्धिमान् चातुर्येण कार्यं साधयति।
९. कौन किसको मारता है?=कः कं हन्ति।

(ख)

१. लड़कियाँ पढ़ना चाहती हैं=बालिकाः पिपठिषन्ति।
२. वे नये विषय जानना चाहते हैं=ते नूतनान् विषयान् जिज्ञासन्ते।
३. कौआ प्यासा था=काकः पिपासुः आसीत्।
४. वह पानी पीना चाहता था=सः जलम् अपिपासत्।
५. मैं मोह से छोटी नाव द्वारा=तितीर्षुः दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्। दुस्तर समुद्र तैरना चाहता हूँ।
६. राम! तुम वन जाना चाहते हो?=राम! त्वं वनं जिगमिषसि?
७. मैं तुम्हें पूछना चाहता हूं=अहं त्वां पिपृच्छिषामि।
८. जो कुछ कहना चाहता है कह=यत्त्वं विवक्षसि वद।
९. क्या तू गुरु की कृपा चाहता है?=किं त्वं गुरोः अनुग्रहं लिप्ससे?
१०. प्राणी जीने की इच्छा करते हैं=प्राणिनः जिजीविषन्ति।

(ग) यङन्त (Frequentative)

कोई क्रिया बार-बार या अतिशय (अधिक) की जाए तो धातु के अन्त में 'यङ्' (य) प्रत्यय लगाया जाता है। फिर धातु को द्वित्व हो जाता है। तब 'य' तक एक धातु-सी बन जाती है। उसके अनन्तर आत्मनेपद के—ते, इते, अन्ते आदि तिङ्-प्रत्यय लगकर आत्मनेपदी रूप बनते हैं। कहीं-कहीं रूपों में कुछ असाधारण परिवर्तन भी होते हैं।

(क) पठ्—पौनःपुन्येन भृशं वा पठति इति पापठ्यते=बार-बार पढ़ता है या खूब पढ़ता है।

पा—पौनःपुन्येन भृशं वा पिबति इति पेपीयते=बार-बार पीता है या खूब पीता है।

इसी प्रकार नीचे दी गई धातुओं के रूप होंगे। स्वयं अर्थ करके देखिए।

नी (ले जाना)	पौनःपुन्येन	भृशं वा	नयति	इति	नेनीयते।
कृ (करना)	"	"	करोति	"	चेक्रीयते।
तप् (तपना)	"	"	तपति	"	तातप्यते।
रुद् (रोना)	"	"	रोदिति	"	रोरुद्यते।
नृत् (नाचना)	"	"	नृत्यति	"	नरीनृत्यते।
दृश् (देखना)	"	"	पश्यति	"	दरीदृश्यते।
दा (देना)	"	"	ददाति	"	देदीयते।
स्मृ (स्मरण करना)	"	"	स्मरति	"	सास्मर्यते।
सिच् (सींचना)	"	"	सिञ्चति	"	सेसिच्यते।
जि (जीतना)	"	"	जयति	"	जेजीयते।
हन् (मरना)	"	"	हन्ति	"	जंघन्यते।
गम् (जाना)	"	"	गच्छति	"	जंगम्यते।
पच् (पकाना)	"	"	पचति	"	पापच्यते।
दंश् (डंक मारना)	"	"	दशति	"	दन्दश्यते।
गै (गाना)	"	"	गायति	"	जेगीयते।
कृष् (खोदना)	"	"	कृषति	"	चरीकृष्यते।
वृध् (बढ़ना)	"	"	वर्धते	"	वरीवृध्यते।
जप् (जपना)	"	"	जपते	"	जञ्जप्यते।

वक्तव्य—१. यङन्त में प्रत्येक धातु के आत्मनेपद में ही रूप प्रयुक्त होते हैं।

२. यङन्त धातुओं के रूप सभी लकारों में 'सेव्' धातु के समान होते हैं। कुछ धातुओं के प्रत्येक काल का १-१ रूप दिया जाता है। पूरे रूप स्वयं लिखकर अभ्यास करें।

	लट्	लृट्	लोट्	लङ्	विधिलिङ्
पापठ्य—	पापठ्यते	पापठिष्यते	पापठ्यताम्	अपापठ्यत	पापठ्येत

पेपीय—पेपीयते पेपीयिष्यते पेपीयताम् अपेपीयत पेपीयेत
रोरुद्य—रोरुद्यते रोरुदिष्यते रोरुद्यताम् अरोरुद्यत रोरुद्येत
इत्यादि ।

३. यह यङ् प्रत्यय धातु से कर्तृवाच्य में होता है कर्मवाच्य या भाववाच्य में नहीं । अतः इस यङन्त क्रिया का कर्ता प्रथमा विभक्ति का होता है । उदाहरण—

१. गोपाल बार-बार पुस्तक पढ़ता है=गोपालः पुस्तकं पापठ्यते ।
२. मोहन बार-बार शुभ कार्य करता है=मोहनः शुभं कार्यं चेक्रीयते ।
३. वर्षा में किसान बार-बार खेत खोदता है=वर्षायां कृषकः क्षेत्रं चरीकृष्यते ।
४. बालक मंत्र को बार-बार जपता है=बालकः मंत्रं जञ्जप्यते ।
५. प्यासा बहुत जल पीता है=पिपासुः जलं पेपीयते ।
६. भिखारी बार-बार आटा ले जाते हैं=भिक्षुकाः गोधूमचूर्णं नेनीयन्ते ।
७. दुष्ट बार-बार बुरा काम करता है=दुष्टः कुकर्म चेक्रीयते ।
८. चोर का पिता बहुत दुखी होता है=चौरस्य पिता तातप्यते ।

(घ) नामधातु

जब संज्ञा शब्द क्रिया के समान प्रयुक्त होते हैं तो उन्हें नामधातु कहते हैं । उन नामधातुओं के आगे कालों के लकारों के अनुसार ति तः अन्ति आदि प्रत्यय लग जाते हैं और फिर उनके रूप पठति आदि के समान होते हैं ।

नामधातु बनाने के लिए संज्ञा शब्दों से विभक्ति के अर्थों के अनुसार विविध प्रत्यय लगते हैं, फिर उन प्रत्ययों से युक्त संज्ञाएँ नामधातु बन जाती हैं ।

नीचे कुछ नामधातु के विग्रह (अर्थ) प्रत्यय और एक-एक रूप दिए जाते है :—

य (क्यच्) (परस्मैपद)

पुत्रम् (आत्मनः) इच्छति=पुत्रीयति (पुत्र+य=पुत्री+य+ति)
कविम् (आत्मनः) इच्छति=कवीयति (कवि+य+ति)
इसी प्रकार कर्त्रीयति, गव्यति, गार्गीयति ।

स् या अस् (परस्मैपद)

मधु आत्मानम् इच्छति—मधुस्यति ।
इसी प्रकार दीर्घस्यति, वृषस्यति, अश्वस्यति, क्षीरस्यति ।

अनियमित

अशितुम् इच्छति—अशनायति ।
उदकम् इच्छति—उदकीयति ।
धनम् लब्धुम् इच्छति—धनायति ।
धनी भवितुम् इच्छति—धनीयति ।

य (समान व्यवहार) (परस्मैपद)

पुत्रम् इव स्निह्यति—पुत्रीयति (छात्रम्) ।

प्रासादम् इव मनुते इति—प्रासादीयति (कुटीं भिक्षुः) ।

य (पूजा, सेवा आदि अर्थ में) (परस्मैपद)

नमः करोति=नमस्यति देवान् । चित्रीयते लोकान् ।

इसी प्रकार तपः करोति=तपस्यति, वरिवस्यति आदि ।

काम्य (परस्मैपद)

पुत्रम् कामयते इति—पुत्रकाम्यति ।

सर्पिः कामयते इति—सर्पिष्काम्यति ।

यशः कामयते इति—यशस्काम्यति ।

अ (आचरण अर्थ में) (परस्मैपद)

कृष्ण इव आचरति—कृष्णति ।

कविः इव आचरति—कवयति ।

पिता इव आचरति—पितरति ।

य (क्यङ्) (आत्मनेपद)

कृष्ण इव आचरति—कृष्णायते ।

कुमारी इव आचरति—कुमारायते ।

हरिणी इव आचरति—हरिणायते ।

पाचिका इव आचरति—पाचिकायते ।

सपत्नी इव आचरति—सपत्नीयते (सपत्नायते) ।

य (परिवृद्धि अर्थ में) (आत्मनेपद)

(अभृशः) भृशः भवति—भृशायते ।

(अमन्दः) मन्दः भवति—मन्दायते ।[1]

क्यङ् (इच्छा, कुशलता आदि में) (आत्मनेपद)

पापं चिकीर्षति—पापायते ।

कष्टं चिकीर्षति—कष्टायते ।

रोमन्थं चिकीर्षति—रोमन्थायते ।

वाष्पं मुञ्चति—वाष्पायते ।

फेनं मुञ्चति—फेनायते ।

सुखं वेदयति—सुखायते ।

शब्दं करोति—शब्दायते ।

सुदिनं करोति—सुदिनायते ।

इ (णिङ्, णिच्) (उभयपद)

उत्पुच्छयते, विपुच्छयते, परिपुच्छयते ।

मुण्डयति (माणवकम्) । मिश्रयति (अन्नम्) ।

---

१. दिशि मन्दायते तेजो दक्षिणस्यां रवेरपि ।

श्लक्ष्णयति (वस्त्रम्), वृतयति (पयः)।

इसी प्रकार हलयति, कलयति, कृतयति।

इ (आपय) (परस्मैपद)

सत्यं करोति आचष्टे वा—सत्यापयति।

इसी प्रकार अर्थापयति, वेदापयति।

इ (परस्मैपद)

सेनया अभियाति—अभिषेणति।

लोमानि अनुमार्ष्टि—अनुलोमयति।

वीणया उपगायति—उपवीणयति।

श्लोकैः उपस्तौति—उपश्लोकयति।

त्वचं गृह्णाति—त्वचयति।

चर्मणा संनह्यति—संचर्मयति।

वर्णं गृह्णाति—वर्णयति।

चूर्णैः अवध्वंसते—अवचूर्णयति।

यक् (क्रिया करने अर्थ में) (परस्मैपद)

कण्डू—कण्डूयति। वल्गु—वल्गूयति। असु—असूयति।

भिषज्—भिषज्यति। इषुध्—इषुध्यति। खेला—खेलायति।

उषस्—उषस्यति। मेधा—मेधायति।

रेखा—रेखायति। मही—महीयते।

तिरस्—तिरस्यति। अगद—अगद्यति। उरस्—उरस्यति।

पयस्—पयस्यति।

अभ्यास

(१) निर्देशानुसार रूप लिखिए—

(१) स्मृ धातु के णिजन्त में लट्, लङ् और लृट् लकारों में (केवल एकवचन)

(२) कृ धातु और दृश् धातु के सन्नन्त में लट् और लङ् लकारों में (केवल बहुवचन)

(३) गम्, लिख् और रुद् धातु के लट्, लृट् और लङ् लकार एकवचन में णिजन्त और सन्नन्त रूप लिखिए।

(२) नामधातु किसे कहते हैं? इन धातुओं में प्रकृति-प्रत्यय पृथक् करके बतलाइए और हिन्दी में अर्थ भी बतलाइए—

पुत्रीयति। मधुस्यति। यशस्काम्यति। कवयति। मन्दायते। कष्टायते। सुदिनायते। उपवीणयति। कण्डूयति।

(३) नीचे लिखे हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) अध्यापक विद्यार्थियों को चौदहवाँ पाठ पढ़ाता है। (२) मोहन राम को

गाँव भेजेगा। (३) यशोदा ने श्रीकृष्ण को दूध पिलाया। (४) भारतवासी सदा शत्रुओं को जीतना चाहते हैं। (५) विद्यार्थी अपना पाठ बार-बार स्मरण करते हैं। (६) आज यदि हमसे यह काम न किया गया तो सभी धिक्कारेंगे। (७) मित्रो ! आज यह शत्रुओं का समूह अवश्य जीता जाना चाहिए। (८) क्या तुम सबसे यह लेख लिखा गया ? (९) राम से रावण मारा गया तो तीनों लोकों में हाय-हाय का रुदन शब्द फैल गया। (१०) लड़कियों से बार-बार अध्यापिका से प्रश्न पूछे जाते हैं। (११) वह कवि की तरह चेष्टा करता है। (१२) गुरु छात्र को पुत्र की भाँति स्नेह करता है। (१३) लड़कियाँ भोजन करना चाहती हैं। (१४) मैं अभी अपने लिए मधु (शहद) चाहता हूँ।

पंचदश अध्याय

कृदन्त प्रकरण (Verbal Derivative)

(क भाग)

धातुओं से कुछ ऐसे प्रयत्न लगाये जाते हैं जिनसे संज्ञा, विशेषण और क्रिया-विशेषण आदि शब्द बन जाते हैं। उन प्रयत्नों को 'कृत्प्रत्यय' कहते हैं। कृत्प्रत्यय लगाने पर बने शब्दों को 'कृदन्त शब्द' कहते हैं। जैसे—

कृ धातु से 'तृच्' प्रत्यय होकर 'कर्तृ' शब्द बनता है और इसके 'कर्त्ता, कर्तारौ, कर्तारः' आदि रूप बनते हैं। यहाँ 'कर्तृ' यह कृदन्त शब्द है।

अनेक कृदन्त शब्द क्रिया का काम भी देते हैं। जैसे—स गतः, स एतत् कर्म कृतवान्।

मुख्य 'कृत्प्रत्यय और उनसे बनने वाले शब्द इस प्रकार हैं—

क्तवतु (तवत्)—'हुआ' या 'किया' अर्थ में प्रयुक्त होता है। पहले क् और अन्तिम उ का लोप हो जाता है। जैसे—भू+तवत्=भूतवत् (भूतवान्) (हुआ), कृतवान् (किया), चोरितवान् (चुराया)।

क्त (त) भी 'हुआ' या 'किया' अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे—कृ+त=कृतम् (किया), भुक्तम् (खाया), मोदितः (प्रसन्न हुआ), हृतम् (चुराया)।

क्त्वा (त्वा) 'करके' अर्थ में प्रयुक्त होता है। क् का लोप हो जाता है।) जैसे—भू+त्वा=भूत्वा (होकर), कृत्वा (करके), भुक्त्वा (खाकर), गत्वा (जाकर), नत्वा (झुक कर या प्रणाम करके), पीत्वा (पीकर)।

ल्यप् (य)—नञ् समास को छोड़कर, धातु से पूर्व यदि कोई उपसर्ग लगा हो तो क्त्वा के स्थान पर ल्यप् (य) हो जाता है (ल् और प् का लोप हो जाता है) जैसे—उत्+स्था+त्वा (य)=उत्थाय, आदाय, आनीय, विक्रीय, अनुभूय, प्रसूय, मलिनीभूय, विजित्य, अधीत्य, अवतीर्य।

तुमुन् (तुम्)—'करने के लिए' अर्थ में प्रयुक्त होता है। तुमुन् का उन् लुप्त हो जाता है) जैसे—भू+तुम्=भवितुम् (होने के लिए), गन्तुम् (जाने के लिए), रक्षितुम् (रक्षा करने के लिए), मोक्तुम् (छोड़ने के लिए), कर्तुम् (करने के लिए), सेवितुम् (सेवा करने के लिए)।

ज्ञातव्य—त्वा (य), तुम् प्रत्ययों से युक्त शब्द अव्यय बन जाता है।

तव्य—इसका प्रयोग 'चाहिए' के अर्थ में होता है। जैसे—भू+तव्य=भवितव्यम् (होना चाहिए), हसितव्यम् (हँसना चाहिए), पठितव्यम् (पढ़ना चाहिए), गन्तव्यम् (जाना चाहिए), चोरयितव्यम् (चुराना चाहिए), भक्षयितव्यम् (खाना चाहिए)।

अनीयर्—इसका प्रयोग 'योग्य' अर्थ में होता है, र् का लोप हो जाता है। जैसे—

भू+अनीय=भवनीयः (होने योग्य) (पुं०), पठनीयः (पढ़ने योग्य), नमनीयः (झुकने योग्य), दर्शनीयः (देखने योग्य), स्मरणीयम् (याद करने योग्य) (नपुं०) शयनीयम् (सोने के योग्य), भरणीयम् (पालन-पोषण के योग्य), हवनीयम्, (हवन करने के योग्य), चिन्तनीयम् (सोचने योग्य), कथनीयम् (कहने योग्य), ताडनीया (पीटने के योग्य) (स्त्री०)।

यत् [य] का प्रयोग योग्य अर्थ में होता है, त् का लोप हो जाता है। जैसे—भू+य =भव्यः [होने योग्य, उचित रूप में], गम्यम् [जाने योग्य], दृश्यम् [देखने योग्य], पेयम् [पीने योग्य], सेव्यम् [सेवा करने के योग्य], लभ्यः [पाने योग्य], नेयम् [ले जाने योग्य], आ+नेयम् [लाने योग्य], स्तुत्यः [स्तुति करने योग्य] वाच्यः [कहने योग्य], दुह्यम् [दुहने योग्य], वध्यः [मारने योग्य], वेद्यः [जानने योग्य।]

कृदन्त शब्दों के रूप

१. भ्वादिगण –

धातु	क्तवतु	क्त	क्त्वा	तुमुन्
भू	भूतवान्	भूतः	भूत्वा	भवितुम्
हस्	हसितवान्	हसितः	हसित्वा	हसितुम्
पठ्	पठितवान्	पठितः	पठित्वा	पठितुम्
रक्ष्	रक्षितवान्	रक्षितः	रक्षित्वा	रक्षितुम्
पच्	पक्ववान्	पक्वः	पक्त्वा	पक्तुम्
बद्	बदितवान्	बदितः	बदित्वा	वदितुम्
नम्	नतवान्	नतः	नत्वा	नन्तुम्
गम्	गतवान्	गतः	गत्वा	गन्तुम्
दृश्	दृष्टवान्	दृष्टः	दृष्ट्वा	द्रष्टुम्
सद्	सन्नवान्	सन्नः	सत्त्वा	सत्तुम्
स्था	स्थितवान्	स्थितः	स्थित्वा	स्थातुम्
स्मृ	स्मृतवान्	स्मृतः	स्मृत्वा	स्मर्तुम्
पा	पीतवान्	पीतः	पीत्वा	पातुम्
जि	जितवान्	जितः	जित्वा	जेतुम्
सेव्	सेवितवान्	सेवितः	सेवित्वा	सेवितुम्
लभ्	लब्धवान्	लब्धः	लब्ध्वा	लब्धुम्
वृत्	वृत्तवान्	वृत्तम्	वृत्त्वा	वर्तितुम्
वृध्	वृद्धवान्	वृद्धः	वर्द्धित्वा	वर्द्धितुम्
ईक्ष्	ईक्षितवान्	ईक्षितः	ईक्षित्वा	ईक्षितुम्
मुद्	मोदितवान्	मोदितः	मोदित्वा	मोदितुम्
	मुदितवान्	मुदितः	मुदित्वा	
सह्	सोढवान्	सोढः	सोढ्वा, सहित्वा	सोढुम्

शतृ [अत्] तथा शानच् [आन, मान]

परस्मैपदी धातुओं में शतृ [अत्] प्रत्यय 'करता हुआ' अर्थ में लगता है। श् और ऋ का लोप हो जाता है। जैसे—[भू+अत्=भवत्] भवन् [होता हुआ], हसन् [हँसता हुआ], पठन् [पढ़ता हुआ], रक्षन् [रक्षा करता हुआ], पचन् [पकाता हुआ], वदन् [कहता हुआ], तिष्ठन् [ठहरता हुआ], स्मरन् [याद करता हुआ]।

'करता हुआ' इसी अर्थ में आत्मनेपदी धातुओं में शानच् प्रत्यय लगता है (श् और च् का लोप हो जाता है। आन अनेक स्थानों पर 'मान' में बदलकर प्रयुक्त होता है। जैसे—सेव्+मान=सेवमानः (सेवा करता हुआ), लभमानः (पाता हुआ), वर्तमानः (विद्यमान होता हुआ), वर्धमानः (बढ़ता हुआ), ईक्षमाणः (देखता हुआ), ब्रुवाणः (कहता हुआ), क्रीणानः (खरीदता हुआ)।

वैसे तो पीछे गणों में धातुओं के रूपों के साथ ये कृदन्त रूप दे दिये गये थे फिर भी यहाँ गणानुसार कृदन्त शब्दों की विस्तृत सूची दी जाती है।

कृदन्त शब्दों के रूप

धातु	तव्यत्	अनीयर्	यत्	शतृ-शानच्
भू	भवितव्यम्	भवनीयम्	भव्यम्	भवन्
हस्	हसितव्यम्	हसनीयम्	...	हसन्
पठ्	पठितव्यम्	पठनीयम्	...	पठन्
रक्ष्	रक्षितव्यम्	रक्षणीयम्	...	रक्षन्
पच्	पक्तव्यम्	पचनीयम्	...	पचन्
वद्	वदितव्यम्	वदनीयम्	...	वदन्
नम्	नन्तव्यम्	नमनीयम्	...	नमन्
गम्	गन्तव्यम्	गमनीयम्	—	गच्छन्
दृश्	द्रष्टव्यम्	दर्शनीयम्	दृश्यम्	पश्यन्
सद्	सत्तव्यम्	सदनीयम्		सीदन्
स्था	स्थातव्यम्	स्थानीयम्	स्थेयम्	तिष्ठन्
स्मृ	स्मर्तव्यम्	स्मरणीयम्	...	स्मरन्
पा	पातव्यम्	पानीयम्	पेयम्	पिबन्
जि	जेतव्यम्	जयनीयम्	जेयम्	जयन्
सेव्	सेवितव्यम्	सेवनीयम्	सेव्यम्	सेवमानः
लभ्	लब्धव्यम्	लभनीयम्	लभ्यम्	लभमानः
वृत्	वर्तितव्यम्	वर्तनीयम्	...	वर्तमानः
वृध्	वर्द्धितव्यम्	वर्धनीयम्	...	वर्धमानः
ईक्ष्	ईक्षितव्यम्	ईक्षणीयम्	—	ईक्षमाणः
मुद्	मोदितव्यम्	मोदनीयम्	...	मोदमानः
सह्	सोढव्यम् सहितव्यम्	सहनीयम्	...	सहमानः

याच्	याचितवान्	याचितः	याचित्वा	याचितुम्
नी	नीतवान्	नीतः	नीत्वा	नेतुम्
हृ	हृतवान्	हृतः	हृत्वा	हर्तुम्
२. अदादिगण				
अद्	जग्धवान्	जग्धम्	जग्ध्वा	अत्तुम्
	अन्नवान्	अन्नम्		
स्तु	स्तुतवान्	स्तुतः	स्तुत्वा	स्तोतुम्
ब्रू	उक्तवान्	उक्तः	उक्त्वा	वक्तुम्
रुद्	रोदितवान्	रुदितः	रुदित्वा	रोदितुम्
दुह्	दुग्धवान्	दुग्धः	दुग्ध्वा	दोग्धुम्
जागृ	जागरितवान्	जागरितः	जागरित्वा	जागरितुम्
स्वप्	सुप्तवान्	सुप्तः	सुप्त्वा	स्वप्तुम्
हन्	हतवान्	हतः	हत्वा	हन्तुम्
विद्	विदितवान्	विदितः	विदित्वा	वेदितुम्
शास्	शिष्टवान्	शिष्टः	शासित्वा	शासितुम्
इ	इतवान्	इतः	इत्वा	एतुम्
आस्	आसितवान्	आसितः	आसित्वा	आसितुम्
शी	शयितवान्	शयितः	शयित्वा	शयितुम्
अधि+इ	अधीतवान्	अधीतः	अधीत्य	अध्येतुम्
३. जुहोत्यादिगण—				
हु	हुतवान्	हुतः	हुत्वा	होतुम्
भी	भीतवान्	भीतः	भीत्वा	भेतुम्
दा	दत्तवान्	दत्तः	दत्त्वा	दातुम्
भृ	भृतवान्	भृतः	भृत्वा	भर्तुम्
४. दिवादिगण				
दिव्	द्यूतवान्	द्यूतः	द्यूत्वा, देवित्वा	देवितुम्
नृत्	नृत्तवान्	नृत्तः	नर्तित्वा	नर्तितुम्
व्यध्	विद्धवान्	विद्धः	विद्ध्वा	व्यद्धुम्
नश्	नष्टवान्	नष्टः	नशित्वा, नष्ट्वा	नशितुम्, नष्टुम्
शम्	शमितवान्	शान्तः, शमितः	शान्त्वा, शमित्वा	शमितुम्
५. स्वादिगण—				
सु	सुतवान्	सुतः	सुत्वा	सोतुम्
आप्	आप्तवान्	आप्तः	आप्त्वा	आप्तुम्

	तव्य	अनीय	य	अत - आन
याच्	याचितव्यम्	याचनीयम्	याच्यम्	याचमान.
नी	नेतव्यम्	नयनीयम्	नेयम्	नयन्
हृ	हर्तव्यम्	हरणीयम्	...	हरन्
अदादिगण				
अद्	अत्तव्यम्	अदनीयम्	—	अदन्
स्तु	स्तोतव्यम्	स्तवनीयम्	स्तुत्यः	स्तुवन्
ब्रू	वक्तव्यम्	वचनीयम्	वाच्यम्	ब्रुवन्
रुद्	रोदितव्यम्	रोदनीयम्	—	रुदन्
दुह्	दोग्धव्यम्	दोहनीयम्	दोह्यम्	दुहन्
जागृ	जागरितव्यम्	जागरणीयम्	—	जाग्रत्
स्वप्	स्वप्तव्यम्	स्वपनीयम्	—	स्वपत्
हन्	हन्तव्यम्	हननीयम्	वध्यः, घात्यः	घ्नन्
विद्	वेदितव्यम्	वेदनीयम्	वेद्यम्	विदन्
शास्	शासितव्यम्	शासनीयम्	शिष्यः	शासन्
इ	एतव्यम्	अयनीम्	इत्यः	अयन्
आस्	आसितव्यम्	आसनीयम्	—	आसीनः
शी	शयितव्यम्	शयनीयम्	शेयः	शयानः
अधि+ई	अध्येतव्यम्	अध्ययनीयम्	अध्येयः	अधीयानः
जुहोत्यादिगण				
हु	होतव्यम्	हवनीयम्	हव्यम्	जुह्वत्
भी	भेतव्यम्	भयनीयम्	भेयम्	बिभ्यत्
दा	दातव्यम्	दानीयम्	देयम्	ददत्
भृ	भर्त्तव्यम्	भरणीयम्	भार्यम्, भार्या	बिभ्रत्
दिवादिगण				
दिव्	देवितव्यम्	देवनीयम्	देव्यम्	दिव्यन्
नृत्	नर्तितव्यम्	नर्तनीयम्	नृत्यम्	नृत्यन्
व्यध्	व्यद्धव्यः	व्यधनीयः	—	विध्यन्
नश्	नशितव्यम् नष्टव्यम्	नशनीयः	—	नश्यन्
शम्	शमितव्यम्	शमनीयम्	—	शाम्यन्
स्वादिगण				
सु	सोतव्यः	सवनीयः	सुन्वानः	सुन्वन्
आप्	आप्तव्यः	आपनीयः	—	आप्नुवन्

शक्	शक्तवान्	शक्तः	शक्त्वा	शक्तुम्
चि	चितवान्	चितः	चित्वा	चेतुम्
श्रु	श्रुतवान्	श्रुतः	श्रुत्वा	श्रोतुम्

६. तुदादिगण—

तुद्	तुन्नः	तुन्नवान्	तुत्वा	तोत्तुम्
इष्	इष्टः	इष्टवान्	इष्ट्वा	एष्टुम्
प्रच्छ्	पृष्टः	पृष्टवान्	पृष्ट्वा	प्रष्टुम्
स्पृश्	स्पृष्टः	स्पृष्टवान्	स्पृष्ट्वा	स्प्रष्टुम्
कृष्	कृष्टः	कृष्टवान्	कृष्ट्वा	क्रष्टुम्
क्षिप्	क्षिप्तः	क्षिप्तवान्	क्षिप्त्वा	क्षेप्तुम्
मुच्	मुक्तः	मुक्तवान्	मुक्त्वा	मोक्तुम्
सिच्	सिक्तः	सिक्तवान्	सिक्त्वा	सेक्तुम्
विद्	विन्नः	विन्नवान्	वित्त्वा	वेत्तुम्
मृ	मृतः	मृतवान्	मृत्वा	मर्तुम्

७. रुधादिगण—

रुध्	रुद्धः	रुद्धवान्	रुद्ध्वा	रोद्धुम्
भुज्	भुक्तः	भुक्तवान्	भुक्त्वा	भोक्तुम्
यु	युक्तः	युक्तवान्	युक्त्वा	योक्तुम्

८. तनादिगण—

तनु	ततः	ततवान्	तत्वा	तनितुम्
कृ	कृतः	कृतवान्	कृत्वा	कर्तुम्

९. क्र्यादिगण—

क्री	क्रीतः	क्रीतवान्	क्रीत्वा	क्रेतुम्
मुष्	मुषितः	मुषितवान्	मुषित्वा	मोषितुम्
ज्ञा	ज्ञातः	ज्ञातवान्	ज्ञात्वा	ज्ञातुम्
ग्रह्	गृहीतः	गृहीतवान्	गृहीत्वा	ग्रहीतुम्
बन्ध्	बद्धः	बद्धवान्	बद्ध्वा	बद्धुम्

१०. चुरादिगण—

चुर्	चोरितः	चोरितवान्	चोरयित्वा	चोरयितुम्
चिन्त्	चिन्तितः	चिन्तितवान्	चिन्तयित्वा	चिन्तयितुम्
तड्	ताडितः	ताडितवान्	ताडयित्वा	ताडयितुम्
कथ्	कथितः	कथितवान्	कथयित्वा	कथयितुम्

शक्	शक्तव्य:	शकनीय:	—	शक्नुवन्
चि	चेतव्य:	चयनीय:	—	चिन्वन्
श्रु	श्रोतव्य:	श्रवणीय:	—	शृण्वन्
तुदादिगण				
तुद्	तोत्तव्य:	तोदनीय:	—	तुदन्
इष्	एष्टव्य:	एषणीय:	—	इच्छन्
प्रच्छ्	प्रष्टव्य:	प्रच्छनीय:	—	पृच्छन्
स्पृश्	स्प्रष्टव्य:	स्पर्शनीय:	—	स्पृशन्
कृष्	क्रष्टव्य:	कर्षणीय:	—	कृषन्
क्षिप्	क्षेप्तव्य:	क्षेपणीय:	—	क्षिपन्
मुच्	मोक्तव्य:	मोचनीय:	मुञ्चान:	मुञ्चन्
सिच्	सेक्तव्य:	सेचनीय:	सिञ्चान:	सिञ्चन्
विद्	वेदितव्य:	वेदनीय:	विन्दमान:	विन्दन्
मृ	मर्त्तव्य:	मरणीय:	म्रियमाण:	—
रुधादिगण				
रुध्	रोद्धव्य:	रोधनीय:	रुन्धान:	रुन्धन्
भुज्	भोक्तव्य:	भोजनीय:	भुञ्जान:	भुञ्जन्
युज्	योक्तव्य:	योजनीय:	युञ्जान:	युञ्जन्
तनादिगण				
तनु	तनितव्य:	तननीय:	तन्वान:	तन्वन्
कृ	कर्त्तव्य:	करणीय:	कुर्वाण:	कुर्वन्
क्र्यादिगण				
क्री	क्रेतव्य:	क्रयणीय:	—	क्रीणन्
मुष्	मोषितव्य:	मोषणीय:	—	मुष्णन्
ज्ञा	ज्ञातव्य:	ज्ञानीय:	जानान:	जानन्
ग्रह्	ग्रहीतव्य:	ग्रहणीय:	गृह्णान:	गृह्णन्
बन्ध्	बद्धव्य:	बन्धनीय:	—	बध्नन्
चुरादिगण				
चुर्	चोरयितव्य:	चोरणीय:	चोरयमाण:	चोरयन्
चिन्त्	चिन्तयितव्य:	चिन्तनीय:	चिन्तयमान:	चिन्तयन्
तड्	ताडयितव्य:	ताडनीय:	ताडयमान:	ताडयन्
कथ्	कथयितव्य:	कथनीय:	कथयमान:	कथयन्

अभ्यास

(क) क्तवतु (तवत्)

उदाहरण—

१. यह सुनकर वह हँसा।	इति श्रुत्वा स हसितवान्।
२. जब वह गया तब वहाँ कोई न था।	यदा स गतवान् तदा तत्र कोऽपि नासीत्।
३. माली ने जब चिड़ियों को देखा तो हँसा।	मालाकारः यदा चटकाः दृष्टवान् तदा हसितवान्।
४. अर्जुन ने शत्रुओं को जीता और यश पाया।	अर्जुनः रिपून् जितवान् यशः च लब्धवान्।
५. शकुन्तला ने यही कहा।	शकुन्तला इत्येव उक्तवती।

१. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) पास होने पर लता प्रसन्न हुई। (२) पांडवों ने वन में बड़े कष्ट सहे। (३) मेरे कपड़े धोबी ले गया। (४) मुझसे भिखारी ने पैसे माँगे। (५) चोर ने धन को हरण किया।

(ख) क्तवतु (तवत्)

उदाहरण—

१. कवि ने सुन्दरता की प्रशंसा की।	कविः सौन्दर्यं स्तुतवान्।
२. बालक घाव को देखकर रोया।	बालः व्रणं वीक्ष्य रोदितवान्।
३. शिशु माँ की गोद में सोया।	शिशुः मातुरंके सुप्तवान्।
४. सबने यह भेद जान लिया।	सर्वे एतं भेदं विदितवन्तः।
५. शिष्यों ने पाठ पढ़े।	शिष्याः पाठान् अधीतवन्तः।
६. जल किसने भरा ?	जलं कः भृतवान् ?

२. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) हरिण को किसने बींधा ? (२) उत्तेजित भीड़ को नेता ने शांत किया। (३) बाण से बिंधा श्रवण मर गया। (४) बालिका ने भात खाया। (५) कौवों ने जल पिया। (६) चिट्ठी किसने ली ?

(ग) क्त (त)

उदाहरण

१. यह काम कैसे हुआ ?	एतत् कार्यं कथं भूतम् ?
२. बालक कैसे हँसा ?	बालः कथं हसितः ?

३. कठिन पुस्तक किसने पढ़ी ? — कठिनं पुस्तकं केन पठितम् ?
४. बालक को किसने बचाया — बालः केन रक्षितः ?
५. चावल पक गए। — तण्डुलानि पक्वानि।
६. मेरा बेटा कहाँ गया ? — मम पुत्रः क्व गतः।

३. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) चन्द्र आज किसने देखा ? (२) वह श्लोक किसने स्मरण किया ? (३) दूध किसने पिया ? (४) ग्राम के वृक्ष किसने सींचे ? (५) शत्रु को किसने जीता ? (६) कली भौंरे से चूमी गई।

(घ) क्त्वा (त्वा)

उदाहरण

१. सुनो, जाकर स्नान करो। — शृणु, गत्वा स्नानं कुरु।
२. दातुन करके नाश्ता करो। — दन्तधावनं कृत्वा प्रातराशं गृहाण।
३. ईश्वर की प्रार्थना करके दूध पियो। — ईश्वरप्रार्थनां कृत्वा दुग्धं पिब।
४. दूध पीकर पाठ पढ़ो। — दुग्धं पीत्वा पाठं पठ।

४. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) कुछ खाकर खेत को जाओ। (२) खेत पर जाकर भूमि को खोदो। (३) भोजनको खूब चबाकर निगलो। (४) गुरु को नमस्कार करके पाठ पढ़ो। (५) हँस कर बातें करो।

(ङ) ल्यप् (य)

उदाहरण—

१. काम समाप्त करके तुझे दूध दूंगी। — कार्यं समाप्य तुभ्यं दुग्धं दास्यामि।
२. कल गेहूँ लाकर दूंगा। — श्वः गोधूमान् आनीय दास्यामि।
३. वह प्रतिज्ञा करके लौट आया। — स प्रतिज्ञाय प्रतिनिवृत्तः।
४. हम जमुना को तैरकर पार जाएँगे। — वयं यमुनां संतीर्य पारं गमिष्यामः।
५. मार्ग रोके कौन खड़ा है ? — मार्गम् अवरुद्ध्य कस्तिष्ठति ?

५. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) सब पुरुष उठ-उठकर चले गए। (२) हम शत्रु को मारकर किले में घुसे। (३) तू घर में घुसकर शोर करता है। (४) वे इधर-उधर घूमकर घर पहुंचे। (५) धर्म का सहारा लेकर जीवन सफल करो। (६) वह हँसकर बोली—तुझे कैसे पता है ?

(च) तुमुन् (तुम्)

उदाहरण—

१. वह हँसने के लिए सदा तैयार है। — स हसितुं सदा तत्परोऽस्ति।
२. पढ़ने के लिए बाग में जा। — पठितुम् उद्याने गच्छ।

३. उसे बचाने के लिए कौन समर्थ है ? तं रक्षितुं कः क्षमः ?
४. भात पकाने को पतीली लाओ । ओदनं पक्तुं स्थालीमानय ।
५. तू मेरे सामने झूठ बोलने के लिए आया है ? त्वं मत्सम्मुखेऽसत्यं वक्तुमागतोऽसि ?

६. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) क्या वहाँ जाने के लिए तुम समर्थ हो ? (२) नाटक देखने कौन गए हैं ? (३) ईश्वर को स्मरण करने के लिए मन को लगाओ । (४) वह धन पाने के लिए यत्न करता है । (५) वह कार्य में पूरी तरह समर्थ है ।

(छ) तव्य

उदाहरण—

१. छात्रों को प्रातः उठना चाहिए । छात्रैः प्रातः उत्थातव्यम् ।
२. तब उन्हें शौच के लिए जाना चाहिए । तदा तैः शौचाय गन्तव्यम् ।
३. हाथ धोकर दातुन करनी चाहिए । हस्तौ प्रक्षाल्य दन्तधावनं कर्तव्यम् ।
४. तब व्यायाम करना चाहिए । अथ व्यायामः कर्तव्यः ।
५. स्नान करके ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिए । स्नात्वा ईशस्य प्रार्थना कर्तव्या ।

७. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) मित्र, सदा प्रातः उठना चाहिए और कल्याणकारी कार्यों में लगना चाहिए । (२) बालकों को गुरुजनों का आज्ञाकारी होना चाहिए । (३) उसे पैसा-दो पैसा गरीबों को देना चाहिए । (४) उसे अपना पाठ ध्यान से पढ़ना चाहिए । (५) तुम्हें व्याकरण में खूब परिश्रम करना चाहिए । (६) मुझे अपने कर्तव्य की उपेक्षा न करनी चाहिए ।

(ज) अनीय

उदाहरण—

१. वह तो प्रयत्न से रक्षा के योग्य है । स तु रक्षणीयः प्रयत्नतः ।
२. वह काम करने लायक है । तत्कार्यं करणीयमस्ति ।
३. छोड़ने योग्य को छोड़ो । त्यज त्यजनीयम् ।
४. उसकी दशा दर्दनाक है । तस्य दशा शोचनीयास्ति ।
५. विद्या दान-योग्य वस्तु है । विद्या दानीयं वस्तु अस्ति ।

८. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) आज बड़ा कठिन कार्य करना है । (२) दुष्ट के काम शोचनीय हैं । (३) तुझे यह स्मरण करना है । (४) आश्रित जनों की सर्वथा रक्षा करनी चाहिए । (५) दुष्टों का संग सदा त्यागने योग्य है ।

(ऋ) यत् (य)

उदाहरण—

१. दूसरे का धन नहीं लेना चाहिए। परस्य धनं न नेयम्।
२. तुम्हें फूल चुनने चाहिएँ। युष्माभिः पुष्पाणि चेयानि।
३. वीरों को शत्रु जीतने चाहिए। वीरैः शत्रवः जेयाः।
४. यह कविता गाने योग्य है। इयं कविता गेयाऽस्ति।
५. यह जल पीने योग्य है। इदं जलं पेयमस्ति।

६. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

१. यह दूध पीने योग्य नहीं। २. यह स्थान ठहरने योग्य है। ३. ये वस्तुएं ग्रहण करने योग्य नहीं हैं। ४. हमारा उद्यान देखने योग्य है। ५. आपको अपने घर जाना चाहिए। ६. यही कार्य इस समय करने योग्य है।

कृदन्त प्रकरण

(ख भाग)

ण्यत् (य)—इसका प्रयोग भी 'योग्य' अर्थ में अनेक ऋकारान्त धातुओं से अथवा हलन्त धातुओं से होता है। 'ण्यत्' के ण् और त् का लोप हो जाता है। णित् होने से धातु के ऋ को आर् वृद्धि हो जाती है। जैसे—

कृ+ण्यत्=कार्यम् (करने योग्य काम) धृ+ण्यत्=धार्यम्
हृ+ण्यत्=हार्यम्। तृ+ण्यत्=तार्यम्
भृ+ण्यत्=भार्यम्, भार्या। पच्+ण्यत्=पाच्यम्।

(२) हलन्त धातुओं से ण्यत् होने पर उपधा के अ को आ (वृद्धि) हो जायेगी। जैसे—

वच्+ण्यत्=वाच्यम्। पच्+ण्यत्=पाच्यम्।
यज्+ण्यत्=याज्यम्। ग्रह्+ण्यत्=ग्राह्यम्।
त्यज्+ण्यत्=त्याज्यम्।

तृच् (तृ)—यह 'तृच्' प्रत्यय' धातुओं से कर्त्ता अर्थ में होता है। च् का लोप हो जाता है। तृच् प्रत्यय होने पर धातु में गुण होना तथा सेट् धातुओं से इ होना आदि कार्य भी होते हैं। जैसे—

कृ+तृ=कर्तृ (करने वाला) हृ+तृ=हर्तृ (हरणकर्ता)
गम्+तृ=गन्तृ (जानेवाला) श्रु+तृ=श्रोतृ (सुननेवाला)
हन्+तृ=हन्तृ (मारनेवाला) जि+तृ=जेतृ (विजयी)
नी+तृ=नेतृ (नेता)।
भू+तृ=भवितृ (भविता—होनेवाला)
चुर्+तृ=चोरयितृ (चुरानेवाला)

इसी प्रकार अन्य धातुओं से भी तृच् करके कर्तावाची विशेषण बनते हैं।

ण्वुल् (अक)—किसी भी धातु से कर्ता अर्थ में 'ण्वुल्' प्रत्यय होता है। ण् और ल् का लोप हो जाता है और शेष 'वु' को 'अक' आदेश हो जाता है। णित् होने से धातु के ई उ ऊ ऋ आदि के ऐ, औ, आर् वृद्धि हो जाती है। ऐ औ को आय् आव् भी हो जाता है। जैसे—

कृ + ण्वुल् (अक) = कारकः (करनेवाला)

हृ + अक = हारकः।	धृ + अक = धारकः।
नी + अक = नायकः।	पू + अक = पावकः।
पठ् + अक = पाठकः।	गै + अक = गायकः।
दा + अक = दायकः।	धा + अक = धायकः।

णिनि (इन्)—ग्रह् आदि अनेक धातुओं से कर्ता अर्थ में णिनि प्रत्यय होता है। 'णिनि' के 'ण्' और अन्तिम 'इ' का लोप हो जाता है। 'इन्' ही धातु से संयुक्त होता है। णित् होने से उपधा के अ को आ वृद्धि हो जाती है। जैसे—

ग्रह् + इन् = ग्राहिन् (ग्राही) ग्रहण करने वाला।

स्था + इन् = स्थायिन् (स्थायी) ठहरनेवाला।

वद् + इन् = वादिन् (वादी) बोलने वाला।

मन्त्र् + इन् = मन्त्रिन् (मन्त्री)। इत्यादि।

(क) अच् (अ)—कर्ता के अर्थ में धातुओं से 'अच्' प्रत्यय भी होता है। च् का लोप हो जाता है। जैसे—

पचति इति—पच् + अच् (अ) = पचः (पकाने वाला)

सर्पति इति—सृप् + अ = सर्पः (साँप)।	चर् + अ = चरः (चलने वाला)
भू + अ = भवः (होने वाला)	चुर् + अ = चोरः।
दिव् + अ = देवः (देवता)।	नद् + अ = नदः।

(ख) भाववाचक संज्ञा के अर्थ में भी अच् प्रत्यय होता है। जैसे—

जि + अ = जयः। युज् + अ = योगः। भी + अ = भयम्। इत्यादि।

नी + अ = नयः। चि + अ = चयः।

ल्युट् (अन)—किसी भी धातु से भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए 'ल्युट्' प्रत्यय होता है। ल् और ट् का लोप हो जाता है 'यु' को 'अन' आदेश हो जाता है। जैसे—

गम् + ल्युट् (अन) = गमनम् (जाना)

पच् + अन = पचनम् (पकाना)

यज् + अन = यजनम् (यज्ञ करना)

नी + अन = नयनम् (ले जाना)

आ + गम् + अन = आगमनम् (आना)

शी + अन = शयनम् (सोना)

छिद्+अन=छेदनम् (छेदन करना)

भिद्+अन=भेदनम् (तोड़ना)

एवम्—रमणम्, भवनम्, पठनम्, पा+अन=पानम्, दानम्, दर्शनम्, भोजनम्, करणम्, श्रवणम्, हसनम् आदि भी होंगे।

इसी प्रकार अन्य धातुओं से भी ल्युट् (अन) प्रत्यय करके भाववाचक संज्ञाएँ बनाई जा सकती है।

घञ् (अ)—'भाव' आदि अनेक अर्थों में धातु से घञ् प्रत्यय होता है। घञ् के घ् और ञ् का लोप हो जाता है, 'अ' शेष रहता है। धातु के उपधा के अ को आ; इ, उ को ए ओ गुण हो जाता है। तथा धातु के अन्तिम इ उ को भी ए ओ गुण हो जाते है।)

उदाहरण देखिए—

पठ्+घञ् (अ)=पाठः।	भू+अ(ओ-अव्)=भावः।
लभ्+अ=लाभः।	अव+तॄ+अ=अवतारः।
सृ+अ=सारः।	आ+धृ+अ=आधारः।
लिख्+अ=लेखः।	बुध्+अ=बोधः।
रम्+अ=रामः।	भिद्+अ=भेदः।
हस्+अ=हासः।	स्पृश्+अ=स्पर्शः।
मुद्+अ=मोदः।	हृ+अ=हारः।
उप+कृ+अ=उपकारः।	अप+कृ+अ=अपकारः।

यदि धातु के अन्त में च् ज् हों तो उन्हें क्रमशः क् ग् हो जाते हैं। जैसे—

पच्+अ=पाकः।	यज्+अ=यागः।
शुच्+अ=शोकः।	त्यज्+अ=त्यागः।
	भुज्+अ=भोगः।

मान्त धातुओं की उपधा के अ को प्रायः आ (वृद्धि) नहीं होती। जैसे—

दम्+अ=दमः।	श्रम्+अ=श्रमः।
शम्+अ=शमः।	

अपवाद—कम्+अ=कामः। इत्यादि।

क्तिन् (ति)—भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए धातु से क्तिन् प्रत्यय होता है। क्तिन् के क् और न् का लोप हो जाता है। धातुओं के अन्य आवश्यक कार्य भी होते हैं। जैसे—

गम्+क्तिन् (ति)=गतिः (चाल)।

रम्+ति=रतिः (रमण), मन्+ति=मतिः (बुद्धि)

यम्+ति=यति (रुकावट), वच्+ति=उक्तिः (कथन)

शम्+ति—शान्तिः। भज्+ति=भक्तिः (भजन)

एवम्—कृति, स्था+ति=स्थिति, श्रुति इत्यादि भी होंगे।

एवम् अन्य धातुओं से भी क्तिन् प्रत्यय करके भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं।

णमुल् (अम्)—किसी क्रिया के बार-बार होने या करने को प्रकट करने के लिए धातु से 'णमुल्' प्रत्यय होता है। 'णमुल्' के ण्, उ और ल् लुप्त हो जाते हैं। 'अम्' ही धातुओं के साथ जुड़ता है 'णमुल्' प्रत्ययान्त शब्द प्रायः दो बार प्रयुक्त होता है; और अव्यय हो जाता है। जैसे—

स्मृ+णमुल् (अम्)=स्मारम् स्मारम् (बार बार स्मरण करके)
श्रु+अम्=श्रावम् श्रावम् (सुन-सुनकर)
भुज्+अम्=भोजम् भोजम् (खा-खाकर)
जागृ+अम्=जागरं जागरम् (जाग-जागकर)
कृ+अम्=कारं कारम् (कर करके)
ग्रह्+अम्=ग्राहं ग्राहम् (बार बार पकड़कर)
पा+अम्=पायम् पायम् (बार बार पीकर) इत्यादि।

अभ्यास

1. निम्नलिखित धातुओं के साथ जो प्रत्यय जोड़े हैं उनसे बनने वाला रूप लिखिए।

पच्+ण्यत्……।	कृ+ण्यत्……।
गम्+तृच्……।	श्रु+तृच्……।
गैं+ण्वुल्(अक)……।	पठ्+अक……।
सृप्+अच् (अ)……।	चर्=अच्……।
भिद्+ल्युट् (अन्)……।	भुज्+ल्युट्……।
वच्+क्तिन् (ति)……।	स्था+क्तिन्……।
स्मृ+णमुल् (अन्)……।	नैं+ण्वुल् (अक)……।

उदाहरण—पच्+ण्यत्=पाच्यम्।

२. निम्नलिखित प्रत्ययों को धातुओं के साथ लगाकर रूप बनाइए—
णिनि, अच्, तृच्, ण्यत्, ल्युट्।

३. निम्नलिखित कृदन्त शब्दों में प्रकृति-प्रत्यय अलग कीजिए—
हारकः, स्थायी, चरः, चोरयितृ, धार्यम्, त्याज्यम्, दर्शनम्, उक्तिः, श्रावम्-श्रावम्।
उदारण—हृ+ण्वुल्+अक=हारकः।

४. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—
(कृदन्त शब्दों का प्रयोग कीजिए)
क. यह काम करने योग्य हैं।
ख. त्यागने योग्य को ग्रहण मत करो।
ग. मारने वाले से रक्षा करने वाला श्रेष्ठ है।
घ. गाने वाले ने आज सुन्दर गीत गाया।
ङ. गुणों के ग्रहण करने वाले लोग कम होते हैं।
च. उस हिरण की गति बड़ी तेज थी।
छ. काष्ठ का काटना सरल कार्य है।
ज. वृद्ध कथा को सुन सुनकर रोने लगा।

षोडश अध्याय

समास (Compounds)

समास का अर्थ है—संक्षिप्त कथन ।

समास—अनेक शब्द मिलकर जब एक पद बन जाता है, तो इस प्रक्रिया को 'समास' कहा जाता है। इस प्रक्रिया के द्वारा बनें हुए शब्द को 'समस्त पद' कहा जाता है।

विग्रह—जब समस्त पद के सभी शब्द पुनः पृथक्-पृथक् करके विभक्ति आदि को पूर्ववत् करके दिखाया जाए, तो इस विधि को 'विग्रह' कहा जाता है।

समास किया जाता है—संज्ञा का संज्ञा के साथ, संज्ञा का विशेषण के साथ, विशेषण का विशेषण के साथ, क्रिया का क्रिया के साथ, धातु का धातु के साथ, संज्ञा का धातु के साथ आदि। अव्यय का समास संज्ञा के साथ और अव्यय का समास अव्यय के साथ भी होता है।

समास में पूर्वपद की विभक्तियाँ हटाने पर संधि के नियमों के अनुसार वर्णों को आपस में जोड़कर एक शब्द बना दिया जाता है। समस्त पद बनाने के बाद उस समस्त पद का फिर अन्य शब्दों में समास करने के भी नियम हैं।

अलुक्—कहीं-कहीं समास होने पर भी—बीच की विभक्तियों का लोप नहीं होता। ऐसे समास को 'अलुक्' समास कहा जाता है। अलुक् समास द्वारा समस्त पद भी एक पद गिना जाता है, दो पृथक्-पृथक् नहीं। जैसे—देवानांप्रियः (मूर्ख), युधिष्ठिरः (युद्ध में स्थिर—ज्येष्ठ पांडव), हृदिस्पृक् (हृदय को स्पर्श करने वाला), दिविस्पृक् (आकाश को छूने वाला), मध्येगुरुः (जिस शब्द के बीच में गुरु अक्षर हो), अन्तेगुरुः (जिस शब्द के अन्त में गुरु अक्षर हो), उरसिलोमः (जिसकी छाती पर बाल हों), स्तम्बेरमः (घास-फूस के पुञ्ज में प्रसन्न=हाथी), कर्णेजपः (जो कान में फुसफुसाता है, चुगलखोर), खेचरः (पक्षी, सूर्य, हवा, राक्षस), पंकेरुहः (जो कीचड़ में पैदा होता है=कमल), सरसिजम् (तालाब में पैदा होने वाला=कमल।)

समास के उदाहरण—

'देशस्य अधिपः' का समस्त पद है 'देशाधिपः' अर्थात् राजा। इस शब्द में देशस्य+अधिपः दो शब्द हैं, इन दोनों में अपनी-अपनी विभक्ति लगी है; परन्तु समास हो जाने पर देशस्य शब्द की विभक्ति हट गई और केवल देश+अधिपः= 'देशाधिपः' रह गया। अर्थ में किसी प्रकार का अन्तर नहीं हुआ। इसी प्रकार नराणां पतिः=नरपतिः, गजानां पतिः=गजपतिः। मृगेषु इन्द्रः=मृगेन्द्रः आदि शब्दों का भी

विभक्ति का चिह्न हटाया हुआ है। इसी प्रकार विद्वान् जनः—विद्वस्+जनः= विद्वज्जनः। राज्ञः पुरुषः—राजन्+पुरुषः=राजपुरुषः।

समास के प्रकार

समास चार प्रकार का होता है। परन्तु तत्पुरुष के भेद 'कर्मधारय' और कर्मधारय के भेद 'द्विगु' को मिलाकर छः प्रकार का हो जाता है। जैसे—

(१) अव्ययीभाव (Adverbial)
(२) तत्पुरुष (Determinative)
(३) कर्मधारय (Compound of Adjective)
(४) द्विगु समास (Numerical)
(५) बहुव्रीहि (Attridulive)
(६) द्वन्द्व (Copulative)

१. अव्ययीभाव[1] (Adverbial)

इस समास का पूर्व शब्द प्रायः अव्यय होता है तथा दूसरा शब्द संज्ञा। इन दोनों में मिलकर समास हो जाता है। इस प्रकार के समास को अव्ययीभाव कहते हैं। अव्ययीभाव वाले शब्दों के रूप नहीं चलते, वे अव्यय बन जाते हैं और नपुंसकलिंग के एकवचन जैसे प्रतीत होते हैं। इस समास के पदों (शब्दों) में पहला पद प्रधान होता है। वही शब्द के अर्थ का निर्णय करता है।

अव्ययीभाव समास के नियम

(क) शब्द के अन्त का 'अन्' वाला 'न्' लुप्त हो जाता है। जैसे—राज्ञः समीपम् उपराजम् (राजन् का राज रह गया और नपुंसकलिंग एकवचन रूप बन गया)। इसी प्रकार उपचर्म।

(ख) नदी और गिरि आदि शब्दों के अन्तिम स्वर को विकल्प से अ हो जाता है। जैसे—नद्याः समीपम्—उपनदि, उपनदम्, उपगिरि, उपगिरम्।

(ग) कवर्ग से पवर्ग तक के पहले चार अक्षर जिन हलन्त (व्यंजनान्त) शब्दों के अंत में आते हैं, उनके अन्तिम व्यंजन में विकल्प से 'अ' जोड़ दिया जाता है। जैसे—उपसमित्, उपसमिधम्।

(घ) शरत्, जरस्, अक्षि आदि शब्दों के अन्तिम व्यंजन में 'अ' जोड़ दिया जाता है। जैसे—शरदः समीपम्—उपशरदम्। जरसः समीपम्—उपजरसम्। अक्ष्णः परम्—परोक्षम् इत्यादि।

प्रायः अव्ययीभाव समास में अव्ययों का निम्नलिखित अर्थों में समास होता है। उनका विग्रह भी अपना-अपना होता है।

---

१. एक श्लोक में सभी समासों के नाम और उनका सुन्दर भाव में प्रयोग देखिए—

द्वन्द्वोऽहं द्विगुरपि चाहं मम गेहे नित्यमव्ययीभावः।
तत्पुरुष कर्मधारय येनाऽहं स्यां बहुव्रीहिः॥

विभक्ति—गंगायाम् इति=अधिगंगम् (गंगा में)। यमुनायाम् इति अधियमुनम् (यमुना में)। गोपे इति अधिगोपम् (ग्वाले में), आत्मनि इति=अध्यात्मम् (आत्मा में), हरौ इति=अधिहरि (हरि में), अधिवैकुण्ठम् (वैकुण्ठ में)।

सामीप्य (समीपता)—गोपानाम् समीपम्=उपगोपम् (ग्वालों के पास), कृष्णस्य समीपम्=उपकृष्णम्, गंगायाः समीपम्=उपगंगम् (गंगा के पास); कूलस्य समीपम्=उपकूलम् (तट के पास)। गुरोः समीपम्=उपगुरु। शरदः समीपम्=उपशरदम्। गिरेः समीपम्=उपगिरम् (पहाड़ के पास)।

समृद्धि या (व्यृद्धि) पाञ्चालानां समृद्धिः=सुपाञ्चालम्। मद्राणां समृद्धिः=सुमद्रम् (मद्रदेशवासियों का ऐश्वर्य)। यवनानां व्यृद्धिः (दुर्भाग्य)=दुर्यवनम्।

अभाव—जनानाम् अभावः=निर्जनम् (सुनसान), विघ्नानाम् अभावः=निर्विघ्नम्, मक्षिकाणाम् अभावः=निर्मक्षिकम्, गोपानामभावः=निर्गोपम्, कण्टकानामभावः—निष्कण्टकम्।

अत्यय (अधिकता)—हिमस्य अत्ययः=अतिहिमम्।

अत्यय (बीतना)—यौवनस्य अत्ययः=अतियौवनम्।

पश्चात्—रथस्य पश्चात्=अनुरथम् (रथ के पीछे), विष्णोः पश्चात्=अनुविष्णु, अनुशम्भु, अनुमहाजनम्।

योग्यता—रूपस्य योग्यम्=अनुरूपम्, गुणानां योग्यम्=अनुगुणम्, बुद्धेः योग्यम्=अनुबुद्धि।

आनुपूर्व्य (क्रम, सिलसिला)—आनुपूर्व्येण ज्येष्ठः=अनुज्येष्ठम्। अनुक्रमम्।

वीप्सा (आवृत्तिः)—एकम् एकं प्रति=प्रत्येकम्, दिनं दिनं प्रति=प्रतिदिनम्, गृहं गृहं प्रति=प्रतिगृहम्, अर्थम् अर्थम् प्रति=प्रत्यर्थम्, अहः अहः प्रति=प्रत्यहम् (प्रतिदिन), दिशां दिशां प्रति=प्रतिदिशम्।

यौगपद्य (एक साथ होना, समकालिकता)—चक्रेण युगपद्=सचक्रम्।

अनुसार—शक्तिम् अनतिक्रम्य—यथाशक्ति, बलम् अतिक्रम्य=अतिबलम्। सामर्थ्यम् अनतिक्रम्य=यथासामर्थ्यम्।

सम्पत्तिः—क्षत्राणां सम्पत्तिः=सक्षत्रम्।

मर्यादा—समुद्रं यावत्=आसमुद्रम् (समुद्र तक), आकाश्मीरम्, आकर्णम्। आबंगदेशम्, आजीवनम्, आजन्म, यावच्छ्लोकम्।

साकल्य (सारा)—तृणमपि अपरित्यज्य=सतृणम्।

प्रति (लेश)—शाकस्य लेशः=शाकप्रति।

२. तत्पुरुष (Determinative)

जहाँ दो या दो से अधिक पदों में समास हो; प्रथम पद की द्वितीया, तृतीया चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी अथवा सप्तमी विभक्ति लुप्त हों; उत्तरपद प्रधान हो, वहाँ तत्पुरुष समास होता है। जैसे—बालानां सभा=बालसभा। इस समस्त पद में पूर्व 'बाल' शब्द प्रधान नहीं है। प्रधान है उत्तर शब्द 'सभा'। इसी प्रकार देशसेवा,

राजगुरु; स्वर्णकलश: आदि शब्द तत्पुरुष समास के उदाहरण हैं ।

१. सामान्य तत्पुरुष—जहाँ समस्त पद के पूर्व शब्द की द्वितीया से सप्तमी तक कोई विभक्ति लुप्त हो ।

द्वितीया तत्पुरुष—

(क) इस समास का उत्तरपद श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त, आपन्न, गमी, बुभुक्षु आदि में से कोई होता है । जैसे—

रामं श्रित:=रामश्रित: । धर्मं श्रित:=धर्मश्रित: । नृपमाश्रित:=नृपाश्रित: । दु:खमतीत:=दुखातीत: । नरकं पतित:=नरकपतित: । स्वर्गं गत:=स्वर्गगत: । शरणम् आगत:=शरणागत: । संकटम् अत्यस्त: (फेंका हुआ)=संकटात्यस्त: (दु:खों की परवा न करने वाला) । सुखं प्राप्त:=सुखप्राप्त: । संकटम् आपन्न:=संकटापन्न: । दु:खमतीत:=दु:खातीत: । ग्रामं गमी=ग्रामगमी । अन्नं बुभुक्षु:=अन्नबुभुक्षु: ।

(ख) कालावधि (Duration of an action)—मुहूर्तं सुखं=मुहूर्तसुखम् । संवत्सरं प्राप्त:=संवत्सरप्राप्त: ।

(ग) जब आक्षेप के लिए कथन हो और खट्वा शब्द आए । जैसे—खट्वामारूढ:=खट्वारूढ: (जालम:, नीच, कठोर) ।

तृतीया तत्पुरुष—

(क) तृतीयान्त पूर्वपद का पूर्व, सदृश, सम, ऊन; ऊनार्थक शब्द, श्लक्ष्ण, मिश्र, निपुण, कलह इत्यादि के साथ समास होता है । जैसे—

मासेन पूर्व:=मासपूर्व: । मात्रा सदृश:=मातृसदृश: । पित्रा सम:=पितृसम: । पादेन ऊन:=पादोन: (चौथाई कम) । माषेण ऊनं=माषोनम् (मासा भर कम) । माषेण विकल: (कम)=माषविकल: । आचारेण श्लक्ष्ण: (सौम्य)=आचारश्लक्ष्ण: । आचारेण निपुण:=आचारनिपुण: । मासेन अवर:=मासावर: (एक महीना छोटा) । वाचा कलह:=वाक्कलह: ।

(ख) करण (साधन) के साथ तथा 'अर्थ' शब्द के साथ—शंकुलया खण्ड:=शंकुलाखण्ड: (चाकू या सरौते से टुकड़े किया गया) । धान्येन अर्थ:=धान्यार्थ: ।

(ग) जब पूर्व पद करण कारक का तथा द्वितीय पद कृदन्त हो । जैसे—हरिणा त्रात:=हरित्रात: । नखैर्भिन्न:=नखभिन्न: ।

(घ) पूर्वपद खाद्य पदार्थ हो और दूसरे खाद्य से उसका मिश्रण हो । जैसे—दध्ना ओदन:=दध्योदन: । गुडेन धाना:=गुडधाना: ।

(ङ) पूर्व पद 'स्वयम्' शब्द हो । जैसे—

स्वयं कृत: (स्वयंकृता, स्वयंकृतम्) ।

चतुर्थी तत्पुरुष—

(क) किसी वस्तु की रचना के लिए जो पदार्थ हो उसका चतुर्थी तत्पुरुष में समास होता है । जैसे—

यूपाय दारु:=यूपदारु: ।

(ख) अर्थ, बलि, हित, सुख और रक्षित शब्दों का चतुर्थी तत्पुरुष समास होता है । जैसे—

द्विजाय अयं द्विजार्थः (सूपः) । बालाय इयं=बालार्था (यवागूः) । द्विजाय इदं द्विजार्थं (पयः) । धनाय लोभः—धनलोभः । भूतेभ्यो बलिः—भूतबलिः । गवे हितम्=गोहितम् । गवे सुखम्=गोसुखम् । गवे रक्षितम्=गोरक्षितम् ।

पंचमी तत्पुरुष

[क] भय, भीत, भीति आदि शब्दों तथा इनके समानार्थकों के साथ पञ्चमी विभक्ति वाले शब्दों का समास होता है । जैसे—

चौराद् भयम्=चौरभयम् । वृकाद् भीतः=वृकभीतः । सिंहाद् भीतिः=सिंहभीतिः । विघ्नाद् भयम्=विघ्नभयम् । भयात् त्रस्तः=भयत्रस्तः । मरणाद् भयम्=मरणभयम् ।

[ग] अपेत (युक्त), अपोढ़ (दूर हटाया गया), मुक्त, पतित, च्युत तथा अपत्रस्त (भयभीत) के साथ भी पञ्चमी वाले शब्दों का समास होता है । जैसे—

दुःखादपेतः=दुःखापेतः । सुखादपेतः=सुखापेतः । कल्पानाया अपोढः=कल्पनापोढः । संकटान्मुक्तः=सकटमुक्तः । रोगात् मुक्तः=रोगमुक्तः । वृन्तात् पतितः=वृन्तपतितः । आकाशात् पतितः=आकाशपतितः । अश्वात् पतितः=अश्वपतितः । पदात् च्युतः=पदच्युतः । तरंगेभ्यः अपत्रस्तः=तरंगापत्रस्तः ।

षष्ठी तत्पुरुष—

(क) षष्ठी विभक्ति वाले संज्ञा शब्दों का परले संज्ञा शब्दों के साथ तत्पुरुष समास होता है । जैसे—

राज्ञः पुरुषः=राजपुरुषः । राज्ञः गृहम्=राजगृहम् । स्वर्णस्य पात्रम्=स्वर्णपात्रम् । जनकस्य आदरः=जनकादरः । सुखस्य अनुभूतिः=सुखानुभूतिः । देवस्य मन्दिरम्=देवमन्दिरम् ।

(ख) याजक, पूजक, परिचारक, परिवेषक (भोजन परोसने वाला), स्नातक, अध्यापक, उत्सादक (पहरेदार), होतृ (यज्ञकर्ता), भर्तृ ये शब्द जिन षष्ठी विभक्ति वाले शब्दों के अनन्तर आएँ वहाँ षष्ठी तत्पुरुष समास होता है । जैसे—

ब्राह्मणानां याजकः=ब्राह्मणयाजकः । देवस्य देवानां वा पूजकः=देवपूजकः । राज्ञः परिचारकः=राजपरिचारकः । अग्नेः होता=अग्निहोता । भुवः भर्ता=भूभर्ता ।

अपवाद—याजक आदि शब्दों के अतिरिक्त तृ, अक कृदन्त प्रत्यय परे होने पर षष्ठी तत्पुरुष समास नहीं होता । जैसे—

घटस्य कर्ता । ओदनस्य पाचकः ।

(ग) तुलनार्थ में । जैसे—

नृणाम् श्रेष्ठः=नृश्रेष्ठः । नराणाम् ईशः=नरेशः । खगानाम् ईशः=खगेशः । सुराणाम् ईशः=सुरेशः । पर्वतानामधिराजः=पर्वताधिराजः ।

(घ) पूरणार्थक संख्या-शब्दों के साथ, गुणवाचक विशेषणों के साथ, सन्तोषार्थक शब्दों के साथ, वर्तमान (सातत्य) में, मत, संमत, सुहित आदि अर्थों में षष्ठी तत्पुरुष नहीं होता। जैसे—

सतां षष्ठः। ब्राह्मणस्य शुक्लाः (दन्ताः)। काकस्य कार्ष्ण्यम् (कालापन)। फलानां सुहितः (उपयुक्त)। सतां मतः। द्विजस्य कुर्वाणः किंकरः। इदमेषाम् आसितम्। इदमेषां गतम् (मुक्तं वा)। मनुष्यस्य कर्तव्यम्।

(ङ) तर, तम प्रत्ययों वाले गुणवाचक विशेषणों के साथ षष्ठीतत्पुरुष समास हो जाता है। जैसे—

सर्वेषां श्वेततमः=सर्वश्वेतः। सर्वेषां महत्तरः=सर्वमहान्। सर्वेषां श्रेष्ठः=सर्वश्रेष्ठः।

(च) द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, तुर्य शब्दों के साथ उन शब्दों का षष्ठी तत्पुरुष समास होता है, जिनके ये भाग (अंश) को प्रकट करते हों। जैसे—

द्वितीयं भिक्षायाः=द्वितीयभिक्षा।

(छ) पूर्व, अपर, अधर, अर्ध जिन षष्ठी के एकवचन विभक्ति वाले शब्दों से पहले आएँ उनमें षष्ठी तत्पुरुष समास होता है। जैसे—

पूर्वं कायस्य=पूर्वकायः (अपरकाय, अधरकायः)। अर्धं पिप्पल्लाः=अर्ध-पिप्पली।

(ज) जो शब्द कालावधि के एक भाग को प्रकट करें, उनका उस कालावधि-सूचक शब्द से षष्ठी तत्पुरुष समास होता है और काल-भाग को प्रकट करने वाले शब्द पहले जुड़ते हैं। जैसे—

मध्यम् अह्नः—मध्याह्नः, सायम् अह्नः=सायाह्नः। मध्यं रात्रेः—मध्यरात्रम्।

(झ) किसी घटना के घटित होने के कालसूचक शब्द के बाद षष्ठी विभक्ति वाले शब्द से उसका षष्ठी तत्पुरुष समास होता है। जैसे—

मासो जातो यस्य सः—मासजातः (द्व्यहजातः, संवत्सरमृतः)।

षष्ठी के बहुवचन वाले शब्दों के साथ यह समास नहीं होगा। जैसे—अर्धं पिप्पलीनाम्।

(ञ) पुत्र शब्द बाद में आए और निन्दा करनी हो तो षष्ठी तत्पुरुष विकल्प से होता है। जैसे—

दास्याः पुत्रः अथवा दासीपुत्रः।

सप्तमी तत्पुरुष—

(क) शौण्ड (कुशल), धूर्त, कितव (धूर्त), प्रवीण, संवीत, अन्तर, अधि, पटु, पण्डित, कुशल, चपल, निपुण, सिद्ध, शुष्क, पक्व, बन्ध—ये शब्द सप्तमी विभक्ति वाले शब्दों के अनन्तर आएँ तो सप्तमी तत्पुरुष समास होता है। जैसे—

अक्षेषु शौण्डः=अक्षशौण्डः। अक्षेषु धूर्तः=अक्षधूर्तः। द्यूते कितवः=द्यूत-कितवः। कार्ये प्रवीणः=कार्यप्रवीणः। पुष्पेषु संवीतः (लपेटा हुआ)=पुष्पसंवीतः।

मध्ये अन्तरः=मध्यान्तरः। कार्ये पटुः=कार्यपटुः। न्याये पण्डितः=न्यायपण्डितः। कार्ये कुशलः=कार्यकुशलः। ईश्वरे अधि=ईश्वराधीनः। आतपे शुष्कः=आतपशुष्कः। स्थाल्यां पक्वः=स्थालीपक्वः। चक्रे बन्धः=चक्रबन्धः।

(ख) घृणाव्यंजक काक, मण्डूक आदि तथा इनके समानार्थक शब्दों के परे होने पर सप्तमी तत्पुरुष समास होता है। जैसे—

तीर्थे ध्वाङ्क्षः (कौआ) इव=तीर्थध्वाङ्क्षः (अतिलोभी, तीर्थपंडा)। तीर्थे काक इव=तीर्थकाकः। नगरे काक इव=नगरकाकः। ग्रामे वायस इव=ग्रामवायसः। कूपे मण्डूकः इव=कूपमण्डूकः (सीमित ज्ञान वाला)। कुंभे मण्डूक इव=कुंभमण्डूकः। उदुम्बरे (गूलर) कृमिरिव=उदुम्बरकृमिः (अज्ञ, जिसने संसार नहीं देखा)।

(ग) दिन या रात का भाग (अंश) प्रकट करने वाले शब्दों का सप्तमी तत्पुरुष समास होता है। जैसे—पूर्वाह्णे कृतम्=पूर्वाह्णकृतम्। अपरात्रे कृतम्=अपरात्रकृतम्।

प्रादितत्पुरुष

जिस समस्त पद का पूर्व भाग उपसर्ग हो उसे प्रादि तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे—

प्रगतः आचार्यः=प्राचार्यः। संगतः अध्वानम्=संगध्वः। प्रकृष्टो वातः=प्रवातः। अतिक्रान्तो मालाम्=अतिमालः। अतिक्रान्तो रथं रथिनं वा=अतिरथः। अतिक्रान्तो मात्राम्=अतिमात्रः। अवकृष्टः (खींचा हुआ) कोकिलया=अवकोकिलः। परिग्लानः (विमुख) अध्ययनात्=पर्यध्ययनः। निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः=निष्कौशाम्बिः। निर्गतः लङ्कायाः=निर्लङ्कः।

गति तत्पुरुष

कुछ शब्दों के अनन्तर क्रिया से बने अव्यय आने पर तत्पुरुष समास होता है। इसे गति तत्पुरुष कहते हैं।

(क) ऊरी, उररी, वौषट्, वषट्, स्वाहा, स्वधा, प्रादुः, आशिस्, श्रत्, कारिका—ऊरीकृत्य, उररीकृत्य, वषट्कृत्य, प्रादुर्भूय, कारिकाकृत्य आदि।

(ख) सत् असत् आदि—सत्कृत्य, असत्कृत्य, अलंकृत्य, अन्तर्हत्य, कणेहत्य, अच्छेद्य, तिरोभूत, अस्तंगत्य।

(ग) हस्ते, पाणौ, प्राध्वम्—हस्तेकृत्य, पाणौकृत्य, प्राध्वंकृत्य।

(घ) उपाजे, अन्वाजे, साक्षात्, मिथ्या, अमा, प्रादुः आविः, नमस्, मनसि, उरसि में विकल्प से गति समास होता है। जैसे—

उपाजेकृत्य, उपाजे कृत्वा। अन्वाजेकृत्य अन्वाजे कृत्वा। साक्षात्कृत्य, साक्षात् कृत्वा। मनसिकृत्य, मनसि कृत्वा।

(ङ) धातुओं से बने प्रातिपादकों में भी यह समास होता है जैसे—

अस्तमयः। पुरस्कारः। तिरस्कारः। अलंकृतिः। अलंकारः।

(च) जहाँ च्वि प्रत्यय हुआ हो वहाँ भी यह समास होता है। जैसे—शुक्लीकृत्य (अशुक्लं शुक्लं कृत्वा), अङ्गीकृत्य, स्वीकृत्य आदि।

नञ् तत्पुरुष

निषेधार्थक समास को 'नञ् समास' कहते हैं। इस समास में व्यंजन परे होने पर न को 'अ' तथा स्वर परे रहने पर न को 'अन्' हो जाता है। न ब्राह्मणः—अब्राह्मणः। न अश्वः—अनश्वः। न सत्यम्—असत्यम्। न मुञ्चतीति—नमुचिः। न कुलमस्य—नकुलः। न खम् अस्य—नखम्। न स्त्री न पुमान्=नपुंसकम्। न प्रियः =अप्रियः। न क्रामतीति—नक्रः। न अकम् (पापम्) अस्मिन्=नाकः (स्वर्ग)। न सुखम्=असुखम्। न उपकारी=अनुपकारी। न उपस्थितः—अनुपस्थितः। न उत्साहः =अनुत्साहः।

अलुक् तत्पुरुष समास

जहाँ पूर्वपद की विभक्ति ज्यों की त्यों रह जाए, वहाँ अलुक् समास होता है। जैसे—

द्वितीया—भयं करोति इति—भयंकरः, धनंजयः (अर्जुन), मृत्युञ्जयः (शंकर)।

तृतीया—आत्मना तृतीयः—आत्मनातृतीयः, अञ्जसा कृतम्—अञ्जसाकृतम् पुंसानुजः, जनुषाऽन्धः, मनसाज्ञायी, आत्मनापंचमः।

चतुर्थी—आत्मने पदम्—आत्मनेपदम्, परस्मै पदम्—परस्मैपदम्।

पंचमी—दूराद् आगतः—दूरादागतः। स्तोकान्मुक्तः। अल्पान्मुक्तः। अन्तिकादागतः। अभ्याशादागतः। विप्रकृष्टादागतः। कृच्छादागतः।

षष्ठी—दिवः पतिः दिवस्पतिः, वाचस्पतिः, पश्यतोहरः। वाचोयुक्तिः। दिशोदण्डः। दिवोदासः। शुनःपुच्छः। शुनोलाङ्गूलः। होतुष्पुत्रः। पितुःस्वसा। स्वसुःपतिः। गेहेशूरः। गेहेनर्दी। गेहेव्याघ्रः। पात्रे कुशलः। गोष्ठेविजयी।

सप्तमी—युधि स्थिरः—युधिष्ठिरः, सरसिजम्, खेचरः, स्तम्बेरमः, कर्णेजपः पंकेरुहः, कुशेशयम् (कमल)।

३. कर्मधारय समास

जिस समास में (क) विशेष्य विशेषण अथवा (ख) उपमान उपमेय का साथ-साथ प्रयोग हो, वहाँ कर्मधारय समास होता है। विशेष्य-विशेषणयुक्त समास का विग्रह प्रथमा विभक्ति द्वारा होगा, परन्तु उपमान-उपमेययुक्त समास में शब्द का विग्रह करते समय उपमान के बाद 'इव, सदृश, तुल्य, सम, एव' आदि शब्द लगाने आवश्यक हैं। उदाहरण—

(क) कुत्सितः पुरुषः=कुपुरुषः। कुत्सितः छात्रः=कुछात्रः। दीर्घं नयनम् =दीर्घनयनम्। नीलम् उत्पलम्=नीलोत्पलम्। सुन्दरः पुरुषः=सुन्दरपुरुषः। भूषिता कन्या=भूषितकन्या। महान् चासौ राजा=महाराजः। महान् चासौ ऋषिः=

महर्षिः । महान् चासौ पुरुषः=महापुरुषः । सुन्दरी प्रमदा=सुन्दर-प्रमदा । सुन्दर-नारी । महादेवः । कृष्णवर्णः ।

(ख) कमलम् इव मुखम्=कमलमुखम् । चरणकमलम् । घन इव श्यामः=घनश्यामः । नवनीतकोमलम् । पुरुषः सिंह इव=पुरुषसिंहः । नरकेसरी । नरव्याघ्रः । नरशार्दूलः । चन्द्रमुखम् । पुरुषो व्याघ्रः इव=पुरुषव्याघ्रः । मुखं चन्द्र इव=मुखचन्द्रः । मुखम् कमलमिव=मुखकमलम् । पाद एव पद्मम्=पादपद्मम् । विद्या एव धनम्=विद्याधनम् । नीलं च तत् उत्पलम्=नीलोत्पलम् । शिरीषमृद्वी ।

(ग) दोनों प्रकार के कर्मधारय के कुछ अन्य उदाहरण—

इभा युवतिः=इभयुवतिः । स्तोकः (अल्पः) अग्निः=अग्निस्तोकः । गोधेनुः (नवप्रसूतिका) । गोवशा (वंध्या गौ) ।

कुत्सितः राजा=किंराजा । कुत्सितः प्रभुः=किंप्रभुः । तापसकुञ्जरः । पुरुष-नागः ।

पूर्वी शाला—पूर्वशाला । उत्तरः ध्रुवः=उत्तरध्रुवः । दक्षिणः ध्रुवः=दक्षिण-ध्रुवः ।

कुत्सितः अश्वः=कदश्वः । कुत्सितम् अन्नम्=कदन्नम् । कुत्सितः रथः=कद्रथः । कुत्सितं वदति इति कद्वदः । कुत्सितं तृणं कत्तृणम् । कुमार्गः । कुपुरुषः ।

ईषद् पुरुषः=कापुरुषः । ईषज्जलं=काजलम् । ईषद् उष्णम्=कोष्णम् । कवोष्णम् । मन्दोष्णम् ।

शुक्लकृष्णः (विशेषणोभयपद कर्मधारय) ।

पूर्वं स्नातः पश्चादनुलिप्तः=स्नातानुलिप्तः ।

पूर्वं पीतं पश्चादुद्गीर्णम्=पीतोद्गीर्णम् । पूर्वं पीतः पश्चाद् प्रतिबद्धः—पीत-प्रतिबद्धः । पूर्वं गृहीतः पश्चात् प्रतिमुक्तः—गृहीतप्रतिमुक्तः ।

वीरैकः, एकवीरः ।

कृतञ्च तत् अकृतञ्च कृताकृतम् (अधूरा क्रिया) ।

युवा खलतिः=युवखलतिः (गंजा नौजवान) ।

युवती चेयं जरती च=युवजरती (बूढ़ी-सी लगती युवती ।)

ईषत् पिंगलः=ईषत्पिंगलः । ईषत् रक्तम्=ईषद्रक्तम् ।

भोज्यं च तदुष्णम् च=भोज्योष्णम् । तुल्यश्वेतः । सदृशश्वेतः । समरक्तः ।

मयूरव्यंसकादि कर्मधारय—मयूरश्चासौ व्यंसकश्च=मयूरव्यंसकः । अन्यो राजा=राजान्तरम् । अन्यो देशः=देशान्तरम् । अन्यो ग्रामः=ग्रामान्तरम् । चिदेव=चिन्मात्रम् । अश्नीत पिबत इत्येवं यत्र अभिधीयते सा अश्नीतपिबता (क्रिया) । पचत-भुञ्जता । खादतमोदता । अहम् अहम् इति यस्यां क्रियायाम् अभिधीयते सा=अहं-पूर्विका । कां दिशम् पलाये इति=कांदिशीकः ।

मध्यमपदलोपी कर्मधारय [शाकपार्थिवादि)—शाकानां प्रियः पार्थिकः—शाकपार्थिवः । देवपूजको ब्राह्मणः—देवब्राह्मणः । गुडेन मिश्रिताः धानाः—गुडधानाः

द्विगु समास

जिन पदों के पूर्व कोई संख्यावाचक शब्द हो, और समाहार को प्रकट करे उसे 'द्विगु' समास कहते हैं, इस समास में कई शब्द ईकारान्त स्त्रीलिंग हो जाते हैं। जैसे

पञ्चानां गवां समाहारः=पञ्चगवम्। पञ्चानां पात्राणां समाहारः=पञ्चपात्रम्। त्रयाणां लोकानां समाहारः=त्रिलोकी। त्रिभुवनम्। पञ्चरात्रम्। पञ्चतन्त्रम्। शतानाम् अब्दानां समाहारः=शताब्दी। पञ्चवटी। सप्तशती। अष्टाध्यायी चतुष्पदी। पञ्चानां गवां समाहारः—पञ्चगुः। पञ्चकपालः। अष्टाकपालः। पञ्चवितस्तिप्रमाणः। चातुर्मासजातः। पञ्चगव्रम्। त्रिकटु। त्रिफला।

बहुव्रीहि समास

जिस समास में पूर्व पद और उत्तरपद दोनों में से कोई भी प्रधान न हो अपितु कोई अन्य पद ही प्रधान हो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। समास होने पर समस्त पद से किसी अन्य संज्ञा का बोध होता है जो समास के किसी भी खण्ड में विद्यमान नहीं होती।

१. **समानाधिकरण**—जहाँ समास के दोनों खण्डों में समान कारक (एक ही विभक्ति) हो वहाँ समानाधिकरण बहुव्रीहि होती हैं। जैसे—

प्राप्तम् उदकं यम् असौ प्राप्तोदको ग्रामः। ऊढः रथः येन असौ ऊढरथः (अनड्वान्|बैल)। उपहृतः पशुःयस्मै स उपहृतपशुः (रुद्रः)। उद्धृतः ओदनः यस्याः सा उद्धृतौदना (स्थाली)। पीतम् अम्बरं यस्य स पीताम्बरो हरिः। वीराः पुरुषाः यस्मिन् स वीरपुरुषो ग्रामः। निर्गतं भयं यस्मात् स निर्गतभयः (पुरुषः)। यशः एव धनं यस्य स यशोधनः। आरूढः वानरः यस्मिन् सः आरूढवानरः (वृक्षः)। पराजिता अरयो येन सः पराजितारिः (नृपः)। महान् आशयः यस्य स महाशयः (पुरुषः)। महान् आत्मा यस्य सः महात्मा (गांधी)। चत्वारि मुखानि यस्य सः चतुर्मुखः (ब्रह्मा)। दश आननानि यस्य सः दशाननः (रावणः)। जिता अरयः येन: सः जितारिः (शत्रुओं को जीतने वाला कोई वीर)। मृतः पुत्रः यस्य सः मृतपुत्रः। मृता भार्या यस्य सः मृतभार्यः। विगतः धवः (पतिः) यस्याः सा विधवा।

(२) **व्यधिकरण**—जहाँ समास के दोनों खण्डों में विभक्ति समान न हो। जैसे—

धनुः पाणौ यस्य सः=धनुष्पाणिः (राम)। कुम्भात् जन्म यस्य सः=कुम्भजन्मा (अगस्त्य)। खड्गं हस्ते यस्य सः—खड्गहस्तः। पापे मतिः यस्य सः=पापमतिः। चक्रं पाणौ यस्य सः=चक्रपाणिः (विष्णु)। कण्ठे कालः यस्य सः=कण्ठेकालः (शिव)।

उपमान शब्दों के साथ बहुव्रीहि समास—चन्द्र इव मुखं यस्याः सा=चन्द्रमुखी मृगस्य नयने इव नयने यस्याः सा=मृगनयनी। कमले इव नेत्रे यस्य सः=कमलनेत्रः। चन्द्र इव कान्तिर्यस्य स चन्द्रकान्तिः। पद्मगन्धिः।

(४) **तुम् प्रत्ययान्त शब्दों के साथ बहुव्रीहि समास**—गन्तुं मनः यस्य सः=गन्तुमनाः (जाने को इच्छुक)। कर्तुं मनः यस्य सः=कर्तुमनाः। एवम्—कर्तुकामः, गन्तुकामः, पठितुमनाः, तर्तुमनाः, हन्तुमनाः।

(५) व्यतिहार—केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धमारब्धम्=केशाकेशि, दण्डादण्डि, मुष्टीमुष्टि आदि।

६. द्वन्द्व समास

द्वन्द्व शब्द का अर्थ है जोड़ा। जहाँ एक जैसे दो या दो से अधिक शब्द साथ-साथ प्रयुक्त किये जाएँ, वहाँ द्वन्द्व समास होता है। इस समास में दोनों ही पद प्रधान होते हैं। जैसे—

दिनञ्च यामिनी च दिनयामिन्यौ। कन्दञ्च, मूलञ्च, फलञ्च, कन्दमूलफलानि। माता च पिता च मातापितरौ। हस्तौ च पादौ च हस्तपादम्। भेरी चं पटहश्च भेरीपटहम्। मथुरा च पाटलिपुत्रञ्च मथुरापाटलिपुत्रम्। अहश्च रात्रिश्च अहोरात्रम्। - It is an exception.

बालकश्च बालकश्च बालकश्च=बालकाः। ब्राह्मणश्च ब्राह्मणी च=ब्राह्मणौ। हंसी च हंसश्च=हंसौ। पुत्रश्च दुहिता च=पुत्रौ। माता च पिता च=पितरौ। रामश्च सीता च=सीतारामौ।

द्वन्द्वसमास के तीन भेद होते हैं—(१) इतरेतर द्वन्द्व। (२) समाहार द्वन्द्व। (३) एकशेष द्वन्द्व।

(१) इतरेतर द्वन्द्व – इसके विग्रह में पदों के बीच में 'च' शब्द दोहराया जाता है। समास करने पर अन्तिम पद में ही कारक तथा वचन लगता है, दो शब्द होने पर अन्त वाले शब्द में द्विवचन होता है। जैसे—लवः च कुशः च इति लवकुशौ (लव और कुश) और तीन या अधिक शब्द होने पर अन्त वाले शब्द में बहुवचन होता है। जैसे—रामश्च लक्ष्मणश्च भरतश्च शत्रुघ्नश्च=राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्नाः।

इतरेतर द्वन्द्व में समस्त पद का लिंग अन्तिम शब्द के अनुसार होता है, जैसे—कुक्कुटश्च मयूरी च कुक्कुटमयूर्यौ (मुर्गा और मोरनी)। सीता च रामश्च सीतारामौ। वर्षा च वसन्तश्च वर्षावसन्तौ।

विद्यासम्बन्ध—होता च पोता च होतापोतारौ (प्रथम शब्द ऋकारान्त होते हुए भी आकारान्त हो जाता है)।

परिवार सम्बन्ध—माता च पिता च मातापितरौ (यहाँ भी प्रथम ऋकारान्त शब्द आकारान्त हो गया)।

(२) समाहार द्वन्द्व—जिस समास में समाहार (समूह, योग, संचय) का अर्थ प्रकट हो, उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। समाहार द्वन्द्व होने के बाद समस्त पद सदा नपुंसकलिंग एकवचन होगा। जैसे—आहारश्च निद्रा च भयं च=आहार-निद्राभयम्।

(अ) प्राणधारियों के अंग आदि—प्राणी, सेना, तूर्य (बैंड बाजा), तथा द्रव्य के अंगों में समाहार द्वन्द्व होता है। इस समास में विग्रह करते हुए दो पदार्थों में 'तयोः समाहारः' या 'अनयोः समाहारः' लगता है और बहुत से पदार्थों के समस्त पद का विग्रह करते हुए बीच में 'तेषां समाहारः' या 'एतेषां समाहारः' लगेगा। जैसे—हस्तौ

च पादौ च तेषां समाहारः हस्तपादम् । नेत्रे च शिरश्च मुखञ्च तेषां समाहारः नेत्र-शिरोमुखम् । दन्ताश्च ओष्ठौ च तेषां समाहारः दन्तोष्ठम् ।

(आ) सेना के अंग—रथिकाश्च, अश्वारोहाश्च रथिकाश्वारोहम् । धन्विनश्च कौन्तिकाश्च तेषां समाहारः धन्विकौन्तिकम् ।

(इ) तूर्याङ्ग (बैंड बाजे के अंग)—

मार्दङ्गिकाश्च पाणविकाश्च तेषां समाहारः मार्दङ्गिकपाणविकम् ।

(ई) क्षुद्रजन्तु—दंशाश्च मशकाश्च तेषां समाहारः दंशमशकम् । यूकाश्च लिक्षाश्च तासां समाहारः यूकालिक्षम् ।

(उ) सहजवैरसम्बन्धी—काकाश्च उलूकाश्च तेषां समाहारः काकोलूकम् । अहिश्च नकुलश्च तयोः समाहारः अहिनकुलम् ।

द्वन्द्व समास के कुछ उदाहरण ऐसे हैं जिनमें सामान्य नियम नहीं लगते । जैसे—द्यौश्च पृथ्वी च द्यावापृथिव्यौ, दिवस्पृथिव्यौ । द्यावाभूमी । द्यावाक्षमे । उषसा-सूर्यौ । जाया च पतिश्च=दम्पती, जम्पती, जायापती । स्त्री च पुमांश्च=स्त्रीपुंसौ । धेनुश्च अनड्वांश्च=धेन्वनडुहौ । अक्षिणी च भ्रुवौ च अक्षिभ्रुवम् । दाराश्च गावश्च =दारगवम् । ऊरू च अष्ठीवन्तौ च ऊर्वष्ठीवम् । पादौ च अष्ठीवन्तौ च=पादष्ठीवम् । नक्तं च दिवा च=नक्तंदिवम् । रात्रौ च दिवा च रात्रिन्दिवम् । अहः च दिवा च= अहर्दिवम् ।

द्वन्द्व समास में क्रम का नियम—द्वन्द्व समास करते हुए पदों को किस क्रम में रखना चाहिए, इसके लिए निश्चित नियम हैं। उनसे भिन्न क्रम होने पर अशुद्ध माना जाएगा ।

(क) अनेक स्वरान्त शब्द हों तो इ, उ अन्त वाले शब्द पहले रखने चाहिएँ तथा उ में भी इ पहले और उ पीछे । जैसे—

हरश्च हरिश्च=हरिहरौ । गुरुश्च हरिश्च=हरिगुरू ।

किन्तु जब एक से अधिक इ, उ वाले पद हों तो वक्ता या लेखक की इच्छा है कि वह जैसा चाहे क्रम रखे । जैसे—हरिश्च हरश्च गुरुश्च=हरिहरगुरवः अथवा हरिगुरुहराः ।

(ख) स्वरादि तथा अ अन्त वाला शब्द पहले रखना चाहिए । जैसे—

अश्वश्च इन्द्रश्च रथश्च=अश्वेन्द्ररथाः अथवा इंद्राश्वरथाः । अग्निश्च इन्द्रश्च =इन्द्राग्नी ।

(ग) कम अक्षरों वाला शब्द पहले रखना चाहिए । जैसे—शिवकेशवौ । ग्रीष्मवसन्तौ ।

(घ) ऋतु और नक्षत्र ज्योतिषशास्त्र के क्रम के अनुसार समस्त पद में रखने चाहिएँ जैसे—हेमन्तशिशिरवसन्ताः (वसन्त-शिशिर-हेमन्ताः अशुद्ध होगा) । कृतिका-रोहिण्यौ ।

(ङ) अधिक महत्त्व (विवक्षा) वाला पद पहले रखना चाहिए। जैसे—तापस-पर्वतौ।

(च) चारों वर्णों के या भाइयों के नाम आने पर उन्हें उनके क्रम से रखना चाहिए। जैसे—ब्राह्मणक्षत्रियविशः ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः। युधिष्ठिरार्जुनौ।

(३) एकशेषद्वन्द्व—जहाँ दो या दो से अधिक पदों में समास करने के अनन्तर, एक ही महत्त्वपूर्ण पद शेष रहता है और पुँल्लिग होता है उसे एकशेष द्वन्द्व कहते हैं। जैसे—रामश्च रामश्च=रामौ।[1] रामश्च रामश्च रामश्च=रामा.[2]।

(क) पुँल्लिग और स्त्रीलिंग के एकशेष में पुँल्लिग शब्द शेष रह जाता है। जैसे हंसी च हंसश्च=हंसौ। ब्राह्मणी च ब्राह्मणश्च=ब्राह्मणौ। इसी प्रकार शूद्रौ, अजौ आदि।

भ्राता च स्वसा च भ्रातरौ। पुत्रश्च दुहिता च पुत्रौ। श्वश्रूः च श्वशुरश्च=श्वशुरौ। स च सा च=तौ। सा च नरेशश्च=तौ। सा च यश्च=यौ (अथवा) तौ।

विशेष—पुँल्लिग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग—तीनों लिंगों के पद होने पर एकशेष करते हुए अन्तिम शब्द को नपुंसकलिंग होगा। जैसे—तच्च देवदत्तश्च कान्ता च—तानि।

अभ्यास

(१) निम्नलिखित पदों का विग्रह करके समास का केवल नाम लिखिए—

निर्मक्षिकम्। गुणहीनः। यूपदारुः। चौरभयम्। यथासामर्थ्यम्। राम-लक्ष्मणौ। अधिवैकुण्ठम्। प्रत्यक्षम्। राज्याश्रितः। पाणिपादम्। देवमन्दिरम्। यशोधनः। अनर्थम्। अपुत्रः। त्रिलोकी। जनकादरः। विजितारिः। मातापितरौ। दम्पती। मथुरा-पाटलिपुत्रम्। सुखानुभूतिः। राजभयम्। बालकाः। हंसौ। पितरौ। दशाननः। पीताम्बरम्। पीतवस्त्रम्।

(२) संस्कृत में अनुवाद उचित समस्त पदों से कीजिए—

(१) राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न दशरथ के चार पुत्र थे।
(२) सीताराम को सारा संसार स्मरण करता है।
(३) गुणों से हीन पुरुष को संसार में कोई नहीं पूछता।
(४) प्रत्येक मनुष्य अपनी शक्ति के अनुसार कार्य करता रहे।
(५) गाँव जाने वाले सभी लोगों को पहले यहाँ बुलाओ।
(६) नीले वस्त्र वाली यवन-कन्या है।
(७) कौओं का और उल्लुओं का स्वाभाविक वैर होता है।
(८) महाभारत के युद्ध में रथवालों और घुड़सवारों का महान् युद्ध हुआ।
(९) ये फल बच्चों के लिए दें।
(१०) महात्मा ही तपस्या से महादेव बन सकता है।
(११) धनुष्पाणि श्रीराम को सब नमस्कार करते हैं।

---

१. राम और परशुराम। २. राम, परशुराम और बलराम

(३) नीचे विग्रह किये हुए शब्दों में समास कीजिए—दिने दिने। महान् आत्मा। मुखम् कमलम् इव। पञ्चानां पात्राणां समाहारः। प्रियः चासौ सखा। शक्तिम् अनतिक्रम्य। चन्द्रः इव मुखं यस्याः सा। चक्रं पाणौ यस्य सः। कुम्भं करोतीति। कृष्णस्य समीपम्।

(४) निम्नलिखित समस्त शब्दों में विग्रह कीजिए और समासों के नाम भी बताइए—

शीतोष्णम्। वनेचरः। सपत्नीकः।
घनश्यामः। उपगङ्गम्। सरसिजम्।
भूतवलिः। चित्रगुः। जितेन्द्रियः।
शब्दार्थौ। अहिनकुलम्। नरशार्दूलः।
पीताम्बरः। द्वादश। सुप्तोत्थितः।
महापुरुषः। युधिष्ठिरार्जुनभीमनकुलसहदेवाः।
कन्दमूलफलानि। शान्तिदूतः।

सप्तदश अध्याय

तद्धित-प्रत्यय

शब्दों की रचना करनेवाले संस्कृत व्याकरण में प्रायः दो प्रकार के प्रत्यय हैं—[१] कृत्प्रत्यय, [२] तद्धित प्रत्यय।

(१) कृत्प्रत्यय—धातुओं से तृच्, क्तिन्, ण्वुल्, ल्युट् आदि जो प्रत्यय लगते हैं इन्हें कृत्प्रत्यय कहते हैं। पीछे इनका वर्णन कर चुके हैं।

(२) तद्धित प्रत्यय—जो प्रत्यय संज्ञा आदि शब्दों के साथ लगकर उन्हें कर्त्ता, विशेषण आदि बना देते हैं उन्हें तद्धित-प्रत्यय कहते हैं। संस्कृत व्याकरण में इनका अत्यन्त विस्तार से वर्णन किया गया है किन्तु यहाँ कुछ अत्यन्त उपयोगी एवं पाठयक्रम में नियत तद्धित प्रत्ययों और उनसे बनने वाले शब्दों का वर्णन किया जाता है।

तद्धित प्रत्यय अनेक अर्थों में प्रत्युक्त होते हैं। इन्हें क्रम से नीचे देखिए:—

अण् (अ)—यह प्रत्यय सन्तान अर्थ में होता है। अण् का ण्' लुप्त हो जाता है, और संज्ञा शब्द के आदि स्वर को वृद्धि हो जाती है तथा शब्द के अन्तिम स्वर का लोप हो जाता है।

उदाहरण—वसुदेवस्य अपत्यं पुमान्—वासुदेवः। वसुदेव+अण् आदि-वृद्धि (वसुदेव के पुत्र श्रीकृष्ण)। इसी प्रकार—

मनोः अपत्यम्=मानवः। रघोः गोत्रापत्यम्=राघवः।

यदोः अपत्यम्=यादवः। वसिष्ठस्य गोत्रापत्यम्=वासिष्ठः।

पुत्रस्य अपत्यम्=पौत्रः। पृथायाः अपत्यं पुमान्=पार्थः।

इञ् (इ)— यह प्रत्यय भी अपत्यार्थ में होता है। ञ् का लोप और आदि-वृद्धि भी होगी।

दशरथस्य अपत्यं पुमान्=दाशरथिः। (राम-लक्ष्मण आदि)

दक्षस्य गोत्रापत्यं=दाक्षिः (दक्ष् की सन्तान)।

सुमित्रायाः अपत्यं पुमान् सौमित्रिः [लक्ष्मण, शत्रुघ्न], द्रोणस्यापत्यं पुमान् द्रौणिः (अश्वत्थामा)।

ण्यत्—यह प्रत्यय भी अपत्यार्थ में होता है ण् और त् लुप्त हो जाते हैं। शेष कार्य पूर्ववत्। गर्गस्य गोत्रापत्यं पुमान्=गार्ग्यः।

दितेः अपत्यं प्रमान्=दैत्यः।

अदितेः अपत्यं पुमान्=आदित्यः।

चणकस्य अपत्यं पुमान्=चाणक्यः।

इनि (इन्)—अकारान्त संज्ञा शब्दों से 'यह इसका है' इस अर्थ में इन् प्रत्यय

होता है। जैसे—

दण्ड+इन्=दण्डिन् (दण्डधारी) 'दण्डः अस्य अस्ति' इस अर्थ में इन् प्रत्यय हुआ। एवम्—

सुखम् अस्य अस्ति इति—सुख+इन्=सुखिन्।
दुःख+इन्=दुःखिन्। शिखा+इन्=शिखिन् (मोर)
अर्थ+इन्=अर्थिन्। माया+इन्=मायिन्।
रोग+इन्=रोगिन्। योग+इन्=योगिन्।
पाप+इन्=पापिन्। धन+इन्=धनिन्।
योग+इन्=योगिन्। ज्ञान+इन्=ज्ञानिन् इत्यादि।

ठक् (इक)—अनेक शब्दों से 'यह इसका है' इसी अर्थ में 'ठक्' प्रत्यय भी होता है। क् का लोप और ठ को 'इक' हो जाता है। जैसे—

धनम् अस्य अस्ति—इस अर्थ में धन+इक=धनिकः।
माया+इक=मायिकः। दण्ड+इक=दण्डिकः।
व्रीहि+इक=व्रीहिकः।

ठञ् (इक)='होनेवाला' इस अर्थ में तथा अन्य अनेक अर्थों में संज्ञादि शब्दों से ठञ् प्रत्यय होता है। ञ् का लोप और ठ को इक तथा आदिवृद्धि।

'मासे भवः'—इस अर्थ में—मास+इक=मासिकः।
वर्षे भवः—वर्ष+इक=वार्षिकः।
धर्मं चरति—धर्म+इक=धार्मिकः।
वेतनेन जीवति—वेतन+इक=वैतनिकः।
दध्ना संस्कृतम्—दधि+इक=दाधिकम्। इत्यादि।

खञ् (ईन)—सम्बन्ध अर्थ में संज्ञादि शब्दों से खञ् प्रत्यय होता है। ञ का लोप और ख को ईन हो जाता है। जैसे—

ग्राम+ईन=ग्रामीणः। नव+ईन=नवीनः।
कुल+ईन=कुलीनः। प्राच्+ईन=प्राचीनः।

(मतुप् मत्-वत्)—'यह उसका है' या 'उसमें है'—इन अर्थों को प्रकट करने के लिए संज्ञादि शब्दों से 'मतुप्' प्रत्यय होता है। उप् का लोप हो जाता है। अकारान्त एवं हलन्त शब्दों के मतुप् के म् को व् हो जाता है।

जैसे—रूपम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति—रूपवत् (रूपवान्)
रसः " " "—रसवत् (रसवान्)
धनम् " " "—धनवत् (धनवान्)

लक्ष्मीः अस्य अस्मिन् वा अस्ति=लक्ष्मीवत् (लक्ष्मीवान्)। 'म' उपधा वाले लक्ष्मी आदि शब्दों के साथ भी म को व हो गया है।

कीर्तिः अस्ति अस्मिन् वा अस्ति—कीर्तिमत् (कीर्तिमान्)
श्रीः " " "—श्रीमत् (श्रीमान्)

यशः अस्य अस्मिन् वा अस्ति इति—यशस्वत् (यशस्वान्)
बुद्धि " " " —बुद्धिमत् (बुद्धिमान्)

इतच् (इत)—तारकादि शब्दों से संजात (उत्पन्न) अर्थ में इतच् प्रत्यय होता है। च् का लोप। उदाहरण—

तारकाः अस्मिन् संजाताः=तारक+इत=तारकितम् (नभः)
फलानि अस्मिन् संजातानि=फल+इत=फलितः (वृक्षः)
पिपासा अस्मिन् संजाता=पिपासा+इत=पिपासितः पुरुषः।
दुःखम् अस्मिन् संजातम्=दुःख+इत=दुःखितः जनः।
एवम्—पुष्पित, मूर्छित, मुद्रित, बुभुक्षित इत्यादि।

मयट् (मय)—विकार आदि अर्थों में मयट् प्रत्यय होता है। ट् का लोप।
हिरण्यस्य विकारः=हिरणमयम् (आभूषण सोने का) (य का लोप भी)
काष्ठस्य " =काष्ठमयम् (लकड़ी से बनी वस्तु)
घृतं प्रचुरं यस्मिन्=घृतमयम् (अन्नम्)।
जलेन व्याप्तम्—जलमयम्, विष्णोः व्याप्तम्=विष्णुमयम् इत्यादि।

यत् (य)—अर्हति (योग्य है) इस अर्थ में संज्ञादि शब्दों से यत् प्रत्यय होता है। त् का लोप। उदाहरण—

वधम् अर्हति—वध्+य=वध्यः। (अ लोप भी)
दण्डम् अर्हति—दण्ड+य=दण्ड्यः।
अर्घम् अर्हति=अर्घ+य=अर्घ्यः।
भेदम् अर्हति=भेद+य=भेद्यः।

त्व—'भाव' अर्थ में संज्ञादि शब्दों से त्व प्रत्यय होता है। जैसे—
मनुष्यस्य भावः=मनुष्यत्वम्। पशोर्भावः=पशुत्वम्।
मूर्खस्य भावः=मूर्खत्वम्। लघोर्भावः=लघुत्वम्।
महतः भावः=महत्त्वम्। गुरोर्भावः=गुरुत्वम्।
एवम्—प्रभुत्वम्, देवत्वम् इत्यादि।

तल्—'भाव' अर्थ में ही तल् प्रत्यय भी होता है। ल् का लोप हो जाता है। और तल् प्रत्ययान्त शब्द 'टाप्' (आ) प्रत्यय करके स्त्रीलिंग बन जाता है। जैसे—
मनुष्यस्य भावः=मनुष्य+त+आ=मनुष्यता।
एवम्—पशुता, मूर्खता, लघुता, गुरुता, महत्ता, प्रभुता आदि।

वुञ् (अक)—धूम आदि शब्दों से 'तत्र भवः' आदि अर्थों में वुञ् प्रत्यय होता है। ञ् का लोप और वु को अक हो जाता है।
धूमे भवः—धौमकः। तीर्थे भवः—तैर्थकः।

थाल्—'प्रकार' अर्थ में सर्वनाम शब्दों से 'थाल्' प्रत्यय होता है। ल् लुप्त हो जाता है। 'थाल्'—प्रत्ययान्त शब्द अव्यय बन जाता है।
सर्वैः प्रकारैः इति—सर्व+था=सर्वथा।

येन प्रकारेण इति—यत्+था=यथा।
तेन प्रकारेण इति—तत्+था=तथा।
अन्येन प्रकारेण इति—अन्य+था=अन्यथा।

मात्रच्—परिमाण अर्थ में शब्दों से मात्रच् प्रत्यय होता है। च् लुप्त होता है।
हस्तः प्रमाणम् (परिमाणम्) अस्य—हस्त+मात्र=हस्तमात्रम्।
अंगुलिः प्रमाणम् अस्य=अंगुलिमात्रम्। कटिः प्रमाणम् अस्य=कटिमात्रम्।
तालः प्रमाणम् अस्य=तालमात्रम्। मुष्टिः प्रमाणम् अस्य=मुष्टिमात्रम् इत्यादि।

ज्ञातव्य—यहाँ 'प्रमाण' शब्द 'परिमाण' अर्थ को प्रकट कर रहा है।

वक्तव्य—इसी प्रकार ऊपर दिये गये प्रत्ययों से अन्य शब्दों की रचना करने का अभ्यास करना चाहिए।

अभ्यास

१. निम्नलिखित संज्ञा शब्दों के साथ जो प्रत्यय दिये गये हैं उनसे जो रूप बनते हैं, बनाकर लिखिए—

रघु+अण्=.........। द्रोण+इञ्=.........।
अदिति+यञ्=.......। धन+इन्=.........।
माया+इक=.......। ग्राम+ईन्=.........।
बुद्धि+मतुप्=.........। पिपासा+इत=......।

२. निम्नलिखित अर्थों में जो प्रत्यय लगता हो, लगाकर शब्द बनाइए।

मनुष्यस्य भावः—मनुष्य+.........। काष्ठस्य विकारः—काष्ठ+.......।
दण्डम् अर्हति—दण्ड+...........। वेतनेन जीवति—वेतन+.........।

३. निम्नलिखित प्रत्ययों को संज्ञादि शब्दों में जोड़िए—
मात्रच्, थाल्, इतच्, मतुप्, मयट्।

४. अधोदत्त शब्दों में प्रकृति-प्रत्यय अलग कीजिए—
प्राचीन, यशस्वत्, दाशरथिः, यादवः, दैत्यः।

५. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—
(तद्धित-प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग कीजिए)

(क) वसुदेव के पुत्र श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश दिया।
(ख) सुमित्रा के पुत्र को सौमित्रि कहते हैं।
(ग) धन से युक्त पुरुष सुख अनुभव करता है।
(घ) यह कार्य वर्ष-भर में होनेवाला है।
(ङ) यह पापी दण्ड के योग्य है।
(च) गाँव का रहनेवाला गन्ने लाया।
(छ) आज आकाश तारों से व्याप्त है।
(ज) अरे कुलीन! ऐसे लघु-भाव को क्यों ग्रहण करते हो?
(झ) केवल घृत से कार्य नहीं होगा, आटा भी लाओ।
(ञ) सब प्रकार से भारत अब स्वाधीन है।

अष्टादश अध्याय

स्त्री-प्रत्यय

जिन प्रत्ययों के लगाने से पुंल्लिग शब्द स्त्रीलिंग बन जाते हैं, उन प्रत्ययों को स्त्री-प्रत्यय कहते हैं।

संस्कृत भाषा में दो प्रकार के 'स्त्रीत्व'-वाची शब्द हैं। एक स्वभाव से (मूल रूप से) स्त्रीवाची, जैसे—

मूल स्त्रीवाची शब्दों के प्रकार—

आकारान्त शब्द—लता, प्रजा, धरा, ज्या, वसुधा आदि।

इकारान्त शब्द—मति, बुद्धि, गति, सृष्टि आदि।

ईकारान्त शब्द—नदी, नाड़ी, धी, मही, पृथ्वी, धरित्री आदि।

उकारान्त शब्द—धेनु, रज्जु आदि।

ऊकारान्त शब्द—वधू, चमू आदि।

ऋकारान्त शब्द—स्वसृ, मातृ, दुहितृ, ननान्दृ आदि।

इसी तरह ऐकारान्त रै (धन) ओकारान्त 'गो' और औकारान्त 'नौ' आदि, और कुछ व्यंजनान्त शब्द भी मूल स्त्रीवाचक हैं। जैसे—वाच्, विपद्, गिर्, अप् आदि।

दूसरे प्रकार के स्त्रीत्ववाची वे शब्द हैं, जो मूल पुंल्लिग शब्दों से प्रत्ययों का प्रयोग करके स्त्रीलिंग बनाये जाते हैं।

पुंल्लिग से बने स्त्रीत्ववाची शब्दों के प्रकार—

सुत से सुता	श्रीमत् से श्रीमती
गौर से गौरी	युवत् से युवती
इन्द्र से इन्द्राणी	श्वशुर से श्वश्रूः इत्यादि।
भवत् से भवती	

पुंल्लिग शब्दों से स्त्रीलिंग शब्द बनाने के लिए चार प्रकार के प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं—

१. वे शब्द, जिनके अन्त में आ प्रत्यय लग जाता है। जैसे—अज से अजा।

२. वे शब्द, जिनके अन्त में ई प्रत्यय लग जाती है। जैसे—देव से देवी।

३. आनी प्रत्यय से भी स्त्रीलिंग शब्द बनते हैं। जैसे—इन्द्र से इन्द्राणी आदि।

४. ति या ती प्रत्यय लगने से भी स्त्रीलिंग शब्द बनते हैं। जैसे—युवा से युवति, युवती।

इन सब प्रत्ययों से बने शब्दों को नीचे विस्तार से देखिए—

अष्टादश अध्याय

[१] आ प्रत्यय

कृष्ण	कृष्णा	कमल	कमला
अज	अजा	बाल	बाला
सुत	सुता	शुक्ल	शुक्ला
तनुज	तनुजा	एडक	एडका
चपल	चपला	मेष	मेषा

'अक'—अन्त वाले शब्दों को 'आ' प्रत्यय लगाकर 'अक' के 'अ' को 'इ' हो जाता है। जैसे—

कारक—कारिका	पाचक—पाचिका
पाठक—पाठिका	याचक—याचिका
साधक—साधिका	गायक—गायिका
अध्यापक—अध्यापिका	ज्ञापक—ज्ञापिका
नायक—नायिका	बाधक—बाधिका
आराधक—आराधिका	बोधक—बोधिका

[२] ई प्रत्यय

(क) अकारान्त जातिवाचक शब्दों के पीछे 'ई' प्रत्यय लग जाता है। उदाहरण—

पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	अर्थ
वायस	वायसी	(कव्वी)
हरिण	हरिणी	(हिरनी)
शृगाल	शृगाली	(गीदड़ी)
गर्दभ	गर्दभी	(गधी)
सारमेय	सारमेयी	(कुतिया)
कुक्कुट	कुक्कुटी	(मुर्गी)
तापस	तापसी	(तपस्विनी)
धीवर	धीवरी	(मछेरिन)
काक	काकी	(कव्वी)
कुक्कुर	कुक्कुरी	(कुतिया)
सिंह	सिंही	(शेरनी)

(ख) यदि किसी व्यवसायवाची शब्द से स्त्रीलिंग बनाना हो तो भी ई प्रत्यय लग जाता है। जैसे कुम्भकारस्य स्त्री कुम्भकारी। स्वर्णकारस्य स्त्री स्वर्णकारी। चर्मकारस्य स्त्री चर्मकारी। गोपस्य स्त्री गोपी।

(३) 'आनी' प्रत्यय से स्त्रीलिंग बने शब्द

वरुण	वरुणानी	(वरुण की पत्नी)
इन्द्र	इन्द्राणी	(इन्द्र की पत्नी)

भव	भवानी	(पार्वती)
शर्व	शर्वाणी	(")
रुद्र	रुद्राणी	(")
हिम	हिमानी	(बहुत अधिक हिम)
अरण्य	अरण्यानी	(घना वन)

(४) विकल्प में 'ई' या 'आ' भी हो जाता है।

मातुल	मातुलानी, मातुली, मातुला
उपाध्याय	उपाध्यायानी उपाध्यायी (उपाध्याय की पत्नी), उपाध्याया (स्वयं अध्यापिका)
क्षत्रिय	क्षत्रियाणी (क्षत्रिय की पत्नी), क्षत्रिया (क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुई)
आचार्य	आचार्याणी (उपाध्याय की पत्नी), आचार्या (स्वयं अध्यापिका)

(५) ऋकारान्त तथा भवत् शब्द से भी 'ई' प्रत्यय (ङीप्) हो जाता है।

उदाहरण—

धातृ	धात्री	क्रोष्टृ	क्रोष्ट्री
हन्तृ	हन्त्री	कर्तृ	कर्त्री
श्रोतृ	श्रोत्री	गन्तृ	गन्त्री

(६) नकारान्त शब्दों और सकारान्त विद्वस् शब्द से भी 'ई' प्रत्यय होता है। यदि वे संख्यावाचक न हों।

राजन्	राज्ञी	दण्डिन्	दण्डिनी
यशस्विन्	यशस्विनी	विद्वस्	विदुषी
तेजस्विन्	तेजस्विनी	मनस्विन्	मनस्विनी
कपालिन्	कपालिनी	तपस्विन्	तपस्विनी

(७) वत् मत् (मतुप्), क्तवत् और ईयस् से भी ई प्रत्यय हो जाता है।

बलवत्	बलवती	शक्तिमत्	शक्तिमती
गुणवत्	गुणवती	बुद्धिमत्	बुद्धिमती
भूतवत्	भूतवती	श्रीमत्	श्रीमती
दयावत्	दयावती	लघीयस्	लघीयसी
कृतवत्	कृतवती	गरीयस्	गरीयसी
पठितवत्	पठितवती	कनीयस्	कनीयसी

(८) 'शतृ' अन्त वाले रूपों का स्त्रीलिंग बनाते समय उनके पीछे ई लगाया जाता है। भ्वादि, दिवादि, तुदादि और चुरादि गणों की धातुओं में ई और शतृ के त् से प्रथम न् भी लग जाता है।

उदाहरण—

धातु	शतृ प्रत्यय	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग
गम्	गच्छत्	गच्छन्	गच्छन्ती
भू	भवत्	भवन्	भवन्ती
नृत्	नृत्यत्	नृत्यन्	नृत्यन्ती
लिख्	लिखत्	लिखन्	लिखन्ती
चुर्	चोरयत्	चोरयन्	चोरयन्ती

(९) कुछ विशेष परिवर्तन वाले स्त्रीलिंग शब्द—

पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग
श्वसुर	श्वश्रू:	युवन्	युवति:, युवती
पितृ	मातृ	मनुष्य	मानुषी
पति	पत्नी	मनु	मानवी
मासिक	मासिका		
रोहित	रोहिणी, रोहिता		

(१०) यदि गुणवाचक उकारान्त विशेषण हो तो विकल्प से ई हो जाता है ।

मृदु	मृद्वी, मृदु	बहु	बह्वी, बहु
गुरु	गुर्वी, गुरु	पटु	पट्वी, पटु

(११) वृद्धा के अतिरिक्त अन्य अवस्थावाचक शब्दों से परे भी ई हो जाता है ।

उदाहरण—

कुमार कुमारी, किशोर किशोरी, तरुण तरुणी

उदाहरण—

१. वह बड़ी दीन है ।	सा अति दीना वर्तते ।
२. लता परीक्षा में तृतीय आई ।	लता परीक्षायां तृतीया अतिष्ठत् ।
३. दूसरी लड़की कहाँ है ?	द्वितीया बाला क्व अस्ति ?
४. पांचवीं तारीख को उत्सव होगा ।	पंचम्यां तारिकायामुत्सव: भविष्यति ।
५. पूर्व दिशा प्रकाशित हो रही है ।	पूर्वा दिशा प्रकाशमाना अस्ति ।
६. मेरी प्रिया वाचाल है ।	मम प्रिया वाचाला वर्तते ।
७. लड़की ज्वर से कमजोर हो गई ।	बाला ज्वरेण दुर्बलाऽभवत् ।
८. यह गौ सीधी है ।	इयं गौ: सरला वर्तते ।
९. यह छोटी बहन है या बड़ी ?	इयं कनिष्ठा भगिनी वर्तते ज्येष्ठा वा ?
१०. चिड़िया झटपट उड़ गई ।	चटका झटिति उदडयत ।
११. गौ ने बछड़ा दिया है या बछिया ?	धेनु: वत्स असूत वत्सां वा ?

अभ्यास

(१) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) यह बेल फल देने वाली है।

(२) आत्महत्या करने वाली कौन थी ?

(३) शेरनी बोली—तू हाथी को नहीं मार सकता।

(४) उस तरुणी स्त्री ने कहा—मैं अध्यापिका हूँ।

(५) कुम्हारिन मिट्टी के बर्तन लाई।

(६) धोबिन कपड़े कब लायेगी ?

(७) यह बूढ़ी मेरी दादी है।

(८) क्या वह बूढ़ी तेरी नानी है ?

(९) इस नाटक के नायक-नायिका दोनों सुन्दर हैं।

(२) निम्नलिखितों के स्त्रीवाचक शब्द लिखिए:—

गोप, आचार्य, चतुर, गौर, मनुष्य, वरुण, ब्राह्मण, मत्स्य, पटु, गुरु, पति, कुमार, कुम्भकार, भव, रुद्र, युवा, बालक, मातुल, वर, भवत्, नेतृ, मध्यम।

(३) स्त्रीप्रत्यय कौन-कौन हैं, प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

एकोनविंश अध्याय

विशेषण तथा तुलना

विशेष्य—जिस शब्द के द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु, जाति, गुण या क्रिया का का बोध होता है उसे 'विशेष्य' कहते हैं। जैसे—

व्यक्तिवाचक—रामः, गंगा, रामेश्वरम्।

वस्तुवाचक—घटः, घृतम्, जलम्।

जातिवाचक—पशुः, पक्षी, कीटः, मनुष्यः।

गुणवाचक—उद्यमः, लघुता, वीरता, धैर्यम्।

क्रियावाचक—पठनम्, श्रवणम्, हननम्।

विशेषण—जिस शब्द के द्वारा विशेष्य के गुण, अवस्था, संज्ञा आदि का बोध हो उसे 'विशेषण' कहते हैं।

ध्यान देने की बात—संस्कृत में, विशेष्यों में जो लिंग, विभक्ति और वचन होते हैं, वही लिंग, विभक्ति और वचन विशेषण के भी होते हैं। जैसे—सुन्दरः शिशुः, सुन्दरी कन्या, सुन्दरम् गृहम्, बलवन्तौ लवकुशौ, वेगवत्यः नद्यः आदि।

आवश्यक विशेषण—संस्कृत के कुछ आवश्यक विशेषण निम्नलिखित हैं:—

अखिल (सब), सम्पूर्ण (पूरा). अगाध (अथाह), अज्ञ (मूर्ख), अटल (जो न टले), अतीत (बीता हुआ), अद्भुत (विचित्र), अधम (नीच), अधीन (वश में), अनुरक्त (प्रेमी), अन्ध (अंधा), अर्वाचीन (नया), अलस (आलसी), अल्प (थोड़ा), अवहित (सावधान), अवैध (गैरकानूनी), असहाय (अशरण), आढ्य (धनी), आत्मीय (अपना), आदिम (पहला), आधुनिक (आजकल का) आध्यात्मिक (आत्मा-सम्बन्धी), आर्द्र (गीला), उग्र (प्रचंड) उच्च (ऊँचा), उत्सुक (उत्कंठित), उदार (दयालु), उद्धत (उद्दंड), उन्मत्त (पागल), उष्ण (गर्म), ऊर्ध्व (ऊपर), ऋजु (सीधा) कटु (कड़वा), कपिश (भूरा), करुण (दयायोग्य), कर्कश (कठोर), कश्मल (मैला), काण (काना), कान्त (प्यारा), कुटिल (दुष्ट, छलिया), कुत्सित (खराब), कृतघ्न (किए उपकार को न मानने वाला), कृपण (कंजूस), केवल (सिर्फ), क्षणिक (पल भर रहने वाला), खंज (लँगड़ा), गम्भीर (गहरा), गर्हित (निन्दनीय), गुरु (बड़ा, भारी) गोल (गोलाकार), गौण (अमुख्य), ग्राम्य (गाँव का), घन (घना), घोर (भयंकर) चंचल (चपल), चारु (सुन्दर), चिर (देर से चला आया), दीर्घ (लंबा), जंगम (चलने वाला), जटिल (कठिनता से समझ में आने वाला), तनु (छोटा) तरल (द्रव्य Liquid), तीक्ष्ण (तेज), दारुण (कठोर), दिव्य (सुन्दर), स्वर्गीय (स्वर्गिक), दुर्गम (कठिनता से जाने योग्य), दुर्धर्ष (कठिनता से दबनेवाला (वश में न आने वाला), दुष्कर (करने में कठिन), धवल (सफेद), उज्ज्वल (चमकीला), धार्मिक (धर्मात्मा),

धूसर (मैला, खाकी रंग का), धूर्त (मक्कार), ध्रुव (अटल), नग्न (नंगा), नव (नवीन), नश्वर (नाशवान्), निखिल (सम्पूर्ण), नितान्त (सर्वथा, बिल्कुल), नित्य (सदा रहने या होने वाला), निपुण (दक्ष), निरीह (बेचारा, इच्छा रहित), निविड़ (घना), निशित (तेज, तीक्ष्ण), निष्ठुर (निर्दय), नूतन (नया), नृशंस (क्रूर), नैसर्गिक (स्वाभाविक) न्यून (कम), पक्व (पका हुआ), पटु (योग्य, कार्यकुशल), पथ्य (नीरोग करने वाला भोजन), परुष (कठोर), पर्याप्त (यथेष्ट), पवित्र (पावन), पांडु (पीला), पाप (पापयुक्त), पीन (मोटा), पीवर (मोटा), पुण्य (पवित्र), पुराण (पुरातन), पृथु (लम्बा-चौड़ा), पैतृक (बाप दादा से चला आया), प्रखर (तेज), प्रगल्भ (ढीठ), प्रफुल्ल (खुश), प्रबल (बलशाली), प्रभूत (अधिक), प्रसिद्ध (प्रख्यात), प्रिय (प्यारा), बधिर (बहरा), बहु (बहुत), भंगुर (टूटने वाला), भासुर (चमकीला), भीरु (डर-पोक), भीषण (भयंकर), भूरि (बहुत), मंजु (मधुर), मंजुल (सुन्दर), मनोरम, मनोज्ञ (सुन्दर), मन्थर (धीमी गति वाला, सुस्त), मलिन (मैला), मसृण (चिकना), महत् (बड़ा), महार्घ (महँगा), मांसल (दृढ़, पुष्ट), मूक (गूंगा), मृत (मरा हुआ), मृदु (कोमल), रमणीय (मनोहर. रम्य), रिक्त (खाली), रुग्ण (रोगी), रुचिर (सुन्दर), रुष्ट (नाराज), लघु (छोटा), वक्र (टेढ़ा), वत्सल (प्रेमी), वदान्य (दयालु), वन्य (जंगली), वाचाल (अधिक बोलने वाला), वार्षिक (सालाना), विकट (भयंकर, टेढ़ा), विलक्षण (विचित्र), वितथ (झूठा), विनीत (विनयी, नम्र), विशाल (बहुत बड़ा), विश्वस्त (विश्वास वाला), विस्तृत (फैला हुआ), विह्वल (घबराया हुआ), शान्त (शान्तिमय), शिथिल (ढीला), शीतल (ठंडा), शुक्ल (सफेद, उजला), शुचि (पवित्र), शुभ (अच्छा, कल्याणकारी), शुभ्र (सफेद, उजला), शुष्क (सूखा), शून्य (सुनसान), श्याम (साँवला), श्वेत (सफेद), सकल (सारा, सब), संकीर्ण (तंग), संकुल (भरा), सफल (कामयाब), समर्थ (करने योग्य,) समस्त (सारा), समान (सम), सरल (सीधा), सहज (स्वाभाविक), सहिष्णु (सहनशील), सार्वजनीन (जनसाधारण का), सित (सफेद, उजला), सुगम (सरल), सूक्ष्म (बारीक), स्थविर (बूढ़ा), स्थावर (स्थिर), स्थाणु (ठूंठ), स्थूल (मोटा), स्फुट (स्पष्ट), स्वाधीन (स्ववश), हिंस्र (हिंसा करने वाला), हृष्ट-पुष्ट (मोटा), हृष्ट (प्रसन्न), ह्रस्व (छोटा)।

इसी प्रकार किसी भी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। विशेषण बनाने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। ये तद्धित प्रत्यय अनेक हैं जिनका पीछे वर्णन कर आये हैं। यहाँ तुलनावाचक शब्दों की रचना करने वाले (१) तरप् (२) तमप्, तराम् (३) तमाम् (४) ईयस् तथा (५) इष्ठन् आदि दिये जाते हैं।

वस्तुओं या व्यक्तियों के गुणों से पारस्परिक मिलान को 'तुलना' कहते हैं।

१. जहाँ दो वस्तुओं में परस्पर तुलना की जाये और एक का उत्कर्ष या अप-कर्ष बताया जाये उसे तुलनावाचक विशेषण (Comparative) कहते हैं। तुलनावाचक

विशेषण में तरप् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है प् का लोप हो जाता है उदाहरणार्थ— पटु से पटुतर-पटुतरा, मधुर से मधुरतर-मधुरतरा.आदि।

२. दो से अधिक वस्तुओं में से यदि किसी एक को अधिक या न्यून बताया जाये तो उसे अतिशयवाचक विशेषण (Superlative) कहते हैं। अतिशय अर्थ में तमप् प्रत्यय का प्रयोग होता है। प् का लोप हो जाता है। उदाहरणर्थ—अधिक से अधिकतम:-अधिकतमी आदि।

मूलावस्था (Positive)	उत्तरावस्था (Comparative)	उत्तमावस्था (Superlative)
प्रिय:	प्रियतर:	प्रियतम:
विद्वान्	विद्वत्तर:	विद्वत्तम:
बुद्धिमान्	बुद्धिमत्तर:	बुद्धिमत्तम:
लघु:	लघुतर:	लघुतम:
अधिक:	अधिकतर:	अधिकतम:

३. इन प्रत्ययों का प्रयोग तुलना (Comparative) और अतिशय (Superlativs) अर्थ में संज्ञा (Noun) उपसर्गों (Prefix) और अव्ययों के अतिशय (indeclinadle) के अन्त में भी किया जाता है।

उत्	उत्तर:	उत्तम:	
नीचैः	नीचैस्तर:	नीचैस्तम:	
उच्चैः	उच्चैस्तर:	उच्चैस्तम:	
अति	अतितर:	अतितम:	—इत्यादि।

४. क्रियाओं व उपसर्गों के साथ इन्हीं अर्थों में प्रयुक्त होने वाले प्रत्यय तराम् और तमाम् हैं। उदाहरणार्थ—

मूलावस्था (Positive)	उत्तरावस्था (Comparative)	उत्तमावस्था (Superlative)
विजयते	विजयतेतराम्	विजयतेतमाम्
लिखति	लिखतितराम्	लिखतितमाम्
नि	नितराम्	नितमाम्
सु	सुतराम्	सुतमाम्

५. कुछ गुणवाचक विशेषणों के साथ प्रयुक्त होने वाले तरप् और तमप् के समान ईयस् और इष्ठन् प्रत्यय भी विकल्प से होते हैं। जैसे—

लघु	(Small)	लघुतर: या लघीयस्	लघुतम: या लघिष्ठ:
प्रशस्य	(Praiseworthy)	श्रेयस्, ज्यायस्	श्रेष्ठ:, ज्येष्ठ:
प्रिय	(Dear)	प्रेयस्, प्रियतर	प्रेष्ठ:, प्रियतम:
स्थिर	(Steady)	स्थेयस्, स्थिरतर	स्थेष्ठ:, स्थिरतम:

मूलावस्था (Positive)		उत्तरावस्था (Comparative)	उत्तमावस्था (Superlative)
स्फिर	(Much)	स्फेयस्	स्फेष्ठः
उरु	(Wide)	वरीयस्	वरिष्ठः
बहु	(Much)	भूयस्	भूयिष्ठः
बहुल	(Much)	बहीयस्	बहिष्ठः
गुरु	(Heavy)	गरीयस्, गुरुतरः	गरिष्ठः, गुरुतमः
वृद्ध	(Old man)	वर्षीयस्, वृद्धतरः	वर्षिष्ठः, वृद्धतमः
पटु	(Wise)	पटीयस्, पटुतरः	पटिष्ठः, पटुतमः
महत्	(Big)	महीयस्, महत्तरः	महिष्ठः, महत्तमः
कृश	(Weak)	क्रशीयस्	क्रशिष्ठः
दृढ़	(Strong)	द्रढ़ीयस्, दृढ़तरः	द्रढ़िष्ठः, दृढ़तमः
तृप्त	(Satisfied)	त्रपीयस्	त्रपिष्ठः
दीर्घ	(Long)	द्राघीयस्	द्राघिष्ठः
वृन्दारक	(Great)	वृन्दीयस्	वृन्दिष्ठः
युवन्	(Young)	यवीयस्	यविष्ठः
अल्प	(Little)	अल्पीयस्, अल्पतरः	अल्पिष्ठः, अल्पतमः
स्रग्विन्	(मालाधारी)	स्रजीयान्	स्रजिष्ठः
स्थूल	(Big, Iarge)	स्थवीयम्, स्थूलतरः	स्थविष्ठ, स्थूलतमः
दूर	(Distant)	दवीयस्, दूरतरः	दविष्ठः:, दूरतमः
ह्रस्व	(Short)	ह्रसीयम्, ह्रस्वतरः	ह्रसिश्ठः, ह्रस्वतमः
क्षिप्र	(Quick)	क्षेपीयस्, क्षिप्रतरः	क्षेपिष्ठः, क्षिप्रतमः
भृश	(Mucu)	भ्रशीयम्	भ्रशिष्ठः
मृदु	(कोमल)	म्रदीयम्, मृदुतरः	म्रदिष्ठः, मृदतमः
अन्तिक	(पास)	नेदीयम्	नेदिष्ठः
क्षुद्र	(छोटा)	क्षोदीयस्, क्षुद्रतरः	क्षोदिष्ठः, क्षुद्रतमः
विपुल	(अधिक)	ज्यायस्	ज्येष्ठः

सूचना—ऊपर दिये गये शब्दों में 'तर', 'तम' प्रत्यय भी जहाँ-जहाँ लगता था वह भी लगाकर दिखा दिया गया है।

अभ्यास

(१) 'तर' और 'तम' प्रत्यय लगाकर अनुवाद कीजिए--

(१) आम जामुन से अधिक स्वादु होता है।

(२) अरुण वरुण से छोटा है।

(३) अनिल सब भाइयों से छोटा है।

(४) सोना सब धातुओं में भारी (गुरु) होता है।

(५) बनारस प्रयाग से अधिक दूर है।
(६) कालिदास सब कवियों में श्रेष्ठ था।
(७) गुड़ द्राक्षा से अधिक मीठा होता है।

(२) तुलनावाचक (Comparative) तथा अतिशयवाचक (Suprlative) विशेषणों से क्या अभिप्राय है ? सोदाहरण समझाइए।

(३) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :—
गंगाजलं सर्वेभ्यः शुद्धतरम् । यस्य द्वे शाटिके स्तः, तयोः इयं शुभ्रतमा । सर्वेषु भ्रातृषु गोविन्दः ज्यायान् श्रेयानपि च । गंगा-यमुनयोः गंगा द्राघिष्ठा । मनुष्येषु नापितः पटुतरः । भ्रातृस्वसुः महिमा भूयसी । बालिकाभ्यः बालकः यवीयान् । असुरेभ्यः देवाः बुद्धिमत्तमाः । वरीयान् देवदारुः दीर्घतरश्च सरलेषु वृक्षेषु । कमलं श्रेष्ठतरं पुष्पं सर्वेषु पुष्पेषु ।

(४) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—
अज्ञः पुरुषः । अधमौ सेवकौ । चपलो बालको धावति । सुशीलाः बालकाः लोकानां प्रियाः भवन्ति ।

विंश अध्याय

उपसर्ग

उपसर्ग (उप+सृज्) का अर्थ है वे शब्दांश, जो संज्ञा-शब्दों तथा धातुओं से पूर्व जुड़कर उनके अर्थ को बदल देते हैं। जैसे कहा भी है—

उपसर्गेण धात्वर्थः बलादन्यत्र नीयते।
प्रहार-आहार-संहार-विहार-परिहारवत्॥
धात्वर्थं बाधते कश्चित्कश्चित्तमनुवर्तते।
तमेवाविशिनष्ट्यन्य उपसर्गगतिस्त्रिधा।

उदाहरण—

प्र+हृ (प्रहार करना) —सिंहः गजं प्रहरति।
आ+हृ (भोजन करना) —बिडालः मूषकमाहरति।
सं+हृ (मार डालना) —रामः रावणं समहरत्।
वि+हृ (घूमना, सैर करना) —स वने विहरति।
परि+हृ (दूर करना) —त्वम् असत्यं परिहर।

उपसर्ग ये हैं—प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप।

उपसर्ग और प्रत्यय—उपसर्ग धातु से पहले जुड़कर अर्थ में परिवर्तन करते हैं। प्रत्यय धातु के पीछे जुड़कर अर्थ में परिवर्तन करते हैं। जैसे—आ+गच्छ+ति—आगच्छति=आता है। इसमें पहले 'आ' उपसर्ग है। बीच में गच्छ (गम्) धातु है और पीछे 'ति' प्रत्यय लगा हुआ है।

उपसर्गों के अर्थ तथा प्रयोग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
प्र	प्रकर्ष, प्रतिष्ठा	वर्षासु अनेके जीवाः प्रभवन्ति (पैदा होते हैं)
परा	विरुद्ध	विद्वान् मूढ़ं पराभवति। (तिरस्कार करता है।)
अप	बुरा, दूर, बुरा शकुन, अपहरण	(१) रावणः सीतामपहरति (चुराता है।) (२) अपस्मारः (मृगी का रोग।)
सम्	साथ	सहपाठिनः संगच्छन्ति। (संग जाते हैं)
अनु	पीछे, अनुकरण	जनाः नेतारमनुगच्छन्ति। (पीछे चलते हैं)। (नकल करते हैं)।

अव	नीचे, अपमान	त्वं गुरुं कथमवमन्यसे ? (अपमान करता है)। देशस्य रक्षार्थं महापुरुषाः अवतरन्ति। (नीचे आते हैं) अवतार धारण करते हैं)।
निस्	रहित, निषेध	निस्संशयं स आगमिष्यति। (निःसन्देह)।
निर्	" "	स गृहात् निर्गच्छति। (निकल जाता है)।
दुस्	बुरा, दुष्ट, कठिन	तस्य वचनं दुःसहमासीत् (असह्य)
दुर्	" "	अहं दुर्गमे वने आखेटाय गमिष्यामि। (कठिनता से जाने योग्य)
वि	विशेष, कहीं-कहीं नहीं।	(१) रामो राजमणिः सदा विजयते। (विशेष जीतता है) (सर्वोत्कृष्ट है) (२) विश्रामः नहि कर्तव्यः (आराम)
आङ्	विपरीत, चारों ओर, तर्क	(१) आबालवृद्धाः जनास्तत्रागच्छन्। (२) कस्तत्रागच्छति ? (आता है) आदुर्गं परिखास्ति (किले के समन्तात्, चारों ओर खाई है)
नि	नीचे	वृक्षेभ्यः पत्राणि निपतन्ति (गिरते हैं)।
अधि	पर, ऊपर	(१) वृद्धः खट्वामध्यास्ते। (२) मालाकारः वृक्षमधिरोहति। (ऊपर चढ़ता है)
अपि	ऊपर	अपिधानम् (ढक्कन), अपिनद्धम् (बँधा हुआ)
अति	अधिक	मुखरोऽति जल्पते। (अधिक बोलता है।)
सु	अच्छा	सुपचम्, सुपचति। सुकरम्। सुगमम्।
उत्	ऊपर	बीजं भूमेरुद्गच्छति (ऊपर निकलता है)।
अभि	ओर, पास	(१) स वनमभिगच्छति (ओर)। (२) अभ्यागतः समादरणीयः। (अतिथि आदर योग्य है)।
प्रति	की ओर, विरुद्ध	(१) सीतारामलक्ष्मणाः वनं प्रति गच्छन्ति। (२) आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।
परि	पूरी तरह, चारों ओर	(१) असत्यं परित्यज (पूरी तरह छोड़ दो)।

(२) गुरुः शिष्यं परीक्षते (अच्छी तरह जाँचता है)।

उप समीप, अच्छा (१) सर्वे धनिनमुपगच्छन्ति (सभी धनी के पास जाते हैं)।

(२) उपकृतं बहु त्वया (तूने बहुत उपकार किया)।

विशेष—यह आवश्यक नहीं कि धातु से पूर्व एक ही उपसर्ग लगकर नये शब्द बनें, कई बार एक से अधिक उपसर्ग भी एक साथ लगते हैं। जैसे—

प्रादुर्भाव—जन्म। प्रत्यागच्छति (लौट आता है) समाहरति, पर्यालोचनम्, प्रत्यासत्तिः, सोपसर्गः, समाकीर्णः, प्रत्यवधानम्, विप्रकृष्टम्, दुष्प्रयोगः, व्यवहारः।

अभ्यास

(१) उपसर्ग की परिभाषा देकर पाँच विभिन्न उपसर्गों के उदाहरण दीजिए।

(२) निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग तथा मूल शब्द पृथक्-पृथक् करके दर्शाइए और इन शब्दों के अर्थ भी लिखिए—

अनुवाद, परिजन, निर्धन, सहकारी, पुनरुत्थान, कुचक्र, संगति, समागम, दुर्विपाक, उपप्रधान, आसमुद्र, अपहरण, प्रत्युदार, प्रत्याहार।

(३) निम्नलिखित उपसर्गों के प्रमुख अर्थ बताकर उनको धातुओं अथवा संज्ञा शब्दों से संयुक्त कीजिए—

अप, निस्, आङ्, अधि, उप, परि, उत्, उप।

(४) निम्नलिखित सोपसर्ग क्रियाओं के अर्थ बताइए—

शकुन्तला पादांगुष्ठेन भूमिं विलिखति।
प्रातः जनाः गुरुम् उपतिष्ठन्ते।
छात्राः आपणात् पुस्तकानि आनयन्ति।
अहं प्राचीनं पुस्तकं विक्रीणामि।
योग्याः पुरुषाः नियमाकूलं समाचरन्ति,
बुद्धिमान् समयानुसारं व्यवहरति।

एकविंश अध्याय

अव्यय शब्द (Indeclinables)

सदृशं त्रिषु लिंगेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

जो शब्द तीनों लिंगों में, सब विभक्तियों में, सब वचनों में और सब कालों में अपरिवर्तित (ज्यों का त्यों) रहता है, वह अव्यय कहलाता है। जैसे—अत्र, क्व, इह आदि।

अव्यय पाँच प्रकार के होते हैं—१. उपसर्ग (Prepositions), २. क्रिया-विशेषण (Adverbs), ३. शब्दांश (Particles), ४. सम्बोधन (Conjunctions) तथा ५. विस्मयादिबोधक (Interjections)।

इन अव्ययों में से पहले उपसर्ग का निरूपण तो किया जा चुका है। शेष यहाँ सार रूप में निरूपित किये जाते हैं।

क्रियाविशेषण

क्रियाविशेषण दो प्रकार के हैं—(१) रूढ़ तथा (२) संज्ञा, सर्वनाम या संख्यावाचकों से बने हुए। संस्कृत भाषा में प्रयुक्त प्रमुख क्रियाविशेषण ये हैं—अकस्मात् (अचानक)। अग्रतस् (सामने, पहले)। अग्रे (सामने, पहले)। अचिरम्-अचिरात्-अचिरेण-अचिराय (शीघ्र ही, अभी-अभी)। अजस्रम् (निरन्तर, सदा)। अज्ञानतस् (अनजाने में)। अञ्जसा (उचित रूप में)। अतः (यहाँ से, इसलिए)। अतीव (अत्यन्त)। अत्र (यहाँ)। अथ (आरम्भ, इसके बाद)। अद्य (आज)। अधस् (नीचे)। अपरम् (और, फिर)। अपरेद्युः (दूसरे दिन)। अधुना (अब)। अहर्निशम् (दिन-रात, लगातार)। अन्तर्, अन्तरा, अन्तरेण, अन्तरे (बिना, सब, अन्दर, मध्य में)। अन्यत् (फिर, और) अन्यत्र (किसी और जगह)। अन्यथा (नहीं तो)। अभितः (पास, इर्द-गिर्द, चारों ओर)। अभीक्ष्णम् (निरन्तर)। अमुत्र (परलोक में)। अलम् (बस, काफी है, समर्थ)। असकृत् (बारबार)। असंप्रति, असाम्प्रतम् (अनुचित)। आरात् (पास, समीप)। आविस् (सामने, प्रत्यक्ष)। इतस् (यहाँ से, बाद में)। इतस्ततः (इधर-उधर)। इति (इस तरह, समाप्त)। इत्थम् (इस तरह, इस रूप में)। इदानीम् (अब)। इह (यहाँ)। ईषत् (तनिक)। उच्चैः (जोर से, ऊपर)। उषा (प्रभात में)। ऋते (बिना)। एकत्र (इकट्ठा, एक जगह)! एकदा (एक बार)। एकधा (एक प्रकार से, साथ ही)। एतर्हि (अब, इस समय)। एवम् (इस प्रकार) आम् (हाँ, अच्छा)। कच्चित्-कच्चन (मुझे आशा है, विश्वास है कि, क्या), कथम् (कैसे)। कथञ्चन, कथञ्चित् (किसी भी तरह, कठिनता से)। कदा (कब)। कदाचित् (एक बार, कभी)। कर्हि (कब, किस समय)। कर्हिचित् (किसी भी समय)। किंच (तथा,

और भी)। किञ्चन-किञ्चित् (कुछ सीमा तक, ज़रा, तनिक)। किंतु (परन्तु)। किम् (क्या, कौन-सा)। किंवा (अथवा)। किल (निश्चय ही)। कुतस् (कहाँ से)। कुत्र (कहाँ)। कुत्रचित् (कहीं पर)। कृतम् (बस करो)। केवलम् (सिर्फ)। क्व (कहाँ)। क्वचित् (कहीं पर)। खलु (निश्चय ही)। चिरम् (देर तक, देर से)। जातु (शायद, कभी)। जोषम् (चुपचाप)। झटिति (झटपट)। तद् (इसलिए)। ततस् (तब, इसलिए, इसके बाद, वहाँ से)। तत्र (वहाँ), तदा, तदानीम् (तब, उस दशा में) तथा (अतः, उसी तरह, और, अवश्य ही)। तथाहि (जैसे, उदाहरणतः, उससे)। तर्हि (तो, तब)। तावत् (तो, सबसे)। किं तावत् (तो क्या)। तिरस् (छिपाना, अपमान) तिर्यक् (कुटिलता से, टेढ़े तरीके से, परले पार, तिरछे टेढ़े रूप में)। तूष्णीम् (चुपचाप)। तेन (इससे, इस कारण)। दिवा (दिन से, दिन में) दिष्ट्या (सौभाग्य से)। दूरम् (दूरी पर, गहराई में, ऊँचाई में)। दोषा (रात को)। द्राक् (तुरन्त)। ध्रुवम् (निश्चय ही)। नक्तम् (रात के समय)। न (नहीं)। नो (नहीं)। नहि (नहीं)। नाना (कई तरह से, अनेक प्रकार के)। नाम (नाम से, वास्तव में, अवश्य, शायद)। निकषा (पास)। नीचैः (नीचे)। नूनम् (निश्चय ही)। नो (नहीं) परम् (इसके बाद, परन्तु, किन्तु)। परश्वः (परसों)। परितः (चारों ओर, इर्द-गिर्द) परेद्युः (किसी और दिन)। पर्याप्तम् (काफी)। पश्चात् (पीछे, पिछड़ा, बाद में)। पुनः (फिर)। पुनः-पुनः (बारंबार)। पुरः-पुरतः (पहले, सामने)। पुरा (पुराने जमाने में, पहले)। पूर्वेद्युः (पहले दिन)। पृथक् (अलग, इसके सिवा)। प्रतिदिनम् (हर रोज़)। प्रत्युत (बल्कि, इसके विपरीत)। प्रसह्य (जबरदस्ती)। प्राक् (पहले, पूर्व दिशा की ओर, आगे) प्रातर् (सवेरे)। प्रायः (अक्सर)। प्रेत्य (मरने के बाद)। बलात्-बलवत् (जबरदस्ती)। बहिः (बाहर, इसके सिवा)। भूयः (बहुत अधिक, फिर, बार-बार। अचिरम् (बिना देर किए)। मिथः (आपस में)। मिथ्या (झूठ, व्यर्थ)। मुधा (व्यर्थ)। मुहुर् (फिर, बार-बार)। यत् (जिस समय से, कि)। यतः (क्योंकि, जिस कारण)। यत्र (जहाँ)। यथा (जैसे, जिस तरह, उदाहरणतः)। यथा-तथा (जैसे-तैसे, कठिनाई से)। यथाक्रम (उचित क्रम से)। यदा (जब)। यावत् (जहाँ तक, जब तक)। युगपत् (एक साथ)। वत् (समान, तरह)। विना (बगैर)। वृथा (व्यर्थ)। वै (निश्चय ही)। शनैः (धीरे, कोमलता से)। आशु (शीघ्र)। श्वस् (आने वाला कल)। सकृत् (एक बार)। सततम् (सदा, निरन्तर)। सद्यः (एकदम)। सपदि (तुरन्त)। समन्ततः, समन्तात् (चारों ओर)। समम् (साथ, समान)। समया, समीपम्, समीपे (समीप), समीचीनम् (ठीक, उचित)। संप्रति (अब, आजकल)। सम्मुखम् (सामने, मुँह पर)। सम्यक् (भली भाँति, अच्छा)। सर्वतः (सब ओर)। सर्वत्र (सब जगह)। सर्वदा (सदा)। सह (साथ)। सहसा (एकदम, बिना सोचे)। सहितम्, साकम्-सार्धम् (साथ, संग)। साक्षात् (प्रकट, सामने, शरीर धारण करके)। साम्प्रतम् (अब, उचित), सायम् (साँझ को)। सुष्ठु (भली भाँति)। स्वयम् (अपने आप)। हि (निश्चय ही, क्योंकि, अवश्य ही)। हेतोः (कारण से), ह्यस् (बीता हुआ कल)।

शब्दांश (Particles)

शब्दांश कहीं तो शब्दों से जुड़कर उनके उत्कर्ष को बढ़ाते हैं, या कम करते हैं। जैसे—

कुकृत्यम्, सत्कर्म आदि।

कुछ ऐसे शब्दांश हैं जिनका स्वतन्त्र रूप में प्रयोग होता है। जैसे—

अति, हि, वै, किल, खलु, च, तु, नु आदि।

कुछ शब्दांश ऐसे हैं, जो सदा किन्हीं विशेष शब्दों के साथ ही आते हैं। जैसे—

अथ—मंगलाचरण, आरम्भ। इति—सम्पूर्ण, समाप्ति, इतना।

अद्—अद्भुतम्=अश्चर्यजनक (अभूतपूर्व)।

का—कापुरुषः=कातरः (कायर)।

काजलम्—ईषद्जलम् (बहुत कम पानी)।

कोष्णम्—मन्दोष्णम् (थोड़ा गर्म)।

चन, चित्—कश्चन=(कोई) किंचित् (कुछ), कश्चित् (कोई पुं०) केचित् (बहुवचन), काचित् (कोई स्त्री०) काश्चित् (बहु० स्त्री०) किंचित् (कुछ, नपुं०)।

न—सादृश्य, अभाव, किसी से भिन्न, थोड़ा, बुरा और विरुद्ध।

स्म—स्म वर्तमानकाल की क्रिया के अनन्तर लगकर भूतकाल का अर्थ प्रकट करता है। 'मा' के साथ 'स्म' आने पर 'कभी मत' अर्थ प्रकट करता है।

स्वित्—किंस्वित् (तो क्या)। आहोस्वित् (अथवा क्या)।

स्वी—स्वीकृतम्, अंगीकृतम् (स्वीकार किया)।

विस्मयादिबोधक (मनोविकारसूचक)

इनसे आश्चर्य, क्षोभ, दुःख, पछतावा, अप्रसन्नता आदि भाव प्रकट होते हैं, अतः इन्हें द्योतक भी कहते हैं।

आ, ई, उ, अह, अहो—आश्चर्यबोधक।

अहद—खेद।

अहो बत—खेद।

हा, हाहा—हाय-हाय।

किम्—क्या लाभ (व्यर्थ काम किया)।

धिक्—धिक्कार !

हा, बत—दुःख है।

हन्त—आश्चर्य, दुःख।

आ, हम्, हुम्—क्रोध, घृणा आदि।

अंग-अरे-रे-अरेरे-रेरे-अये-अयि—छोटे को पुकारने में।

भोः—पुकारने में।

शौषट्, वौषट्, वषट्--देवों या पितरों को बलि देने में बोले जाते हैं,

स्वाहा—देवताओं को आहुति देने में बोला जाता है।

स्वधा—पितरों के निमित्त जल आदि देने में बोला जाता है।

प्रकीर्ण (फुटकर) अव्यय

कई तद्धित-प्रत्ययान्त, कृदन्त तथा समासान्त शब्द भी अव्यय बन जाते हैं। जिनमें फिर विभक्ति, लिंग या वचन के अनुसार कोई विकार (परिवर्तन) नहीं होता। जैसे—

तद्धितान्त—तसिल्, त्रल्, दा, दानीम्, थाल्, धा, शस्, च्वि, सात्, कृत्वस्, तथा सुच् प्रत्ययान्त। जैसे—अग्रतः, अत्र, कदा, तदानीम्, सर्वथा, मुधा, एकशः, भस्मीभूय, अग्निसात्, पंचकृत्वः, द्विः।

कृदन्त—णमुल् (स्मारं स्मारम्), तुमुन् (गन्तुम्), क्त्वा (गत्वा). क्त्वा के स्थान पर ल्यप् (उपकृत्य)।

समासान्त—(अव्ययीभाव) अधिहरि, यथाशक्ति, अनुविष्णु इत्यादि।

अभ्यास

(१) अव्यय किसे कहते हैं? श्लोक और उसका अर्थ लक्षण में प्रकट कीजिए।

(२) अव्यय कितने प्रकार के हैं और वे कौन-कौन हैं?

(३) निम्नलिखित अव्ययों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

अतः, अन्यथा, इतस्ततः, कुत्रचित् यद्यपि-तथापि, नक्तंदिवम्, पूर्वेद्युः, प्रायः सर्वदा, सर्वथा, ह्यः, साम्प्रतम्, आम्।

१. निम्नलिखित अनुच्छेद का संस्कृत में अनुवाद कीजिए और यथास्थान उचित अव्ययों का प्रयोग कीजिए—

गुरुजी ने शिष्य से पूछा—बेटा मोहन, कल कहाँ गये थे बताओ। मोहन ने उत्तर दिया—पूज्य गुरुजी, कल प्रातःकाल जब मैं उठा तो देखा—एक भिखारी अपनी स्त्री और पुत्र के साथ मेरी गली (रथ्या) में इधर-उधर घूम रहा है। वे सब जाड़े से काँप रहे थे। उन्हें देखकर सहसा मेरे हृदय में दया आ गई। मैंने किसी से पूछे बिना उन्हें एक कम्बल दे दिया। वे कम्बल लेकर चले गये। आज सबेरे वे दूसरी गली में नंगे घूम रहे थे। तब पता चला कि उन्होंने कम्बल बेच दिया है। ऐसे भिखारियों को देखकर सच्चे भिखारियों से भी विश्वास उठ जाता है।

द्वाविंश अध्याय

वाक्य-विचार तथा अनुवादविधि

वाक्य-विचार में शब्दों को वाक्य में शुद्धरूप से प्रयोग करने की विधि बताई जाती है। संस्कृत वाक्य-रचना में सामान्यतः सर्वप्रथम उद्देश्य (कर्ता और कर्ता-विस्तार), फिर कर्म तथा कर्म-विस्तार, तब क्रियाविशेषण तथा अन्य अव्यय और (अन्त में) क्रिया आती है।

वाक्य-विचार में तीन बातें मुख्य होती हैं—शब्दों का परस्पर सम्बन्ध, वाक्यानुशासन और शब्द-क्रम। संस्कृत-भाषा में लचक बहुत है, अतः इनमें शब्द-क्रम को गौण स्थान दिया जाता है। अन्य भाषाओं में यदि शब्द-क्रम बदल दिया जाए तो वाक्य अशुद्ध हो जाता है या उसके अर्थ में परिवर्तन हो जाता है, किन्तु संस्कृत में केवल शब्दक्रम में हेरफेर होने से (शब्दों को आगे पीछे रखने से) वाक्य न तो अशुद्ध होता है और न अर्थ में ही परिवर्तन होता है। इसलिए संस्कृत वाक्य-रचना अपेक्षाकृत सरल और लचीली है। देखिए, नीचे कई प्रकार से प्रयुक्त शब्दों वाले वाक्यों में कोई अर्थ-भेद नहीं है—आसीत् राजा दशरथो नाम, दशरथो नाम राजा आसीत्। उपविश आसनेऽस्मिन्, आसनेऽस्मिन् उपविश, अस्मिन्नासने उपविश।

वचन

संस्कृत में तीन वचन हैं—एकवचन, द्विवचन, बहुवचन। परन्तु विशेष अवस्थाओं में एक के लिए बहुवचन का तथा बहुतों के लिए एकवचन का भी प्रयोग होता है। जैसे—

(क) जातिवाचक शब्द—बहुतों के लिए एकवचन में—बुद्धिमत्सु नरः श्रेष्ठः, पशूनां शृगालः धूर्तः।

(ख) द्विवचन से एक जाति के जोड़े को प्रकट किया जाता है। जैसे—पितरौ (माता-पिता), अजौ (बकरा-बकरी), चटकौ (चिड़ी-चिड़ा)।

(ग) द्वय, द्वितीया, युग, युग्म द्वन्द्व—ये दो (जोड़े) के लिए प्रयुक्त होते हैं, किन्तु इनका प्रयोग एकवचन में होता है, अतः विशेषण क्रिया आदि भी एकवचन के लगते हैं। जैसे—इदं रूप्यकद्वयम् अस्ति। नयनद्वयं निमीलितम्। द्वय आदि शब्द न हों तो—'नयने निमीलिते' शुद्ध होगा।

(घ) पादौ, हस्तौ, नेत्रे इत्यादि शब्द सदा द्विवचन में प्रयुक्त होते हैं, यदि इनके साथ 'द्वय' आदि शब्द न लगे हों या किसी विशेष अंग का वर्णन न हो। जैसे—श्रीकृष्णस्य चरणौ पावनौ मन्येते। नयने किं निमीलिते।

विशेष वर्णन में एकवचन होगा। जैसे—अक्ष्णा काणः। स सव्ये हस्ते कुसुमम् धारयति। सः पादेन खंजः।

(ड) जातिवाचक—बहुवचन में भी प्रयुक्त होता है। जैसे—नराणां ब्राह्मणाः पूज्याः (ब्राह्मणः वा)।

(च) सम्मानार्थ बहुवचन—एक के लिए सम्मानार्थ में बहुवचन का प्रयाग होता है। जैसे—आचार्यपादाः (गुरुजी) पितृचरणाः (पूज्य पिताजी!)

(छ) महान् व्यक्ति तथा लेखक और कवि अपने लिए कई बार बहुवचन का प्रयोग करते हैं। जैसे—

इत्यग्रे व्याख्यास्यामः। वयमपि भवत्यौ किमपि पृच्छामः।

वयं नो ते विप्राः प्रतिदिवसमासाद्य कृपणान्।

धनं ये याचन्ते परिगणितनक्षत्रतिथयः॥

(ज) कभी-कभी द्विवचन के लिए भी अहंकारार्थ में या क्रोध में बहुवचन का प्रयोग होता है। जैसे—उत्तिष्ठ दूति यामो, यामो यातस्तथापि नायातः।

(झ) दाराः, अक्षताः, सिकताः, आपः, प्राणाः, असवः, लाजाः—आदि शब्द (इनके पर्यायवाचक नहीं) सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। किन्तु इनका हिन्दी अर्थ एकवचन होता है।

(ञ) देशों (प्रदेशों) का नाम, जिससे वहाँ के निवासियों का प्रकटीकरण हो, बहुवचन में प्रयुक्त होता है। जैसे—स विदेहान् प्राप्तः।

किन्तु देश, विषय, जनपद आदि शब्द साथ दिये हों तो एकवचन ही होगा। जैसे—अस्ति दक्षिणात्ये जनपदे महिलारोप्यं नाम नगरम्। अस्ति मगधदेशे पाटलिपुत्रं नाम नगरम्।

(ट) व्यक्तिवाचक शब्द जहाँ जाति का बोध कराए, वहाँ बहुवचन का प्रयोग होता है। जैसे—रघूणामन्वयं वक्ष्ये। (रघुवंश) जनकानां रघूणां च यत्कृत्स्नं गोत्र-मंगलम्। (उत्तररामचरितम्)।

सम्बन्ध

क्रिया का कर्ता से सम्बन्ध—

(१) कर्तृवाच्य में क्रिया का वही वचन तथा पुरुष होगा जो कर्ता का होगा जैसे—स गच्छति। ते गच्छन्ति। तौ गच्छतः। हिन्दी में क्रिया का लिंग होता है किन्तु संस्कृत में भ्वादि वगैरः गणों की क्रिया का कोई लिंग नहीं होता। जैसे—बालः गच्छति, बाला गच्छति, पुष्पं विकसति।

(२) जब कर्ता दो हों और उनके मध्य में 'च, तथा, तथा च' आए हों तो क्रिया द्विवचन होगी। और कर्ता दो से अधिक हों और उनके मध्य में 'च, तथा, तथा च' शब्द आये हों तो क्रिया बहुवचन में होगी। जैसे—रामः सीता च गच्छतः, रामः, सीता, लक्ष्मणश्च वनम् अगच्छन्।

कभी-कभी क्रिया का वही वचन होता है जो निकटतम कर्ता का हो। जैसे—

(i) अहश्च रात्रिश्च उभे च संध्ये, धर्मश्च जानाति नरस्य वृत्तम्।

(ii) विद्याभ्यासो विवाहश्च समये एव शोभते।

(३) जब 'वा', 'अथवा,' 'किंवा' शब्दों का प्रयोग हो तो क्रिया एकवचन में होगी। जैसे—रमेशः सुरेशः वा दुग्धं पिबतु।

किन्तु वाक्य में एकवचन के साथ बहुवचन कर्ता भी हो तो क्रिया बहुवचन में होगी। जैसे—गोविन्दः अन्ये बालकाः वा तत्र गच्छन्तु।

तीनों पुरुषों के शब्द एक वाक्य में आएँ तो क्रिया उत्तम पुरुष में होगी, प्रथम पुरुष और मध्यम पुरुष हों तो मध्यम पुरुष में होगी। जैसे—

(i) त्वमहं लता च विद्यालयं गमिष्यामिः।

(ii) त्वं लता च विद्यालयं गच्छतम्।

किन्तु जब विभिन्न कर्ता हों और 'वा', 'अथवा' आदि योजक आए हों तो क्रिया निकटतम पुरुष और उनके वचन के अनुसार होगी। जैसे—

(i) अद्य अर्जुनो जीविष्यति जयद्रथो वा।

(ii) अद्य रामोऽथवा भरतो वा राजा भविष्यति।

क्रिया

संस्कृत में कई बार, विशेषतः कविता (पद्य) में क्रिया लुप्त होती है, या कृदन्त शब्दों द्वारा क्रिया का अर्थ प्रकट हो जाता है। ऐसे वाक्य कदापि अशुद्ध नहीं गिने जाते। जैसे—

(i) विद्या मित्रं प्रवासेषु।

(ii) महीतले कः स्वर्गस्थः।

(iii) का कण्ठभूषा।

(iv) त्वया कार्यं कृतं न वा।

(v) शशकः सिंहमेतद् उक्तवान्।

(vi) आम्राश्च सिक्ताः पितरश्च प्रीणिताः।

(vii) अविवेकः परमापदां पदम्।

(viii) नरत्वं दुर्लभं लोके।

(ix) विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।

(x) एतन्मे निश्चितं मतम्।

(xi) तेन मुनिना स मूषकः विडालः कृतः।

(xii) विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसांप्रतम्।

(xiii) इत्यग्रे गुरुचरणाः प्रमाणम्।

विशेष्य-विशेषण का सम्बन्ध—

संस्कृत में विशेष्य का जो लिंग, विभक्ति और वचन होगा, वही विशेषण का भी होगा (यदि दोनों का समास न हुआ हो) जैसे—

(i) रघुवंशिना रामेण रावणः हतः।

(ii) सुन्दरेण बालेन एतदुक्तम्।

(iii) चलत्येकेन पादेन।

(iv) एतस्य नरश्रेष्ठस्य वचनमेव प्रमाणम् ।

(v) वासांसि जीर्णानि यथा विहाय ।

किन्तु निश्चित लिंग, वचन वाले संख्यावाचक विशेषण में विशेष्य के अनुसार परिवर्तन नहीं होता । जैसे—शतं ब्राह्मणाः, विंशतिः बालकानाम् ।

(५) जब विशेषण दो या दो से अधिक विशेष्यों की विशेषता बतलाए तो वह विशेषण द्विवचन तथा बहुवचन में प्रयुक्त होगा । वाक्य में स्त्रीलिंग तथा पुंल्लिग साथ-साथ होने पर विशेषण पुंल्लिग में होगा । जैसे—

राजा राज्ञी च जनप्रियौ स्तः ।

किन्तु वाक्य में यदि पुं०, स्त्री० तथा नपुं० विशेष्य एक साथ आए हों तो विशेषण नपुंसकलिंग में परिवर्तित होगा । जैसे—

धर्मः कामश्च दर्पश्च हर्षः क्रोधः मुखं वयः ।
अर्थादेतानि सर्वाणि प्रवर्तन्ते न संशयः ।।

(६) पुरुषवाचक सर्वनामों में युष्मद्, अस्मद् के तीनों लिंगों में समान रूप होते हैं । शेष सार्वनामिक विशेषणों के वे ही लिंग, वचन, कारक होते हैं जो उनके विशेष्यों के होते हैं । जैसे—अयं बालः, सा स्त्री, तत् फलम् ।

यत्-तत् आदि के सम्बन्ध

यत् और तत् का नित्य सम्बन्ध है । जो लिंग, विभक्ति और वचन यत् का होगा, वहीं तत् का होगा । जैसे—

(i) एकेन च यत्क्रीतं तच्छतेन प्रदीयते ।

(ii) न वेत्ति यो यस्य गुणप्रकर्षं स तस्य निंदां सततं करोति ।

(iii) बुद्धिर्यस्य बलं तस्य ।

(iv) यद्येन युज्यते लोके बुधस्तत्तेन योजयेत् ।

शब्दानुशासन

संस्कृत-व्याकरण में वाक्य में शब्दानुशासन विभक्त्यर्थ का है । विभक्तियों के सामान्य अर्थों तथा उपपदविभक्तियों का भली भाँति ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए, इसके बिना संस्कृत-रचना तथा अनुवाद में बहुत-सी त्रुटियाँ रह जाती हैं ।

विभक्तियों के अर्थ तथा उपपद विभक्तियों के अर्थों की बारंबार आवृत्ति किए बिना उन्हें स्मरण नहीं किया जा सकता । वे पीछे कारक में यथास्थान दिए गए हैं, उन्हें वहीं ध्यान से पढ़ लेना चाहिए ।

अभ्यास

(१) निम्नलिखित वाक्यों में शब्द की त्रुटियाँ बताइए—

(क) यो विद्वान् सो जनैः पूज्यते ।

(ख) साध्विमौ मुनिपुत्रौ स्तः ।

(ग) भरतः कैकेय्यास्पुत्रो आसीत् ।

(घ) गीतायाः अष्टादश अध्यायेषु द्वितीयो श्रेष्ठ अस्ति ।

(२) लिंग-सम्बन्धी अशुद्धि दूर करके पुनः लिखिए—
(क) तस्य द्वौ मित्री रमेशः सुरेशः च ।
(ख) ईश्वर एव अस्माकं शरणः अस्ति ।
(ग) उद्याने तिस्रः पुष्पाः शोभन्ते ।
(घ) चत्वारः बालिकाः पुष्पाणि अवचिन्वन्ति ।
(ङ) सर्वे प्रजाः तत्र समवेताः ।

(३) वचन सम्बन्धी अशुद्धियों का निर्देश कीजिए—
(क) अत्र क्रीडन्ति बालानां समूहः ।
(ख) एकविंशतिः पुरुषः गृहे आसीत् ।
(ग) रामः परिशुद्धां स्वदारां कथमत्यजत् ?

(४) विभक्ति की अशुद्धियाँ बतलाइए—
(क) धर्मस्य विना मनुष्यस्य कुतः सुखम् ।
(ख) वितर कृपां मामपि दीनबन्धो ।
(ग) नद्याः गंगा श्रेष्ठतमा ।
(घ) देवाः स्वर्गे अधिवसन्ति ।

(५) अव्ययों की अशुद्धियाँ बतलाइए—
(क) प्रतिदिने उद्याने भ्रमणं कुरुत ।
(ख) मनुष्यः कदापि मृषां न वदेत् ।
(ग) एतादृशी मिथ्या त्वया न वक्तव्या ।

(६) समास की अशुद्धियाँ दूर कीजिए—
(क) मनुष्येण यथाशक्त्या प्रवर्तितव्यम् ।
(ख) स्नानागारे गत्वा पाणिपादान् प्रक्षालय ।
(ग) जवाहरलालस्य यशः आसमुद्रक्षितितले प्रासरत् ।

(७) क्रिया की अशुद्धियाँ दूर कीजिए—
(क) बालः कथं रोदति दुग्धं च न पीयते ।
(ख) भवान् कथं मामवजानीथ ?
(ग) वानराः फलानि भुञ्जन्ते ।
(घ) अहं च त्वं च तत्र गमिष्यथः ।

(८) प्रत्यय की अशुद्धियाँ बताइए—
(क) गुणमान् छात्रः प्रतिदिनं पठति लिखति च ।
(ख) सर्वासां विद्यानां ब्रह्मविद्या श्रेष्ठतरा ।
(ग) मंचे उपविशितः प्रधानः वदति ।
(घ) दक्षिणां प्रतिगृहीत्वा पुरोहितः प्रस्थितः ।
(ङ) दशरथः अयोध्यायाः नृपः अभवत् स्म ।

(९) वाच्य की अशुद्धियाँ बताइए—

(क) कृष्णेन कंसो हतवान् ।

(ख) गोपालेन गां पयो दुह्यते ।

(ग) शिशुना चन्द्रं दृश्यते ।

(१०) परस्मैपद-आत्मनेपद सम्बन्धी अशुद्धियाँ बताइए—

(क) एवं विवदन्तस्ते न्यायालयमगच्छन् ।

(ख) गुरुं शुश्रूषति शिष्यः ।

(ग) विजयतु महाराजः श्रीमान् चन्द्रगुप्तः ।

(११) (मिश्रित) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए । साथ-साथ प्रत्येक की अशुद्धि की ओर निर्देश कीजिए ।

(क) अहो कीदृशी महिमा वसन्तस्य, पुष्पाणि भृशं रोचन्ते माम् ।

(ख) अश्वपति त्वं धारयसि शतम्, गच्छ रुग्णाद्धनं याचित्वा देहि तं सत्वरम् ।

(ग) कस्येयं हतभागिनी दारा, नाहं सहितुं समर्थोऽस्या दुःखम् ।

(घ) दासीषु कुप्यति महिषी दंडयति च नित्यं ताभ्यः ।

(१२) (मिश्रित) ।

(क) तस्मात् मम इयं पुत्रः भविष्यति ।

(ख) इत्युक्ता तां गज-शावकम् अपि स्वस्तनक्षीरेण पुष्टिमनयत् ।

(ग) एवं ताः त्रयोऽपि शिशवः एकत्र विहारिणाः बाल्यमतिवाहयन्ति ।

(घ) तं दृष्ट्वा ते सिंहसुतौ द्वे अपि कुपितौ तस्य प्रति प्रचलितौ ।

(ङ) पुत्रस्य सहागता पिता ।

(च) इयं मे विधिः कार्यकरणस्य ।

त्रयोविंश अध्याय

निबन्ध-लेखन एवं पत्र-लेखन

प्रबन्ध, निबन्ध आदि शब्द 'प्रस्ताव' के लिए प्रयुक्त होते हैं। आज किसी वस्तु, स्थान, व्यक्ति, विचार अथवा भाव पर लेख लिखना 'निबन्ध' कहलाता है। उच्चतर माध्यमिक परीक्षा के छात्रों की संस्कृत में लेखन-कुशलता के परीक्षण के लिए कुछ वर्षों से निबन्ध का भी प्रश्न पूछा जाता है। यह निबन्ध १५० शब्दों का होना चाहिए। निबन्ध सारगर्भित हो, वाक्य-रचना शुद्ध हो, सुसंबद्ध हो तो अंक मिलने में सन्देह नहीं रहता। कुछ विषयों पर विद्यार्थियों को निबन्ध लिखने का अभ्यास अवश्य करना चाहिए। स्वयं लिखे बिना संकोच दूर नहीं होता। नीचे कुछ निबन्ध दिये जाते हैं। इनसे विद्यार्थी निबन्ध-लेखन की विधि को जान सकेंगे।

निबन्ध—भारतवर्षम्

भारतदेशः अस्माकं प्राणैरपि प्रियः। भारतस्य उत्तरे संसारस्य सर्वोच्चः पर्वतः हिमालयः विद्यते। दक्षिणे हिन्दमहासागरः अस्य चरणौ प्रक्षालयति। पूर्वे तु अस्य बंगसागरः, पश्चिमे च अरबसागरः।

अस्मिन् देशे वयं जाताः। अस्य मृत्तिकायाम् अस्माभिः क्रीडितम्। अस्यैव अन्नेन वयं परिपोषिताः। अत्र देशे राम-कृष्ण-महावीर-बुद्ध-शंकराचार्य-कबीर-तुलसी-राममोहनराय-विवेकानन्द-दयानन्द-प्रभृतयः महान्तः पुरुषाः समभवन्। अत्रैव रघु-चन्द्रगुप्तमौर्य-विक्रमादित्य-भोज-हर्ष-प्रभृतयः श्रेष्ठाः राजानः समभवन्।

मध्ये तु काले एष देशः पराधीनः अभवत्। अत्र वैदेशिकानां आंग्लानां राज्यम् अभवत्। किन्तु भारतीयाः जनाः तेषामत्याचारान् नासहन्त। देशं स्वन्तंत्रत्रं कर्तुं जनाः प्रायतन्त। सर्वेषु प्रदेशेषु नेतारः अभवन्। मुंबय्यां श्रीफिरोजशाहः मेहता कांग्रेसस्य प्रख्यातः नेताऽभवत्। पुण्यपत्तने श्रीबालगंगाधरः तिलकः अभवत। पंचाम्बुप्रदेशे श्रीलाजपतरायः अभवत्। एते नेतारः जनतायै आन्दोलनं कर्तुं प्रेरणाम् अयच्छन्। गांधिमहोदयस्य अहिंसात्मकैरान्दोलनैः वैदेशिकानां बलं शिथिलम् अभवत्। जनता पूर्णतया जागरिता अभवत्। श्रीजवाहरलालस्य तथा श्रीसुभाषचन्द्र-बोसस्य राजनीतिमंचे आगमनात् नगरे-नगरे, ग्रामे-ग्रामे जने-जने च स्वतन्त्रतायाः भावना प्रासरत्।

१९४२ तमे ईशवीये वर्षे मुम्बा-कांग्रेसावरे श्रीगांधिमहोदयः स्वदेशवासिभ्यः 'स्वतन्त्रतायै कार्यं वा कुरुत देहं वा पातयत' इति महामंत्रम् अयच्छत्, विदेशीयांश्च स निरदिशत् 'भारतम् त्यक्त्वा गच्छत'। तदा महदान्दोलनम् अभवत्।

अन्ततः, १९४७ तमे ईशवीये वर्षे अगस्तमासस्य पंचदशतम्यां तारिकायां

भारतदेशः स्वतंत्रोऽभवत् । श्रीजवाहरलालनेहरुः भारतस्य प्रथमः प्रधान-मन्त्री अभवत् ।

१९५० तमे वर्षे जनवरीमासस्य षड्विंशायां तारिकायां देशोऽस्माकं सर्वोच्च-सत्तासम्पन्नं प्रजातन्त्रात्मकं गणराज्यम् अभवत् ।

अधुना भारतस्य गणना स्वतन्त्रेषु देशेषु सम्मानपूर्वकं क्रियते । असौ देशः 'संयुक्तराष्ट्रसंघस्य' सम्मानितः सदस्यः अस्ति, यः सर्वत्र विश्वशान्त्यै यतमानोऽस्ति ।

श्री जवाहरे स्वर्गते श्रीलालबहादुरः शास्त्री भारतस्य प्रधानमन्त्रि-पदम् अलंकृतवान् । तस्य शासनसमये पाकिस्तानीयाः आक्रमणम् कुर्वन् किन्तु सिंहपराक्रमेण श्रीलालबहादुरेण तथा भारतीया सैनिकाः निर्दिष्टा येन ते पराजिताः अभवन् । ताशकन्दे श्रीलालबहादुरस्य असामयिको मृत्युरभवत् । तदनन्तरं श्रीमती इन्दिरा प्रधान-मन्त्रिपदम् अलंकृतवती । सा योग्तस्य पितुः योग्या पुत्री प्रसिद्धा । तस्याः शासने भारत-देशः प्रगतिपथे चलन् दृश्यते ।

मध्ये किञ्चित्कालाय देशस्य शासनं जनतादलस्य हस्तेषु आगच्छत् । किन्तु पुनः कांग्रेसशासनेन भारतम् अधिकृतम् । अद्यत्वे पुनः श्रीमती इन्दिरा गांधी प्रधानमन्त्रिपद-मलंकुर्वन्ती सुशासनं चालयति ।

होलिकोत्सवः

होलिकोत्सवः जनप्रियः उत्सवः अस्ति । अयं हिन्दूनां प्रसिद्धः उत्सवः । अयं प्रतिवर्षं फाल्गुनमासस्य पौर्णमास्यां संपद्यते । अयमुत्सवः विचित्रः अस्ति । जनाः विविध-रागाभं जलम् अन्योन्यं प्रक्षिपन्ति । होलिकोत्सवः वस्तुतः वसन्तोत्सवः अस्ति । अस्मिन् दिने जनाः कूर्दन्ति, नृत्यन्ति, गीतानि च गायन्ति । आबालवृद्धाः हसन्ति प्रसीदन्ति हासयन्ति च । अस्मिन् विषये एका कथाऽस्ति ।

पुरा खलु मूलत्राण-नगरे हिरण्यकशिपुः नाम नृपः अभवत् । स नास्तिकः आसीत् । तस्य एव पुत्रः प्रह्लादः ईश्वरस्य परमो भक्तोऽभवत् । हिरण्यकशिपुः अघोष-यत्—"मां पूजयत, ईश्वरोऽहम् । अहं भोगी, सिद्धोऽहं बलवानहम् ।" इति । परं प्रह्लादः ईश्वरस्य भक्तिं नात्यजत् । सोऽवदत्—"यस्मात् सर्वाणि जायन्ते, येन सर्व-मिदं ततम्, तमेवाहं परमात्मानं पूजये ।" एवं प्रह्लादः परमेश्वरमेव सदा अस्मरत् ।

हिरण्यकशिपुः प्रह्लादाय महतीं यातनाम् अयच्छत । किन्तु प्रह्लादः परमे-श्वरात् विमुखः नाभवत् । तदा हरिण्यकशिपुः भगिनीं होलिकानाम्नीं प्रह्लादस्य वधे न्ययोजयत् । सा प्रह्लादमंके उपवेश्य अग्नौ प्राविशत् ।

ईश्वरस्य लीला विचित्राऽस्ति । अग्नौ होलिका तु दग्धा, किन्तु प्रह्लादाय हुता-शनः चन्दनम् इव शीतलः अभवत् । एतेन वृत्तान्तेन लोकाः परं हृष्टा अभवन् । तद्दि-नादारभ्य होलिकोत्सवः परमोत्साहेन संपाद्यते लोकैः । जनाः धारायन्त्रैः परस्परं रक्तं पीतं, हरितं च रागं प्रक्षिपन्ति, परस्परं गुलालं मर्दयन्ति । एवं ते आत्मनः आनन्दं प्रकटयन्ति ।

संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

संस्कृत-भाषा खलु 'देववाणी,' 'देवगिरा', 'सुरभारती' इत्यादिभिः नामभिः प्रसिद्धा भाषा अस्ति । इयमेव संसारे सुसंस्कृततमा भाषा विद्यते । अलौकिकैः गुणैः विभूषितास्ति भाषेयम्, अतो हि दण्डिना उक्तम्—

संस्कृतं नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः ।

संस्कृत-भाषा पुनः आधुनिकीनां भारतीयभाषाणां जनन्यस्ति । अस्य साहित्यं सुललितं ज्ञान-विज्ञान-परिपूर्णं चास्ति ।

भारते कोऽपि मनुष्यः सुपठितः न गण्यते, येन वाल्मीकि-व्यास-कालिदास-भवभूति-भास-दण्डि-बाण-प्रभृतीनां रचनाः न पठिताः स्युः ।

अपरञ्च, यः संस्कृतभाषानभिज्ञः भवति, तेनाजीवनं तप्यते, यतः स प्राचीन-भारतीयात् संस्कृतिज्ञानात् अनभिज्ञ एव तिष्ठति । अतीते गौरवमये इतिहासे, विपुले च आनन्दपरिपूर्णे साहित्य-भांडागारे स प्रवेष्टुं नार्हति । तत्प्रवेशाय संस्कृत-भाषायाः ज्ञानमेव एकमात्रं साधनम् ।

किंच, अद्यत्वेऽपि संस्कृतभाषायाः व्यावहारिकी आवश्यकता अनुपेक्षणीया । हिन्दी-भाषा भारतस्य राष्ट्रभाषा । सा तु सर्वविधं पारिभाषिकं शब्दसमूहं संस्कृत-भाषायाः एव गृह्णाति । संस्कृतज्ञः तमाशु ज्ञातुं, स्मतुं प्रयोक्तुं च समर्थः भवति । असंस्कृतज्ञस्तु परमुखापेक्षी एव दृश्यते तत्र ।

अतो हि, संस्कृत-भाषायाः महत्त्वम् निर्विवादम् ।

पत्र-लेखन

संस्कृत में पत्र लिखने की वही प्रणाली है जो हिन्दी की है, अतः हिन्दी के समान ही संस्कृत में भी पत्र लिखना आरम्भ कर दीजिए आप संस्कृत में पत्र लिख सकेंगे ।

मित्राय भ्रमणविषयकं पत्रम

५/ ४७ विनयनगरात्
नवा दिल्ली
दिनांकाः ८/५/८०

प्रिय मित्र मोहन,

सस्नेहं नमस्कारः (नमस्ते वा)

ईश्वरकृपया अत्र सर्वविधं कुशलं वर्तते । तव परिवारे कुशलतायै प्रभुं प्रार्थये ।

समाचारोऽयं यत् चिरकालात् तव पत्रं न प्राप्तम् । अतः चिन्तितोऽस्मि । आशासे, यदधुना तव विद्यालयस्य ग्रीष्मावकाशाः भविष्यन्ति । एषु दिवसेषु तव कः कार्यक्रमः । चिरात्तव दर्शनस्य इच्छाऽस्ति । यदि त्वम् एषुदिवसेषु अत्रागामिष्यसि तर्हि अनुगृहीतो भविष्यामि ।

सर्वं वर्षं वयं पठनपरायणाः भवामः, नहि कुत्रचिद् गमनं भवति । मम

विचारोऽस्ति यत् वयं काश्मीरयात्रां कुर्याम। यदा त्वमत्र आगत्य काश्मीरयात्रायाः कार्यक्रमं निश्चेष्यसि तर्हि अतीव आनन्दकरी काश्मीरयात्रा अस्मभ्यं सुखानुभवं वितरिष्यति।

पुनर्निवेदयामि यत् स्व-पितृभ्याम् आज्ञां प्राप्य यथाशीघ्रम् दिल्लीम् आगच्छ। येन आवाम् काश्मीरयात्रायै प्रस्थानं कुर्याव।

स्वपितृभ्यां मम प्रणतयः कथनीयाः। स्वलघुभ्रात्रे भगिन्यै च स्नेहार्पणं वाच्यम्—मम योग्यां सेवां लिख।

पत्रोत्तरेण शीघ्रं कृतार्थं करिष्यसि इतीहे।

तवाभिन्नहृदयः सुहृद्
अनिलकुमारः
एकादशश्रेणीस्थः

प्रधानाचार्याय अवकाशपत्रम्

परमादरणीयाः प्रधानाचार्यमहोदयाः,

सादरं प्रणामाञ्जलयः सन्तु।

सेवायां सविनयं निवेदयामि यत् मम ज्येष्ठभ्रातुः मनोहरलालस्य वैशाखमासे शुक्लाष्टम्यां तिथौ विवाहः निश्चितोऽस्ति। वरयात्रा कर्णपुरं गमिष्यति। एतस्मिन् शुभे काले तत्र मम गमनमपि आवश्यकम्। अतोऽहम् अष्टानां दिवसानाम् अवकाशं याचे। आशासे, श्रीमन्तः अवश्यमेव मम निवेदनं स्वीकरिष्यन्ति।

धन्यवादार्हाः भवन्तः।
भवतामाज्ञाकारी शिष्यः
दिनांकः ४/४/८० सत्यनारायणो वर्मा
दशमश्रेणीस्थः।

इसी प्रकार पिता, भ्राता आदि को पत्र तथा मित्रों को और सम्बन्धियों को पत्र एवं निमन्त्रणपत्र संस्कृत में लिखने का अभ्यास करें।

अभ्यास

1. पूज्य पिताजी को संस्कृत में पत्र लिखकर बताइए कि तुम एकादश श्रेणी में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुए हो।

2. अपनी सखी को संस्कृत में पत्र लिखकर उसे अपने भाई को विवाह के अवसर पर निमन्त्रणपत्र भेजिए।

3. निम्नलिखित पत्र का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

४/६६ कर्णपुर

दिनांक १४/५/८०

प्रिय मित्र अनिल,

सस्नेह नमस्ते ।

चिरकाल बाद तुम्हारा पत्र पाकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। मैं अध्ययन में निरन्तर लीन था, अतः पत्र नहीं भेज सका। क्षमा चाहूँगा। अब परीक्षाएँ हो गई हैं और परिणाम भी घोषित हो गया है। मैं श्रेणी में द्वितीय स्थान पर उत्तीर्ण हुआ हूँ। मेरे पिताजी ने काश्मीरयात्रा के लिए मुझे आज्ञा दे दी है। अतः मैं दो तीन दिन में आ रहा हूँ। शेष मिलने पर।

अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहें। भाई बहनों को स्नेह दें।

तुम्हारा अभिन्न हृदय

मोहन

चतुर्विंश अध्याय

लोकोक्तियाँ तथा वाग्धाराएँ (मुहावरे)

अंकमारुह्य सुप्तानां वधे किं नाम पौरुषम् ? (शरणागत को मारने में क्या वीरता ?

अवके चेन्मधु विन्देत किमर्थं पर्वतं व्रजेत् ? (बूटी जो घर में मिले, जाये कौन पहाड़ ?).

अगन्तव्यस्य देशस्य का वा मार्गविचारणा ? (जहाँ जाना नहीं, उसका नाम क्या पूछना ?)

अंगीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति ।(वचन-पालन सज्जन का काम है ।)

अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति । (समर्थ भी यदि काम न करे तो काम नहीं होता ।)

अतिपरिचयादवज्ञा, सन्ततगमनादनादरो भवति । (अति परिचय ते होत है अरुचि, अनादर, भाय) ।

अविदर्पे हता लंका । (घमंड का सिर नीचा ।)

अति सर्वत्र वर्जयेत् ।(अति का भला न बरसना ।)

अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषो न पुरुषः ।(पैसे बिन माता कहे जन्मा पूत कपूत)।

अर्द्धो घटो घोषमुपैति नूनम् (अधजल गगरी छलकत जाय ।)

अध्रुवाद्धि वरं ध्रुवम् (नौ नगद न तेरह उधार ।)

अपन्यानं सोदरोऽपि विमुञ्चति। (कुमार्गगामी को सगा भाई भी छोड़ देता है ।)

अनुगच्छति सर्प दर्दुरो मृत्यु-विवशः। विनाशकाले विपरीतबुद्धिः । (बुरे दिन आने पर अक्ल मारी जाती है ।)

अनुहुंकुरुते घनध्वनिं न तु गोमायुरुतानि केसरी । (सिंह मेघगर्जन का अनुकरण करता है गीदड़ की बोली का नहीं) ।

अन्यायं कुरुते यदा क्षितिपतिर्लोकस्तदा रोधकः। (जब राजा अन्याय करे तो प्रजा ही उसे रोकती है ।

अपि धन्वन्तरिर्वैद्यः किं करोति गतायुषि ? (आयु घटे वैद्य क्या करेगा ?)

अप्रकटीकृतशक्तिः शक्तोऽपि जनस्तिरस्क्रियां लभते । (अप्रकट शक्ति वाला समर्थ मनुष्य भी तिरस्कृत होता है ।)

आकण्ठ-जलमग्नोऽपि श्वा लेढीत्येव जिह्वया (कुत्ते की पूंछ टेढ़ी ही रही ।).

आपदामापतन्तीनां हितोऽप्यायात्यहेतुताम् । (दुर्दिन में मित्र भी शत्रु हो जाते हैं ।)

आमुखापात-कल्याणं कार्यसिद्धि हि शंसति । (होनहार बिरवान के होते चीकने पात ।)

आम्राश्च सिक्ताः पितरश्च प्रीणिताः । (एक पंथ दो काज ।)

आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत । (आहार-व्यवहार में न लजाओ ।)

इतो नष्टस्ततो भ्रष्टः ।(धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का ।)

इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः । (अपने मुँह मियाँ मिटठू ।)

इष्टं धर्मेण योजयेत् । (प्रिय को कर्त्तव्य की याद दिलाओ ।)

उदयन्तं सूर्यं सर्वे प्रणमन्ति । (चढ़ते सूर्य को सब नमस्कार करते हैं ।)

उदिते हि सहस्रांशौ न खद्योतो न चद्रमाः (सूरज उगने पर चांद-तारे कहाँ ?)

उष्ट्राणां विवाहे तु गीतं गायन्ति गर्दभाः । (लंगड़ी देवी तो काणे पुजारी ।)

एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा । (एक पंथ दो काज ।)

एकस्य हि विवादोऽत्र दृश्यते नैव प्राणिनः । (ताली एक हाथ से कभी नहीं बजती ।)

ऐक्यं बलं निर्बलानाम् । (निर्बलों का बल एकता ही है ।)

कञ्चुकमेव निन्दति पीनस्तनी नारी (नाच न जाने आँगन-टेढ़ा ।)

कण्टकेनैव कण्टकम् (काँटे से ही काँटा निकलता है ।)

कष्टः खलु पराश्रयः । (पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं ।)

कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा ।(दुःख बिना सुख कहाँ ?)

को न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः । (रिश्वत से सबका मुँह बन्द हो जाता है ।)

कलौ वेदान्तिनो भान्ति फाल्गुने बालका इव । (बरसात में मेढकों की बहार ।)

कल्पवृक्षोप्यभव्यानां प्रायो याति पलाशताम् । (भाग्य बिना कल्पवृक्ष भी व्यर्थ है ।)

कष्टं निर्धनिकस्य जीवितमहो दारैरपि त्यज्यते । (पैसे बिना जोरू भी साथ छोड़ जाती है ।)

काले दत्तं वरं ह्यल्पमकाले बहुनाऽपि किम् ? (का वर्षा जब कृषि सुखाने ।)

किं दूरं व्यवसायिनाम् ? (व्यापारियों के लिए दूरी क्या ?)

किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ? (विद्या क्या नहीं देती ?)

किं मर्दितोऽपि कस्तूर्या लशुनो याति सौरभम् ? (हींग सुगन्ध न होय ।)

कुपुत्रेण कुलं नष्टम् ।(कपूत कुल को नष्ट कर देता है ।)

कुदेशेष्वपि जायन्ते क्वचित्केचिन्महाशयाः । (कीचड़ में कमल ।)

खलः करोति दुर्वृत्तं तद्धि फलति साधुषु । (दुष्ट करे सज्जन भरे ।)

गतस्य शोचनं नास्ति । गते शोको निरर्थकः । (बीती बात बिसार दे ।)

ग्रावाणोऽप्यार्द्रतां सम्यग् भजन्त्यभिमुखे विधौ। (भाग्य हो तो पत्थर भी पिघल जाते हैं।)
गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः। (जौहरी ही हीरे को पहचानता है।)
चक्रवत्परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च। (दुःख-सुख आने-जाने।)
चौरो वृश्चिक-दष्टोऽपि नहि दर्शयति वेदनाम्। (दोषी दुःखी होकर भी मौन साधे रहता है।)
छिद्रेष्वनर्थाः बहुलीभवन्ति। (चोट पर ही चोट लगती है।)
जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः। (बूंद-बूंद सों घट भरे।)
दर्दुराः यत्र वक्तारस्तत्र मौनं हि शोभनम्। (अब मेंढक वक्ता भये, कोयल बैठो मौन।)
दत्वा कन्यां तु जामातुर्वंशज्ञाने वृथा श्रमः। (पानी पीकर जात पूछना।)
दारिद्र्य-दोषो गुणराशिनाशी। (एक गरीब सौ दोष।)
दुर्बलानां बलं राजा। (कमजोरों का बल राजा।)
दुग्धधौतोऽपि किं याति वायसः कलहंसताम्। (सौ मन साबुन धोइयो कागा हंस न होय।)
दूरतः पर्वता रम्याः। (दूर के ढोल सुहावने।)
देहली-प्रापितो विप्रः करपादं प्रसारयेत्। (उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना।)
दैवे दुर्जनतां गते तृणमपि प्रायेण वज्रायते। (दुर्भाग्य में सब कष्ट भारी हैं।)
न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे। (आग लगने पर कुआँ खोदना।)
न दरिद्रस्तथा तप्तो लब्धक्षीणधनो यथा। (बिगड़ा रईस गरीबी में भी अकड़कर चलता है।)
न विडाला भवेद्यत्र तत्र क्रीडन्ति मूषकाः (मियाँ घर नहीं, बीवी को डर नहीं।)
न मुनिः पुनरायातो बन्धनं न महोदधेः। (न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी।)
न सुवर्णे ध्वनिस्तादृक् यादृक् कांस्ये प्रजायते। (सभी गुण सर्वत्र नहीं होते।)
न स्पृशति पल्वलाम्भः कुंजरः पिञ्जरेऽपि। (बड़े बड़ाई ना तजें।)
नवा वाणी मुखे मुखे। (जितने मुँह उतनी बातें।)
न हि सुखं दुःखैर्विना लभ्यते। (बिना दुःख सुख कहाँ।)
निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते। (अन्धों में काना राजा।)
निर्वाणदीपे किमु तैलदानम्। (का वर्षा जब कृषि सुखाने।)
निजसदननिविष्टः श्वा न सिंहायते किम्? (अपने घर में कुत्ता भी शेर होता है।)
निस्सारस्य पदार्थस्य प्रायेणाडम्बरो महान्। (ऊँची दुकान फीका पकवान।)
नीचो वदति न कुरुते वदति न साधुः करोत्येव। (नीच कहता है, करता नहीं।)
परार्थे योजितं पापं फलत्यात्मन्यसंशयम्। (जैसी करनी वैसी भरनी।)
पयःपानं भुजंगानां केवलं विषवर्द्धनम् (साँपों को दूध पिलाना उनका ज़हर बढ़ाना है।

पंको हि नभसि क्षिप्तः क्षेप्तुः पतति मूर्धनि । (चाँद पर थूका अपने पर ही पड़ता है ।)

पञ्चभिर्मिलितैः किं यज्जगतीह न साध्यते । संघे शक्तिः कलौ युगे । (संगठन में शक्ति है ।)

प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरादस्पर्शनं वरम् । (बुराई करके प्रायश्चित करने की अपेक्षा बुराई न करना ही भला है ।)

प्रियानाशे कृत्स्नं किल जगदरण्यं हि भवति (आप मुए जग परलो ।)

पाणौ पयसा दग्धे तक्रं फूत्कृत्य पामरः पिबति । (दूध का जला छाछ को फूंक-फूंक कर पीता है ।)

पावको लोहसंगेन मुद्गरैः प्रतिहन्यते । (कोयले की दलाली में मुँह काला ।)

प्राणिनां हि निकृष्टापि जन्म-भूमिः परा प्रिया । (जन्मभूमि प्राणों से भी प्यारी ।)

प्रासाद-शिखरस्थोऽपि काकः किम गरुडायते । (पंख लगाकर कौआ मोर नहीं बन जाता ।)

बन्धनात् भ्रष्टः गृहकपोतः श्येनमुखे पतितः । (भाड़ से निकला चूल्हे में गिरा ।)

वधूरकुशला पाके काष्ठान्यार्द्राणि भषते । (नाच न जाने आँगन टेढ़ा ।)

बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः । (हीरे की परख जौहरी ही जाने ।)

बहिर्ध्यानं परेशस्य चित्ते कामस्य नर्तनम् । (मुँह में राम, बगल में छुरी ।)

बह्वारम्भे लघुक्रिया । (खोदा पहाड़ निकली चुहिया ।)

बालानां रोदनं बलम् । (बच्चों का बल रोना ही है ।)

बाधते न निजापत्यं मार्जारी-दशनावलिः । (बिच्छू स्वयं को नहीं काटता ।)

बुभुक्षितैः व्याकरणं न भुज्यते । (भूखे भजन न होय गोपाला ।)

भक्षितेऽपि लशुने न शान्तो व्याधिः । (निरर्थक पाप करना ।)

भग्नकामस्तु गोमायुर्द्राक्षाः अम्लाः प्रभाषते । (अप्राप्त अंगूर खट्टे होते हैं ।)

भयंकरस्य रोगस्य प्रतीकारो भयंकरः । (विष की दवा विष है ।)

मन्दोऽप्यविरतोद्योगः सदा विजयभाग्भवेत् । (बूंद-बूंद सों घट भरे ।)

महाजनो येन गतः स पन्थाः । (बड़ों से सेवित मार्ग ही श्रेष्ठ होता है ।)

महान् महत्येव करोति विक्रमम् । (सिंह की सिंह चपेट सहे ।)

माता कुप्यति कन्यायै वधूर्भवति विह्वला । (माँ-बेटी पर कुपित हो, बहू फुलाये मुँह ।)

मितं च सारञ्च वचो हि वाग्मिता । (कम किन्तु सारगर्भित बोलो ।)

यथा वृक्षस्तथा फलम् । (जैसा राजा वैसी प्रजा, जैसी करनी वैसी भरनी ।)

यदेव रोचते यस्मै भवेत्तत्तस्य सुन्दरम् । (जिसमें लगन, उसमें मगन ।)

यत्र चौराः न विद्यन्ते तत्र किं स्यान्निरीक्षकैः ? (न रोना, न मुँह धोना ।)

यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी । (जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी ।

या यस्य प्रकृतिः स्वाभावज़निता केनापि न त्यज्यते । (स्वभाव नहीं बदलता ।)

ये गर्जन्ति मुहुर्मुहुर्जलधरा: वर्षन्ति नैतादृशा: । (जो गरजते हैं वे बरसते नहीं ।)
यो यद्वपति तदेव लभते । (जो जैसा करता है वैसा भरता है ।) (रोपे पेड़ बबूल 'का आम कहाँ ते पाए ।)
रत्नाकरो जलनिधिरित्यसेवि धनाशया । रत्नं तु दूरे वदनमपूरि क्षारवारिभि: । (चौबे गए छब्बे होने, दुब्बे बनकर आये ।)
वर्तमानेन कालेन व्यवहरन्ति विचक्षणा: । (समय देखकर काम करो ।)
वदान्यस्य व्यय: किन्तु व्याकुलो धान्यरक्षक: । (तेलों का तेल जले, मसालची का जी जले ।)
वाप्यामेव न चेद्वारि कुत: कुम्भे जलागम: । (न होगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी ।)
विवाहो हीननासाया: व्याप्तो विघ्नशतैरपि । (नकटी के ब्याह में सौ जोखों ।)
विषकुम्भं पयोमुखम् । (तन के उजले मन के काले ।)
विश्वस्तेषु च वञ्चना परिभवश्चौर्यं, न शौर्यं हि तत् । (विश्वासघात शूरता नहीं ।)
शत्रवो यान्ति मित्रत्वं विशुद्धे सति चेतसा । (जैसा मन वैसा जन ।)
न शोभते लता पुष्पं विना नारी शिशुं तथा । (पति बिनु नारी न मान गहै ।)
सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डित: । (भागते चोर की लंगोटी ही सही ।)
स सुहृद् व्यसने य: स्यात् । (मित्र वह जो विपत्ति में काम आए ।)
(A friend in need, is a friend in deed)
संसर्गजा: दोषगुणा: भवन्ति । (संगति दोष लगे सबके ।)
सर्व: कान्तमात्मीयं पश्यति । (कुम्हारी अपने भाँडे सराहती है ।)
हा हन्त ! सम्प्रति गतानि दिनानि तानि । (ओह, अब वे सुख के दिन गए ।)
हितान्न य: संश्रृणुते स किंप्रभु: ? (जो अपना हित न सुने उस शासक को धिक्कार ।)
हिताहितं वीक्ष्य निकाममाचरेत् । (भला-बुरा विचार कर काम करो ।)
हितं मनोहारि च दुर्लभं वच: । (हितकारी और मधुर वचन दोनों का साथ होना दुर्लभ है ।)

पंचविंश अध्याय

छन्द-प्रकरण

छन्द उस पद्यबद्ध रचना का नाम है, जिसमें अक्षरों या मात्राओं की संख्या निश्चित हो तथा विराम एवं यति-गति आदि का विशेष नियम हो।

काव्य का आनन्द संगीत से मिलकर द्विगुणित हो जाता है। छन्दों से काव्य में संगीतात्मकता का गुण आता है।

छन्द दो प्रकार के होते हैं:—

(१) वैदिक, (२) लौकिक।

वैदिक—वेदमन्त्रों में आये हुए छन्द वैदिक हैं।

लौकिक—वेद के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थों में प्रयुक्त होने वाले छन्द लौकिक हैं। लौकिक छन्द दो प्रकार के होते हैं—(१) वर्णिक। (२) मात्रिक।

(२) **वर्णिक**—जिन छन्दों के चरणों की रचना वर्ण के गुरु-लघु-क्रम से हो, ः वर्णिक छन्द कहलाते हैं।

मात्रिक—जिन शब्दों के चरणों में मात्राओं की गणना और गति-यति का नियम हो वे मात्रिक छन्द कहलाते हैं।

छन्दशास्त्र में व्यंजन अक्षरों की गणना नहीं होती, केवल स्वर-सहित व्यंजन की गणना होती है। ह्रस्व स्वर की एक मात्रा गिनी जाती है और दीर्घ स्वर की दो मात्राएँ गिनी जाती हैं। लघु (ह्रस्व) अक्षर के उच्चारण में जो समय लगता है, उसे मात्रा कहते हैं।

जिन अक्षरों की एक मात्रा है और जो अनुस्वार तथा विसर्ग से रहित हैं, वे अक्षर लघु कहलाते हैं। लघु चिह्न (।) है।

जिन अक्षरों में दो मात्राएँ हैं तथा जो अनुस्वार और विसर्गयुक्त हैं वे गुरु कहलाते हैं। गुरु का चिह्न (ऽ) है।

संयुक्त वर्ण से पहला वर्ण, अनुस्वार सहित, विसर्ग सहित तथा कहीं-कहीं पादान्त का वर्ण भी-–ये दीर्घ होते हैं।

छन्द में मात्रा गिनने के लिए तीन-तीन अक्षरों का एक-एक गण बना लिया गया है। ये गण आठ हैं। सभी के नाम और स्वरूप के लिए एक सुन्दर श्लोक है, उसे कण्ठस्थ कर लीजिए, आठों गणों का स्वरूप कण्ठस्थ हो जाएगा। जैसे—

आदि-मध्यावसानेषु भजसा यान्ति गौरवम्।
यरता लाघवं यान्ति मनौ तु गुरु लाघवम्॥

अर्थ—भगण आदि में गुरु, जगण मध्यगुरु, और सगण अन्त्यगुरु होता है। इसी

त त ज ग ग

S S I S S I I S I S S

अस्त्युत्त रस्यां दिशि देव तात्मा, (इन्द्रवज्रा)

ज त ज ग ग

I S I S S I I S I S S

हिमालयो नाम नगाधि राजः। (उपेन्द्रवज्रा)

S S I S S I I S I S S (इन्द्रवज्रा)

पूर्वापरौ तोय निधी वगाह्य,

I S I S S I I S I S S

स्थितः पृथिव्या इव मान दण्डः॥ (उपेन्द्रवज्रा)

इस प्रकार आपने देखा कि पहले और तीसरे चरण में इन्द्रवज्रा के लक्षण हैं और दूसरे तथा चौथे चरण में उपेन्द्रवज्रा के लक्षण हैं, अतः यहाँ उपजाति छन्द है।

उपजाति का एक अन्य उदाहरण—

कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसार-सारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानी-सहितं नमामि॥

वंशस्थ (१२ वर्णों वाला छन्द)

लक्षण—जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।

परिभाषा—वंशस्थ छन्द के प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण और रगण होते हैं, पाँचवें और सातवें वर्ण पर यति होती है।

ज त ज र

उदाहरण—

I S I S S I I S I S I S

तथा समक्षं दहता मनो भवम्,
पिनाकिना भस्ममनोरथा सती।
निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती,
प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता॥

मालिनी (१५ वर्णों वाला छन्द)

लक्षण—ननमयय युतेयं मालिनी भोगिलोकैः।

परिभाषा—मालिनी छन्द के प्रत्येक चरण में नगण, नगण, मगण, यगण, यगण होते हैं। आठवें और सातवें वर्ण पर यति (विराम) होती है।

न न म य य

उदाहरण—

। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

सरसि जमनु विद्धम्, शैवलेनापि रम्यम्,
मलिनमपि हिमांशोः लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति ।
इयमधिकमनोज्ञा, वल्कलेनापि तन्वी,
किमिव हि मधुराणां मंडनं नाकृतीनाम् ।।

मालिनी का एक अन्य उदाहरण—

असित-गिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे,
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालम्,
तदपि तव गुणानाम् ईश पारं न याति ।।

शिखरिणी (१७ वर्णों का छन्द)

लक्षण—रसै रुद्रैश्छिन्ना यमन सभला गः शिखरिणी ।

परिभाषा—शिखरिणी छन्द के प्रत्येक चरण में यगण, मगण, नगण, सगण, भगण और एक लघु तथा एक गुरु होता है। छठे और ग्यारहवें वर्ण पर यति (विश्राम) होती है।

य म न स भ ल ग

उदाहरण—

। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । । । ऽ

अना घ्रातं पुष्पं, किसल यमलू नं क र रु हैः,
अनाविद्धं रत्नं, मधुनवमनास्वादित-रसम् ।
अखण्डं पुण्यानां, फलमिव च तद्रूपमनघम्,
न जाने भोक्तारं, कमिह समुपस्थास्यति विधिः ।।

शार्दूलविक्रीडित (१९ वर्णोंवाला छन्द)

लक्षण—सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम् ।

परिभाषा—शार्दूलविक्रीडित छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण और एक गुरु वर्ण होते हैं। बारह और सात पर यति (विश्राम) होती है।

म स ज स त त ग

उदाहरण—

ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ

स्निग्धं वीक्षितमन्यतोऽपि नयने, यत्प्रेरयन्त्या तया,
यातं यच्च नितम्बयोर्गुरुतया, मन्दं विलासादिव ।
मा गा इत्युपरुद्धया यदपि तत्, सासूयमुक्ता सखी,
सर्वं तत्किलमत्परायणमहो, कामी स्वतां पश्यति ।।

वसन्ततिलका (१४ वर्णों वाला छन्द)

लक्षण—उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः ।

परिभाषा—वसन्ततिलका के प्रत्येक चरण में तगण, भगण, जगण, जगण और दो गुरु वर्ण होते हैं । आठवें और छठे वर्ण पर यति (विश्राम) होती है ।

त भ ज ज ग ग

उदाहरण—

S S | S | | | S | | S | S S

सर्पाः पिबन्ति पवनं, न च दुर्बलास्ते,
शुष्कैस्तृणैः वनगजाः, बलिनो भवन्ति ।
कन्दैः फलैः मुनिवराः, गमयन्ति कालम्,
सन्तोष एव पुरुषस्य, परं निधानम् ॥

वक्तव्य—पाठ्यक्रम नियत ऊपर कुछ छन्दों के लक्षण और उदाहरण दिये गये हैं। छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से अपने पाठ्यक्रम से इन छन्दों के अन्य उदाहरण भी ज्ञात कर सकते हैं ।

अभ्यास

१. निम्नलिखित ३-३ चिह्नों का एक-एक गण है, उनके नाम लिखिए—

|||, S|S, S||, ||S, SSS, |SS, SS|, |S|,

२. उपजाति, शार्दूलविक्रीडित, मालिनी और शिखरिणी के लक्षण तथा उदाहरण दीजिए।

३. नीचे लिखे श्लोकों में कौन से छन्द हैं, बताइए और उन छन्दों के लक्षण भी लिखिए ।

(क) वागर्थाविवसंपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती-परमेश्वरौ ॥

(ख) त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव ।
त्वमेव सर्वं मम देव-देव ॥

(४) साहित्य में छन्द शब्द का क्या अर्थ है ? और क्या छन्द साहित्य में सौन्दर्यवर्धक है, कैसे ? किसी श्लोक का उदाहरण देकर सिद्ध कीजिए ।

षड्विंश अध्याय

अलंकार-प्रकरण

सौन्दर्य आनन्द उत्पादक होता है। काव्य में सुन्दरता लाने वाले उपमा आदि अलंकार हैं जो काव्य के श्रोताओं और पाठकों को आनन्द देते हैं। कवि अलंकारों का सहारा लेकर भावों को व्यक्त करने में अधिक सफल होते हैं। जो अलंकार अनायास ही कविता में आ जाते हैं वे सौन्दर्यवर्धक होते हैं; परन्तु जहाँ कृत्रिम प्रयास करके अलंकारों को ज़बरदस्ती ठूँसा जाता है, वहाँ कविता की सुन्दरता बढ़ने की अपेक्षा कम हो जाती है।

अलंकार—शब्द और अर्थ की शोभा बढ़ाने वाले अस्थायी धर्म अलंकार कहलाते हैं। यहाँ पाठ्यक्रम में नियत कुछ अलंकार दिये जाते हैं:—

अनुप्रास

लक्षण—अनुप्रासः शब्द-साम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।

स्वरों की भिन्नता होने पर भी पद अथवा पदांश की समानता को 'अनुप्रास' कहते हैं। यथा—

केशः काशस्तबकविकासः, कायः प्रकटित-करभ-विलासः।
चक्षुर्दग्ध-वराटक-कल्पं, त्यजति न चेतः काममनल्पम्॥

यहाँ केश और काश, विकास और विलास, कल्प और अल्प, शब्दों में आई समता के कारण अनुप्रास अलंकार है।

यमक

लक्षण—सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते॥

जहाँ शब्द या वाक्य (जिनके स्वर एवं व्यंजन समान हों) की आवृत्ति हो और अर्थ भिन्न हों वहाँ 'यमक' अलंकार होता है।

उदाहरण—कौमुदी यदि कण्ठस्था वृथा भाष्ये परिश्रमः।
कौमुदी यद्यकण्ठस्था वृथा भाष्ये परिश्रमः॥

इसमें ऊपर और नीचे की पंक्ति के वे ही शब्द हैं केवल नीचे की पंक्ति में अकण्ठस्था (याद नहीं) पद दिया है जिसमें अर्थ भिन्न हो गया है। अतः यहाँ 'यमक' अलंकार है।

श्लेष

लक्षण—श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते ।

जहाँ ऐसे शब्दों की रचना हो जिनके एक से ग्रधिक ग्रर्थ होते हों वहाँ 'श्लेष' ग्रलंकार होता है ।

उदाहरण—स्तोकेनोन्नतिमायाति स्तोकेनायात्यधोगतिम् ।
ग्रहो सुसदृशी वृत्तिः तुलाकोटे खलस्य च ।।

थोड़े से उन्नति को प्राप्त करता है (ऊपर चढ़ जाता है) ग्रौर थोड़े से नीचे ग्रा जाता है (बिगड़ जाता है), ग्रहो ! तराजू के पलड़े ग्रौर दुष्ट का कैसा समान स्वभाव है ।

यहाँ उन्नति प्राप्त करना (बढ़ जाना—ऊपर उठ जाना) ग्रौर ग्रधोगति को प्राप्त करना (बिगड़ जाना—नीचे ग्रा जाना) ये दो-दो ग्रर्थ निकलते हैं, ग्रतः यहाँ श्लेष ग्रलंकार है ।

उपमा

लक्षण—साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः ।

जहाँ उपमेय ग्रौर उपमान में भिन्नता रहते हुए भी समान धर्म के कारण तुलना की जाये वहाँ 'उपमा' ग्रलंकार होता है ।

उपमा के चार ग्रंग होते हैं—१. उपमेय, २. उपमान, ३. साधारण धर्म, ४. उपमावाचक शब्द ।

१. उपमेय—जिसके लिए उपमा दी जाये उसे 'उपमेय' कहते हैं । जैसे—'मुख' शब्द उपमेय है ।

२. उपमान—जिससे उपमा की जाय, उसे उपमान कहते हैं । जैसे—चन्द्र ।

३. साधारण धर्म—उपमेय ग्रौर उपमान दोनों में जो समान गुण हो, उसे साधारण धर्म कहते हैं । जैसे—सुन्दर ।

४. उपमावाचक शब्द—सदृश, तुल्य, इव, सम, वत् ग्रादि शब्द उपमावाचक होते हैं ।

पूर्णोपमा—

जिस उपमा ग्रलंकार में चारों ग्रंग विद्यमान हों, वह पूर्णोपमा ग्रलंकार होता है । जैसे—

सीतायाः मुखं चन्द्र-सदृशं सुन्दरम् ग्रस्ति ।

लुप्तोपमा—

जहाँ उपमा के चारों ग्रंगों में से कोई ग्रंग लुप्त हो, वहाँ लुप्तोपमा ग्रलंकार होता है ।

सीतायाः मुखं चन्द्रवत् ग्रस्ति ।

इस वाक्य में 'सुन्दर' साधारण धर्म लुप्त है; ग्रतः यहाँ लुप्तोपमा ग्रलंकार है ।

अन्य उदाहरण—

वागर्थाविव संपृक्तौ, वागर्थ-प्रतिपत्तय ।
जगतः पितरौ वन्दे, पार्वती-परमेश्वरौ ।।

कालिदास-कृत शंकर दम्पति की प्रार्थना है—जैसे वाणी और अर्थ मिले रहते हैं उसी प्रकार संसार के माता-पिता, शिव पार्वती के परस्पर विलीन होकर एक बने हुए पार्वती और शिव के उस रूप को मैं वाणी और अर्थ की सिद्धि के लिए प्रणाम करता हूँ ।

यहाँ शिव पार्वती के एक स्वरूप की तुलना वागर्थ से की गई है, अतः यहाँ उपमा अलंकार है।

एक अन्य सुन्दर उदाहरण देखिए—

ज्योत्स्नेव नयनानन्दः सुरेव मदकारणम् ।
प्रभुतेव समाकृष्ट-सर्वलोका हि सुन्दरी ।।

कोई सुन्दरी चाँदनी की तरह आँखों को प्रसन्न करने वाली है और मदिरा की तरह मस्ती का कारण बन जाती है तथा सारे संसार को अपनी ओर आकृष्ट करने वाली प्रभुता (ऐश्वर्यधन-सम्पत्ति) के समान है । यहाँ एक सुन्दरी की अनेक वस्तुओं से तुलना के कारण 'मालोपमा' अलंकार है ।

रूपक

लक्षण—तद्रूपकमभेदाय उपमानोपमेययोः ।

जहाँ अत्यन्त समानता प्रकट करने के लिए उपमेय में उपमान का आरोप किया जाये वहाँ 'रूपक' अलंकार होता है।

उदाहरण— इदं चन्द्रमुखम् । इदं ग्रन्थरत्नम् ।

यहाँ प्रथम वाक्य में उपमेय (मुख) में उपमान (चन्द्र) का आरोप किया गया है। दूसरे वाक्य में ग्रन्थ (उपमेय) में रत्न (उपमान) का आरोप किया गया है, अतः इन दोनों में रूपक अलंकार है।

अन्य उदाहरण—

किसलयकरैर्लतानां करकमलैः कामिनां मनो जयति ।
नलिनीनां कमलमुखैः मुखेन्दुभिर्योषितां मदनः ।।

कामदेव कोमल पत्ते रूपी हाथों से, सुन्दरियों के हाथ रूपी कमलों से, कमलिनियों के कमल रूपी मुखों से तथा स्त्रियों के मुखरूपी चन्द्रमा से कामियों के मन को वश में कर लेता है ।

यहाँ अनेक उपमेयों में अनेक उपमानों का आरोप किया गया है, अतः यहाँ रशना-रूपक अलंकार है ।

उत्प्रेक्षा

लक्षण—भवेत् संभावनोत्प्रेक्षा ।

जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना (उत्प्रेक्षा) की जाये वहाँ 'उत्प्रेक्षा' अलंकार होता है ।

उदाहरण—लिम्पतीव तमोंगानि वर्षतीवाञ्जनं नभः ।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता ।।

घने अन्धेरे का वर्णन है जहाँ कुछ नहीं दिखाई दे रहा—

ऐसा ज्ञात होता है मानो अंधकार अंगों में लिप-पुत गया हो । (घना अंधेरा होने से सब काला ही काला प्रतीत हो रहा है) और आकाश मानो सुरमे की वर्षा कर रहा हो । जैसे दुष्ट व्यक्ति की सेवा से कुछ प्राप्त नहीं होता उसी प्रकार आँखों को भी कुछ नज़र नहीं आ रहा ।

यहाँ ऊपर के दो उदाहरणों में 'मानो' कहकर अंधेरे का अंगों पर पुतना और आकाश का अंजन की वर्षा करना—ये दो बातें सम्भावना से कही गई हैं अतः यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है ।

अर्थान्तरन्यास

लक्षण— सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते ।
यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा ।।

जहाँ किसी सामान्य या विशेष बात का समान धर्म वाले किसी अन्य सामान्य या विशेष उदाहरण से समर्थन किया जाता है वहाँ 'अर्थान्तरन्यास' अलंकार होता है ।

उदाहरण—बृहत्सहायः कार्यान्तं क्षोदीयानपि गच्छति ।
संभूयाम्भोधिमभ्येति महानद्यां नगापगाः ।।

कोई छोटा व्यक्ति भी बड़े की सहायता से कार्य में सफलता प्राप्त कर लेता है, जैसे पहाड़ों के छोटे-छोटे झरने बड़ी नदियों के सहारे विशाल समुद्र को प्राप्त कर लेते हैं ।

यहाँ बड़ों की सहायता से छोटों के काम बनने का, पहाड़ी झरनों का नदियों के साथ समुद्र को प्राप्त करने की बात से समर्थन किया गया है, अतः यहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार हैं ।

कुछ अन्य उपयोगी अलकारः—

विरोधाभास

लक्षण—विरुद्धमिव भासेत विरोधोऽसौ ।

जहाँ दो बातों में वास्तव में तो विरोध न हो किन्तु विरुद्ध-सी प्रतीत हों वहाँ 'विरोधाभास' अलंकार होता है ।

उदाहरण—सृजति च जगदिदमवति च संहरति च हेलयैव यो नियतम् ।
अवसर - वशतः शफरो जनार्दनः सोऽपि चित्रमिदम् ।।

जो जनार्दन (ईश्वर) जगत् को रचता है, रक्षा करता है और लीला से (अनायास ही) उसका संहार करता है वह भी अवसर आने पर मछली बन गया—यह आश्चर्य है ।

यहाँ भगवान् का मछली बनना विरोध है किन्तु 'मत्स्यावतार ग्रहण' करने की बात से विरोध मिट गया है । अतः यहाँ विरोधाभास अलंकार है ।

अतिशयोक्ति

लक्षण—सिद्धत्वेऽध्यवसायस्य अतिशयोक्तिनिर्गद्यते ।

जहाँ अतिशय अर्थात् लोकसीमा का उल्लंघन करके प्रस्तुत वस्तु की अत्यन्त प्रशंसा अथवा निंदा की जाये वहाँ 'अतिशयोक्ति' अलंकार होता है ।

उदाहरण—राकायामकलंकं चेद् अमृतांशोर्भवेद् वपुः ।
तस्या मुखं तदा साम्य-पराभवम् अवाप्नुयात् ।।

यदि पूर्णिमा की रात को चन्द्रमा कलंक रहित हो जाये तो उस सुन्दरी का मुख चन्द्रमा से तुलना करने पर अपमानित हो जायेगा; क्योंकि मुख तो इस समय चन्द्रमा से भी अधिक सुन्दर और निष्कलंक है और चन्द्रमा के निष्कलंक हो जाने पर सुन्दरी के मुख की तुलना के लिए कोई वस्तु ही नहीं मिलेगी ।

इस प्रकार सुन्दरी के मुख की अत्यधिक बढ़ा-चढ़ाकर सुन्दरता व्यक्त की गई है । अतः यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है ।

व्याजस्तुति

लक्षण—व्याजस्तुतिर्मुखे निन्दा स्तुतिर्वा रूढिरन्यथा ।

जहाँ निन्दा के शब्दों में स्तुति (प्रशंसा) अथवा स्तुति (प्रशंसा) के शब्दों में निन्दा प्रकट हो वहाँ 'व्याजस्तुति' अलंकार होता है ।

उदाहरण—रे रे मित्र क्षणं तिष्ठ यावद्दास्यामि ते पयः ।
तवोपकाराणां निष्कं सम्मानेन पूरये ।।

मित्र, जरा ठहरो, जब तक मैं तुम्हारे लिए दूध लाता हूँ; क्योंकि तुम्हारे उपकारों का बदला कम से कम मैं दूध से सम्मान करके तो पूरा कर दूँ ।

यहाँ दूध से सम्मान करने के द्वारा मित्र के उपकारों की प्रशंसा की गई है । वस्तुतः यहाँ तो यह व्यंग्य से निन्दा प्रकट की जा रही है कि तूने जो मेरा उपकार किया है क्या तू उसके लिए दूध का अधिकारी हो सकता है ? अर्थात् नहीं; बल्कि तुझे तो विष देना चाहिए । इस प्रकार यहाँ 'व्याजस्तुति' अलंकार हो गया ।

अभ्यास

१. श्लेष, उत्प्रेक्षा और अर्थान्तरन्यास का लक्षण लिखकर उदाहरण दीजिए।

२. नीचे लिखे श्लोकों में जो अलंकार हों उन्हें संगत कीजिए—

(क) वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती-परमेश्वरौ॥

(ख) रे रे मित्र क्षणं तिष्ठ यावद्दास्यामि ते पयः।
तवोपकाराणां निष्कं सम्मानेन पूरये॥

३. बताइए ये किन अलंकारों के लक्षण हैं और इनके क्या उदाहरण होंगे ?

(क) साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैका उपमा द्वयोः।

(ख) सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वर-व्यञ्जन-संहतेः।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते॥

४. अतिशयोक्ति शब्द का अर्थ बताकर इस अलंकार का लक्षण उदाहरण दीजिए।

५. साहित्य में अलंकार शब्द का क्या अर्थ लिया जाता है ?

६. अलंकार साहित्य की सुन्दरता के वर्धक एवं पाठक तथा श्रोता को आनन्द-दायक होते हैं—यह बात निम्नलिखित श्लोक के अर्थ से सिद्ध कीजिए—

ज्योत्स्नेव नयनानन्दः सुरेव मदकारणम्।
प्रभुतेव समाकृष्ट-सर्वलोका हि सुन्दरी॥

सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्

Paris, Tour Eiffel (France)